भागो नहीं—

दुनियाको बदलो

राहुल सांकृत्यायन

किताब महल
इलाहाबाद

मूल्य ४)

प्रथम संस्करण, १९४५
द्वितीय संस्करण, १९४५

प्रकाशक:—किताब महल, प्रयाग
मुद्रक—बी० एल० वारश्नी, वारश्नी प्रेस, कटरा, इलाहाबाद

तनिक अरज

इस किताबकी भाखा देखके कितने ही पढ़नेवाले अचरज करेंगे, लेकिन मुझे उमेद है, कि वह नराज नहीं होंगे; काहेसे कि यहाँ उन्हें ऐसे सैकड़ों सबद मिलेंगे, जिनको उन्होंने माँका दूध पीनेके साथ सीखा है और अब भी वह ऐसे ही फिर मीठे लगते होंगे। लेकिन मैंने इस पोथीको भाखा फैलानेके ख्याल-से नहीं लिखा। एक बरस पहले जो कोई कहता, कि तुम इसी भाखामें एक किताब लिखोगे, तो मुझे बिसवास न होता। मैंने छपरा-बलियाँकी भाखा मल्लिकामें आठ छोटे-छोटे नाटक लिखे, और मैंने देखा कि अपनी बातोंको रखनेमें कोई कठिनाई नहीं है। उस भाखामें मैं इस पोथीको लिख सकता था लेकिन फिर वह चार-पाँच जिलों हीके कामकी होती लेकिन इस तरहकी हिन्दीमें लिखना बहुत मुसकिल मालूम होता था। तो भी मैंने सोचा कि जिन लोगोंके पास मैं अपनी बातोंको पहुँचाना चाहता हूँ उनके लिये ऐसी ही भाखामें लिखने-की कोसिस करनी चाहिये। पोथी लिखते बखत मेरे दिलमें हमेसा इस बातका ख्याल रहा है कि जिन्होंने प्राइमरी तक हिन्दी पढ़ी है, वह इसे समझ पायें। इस काममें सन्तोखी और दुखरामने मेरी बड़ी मदद की है, जो वह दोनों मेरे सामने न रहते, तो मैं बहक जाता। मेरी जनम-भाखा बनारसी (कासिका) है, लेकिन २१ बरसोंसे छपरामें ज्यादा रहनेके कारण मुझे वहींकी भाखाका ज्यादा ग्यान है। बनारसी बोलने-लिखनेमें मैं गलती कर जाता हूँ तो भी भाखा लिखते बखत मुझे बनारसी और छपरहा भाखाओंसे बहुत मदद मिली है। किसी समय मैं सालसे बेसी बुन्देलखण्डमें रहा था, और उस भाखाने भी मुझे जरूर मदद की। इसके बाद सबसे बेसी मदद सिरी सतनरायेन दूबे (सेठजी) से मिली। मैं बोलता जाता था, और वह कागजपर उतारते जाते थे। कागजपर उतारनेके साथ-साथ वह सबदोंके बारेमें अपनी राय देते जाते थे, जिससे भाखा और आसान बन सकी। वह भी राय देनेमें बहक जाते, जो उनके सामने अपने गाँवकी पुरबहिया (अहिरिनि) भौजाई न होती। इस तरह फैजाबाद जिलेकी अवधी भाखासे भी मदद मिली। तो भी हिन्दी पढ़नेवालोंके थोड़ेसे जिलोंकी

मदद मैंने ली। हो सकता है, इस पोथीमें कुछ ऐसे सबद भी आ गये हों जो पच्छिमके कुछ जिलोंमें न चलते हों। मैंने अपने जान ऐसे सबदोंको न लेनेकी कोसिस की।

राजनीतिको थोड़ेसे पढ़े-लिखे आदमियोंके हाथमें देकर अब चुप बैठा नहीं जा सकता। ऐसा करनेसे जनताको बराबर नुकसान उठाना पड़ा। जनताको वोट देनेका अख्तियार दे देनेसे काम नहीं चलेगा, उसे अपनी भलाई-बुराई भी मालूम होनी चाहिये और यह भी मालूम होना चाहिये कि राजनीतिके अखाड़ेमें कैसे दाँव-पेंच खेले जाते हैं। इस पोथीमें इस बातके समझानेकी मैंने थोड़ी सी कोसिस की है। लोगोंको, इससे कुछ फायदा होगा या नहीं इसे मैं नहीं कह सकता। और इतना बड़ा काम एक पोथीसे हो भी नहीं सकता। मुझे उमेद है कि मेरे दूसरे भाई अपनी मजबूत कलमसे और अच्छी किताबें लिखेंगे, तब ज्यादा काम हो सकेगा।

हो सकता है किसी-किसी भाईको पोथी पढ़ते वक्त कुछ सबद कड़े मालूम हों—दुखराम भाईकी कोई-कोई बातें देहमें तीर जैसी लगती है, लेकिन दुख राम जैसे किसानको हम वैसे ही भाखामें बोलते सुनते हैं। तो भी जो किसी भाई के दिलमें चोट लगे तो मैं छमा माँगता हूँ। मैं किसी एक आदमीको दोखी नहीं मानता, आज जिस तरहका मानुख जातिका ढाँचा दिखाई पड़ता, असलमें सब दोस उसी ढाँचेका है। जब तक वह ढाँचा तोड़कर नया ढाँचा नहीं बनाया जाता, तब तक दुनिया नरक बनी रहेगी। ढाँचा तोड़ना भी एक आदमीके बूतेका नहीं है, इसके लिये उन सब लोगोंको काम करना है, जिनको इस ढाँचेने आदमी नहीं रहने दिया।

आखिरमें मैं एक बार फिर सिरी सतनरायेन दूबे (सेठवी)को धनबाद देता हूँ कि उन्होंने रात-दिन लगाके बारह दिनों (१७ मई—२८ मई)में लिख डालनेमें अपनी कलमसे मुझे मदद दी।

परयाग
२८ मई १९४४

राहुल सांकृत्यायन

भागो नहीं बदलो

अध्याय १

दुनिया नरक है

और जगह जानेकी क्या जरूरत है, सामने देखते नहीं, यह दुनिया नरक नहीं तो क्या है?—दुखरामने सन्तोखीसे कहा। अभी दोनों हीकी बात यहीं तक थी, कि एक तीसरा जवान आया, जिसे दोनोंने "आओ भैया" कहकर पास बैठनेकेलिए कहा। अब फिर उनकी बात सुरू हुई। भैयाने ही पहल की—कहो क्या बात हो रही थी, मैं भी सुनूँ।

सन्तोखी—यही दुखराम दुनियाका रोना रो रहे थे, दुनिया नरक है, नरक।

भैया—तो इसमें कोई सक है? देखते नहीं हमारे गाँवमें पचास घर हैं, लेकिन उनमें कितने घर हैं, जो पेट भर खा सकते हैं?

दुखराम—मैं समझता हूँ, पाँचसे अधिक नहीं।

भैया—और वह पाँचभी सूखा-रूखा घास-पात खाकर किसी तरह पेट भर लेते हैं, बाकी पैंतालीस घरमें किसीको एक साँझ खानेको मिलता है, किसीको दो दिन पर मिलता है। चैतमें जब फसल कटती है, तो एकाध महीना पेट भर खा लेते हों। छोटे-छोटे बच्चोंको देखते नहीं, कैसे उनका पेट कमरसे सटा हुआ है! और किसीके लिए होगा कभी-कभी सूखा अकाल, लेकिन हमारे यहाँके लोगोंकेलिए तो सदा ही अकाल रहता है, उन्हें सदा ही भूखा रहना पड़ता है।

भैया—जानते हो लोग जो इतना बीमार पड़ते हैं, वह भी भूखेही रहनेके कारन।

दुखराम—क्यों नहीं भैया! पेटमें जब अन्न नहीं रहता, तो जान पड़ता है, आग भभक उठती है और सारे सरीरमें लहर बलने लगती है।

भैया—ठीक कहा दुक्खू भाई! जब सरीरको अन्न नहीं मिलता, तो वह दुर्बल हो जाता है। और सुना नहीं है "दुर्बलो दैव घातक:"। कोई भी आस-

पाससे बीमारी जा रही हो, दुर्बल आदमीको देखतेही उसका मन ललचा जाता है। अकालमें जितने लोग भूखे मरते हैं, उससे तिगुने बीमारीसे मर जाते हैं। अभी जो बंगालमें अकाल पड़ा था, जानते हो वहाँ कुछही महीनोंमें साठ लाख आदमी मरे, जिनमें भूखसे मरने वाले २० लाखसे ज्यादा न होंगे। मालूम है साठ लाखके अकाल-मरनके सुननेसे तुम्हें वह रोमांचकारी दृश्य नजर नहीं आएगा, जो मरनेसे पहले उनपर बीता।

क्या ऐसी बीती भैया जी?

भैया—कुछ न पूछो, यदि वह रातको सोते और सबेरे मरे पाये जाते, तो इतना दुख न होता। लेकिन उन्हें लाज छोड़नी पड़ी। सुना होगा तुमने कलकत्ताकी सड़कों पर पचास-पचास हजार भूखे नर-नारी बाल-बच्चे पड़े हुए थे। यह ऐसे लोग नहीं थे, जिन्हें भीख माँगनेकी आदत थी। कितने ही उनमें पढ़े-लिखे भी थे, कितनी ही औरत ऐसी थीं, जिन्होंने घरके चौखटसे बाहर पैर नहीं रखा था।

सन्तोखी—और वह भी घरसे निकल कर शहरकी सड़कों पर चली आईं!

भैया—सारा बड़प्पन, सारा पर्दा-पानी तीन ही दिन तक चलता है, चौथे दिन जब भूखसे अंतड़ियाँ तिलमिलाने लगती हैं तो सब लाज-सरम इज्जत-पानी हट जाता है। फिर एक दो आदमीके ऊपर आफत आई हो, तो हो सकता है, लाज-सरमके मारे आदमी घरमें बैठा ही बैठा जान दे दे। लेकिन बंगालमें यह एक घरकी बात नहीं, एक गाँवकी बात नहीं, जिलेकी बात नहीं थी, बल्कि एक सूबेके दो-दो तीन-तीन करोड़ आदमियों पर यह आफत आई थी। अन्न परानसे भी महगा था। पहले लोगोंने जेवर बेंचकर रुपये-दो-रुपये सेरका चावल खरीदा, लेकिन जेवर कितने लोगों के पास था? लोगोंने खेत बेंचा। खेत अन्न देते, लेकिन तीन महीने बाद—तब तक घर के लोग जिएँ कैसे। इसलिए लोगोंने अपने खेतोंको माटीके मोल बेचा। बैल, गाय बेचा, घरभी बेंच दिया तब भी अन्न दुर्लभ था, खरीदनेके लिए पासमें कुछ नहीं था। करोड़-करोड़ आदमी कुएँ, तालाबमें डूबनेके लिए तैयार नहीं हो सकते थे। जानते हो न जीवनका मोह?

सन्तोखी—हाँ भैया! जीनेके लिए आदमी क्या नहीं करता ?

भैया—वे लोग जीना चाहते थे, सुना कि कलकत्ता बड़ा सहर है। वहाँ देस-देसाउरसे अन्न आता है, वहाँ जानेसे क्या जाने, जीनेका कोई रास्ता निकल आए। इसलिए घरके घर खाली हो गए, लोग भूखे-प्यासे कलकत्ताकी ओर चल पड़े। सारे बंगालके लोग कलकत्ता कैसे पहुँच सकते थे ? भूखोंके सरीरमें इतनी ताकत कहाँ थी कि साठ-सत्तर मीलसे ज्यादा चल सकें। कितने ही रास्तेमें मर गए, कितने ही कलकत्ताकी सड़कोंपर भी पहुँच गए। जानते हो न कलकत्ताकी बरखा।

दुखराम—हाँ भैया! वहाँतो जान पड़ता है बारहों महीने बरखा रहती है।

भैया—लेकिन यह सन् १९४३के बरखाके ही महीने थे, जबकि भूखे नर-नारी कलकत्ताकी गलियोंमें पहुँचे। कितनों के पास तन ढाँकनेके लिए कपड़ा नहीं था, वह सरीरमें फटे बोरे लपेटे थे। मूसलाधार बरखा बरसती रहती थी और सड़कपर, पगडंडियोंपर ये भीगते रहते थे।

सन्तोखी—क्या वहाँ धरमसाला-मुसाफिरखाना नहीं है ?

भैया—धरमसाला मुसाफिरखाना दो-चार हजारके लिए हो सकता है, लाख-लाख आदमियोंके लिए धरमसाला कहाँ तैयार है। कलकत्तामें भी सबको कहाँ खानेको मिलता। लड़के और सयानेभी कूड़ों परसे बीनकर दाना खाते थे, सड़कपर फेके सूखे टुकड़ोंको भी कुत्तोंके मुँहसे छीन लेते थे। जीवनका लोभ ऐसाही है। आदमी कैसे भी जीना चाहते हैं, मैं समझता हूँ नरकमेंभी आदमी इसी तरह इच्छा जीनेकी रक्खेगा।

दुखराम—भैया इससे बढ़कर और नरक क्या होगा ?

भैया—हाँ, मुर्दे सड़कोंपर पड़े रहते थे, कोई उठाने वाला नहीं मिलता था। यह कलकत्ताकी बात थी, देहातमें तो और भी बुरी हालत थी, क्योंकि वहाँ कोई पूछ-ताछ करनेवाला न था, न डाक्टरी महकमा, न डाक्टर, न मुर्दोंकी तस्वीर खींचकर अखबारों में छापनेवाले। लाखों आदमी दिल मसोसकर चुपचाप अपने गाँवोंमें मर गए। और जानते हो, कलकत्ताकी सड़कों पर

कुत्ते-बिल्लीकी मौत मरनेवाले ये लोग कौन थे ?

दुखराम—नहीं भैया ! बताओ, बंगाली रहे होंगे।

भैया—हाँ, बंगाली, इनमें थे बाम्हन, इनमें थे कायथ, इनमें थे ग्वाले, इनमें थे सेख, इनमें थे सैय्यद, सब जाति, सब धरमके लोग थे। भूखने सबको एक जैसा पंथका भिखारी बना दिया। इतना ही नहीं, भूखने उनसे इज्जत बेंचवा दी।

संतोखी—क्या कहा भैया इज्जत बेंचवा दी !

भैया—हाँ ! जान पड़ता है, इज्जत भी आदमी तभी रखता है, जब पेटमें दो दाना पड़ता है। जवान लड़कियाँ जवान बहुएँ और अधेड़ औरतें एक वक्त के भोजनके लिए अपनी इज्जत बेंच रही थीं। कलकत्ताकी सड़कों पर इज्जत बेंची जा रही थी। चटगाँव, नवाखाली, बरीसालकी गलियोंमें इज्जत बिक रही थी, बाजारों नहीं हर जगह इज्जत बिक रही थी। अन्न इज्जतसे बहुत मँहगा था। माँ अपनी बेटीकी इज्जतका सौदा करती थी। पति अपनी स्त्रीकी इज्जत बेंच कर कुछ लानेका इशारा करता था। कलकत्तामें कितनी नारियाँ खानगी (बेसवा) बननेके लिए मजबूर थीं, जानते हो ?"

संतोखी—बहुत होंगी।

भैया—बहुत कहनेसे वह दिल दहलानेवाला नजारा हमारे सामने नहीं आता। किसीने हिसाब लगाकर बतलाया था, कि एक समय तीस हजार औरतें अपनी इज्जतसे चावल बदल रही थीं।

दुखराम—इससे तो एकही बार आँख मूँद लेना अच्छा होता।

भैया—लेकिन यह एक आदमीके आँख मूँदनेकी बात नहीं थी, करोड़ करोड़ आदमी कैसे बिना हाथ-पैर हिलाए मरनेके लिए तैयार हो जाते। इसी लिए भूखने उनसे इज्जत बेंचवायी, ये कभी इज्जतके लिए मरते थे। साठ लाख आदमी मर गए, क्या उससे कम है यह लाखों औरतोंका इज्जत बेंचना ?

संतोखी—यह उससे भी बुरा है।

भैया—और जब फसल हुई, लोगोंको थोड़ा-थोड़ा अन्न मिला, तो अदसाल

बीतने भी न पायी कि मलेरियाने आ घेरा। घरके घर बीमार पड़ गए, कोई पानी देनेवाला नहीं रह गया। किसी-किसी गांवमें दो तिहाई आदमी मलेरिया और महामारीमें मर गए। घरके घर सूने हो गए। मुर्दे सात-सात दिन तक घरके भीतर सड़ा किए।

सन्तोखी—जीता ही देश मसान हो गया!

भैया—तो देखा न सन्तोखी भाई! इससे बढ़कर नरक कहाँ होगा, जहाँ इस तरह घुल-घुल कर आदमी को मरना हो और बेइज्जत बे पानी। यह तो बंगालकी बात है अभी इसी साल-१९४४-में जान रहे हो, बिहारमें क्या हो रहा है?

दुखराम—बिहारमें भी कुछ हुआ है भैया?

भैया—कुछ नहीं, बहुत। चम्पारन, मुजफ्फरपुर, दरभंगाके सिरिफ तीन जिलों में और वह भी सिरिफ तीन-चार महीनेमें एक लाख से ऊपर आदमी हैजा और मलेरियासे मर गए और अभी (अगस्तमें) भी मर रहे हैं।

सन्तोखी—मरना-जीना भगवानके हाथमें है।

दुखराम—जो मरना जीना भगवानके हाथमें होता, तो दवा-दारू करने की जरूरत न होती। फिर सन्तोखी भाई! तुम्हें खानेकी भी जरूरत नहीं; यदि भगवानको जिलाना होगा, तो तुम्हें हवा पिला कर भी जिला देंगे।

भैया—कोई आदमी बहुत बूढ़ा शरीरसे मजबूर होकर मरता है, तो उसके लिए कहा जा सकता है कि बुढ़ापेको कोई नहीं रोक सकता, बूढ़ेको मृत्युसे कोई नहीं बचा सकता। लेकिन बूढ़ेको भी बीमार पड़ने पर हम भागके ऊपर छोड़ नहीं देते। उसकी दवा करते हैं, पथ्य देते हैं। बिहारके तीन जिलोंमें एक लाखसे अधिक आदमी मर गए, वह बूढ़े नहीं थे। बीमारीने इसलिए उन्हें धर दबाया कि साल-साल तक आधा पेट और भूखे रहते-रहते उनके सरीरमें सकती नहीं रह गई थी, मलेरियाके कीड़ोंने जब उनके ऊपर धावा बोल दिया तो उन्हें रोकनेके लिए भीतर ताकत नहीं रह गई। हैजाके कीड़े जब पानीके रास्ते साँससे होकर भीतर पहुँचे, तो उन्हें निकालनेके लिए वहाँ कोई ताकत नहीं बच रही थी। तन्दुरुस्त आदमीको

बीमारी कम पकड़ती हैं।

सन्तोखी—बीमारी न होनेसे आदमी तन्दुरुस्त होता है।

भैया—नहीं सन्तोखी भाई! यह बात नहीं है, पुस्टई वाले खान-पानसे आदमी तन्दुरुस्त होता है और तन्दुरुस्त होने पर बीमारी उसके पास नहीं आती।

दुखराम—तो अन्नही मूल हुआ?

भैया—अन्नही मूल है, अन्न ही परान है, अन्नके मिलनेसे जीवन रहता है, अन्नके मिलनेसे इज्जत बचती है।

दुखराम—तो यदि अन्न मिले तो दुनियाका आधा नरक खतम हो जायगा।

भैया—हाँ दुक्खू भाई! इस बातको गाँठमें बाँध रक्खो। हम आगे बतलाएँगे कि क्यों अन्न रहते भी अन्न नहीं मिलता, पथ्य रहते भी पथ्य नहीं मिलता, दवा रहतेभी दवा मयस्सर नहीं होती।

सन्तोखी—"सन्तोखं परम् सुखम्," हमने तो यही सुना था।

भैया—तुम्हारे ऊपर भी वह आ सकती है आती और देशमें कौन बच सकता, कल बंगालकी बारी थी आज मिथिला तिरहुतकी और विहान हमारी तुम्हारी भी बारी आ सकती है। "सन्तोखं परम सुखम्" को उसने लिखा होगा, जिसे कभी भूखसे पाला न पड़ा होगा। उसका पेट भरा रहा होगा, वह निचिंत सोया रहा होगा। लेकिन इतनेहीसे दुनियाका नरक होना पूरा नहीं हो जाता।

दुखराम—हाँ, खाना कपड़ा तो मूल है, लेकिन औरभी पचासों चिन्ताएँ हैं, पचासों बिपदाएँ हैं।

भैया—ठीक है दुक्खू भाई! चिन्ताकी कुछ मत पूछो। माँ बाप हैं, घर में चार बीघा खेत है, किसी तरह गुजारा चल जाता है, फिर हो जाते हैं चार लड़के और चार लड़कियाँ। अब चार बीघे खेतसे दस मुँहोंका काम कैसे चल सकता है। फिर जैसे-जैसे उमर बीतती जाती है, वैसे-वैसे मुँह भी बढ़ते जाते हैं। आहार भी बढ़ता जाता है, लड़कोंका ब्याह करना, गरीब होने पर लड़की

खरीदने हीमें खेत बिक जाएगा, इज्जतदार होनेपर एक लड़कीके ब्याहमें सारा खेत चला जायगा, फिर परिवारको भी भूखा रहना पड़ेगा। दो हाथ की चादर सिर ढाँको तो पैर नंगा, पैर ढाँको तो सिर नंगा।

दुखराम—चार बीघा क्या चालिस बीघा वालोंको भी चिन्ता खाये जाती है।

भैया—क्यों न खायेगी चार लड़के हुए, तो दूसरी पीढ़ीमें दस-दस बीघा रह जायगा, मानो उनको कि एक पीढ़ी या पन्द्रह सालके लिए कुछ कम चिन्ता हुई, लेकिन तीसरी पीढ़ीमें तो फिर दो-दो बीघा खेत और आठ-आठ लड़के-लड़की। जिसके घरमें आज दाल भी है तो नमक नहीं है।"

दुखराम—और फिर भैया! गाँवमें आधेसे अधिक तो ऐसे घर हैं, जिनके पास खेती-पथारी भी नहीं है। दिन भर मजूरी करते हैं, सामको जो सूखा-रूखा मिल गया, तो लड़कों-वालों के मुँहमें अन्न पड़ा। रोज कमाना, रोज खाना। एक दिन गाड़ी बैठ गई, तो हाहाकार। तीस दिन मजूरी भी तो नहीं मिलती और साल में छ महीना भी करने के लिए काम नहीं रहता। सिरिफ बोने काटनेके वक्त काम रहता है।

भैया—मजूर-पेसा आदमियोंकी तो और आफत है। जेठ, असाढ़, सावन का दिन काटना मुस्किल हो जाता है। जो महुआ उस साल रहा, तो कुछ अवलम्ब लगा।

दुखराम—और महुआ भी तो अब नोहर (दुर्लभ) हो गया है। कहाँ पैसेका दो सेर और कहाँ वह भी अब दो आना सेर लग गया। आमकी गुठली जमा करके कुछ दिन रोटी पकाते खाते थे, और अब उसके खानेवाले इतने अधिक हैं कि सबको गुठली कहाँसे मिलेगी?

भैया—दुक्खू भाई! इसेभी क्या कोई जीना कहोगे? यह नरककी जिन्दगी नहीं तो और क्या है? फिर देखते नहीं, मजूर-घरोंकी क्या दसा है? फूसकी छत भी उन्हें ठीक से मयस्सर नहीं। एक बार छा पाये, तो चाहे सड़-गल जाय, बरसात का आधा पानी भीतर ही आता हो, लेकिन फिर उसको नया करना मुस्किल है। कितनी छोटी छत, कितना छोटा दुआर,

भीतर सीड़ बाहर नाबदान और कूड़े-करकटकी बदबू! यह क्या आदमियोंके रहने लायक घर है? इन्हीं सड़ी झोंपड़ियोंमें बच्चे पैदा होते हैं। जब वह आँख खोलते हैं, तो उनके आस-पास क्या दिखलाई पड़ता है? गरीबीका नंगा नाच, तिलमिलाती अँतड़ियाँ, सूखा मुँह नंगा बदन।

दुखराम—आजकल लड़ाई के जमाने में दस-दस रुपये की साड़ी कौन खरीदेगा? फटा-चीथड़ा भी तो नसीब नहीं होता है। जान पड़ता है टाट भी पहिनने को नहीं मिलेगा।

भैया—हाँ और बच्चा नङ्गा-भूखा-सरीर और वही गरीबी चारों ओर देखता है। सूखे थनोंसे दूध निकालना चाहता है। (इसपर भी यदि हमारे देसके आधे बच्चे बचपन हीमें न मर जायं तो बड़े अचरजकी बात है। लेखक)

दुखराम—हाँ। भैया, सतमीके बच्चोंको नहीं देखा? दो तीन बरसोंके भीतर उसका लड़कोंसे भरा घर खाली हो गया।

सन्तोखी—मैं समझता हूँ, बच्चोंके लिए अच्छाही हुआ! पेट भर खाना किसे कहते हैं, क्या इसे उन्होंने कभी जाना? जाड़ेमें बेचारे यदि किसीके कोल्हुआड़ेमें आग तापने जाते, 'ऊख चुराकर ले जायगा' कह कर दुतकार दिये जाते। मानो वह आदमी नहीं कुत्ते थे। कोदोका पुआल या ऊखकी पत्तियोंमें घुस कर रात बिता देते। भूख लगती तो किसीके द्वार पर खड़े होते। दया आई, तो किसीने एक कौर दे दिया, नहीं तो फिर फटकार। जड़ैया (मलेरिया) में सब गिर जाते, तिल्ली बढ़ती, पेट फूल कर कुंडा जैसा हो जाता मुँह पीला और आँखें फूल जातीं। फिर एक-एक करके पके पत्तेकी तरह झड़ने लगते! क्या यह आदमीका जीवन है?

भैया—अब समझा न, यही नरकका जीवन है। शायद तुम समझते होगे कि सहरके साफ़ कुर्ता-धोती पहिननेवाले बाबू लोग अच्छी जिन्दगी बिताते होंगे?

दुखराम—हाँ, भैया! हम तो ऐसाही समझते हैं—वह तो पान भी खाते हैं, सिनेमा भी देखते हैं, हम लोगोंको देख कर गन्दा-गँवार कह कर हट जाते हैं।

भैया—उन सफ़ेद कपड़ोंके भीतर ही भीतर कितना धुआँ उठ रहा है, यह तुम्हें नहीं मालूम है। दुक्खू भाई! पहिले कभी जमाना था कि विद्याका मोल ज्यादा था। इन्ट्रैन्सभी नहीं पास होते थे, कि लोग वकील, मुंसिफ, सदर-आला हो जाते, लेकिन अब एम्० ए०, बी० ए० पास कर चालीस-चालीस रुपल्लीकी नौकरीके लिए इधर-उधर मारे-मारे फिरते हैं। डेढ़ सेरका आँटा, सवासेरका चावल, चार रुपया सेर घी, अढ़ाई रुपया मन ईंधन, बताओ चालीस रुपयेमें तो अकेले आदमीका भी पेट नहीं भर सकता। फिर मकानका किराया तिगुना। पैर पसारने पर इस दीवारसे उस दीवार पहुँच जायंगे, ऐसी-ऐसी कोठरियोंका किराया! पाँच रुपया महीना, कपड़ेका दामभी चौगुना। फिर बाबू अकेले नहीं होते। माता-पिता अपने पैर पर खड़ा करनेसे पहिले लड़केका ब्याह कर देते हैं और पचीस बरसके होते-होते बाबूके चार-पाँच बच्चे भी हो जाते हैं। अब बताओ चालीस रुपयेमें वह क्या अपने खायेंगे, क्या बीबी और बच्चोंको खिलायेंगे? कहाँसे घर भरके लिए कपड़ा ले आएँ! मकान का किराया कैसे दें! लड़कोंकी फ़ीस कहाँसे आयेगी? यदि लड़के लड़कियोंको पढ़ाया नहीं, तो उन्हें भीख भी नहीं मिलेगी। फिर लड़कियोंके ब्याहके लिए दहेजका रुपया कहाँसे आये? इनके घरके घर तपेदिकमें उजड़ जाते हैं। ठीकसे खाना नहीं, चिन्ता के मारे दिन-रात कलेजा सुलगता रहता है, दवाका भी ठिकाना नहीं है, इतने कमजोर सरीरमें तपेदिक क्यों न घुसे? ठीक कहता हूँ दुक्खू भाई! बाबू लोगोंके घरके घर साफ़ हो गए।

दुखराम—मैं तो समझता था भैया! कि बाबू लोग बहुत अच्छी तरहसे होंगे; खूब लोगोंसे रुपया ऐंठते हैं।

भैया—सौ में पाँच तो सभी जगह अच्छे मिल जायंगे। जानते नहीं हो वकालत पास करके फिर कचहरीमें आधे लोग सिर्फ मक्खी मारने जाते हैं। इधर-उधरसे माँग-जाँचके पैसे दो पैसेका पान खाकर मुँह पर रोब और रोसनी लाना चाहते हैं? लेकिन दुक्खू भाई! रोसनी मुँहमें खैर-चूना लपेटनेसे नहीं आती। जब आदमी को पेट भर खाने को मिलता है, निश्चिंत रहता है, रोसनी अपने आप झलकने लगती है। तुम समझते होगे कचहरीके मुहर्रिर, थाना-

के मुंशीजी—जिनसे तुम्हें भी कभी पाला पड़ा होगा—

दुखराम—हाँ, भैया ! वह तो अपने बापसे भी पैसा लिए बिना नहीं छोड़ते, हड्डी पेर कर पैसा निकालते हैं।

भैया—तो उनका ऐसा करना क्या हद दरजेका कमीनापन नहीं है ? गरीब आदमी किस्मतका मारा न्याय पानेके लिए थाना-कचहरी जाता है। और उसे जेवर बेंच कर, खेत रेहन रख कर रुपया लानेके लिए कहा जाता है।

दुखराम—देह बेंच कर देना पड़ता है भैया ! क्या करें, नहीं तो जेल भेज दें, मुकदमा खराब कर दें।

भैया—यह तो पापकी कमाई है न दुक्खू भाई ! लेकिन आदमी क्यों ऐसा करता है ? इसीलिए न कि तनखासे उसका पेट नहीं भरता। उसे अपने बाल-बच्चोंको पढ़ाना है, और सबसे बड़ी आफत है, आजकल लड़कियोंका ब्याह करना। बाबू लोगोंके लड़के बिना पढ़ी-लिखी लड़कीसे ब्याह नहीं करते, इसलिए लड़कीको भी पढ़ाना पड़ता है।

सन्तोखी—बनारसमें हमारी अग्रवाल बिरादरीके हैं एक भाई, जिनकी लड़कीने एम० ए०, बी० ए० पास किया है।

भैया—हाँ, कोई-कोई लड़कियाँ एम० ए०, बी० ए० भी पास कर लेती हैं। माँ-बाप तो चाहते हैं कि बारह-तेरह ही वर्षमें ब्याह हो जाय, लेकिन जानते हो न लड़कोंका मोल-भाव ! तिलकदहेज नहीं जुटता आजकल करते दिन बीत जाता है। लड़की पढ़ने में लगी है, वह कहते हैं, चलो तब तक पढ़ती रहे। फिर जानते हो न विद्याका चसका। जब आँख पर पट्टी बँधी रहती है, तो मरद हो चाहे मेहरी, उसको दुनियाँ-जहानका कोई पता नहीं रहता, लेकिन विद्या आँख खोल देती है। कुछ पढ़ लिख लेने पर लड़कीको अपने विद्याके घरमें सजाकर रक्खे जगमग जगमग करते रतन दिखाई देने लगते हैं। उसे खुद और पढ़नेका लोभ हो आता है और जब बेचारी एम० ए० बी० ए० पास कर लेती है, तो ब्याह होना और मुश्किल हो जाता है।

सन्तोखी—क्यों भैया ! जब बाबू लोगों को बहुत पढ़ी-लिखी से ब्याह करनेके लिए तो और उतावला होना चाहिए।

भैया—घबराते हैं, घबराते मेहरी जो एम० ए०, बी० ए० तक पढ़ी होगी, उसके दिमागमें गोबर नहीं न भरा रहेगा ? वह खुद अदबसे बात करेगी। लेकिन बाबूको भी अदब सीखना होगा। वहाँ "ढोल गँवार सूद्र पसु नारी" से काम नहीं चलेगा ! झूठा रोब भी नहीं गाँठा जा सकेगा।

दुखराम—एम० ए०, बी० ए० की क्या बात कर रहे हो भैया ! हमारी बुधुआकी माईको नहीं देखते, बलिस्टर बन जाती है बलिस्टर। मुँहसे बात नहीं निकलने देती। उसके सामने हम ढोल गँवारकी बात कर सकते हैं ?

भैया—इसीसे समझ जाओ, ज्यादा पढ़ी लिखी औरतको ब्याहनेसे बाबू-भैया लोग क्यों घबड़ाते हैं। अभीसे पचास-पचास वर्ष तक कुँवारी बैठी रहनेवाली मेहरियाँ देखी जाने लगी हैं, आगे न जाने क्या होगा।

दुखराम—तो माँ बापके लिए भी बड़ी चिन्ता है।

भैया—कुफुत है कुफुत, तीस ही पैंतिस बरसमें बाबू लोग बूढ़े हो जाते हैं, इसी सब चिन्ताके कारन। लड़कियाँ तो ब्याहे बिना जवानी बिताने लगती हैं और लड़कोंको जल्दी ब्याह कर देनेके लिए लड़कीवाले घेरने लगते हैं। बापको ऐसे ही गिरस्ती चलाना मुस्किल है, ऊपरसे लड़केकी बहू बनकर एक और घरमें पहुँच जाती है।

दुखराम—और वह अकेलीभी तो नही रहती।

भैया—बस बरसही भर बादसे घर में नए-नए मुँह आने लग जाते हैं। पहिले जितने मुँह थे, उन्हींके खानेका ठिकाना न था, अब पोता-नाती और बढ़ने सुरू होते हैं। फिकरकी बात क्या पूछते हो ? हर बखत मन परेसान रहता है, फिर घरमें बिना बातहीका झगड़ा क्यों न होता रहे। मेहरी मर्दसे लड़ती है बाप बेटासे लड़ता है और सब आपसमें लड़ते हैं, मार-पीट, गाली-गलौज क्या कोई बात उठा रखते हैं ? सारा मुहल्ला सुनता है, ज्यादा सिर-विर फूटा या किसीने अफीम-संखिया खा ली, तो जेलकी भी हवा खानी पड़ती है। यह घर नरक नहीं तो क्या है ?

सन्तोखी—हाँ भैया ! मेरे भी सहरमें कुछ रिस्तेदार हैं। हमको तो आँखका

गंवार समझ कर नाक-भौं सिकोड़ते हैं, लेकिन मैं जानता हूं, कि चूना-कली किए उनके सफेद घरो, धोबीके घरसे, बगुलेके पर जैसे धुले कपड़ोंके भीतर आग धाँय-धाँय जल रही है, चिन्ताके मारे परेसान हैं। व्यापार मन्दा, दिवाले का डर, सिर पर महाजन, घरमें लड़की सयानी। क्या करें बेचारे, यही सोचते हैं कि किसको लूटें, किसको मारें।

भैया—देखा न दुक्खू भाई! जो सफेद दिखाई देता है, उसके भीतर भी ढोलकी पोल है। चालिस-पचास पानेवाले बाबुओंकी बात नहीं, जो चार-सौ पाँच-सौ पानेवाले बड़े-बड़े हाकिम हैं, उनके घरमें भी नरककी आग धाँय-धाँय जल रही है।

दुखराम—चार-पाँचसौ रुपया महीना जो पाएगा उसको क्या दुख होगा भैया?

भैया—चार-पाँच सौ पानेवालेके घरमें मेहरी बच्चे मिलाकर चार पाँच आदमी तो होंगे। कितना ही बच्चा पैदा करनेसे हाथ रोके, लेकिन घरमें इतनेसे कम परानी कहाँ होंगे?

दुखराम—हाथ रोकनेकी बात क्या है भैया! बाल-बच्चा देना भगवानके हाथमें है।

भैया—भगवान अपने कितनेही कामोंसे इस्तीफा दे चुके हैं, हमारे सामने नहीं, उन लोगोंके सामने, जो भगवानकी नस-नाड़ी पहचानते हैं। एक बुन्द पुरुखका और एक बुन्द तिरियाका दोनों मिलकर बच्चा पैदा होता है आजकल बहुतसे तरीके निकल आए हैं, जिनके इस्तेमालसे दोनों बुन्द मिलने ही नहीं पाते। लेकिन अभी हमारे देसमें पुरुखोंमें न हो, लेकिन तिरियोंमें पूतकी लालसा वेसी होती ही है। इसलिए चार-सौ पाँच-सौ पानेवाले हाकिमके घरमें भी चार-पाँच परानी तो होते ही हैं। बेचारोंको आदमीका धरम छोड़ना पड़ता है।

सन्तोखी—धरम क्यों छोड़ना पड़ता है भैया?

भैया—माँ-बापने पढ़ाया-लिखाया कि लड़का कमाएगा, तो बुढ़ापेमें उनकी भी खबर लेगा। एक उदरसे पैदा हुए भाई-बहिनोंने समझा था कि

यह हमारे अपने हाड़-माँस हैं, लेकिन हाकिम बनते ही लड़केकी आँख बदल जाती है। उसे जज साहबसे हाथ मिलाना है उसे कलट्टर साहब के सामने पूँछ हिलाना है। अच्छा कोट चाहिए, अच्छा बूट चाहिए, नहीं तो दरसन मिलना मुसकिल हो जायगा। यहींसे लिवास और लिफाफा बढ़ना सुरू होता है। पाँच सौमें चार सौ तो बँगला-भाड़ा, टोप-कोट, घोड़ा-गाड़ी या मोटर ही पर खर्च हो जाते हैं—आजकल लड़ाईके दिनोंकी तो बातही मत पूछो। फिर बताओ सौ रुपयेमें अपने खाएँ, बीबी-बच्चोंको खिलाएँ या नौकर चाकर को ?

सन्तोखी—तो वहाँ भी सचमुच लिफाफा ही है !

भैया—लिफाफा मत कहो, सन्तोखी ! वहाँ भी नरककी आग धाँय-धाँय कर रही है। बेचारे माँ बापकी भी आसा तोड़ते हैं, भाई-बहिनकी ओरसे भी तोताचसम बनते हैं; सिरिफ अपना और अपने अंडे-बच्चेका ख्याल करते हैं। तुम्हीं बताओ, बचे सौ रुपयेमें वह और क्या कर सकते हैं ? वह मजबूर हैं, पढ़े-लिखे आदमीसे जानवर बननेके लिए। लोग कहते हैं कि यह परले दरजेकी खुदगरजी और कमीनापन है। लेकिन बेचारे करें तो क्या करें ? जो लिफाफामें कम करें तो बड़े अफसर—खास करके अँगरेज—घिनकी नजरसे देखेंगे, फिर आगेकी तरक्की-बरकीकी आसा गई ! नहीं तो घूँस रिसवत लें।

सन्तोखी—इतनी इतनी तनख्वाह पानेवाले हाकिमोंको तो रिसवत नहीं लेनी चाहिए।

भैया—मैंने लेखा-जोखा बतलाया न ? उसीसे लेना पड़ता है। पाँच सौ वाले भी लेते हैं, पाँच हजारवाले भी लेते हैं और पचीस हजारवाले भी, इस दुनियांमें घूँस-रिसवत का बाजार ही सबसे तेज है। सब इसे जानते हैं, सब एक दूसरेकी आँखमें धूल झोंकना चाहते हैं, कहीं-कहीं इस घूँस-रिसवतका नाम है बड़ा-बड़ा भोज और मेम साहबकी अंगुलीमें हजारोंकी अँगूठी, लाखों की मोती रतन-माला।

सन्तोखी—भैया ! मैं क्या सुन रहा हूँ ?

भैया—चुपचाप सुनते जाओ, बड़े घरोंकी बड़ी पोल, बड़ी फिकर, बड़ी

दोजखकी आग। सब जानते हैं कि घूँस-रिसवत बुरी चीज है। कभी-कभी पकड़े जानेपर सबसे बड़ी मछलियोंको तो कुछ नही होता, लेकिन छोटी-मझोली मछलियों पर हाथ उठाना पड़ता है, आखिर न्यायका ढोंग तो कुछ दिखलाना ही पड़ेगा। लेकिन दुक्खू भाई! तुम खुद समझ सकते हो कि जो सौकी आमदनीपर डेढ़ सौ खर्च करनेकेलिए मजबूर है और उसे घूँस रिसवत, जैसे भी हो तैसे, पूरा करना चाहता है, उसका चित्त शान्त होगा या अशान्त, वह भयभीत होगा या निरभय!

दुखराम—वह भीतर ही भीतर काँपता रहेगा भैया!

भैया—फिर उसकी जिनगी सुखकी जीनगी नहीं हो सकती, चाहे उसके मुँह पर मुस्कुराहट दीख पड़ती हो। चाहे उनके चारों ओर सुन्दरताई फैल रही हो। इन बड़े लोगोंके लड़के-लड़कियाँ बड़े ठाटमें पलते हैं। लड़कियों को इन्द्रपुरीकी परी बनानेका उद्योग बचपन हीसे सुरू हो जाता है। जवानी में पैर रखते-रखते वह अप्सरा बनभी जाती हैं लेकिन कितना मँहगा सौदा।

सन्तोखी—सहरमें जाता हूँ तो मैं भी कभी-कभी इसे देखता हूँ। मेरी ही जातिके लोग हैं, जातिके चौधरी हैं, उनकी ओर उँगली कौन दिखला सकता है। लेकिन जान पड़ता है सील-संकोच, धरम-करमसे उन्हें वास्ता नहीं।

भैया—लेकिन सन्तोखी भाई! तुम समझ रहे हो कि यह अपने मनसे ऐसा करते हैं। नहीं, ऐसा नहीं, बड़े दामाद चाहिए, दामाद अप्सरायें पसन्द करते हैं, नाच गाना, हाव-भाव चाहते हैं। जो यह सब बातें लड़कीमें न हों, तो उसे कौन पूछेगा। इतना होनेपर भी तो कितनी ही लड़कियोंको कुँआरी ही जीनगी बिता देनेके लिए मजबूर होना पड़ता है।

सन्तोखी—नहीं भैया! मैं यहाँ तुम्हारी बातको नहीं मानता। जो साहब-बहादुर बन जाते हैं, उनमें बराबर एक दूसरेकी औरत भगा ले आनेका रोग होता है।

भैया—रोगसे तुम्हारा मतलब है महामारी? लेकिन ऐसी महामारी नहीं है। यह लोग हैं तो हमारे देसके, लेकिन इनका दिमाग सातवें आसमान पर

रहता है। कलट्टर हो गए, पन्द्रह सौ रुपयेमें अपनी देह और आत्माको विदेसियोंके हाथमें बेंच दिया, इसके लिए उन्हें सरम होनी चाहिए थी; लेकिन यह हमारे भाई—काले साहब—गोरोंका भी कान काटते हैं और हम लोगोंको जंगली, उजड्ड गँवार समझते हैं। हमभी आदमी हैं, हमभी समझते हैं, आखिर "हित अनहित पसु पच्छिहु जाना"। हम उनसे घिना करते हैं।

सन्तोखी—यह बात ठीक कही भैया।

भैया—और जब आदमीके दिलमें घिना हो जाती है, तो सदा छिद्दर ढूँढ़ने लगता है, और जरा भी छिद्दर मिल गया, तो बातका बतगड़ बना डालता है। मैं मानता हूँ कि इनमें कभी-कभी एक दूसरेकी औरतको भगाने-की बात भी देखी जाती है। लेकिन वह भी क्यों? उन्हें अप्सरा बनाओ, उन्हें यूरुपवालोंके लिखे गन्दे-गन्दे उपन्यास पढ़वाओ या सिनेमाकी रासलीला दिखलाओ। पुरुखोंको तो कचहरीके दफ्तर में कुछ कामभी रहता है, इनकी तिरियोंको तो कोई काम भी नहीं रहता। काम करने लगें, तो मक्खनसे हाथ कहाँ रहें। बेकार रहनेका मतलब है, दिलमें हमेसा खुराफात पैदा करना, इसके बाद दूसरे भी लोभ होते हैं। किसीके पास दो हजारकी मोटर है तो किसीके पास दस हजारकी। किसीके पास इतना पैसा नहीं कि नैनीताल-मंसूरी जाय और कोई वहाँ जाकर ५०) रोज खर्च कर सकता है। किसीके लिए २०) की साड़ी खरीदना मुस्किल है और कोई दो सौकी साड़ी ले सकता है, जो सिनेमा सुन्दरियोंके सरीर पर देखी जाती हैं। यह निठल्लापन लोभ और उपन्यासों की कामुकता कारन हैं, जिनसे तिरियोंके भागनेकी नौबत आती है। इनके घरोंकी लड़कियोंकी तो और दुरदसा है। वह सिरिफ माता-पिताके भरोसेपर पति नहीं पा सकती इसीलिए उन्हें अप्सराकी तरह सजना पड़ता है।

सन्तोखी—यह ठीक कहा भैया! हमने अब तक सुना था, कि महावर पैर में लगाया जाता है, लेकिन अब सुनते हैं, कि इनके घरकी लड़कियाँ ओठमें भी महावर लगाती हैं।

भैया—इनका सारा जीवन नाटक है सन्तोखी भाई! और सुखका नाटक सायद सौमें दो-चारका, बाकी सबकाही दुखका नाटक है। लड़की को पढ़ाया-

लिखाया, बी० ए०, एम० ए० कराया । बंसी फेंकी जा रही है कि कोई कलट्टर मजिस्टर या लाख-दो-लाख वाला आदमी फँसे, लेकिन यह सबके भागकी बात तो नहीं है । उनके लड़कोंकी तो और बुरी हालत होती है ।

दुखराम—लड़कोंका मिजाज तो बापसे भी बढ़-चढ़ कर होता है ।

भैया—यही मिजाज तो उनके लिए और घातक होता है । यह पान-फूल की तरह पाले-पोसे जाते हैं, मेम लोगोंके इस्कूल-में पढ़नेके लिए भेजे जाते हैं, यह नहीं हुआ तो देवफोफी-समाज वालोंके इस्कूलमें जाते हैं ।

दुखराम—देवफोफी-समाज क्या है भैया ?

सन्तोखी—अरे सखीसमाजकी तरह कोई होगा ?

दुखराम—यह सखीसमाज क्या है सन्तोखी भाई ?

सन्तोखी—अरे तुम तो गाँवसे बाहर कहीं जाते भी नहीं ।

दुखराम—वही एक बार कलकत्ता गया था, बरस दिन चटकलमें काम किया, बीमार होकर घर पर आया, बचनेकी उम्मेद नहीं थी । अब यहीं पुरखों के गाँवमें मट्टी पीट-पाट कर चाहे आध पेट खायें चाहे भूखे रहें ।

सन्तोखी—अयोध्यामें एक बार हम गये थे, हमारे बनारसके रिस्तेदार थे, महात्माका दरसन कराने ले गये । लेकिन महात्माको देखकर देहमें आग लग गयी । मेहरीकी तरह सोलहों सिंगार करके बैठे थे—आँखमें मोटा-मोटा काजल, सिरमें टीका, मटक-मटक कर चलना, मीठा-मीठा बोलना । मैंने उनसे पूछा—"वह महात्मा कहाँ है ?" उन्होंने मेरा हाथ पकड़ कर कानमें कहा—"चुप, यही तो महात्मा हैं ।" पीछे बतलाया कि यह महात्मा रामजीसे मिल चुके हैं । रामजी रोज इनके पास आते हैं ।

दुखराम—धत्तेरे की ! रामजी राजा रहे, उनको हजार-हजार सुन्दर जोरू मिल जातीं, लेकिन सीताजीको छोड़ कर किसीकी ओर नजर उठाकर नहीं देखा, वह भला इन जनखे मर्दोंके पास आयेंगे ! मैं होता, सन्तोखी भाई ! तो कुछ जरूर बोल उठता ।

सन्तोखी—कुफुत तो मुझेभी हो गई थी, क्या करता रिस्तेदार का ख्याल करके चुप रह गया । यह लोग अपनेको सखी कहते हैं ।

दुखराम—तो यही है सखी समाज, और देवफोफी समाज भी इसी तरह का क्या कोई है भैया ?

भैया—कुछ फरक है, सखी समाज हमारे काले भाई लोगोंकी करतूत है और देवफोफी समाज गोरे लोगोंकी।

सन्तोखी—किरिस्तानका धरम तो नहीं है ?

भैया—नहीं सन्तोखी भाई ! यह सतनजा है सतनजा। कुछ हिन्दू धरमसे लिया, कुछ किरिस्तानसे लिया, कुछ मुसलमानसे लिया। लेकिन इतना ही रहता तो कुछ काम चल जाता।

सन्तोखी—तब तिननजा ही न रह जाता। सतनजा कैसे बना भैया ?

भैया—अरे इन्होंने ओझा-सोखा भूत-परेत, चुड़इल-डाइन सब मिलाकर बहुत बड़ा धरम खड़ा कर दिया।

दुखराम—बहुत बड़ा धरम, यह तो ताड़से भी बड़ा धरम होगा। तो पढ़े-लिखे लोग यह ओझा-सोखा, भूत-परेत वाली बात मानते हैं।

सन्तोखी—देवफोफी सुना नहीं है, नाम देवता लोगोंसे बात करनेकी फोफी है, इसलिए न भैया ! नाम देवफोफी पड़ा है ?

भैया—नाम तो वह लोग थेयोसोफी कहते हैं, लेकिन मतलब वही देवफोफीका।

सन्तोखी—तो देवफोफीका भी अपना स्कूल है भैया ?

भैया—देवफोफीके स्कूलमें मामूली घरके लड़के थोड़े ही पढ़ सकते हैं, बड़े घरके लड़के जाते हैं। हवा-बतास धूप-घामसे बचाकर उनको रखा जाता है।

दुखराम—तब तो एक ही झकोरामें मुरझा जायेंगे ?

भैया—मुरझा तो जाते ही हैं। हाकिमके लड़के हैं तो हाकिम भी तो हजारों हैं और सबके घरमें दो-दो चार-चार लड़के हैं। एम० ए०, बी० ए०, तो किसी तरह ठोंक-पीटकर खुशामद-बरामद करके बना लिए जाते हैं लेकिन सबको नौकरी कहाँ से मिले !

सन्तोखी—तब बैठे-बैठे मक्खी मारते होंगे।

भैया—मक्खी मारना भी तो इन्होंने नहीं सीखा। लड़की होते, तो शायद कभी भाग भी खुल जाता। राजकुमारकी तरह पाले गये, मिजाज आसमान पर रहा। पढ़-लिखकर तैयार हुए, तो बड़ी नौकरी मिली नहीं, पचास-पचीस-की मुहर्रिरीपर मन ही नहीं जाता। बापके मत्थे खाये। पेंसिन ले ली, तो घर-का चलाना और मुश्किल और दो-चार बेटा-बेटी गलेमें लटक गये बस।

दुखराम—जीते ही नरक।

सन्तोखी—तो मालूम होता है सब जगह यही हाल है।

दुखराम—हम तो अपना ही दुख देखकर दुनियाको नरक कहते थे।

भैया—नहीं दुक्खू भाई! नरककी आग घर-घर जल रही है, किसीका घर आज बचा हुआ है तो कल नहीं बच पायेगा।

सन्तोखी—शायद राजा-महाराजा लोग अच्छी हालतमें होंगे, उनके पास बहुत धन...

भैया—बहुत रानी-महारानी रंडी-मुंडी नौकर-चाकर होते हैं, इसलिए उनके यहाँ बैकुंठ है यही न कहते हो सन्तोखी भाई? लेकिन जानते हो न? इन्दौर निकाले गये, अल्वरके महाराज निकाले गये, नाभावाले न जाने कहाँ जाकर मरे।

दुखराम—बिल्लाइतके बादसाह तो बहुत सुखसे होंगे भैया?

भैया—मैं कब कहता हूँ कि सौ में दो-चार आदमी भी सुखी नहीं मिलेंगे। लेकिन कलके लिए निश्चित, ऐसा सुख तो दोरंगी दुनियामें कहीं नहीं है। तुमने सुना नहीं है दुक्खू भाई! अभी बहुत दिनकी बात तो नहीं है, बिल्लाइतके बादसाह प्रिंस आफ वेल्स निकाल दिये गये।

सन्तोखी—हाँ, हाँ! आजकल जो बादसाह हैं, इन्हींके तो बड़े भाई थे और सिर्फ ब्याह करनेके कसूरमें।

दुखराम—ब्याह करनेमें कौन कसूर था भैया?

भैया—कसूर तो नहीं था। बेचारा कुँआरा था, अपने मनकी जोसे ब्याह करना चाहता था।

दुखराम—साहब लोग तो अपने मनका ब्याह करते ही हैं फिर इसमें क्या

बुराई थी ?

भैया—साहब लोग कर सकते हैं लेकिन बादशाह नहीं।

दुखराम—कलकत्तामें सुना था कि टोप-टोप सब एक जाति होती है।

भैया—बिलायतमें भी राजाका खून दूसरा होता है और परजाका दूसरा।

दुखराम—तो राजाका खून लाल नहीं सुनहले रंगका होगा ?

भैया—खून तो सबका ही लाल होता है लेकिन कोई समझता है हमें भगवानने दाहिने हाथसे बनाया है और दूसरेको बाएँ हाथसे।

सन्तोखी—तो साहेब लोगोंमें भी बेवकूफोंकी कमी नहीं है ?

भैया—चालाकोंकी कमी नहीं है कहो, इसे मैं पीछे बताऊँगा। जैसे हमारे घर-घरमें नरक बन गया है वैसे ही बिलायतमें भी है।

सन्तोखी—सुनते हैं कि अरब रुपया हर साल हिन्दुस्तानसे दूर बिलायत जाता है फिर वहाँ के लोग इतने तकलीफमें क्यों हैं ?

भैया—वह सब रुपया बिलायतके चारो करोड़ आदमियोंमें नहीं बाँटा जाता। वहाँ पाँच सौ छः सौ परिवार हैं जो करोड़पति अरबपति हैं। ताल-तलैया ऊबर-डाबर, नदी-नाला, सबका पानी बहकर समुद्रमें चला जाता है; वैसे ही दुनियाके बहुतसे भागका और हिन्दुस्तानका भी धन पाँच सौ-छः सौ परिवारोंके पास चला जाता है। बिलायतमें तो गरीबी और असह हो जाती है। १६३०-३१ में तीस-तीस चालीस-चालीस लाख आदमी बेरोजगार हो गए थे, दस-पाँच लाख आदमी तो वहाँ बराबर ही बेरोजगार रहते हैं। वहाँ बेरोज-गार रहनेका मतलब और भी साँसत। बारह आनेमें जहाँ एक प्याला चाय और एक टुकड़ा रोटी मिले वहाँ नातेदार-रिश्तेदार भी कैसे किसीकी खातिर कर सकते हैं। लोग बुरी तरहसे मरते हैं।

दुखराम—जैसे बंगालमें साठ लाख आदमी मर गए।

भैया—नहीं, वैसा हो तो दूसरे ही दिन उन छः सौ परिवारोंके महलों-दरबारोंको लोग जमीनसे खोदकर फेंक दें। इक्के-दुक्के करके हजारों आदमी मरते हैं। कोई रेलके नीचे कटकर मरता है, कोई गैसका पाइप खोलकर नाक रखकर मर जाता है, कोई टेम्स नदी या समुन्दरके हवाले

अपने शरीरको कर देता है। छः सौ परिवार और उनके साथी समाजी घबड़ा कर खैरात बाँटने लगते हैं।

दुखराम—खैरात खाके जीना तो और बुरा है।

भैया—बुरा है, वह भी नरकका जीवन है, लेकिन जीवन बहुत प्रिय है, नरकवाले भी जीवनको छोड़ना न चाहते होंगे।

दुखराम—तो घर-घर मट्टीका चूल्हा है, किसीके यहाँ सोनेका चूल्हा नहीं है?

भैया—हाँ ज्यादातर मट्टीका ही चूल्हा है, और जिनके पास आज सोने-का चूल्हा है, उनके बेटे-पोतोंके लिए ठिकाना नहीं है कि मट्टीका भी चूल्हा मिलेगा।

दुखराम—तो मैंने ठीक कहा न? दुनिया नरक है।

भैया—नरक है लेकिन बनानेसे नरक बनी है।

अध्याय २

दुनिया क्यों नरक है?

दुखराम—सन्तोखी भाई, कल रात तो बहुत देर हो गई थी, लेकिन भैया ने बात खूब बतलाई।

सन्तोखी—हम लोगोंको दुक्खू भाई! दुनिया जहानका क्या पता है, हम तो गूलरके कीड़े हैं, हमारी दुनिया बस उतनी ही बड़ी है। लेकिन भैया रज बली कितना समझा-समझाकर बतलाते हैं। नरक-नरक तो हम सुनते चले आए थे।

दुखराम—लेकिन सुना न भैयाने क्या कहा था?

सन्तोखी—हाँ, कि दुनिया नरक बनानेसे बनी है। अच्छा अब सावधान हो जाओ भैया आ गए।

भैया—कहो, दुक्खू भाईको रातको तो सोनेका बखत बहुत कम मिला होगा।

दुखराम—बखत ही कम मिला था भैया ! फिर दो घड़ी दिन गिरे तक हल चलाते रहे, हल छोड़कर एक घन्टा सो लिये हैं। तुम्हारी बात सुननेका बहुत मन रहता है भैया।

भैया—मैं किस्सा कहानी नहीं कहता दुक्खू भाई ! दुनिया नरक है, यह तो बहुत दिनसे सुनते आए हैं, लेकिन अब जानना है कि यह दुनिया नरक क्यों बनी। किसने बनाई। इसके बाद हमें यह भी जानना होगा, कि दुनिया अच्छी कैसे बनाई जा सकती है।

सन्तोखी—हाँ भैया ! हम वही सुनना चाहते हैं, और हमारी तागत ही क्या है, लेकिन जो बन पड़ेगा करेंगे। सुना है जब कन्हैयाजीने गोबरधन उठाया था, बालगोपालोंने भी अपनी-अपनी लाठी लगा दी थी।

भैया—कन्हैयाजीका गोबरधन नहीं है सन्तोखी भाई ! यह है दुक्खू भाई की छान।

दुखराम—दस-पाँचका हाथ लगनेसे छान भी उठ जाती है भैया।

भैया—बस यही बात है सन्तोखी भाई ! लाखों हाथ लग जाएँगे, तो बिगड़ी दुनिया बन जायेगी। लेकिन पहले तो यह देखना है कि दुनिया नरक कैसे बनी ! घाघकी कविता सुनी है न।

"गेहूँक रोटी जड़हनेके भात।
गल-गल नेमुआँ औ घिउवा तात।
तिरछी नजर परोसे जोय।
ई सुख सरग पैठिले होय।"

दुखराम—हाँ भैया ! गेहूँकी रोटी महीन चावलका भात गरम घिउ हरख-प्रसन्नसे अपनी स्त्री परोस कर खिलाए, नीमूँ न भी रहेगा तो भी यही दुनिया बैकुंठ हो जायेगी।

भैया—तो दुनियाको बैकुंठ बनानेके लिए कौन चीजकी जरूरत है ? पेट भर खानेको मिले अच्छा अन्न, घर भरको लाज ढाँकने जाड़ा गर्मीसे बचनेके लिए कपड़ा मिले; घरनीके मुँहपर चिन्ता और फिकिरकी छाँह न पड़े। इतना हो जानेपर दुनिया नरक नहीं न रह जायगी ?

दुखराम—चिन्ता न रहे, घर भरको सुन्दर कपड़ा-खाना मिले, फिर क्या चाहिए भैया ?

भैया—दुक्खू भाई हमारे गाँवकी बगलमें यह गड़ही है न ?

दुखराम—हाँ भैया ! यह भी नरक है। जब माघ फागुनमें पानी सूख जाता है, तो गाँव भरके पाखानेकी जगह बन जाती है, गाँव भरकी छुतहर हाँडी और सब गन्दी-गन्दी चीज इसीमें फेंकी जाती है, असाढ़में पानी यदि खूब जोरका नहीं बरसा, तो सब बज-बज करने लगता है।

भैया—अभी हम बजबजकी बात नहीं कहते, यह गड़ही बनती क्यों है ?

दुखराम—हम लोग घर बनानेके लिए मिट्टी जो निकालते हैं।

भैया—तो यह जो पासमें ऊँचे-ऊँचे घर खड़े हैं। इसीलिए न यह जमीन गड़ही बन गई ? इसी तरह तुमको जो खाना नहीं मिल रहा है, नंगा रहना पड़ता है वह क्यों ? तुम जितना गेहूँ अपने खेतमें पैदा करते हो, यदि सब तुम्हारे पास रह जाय तो गेहूँकी रोटी मिलेगी कि नहीं ?

दुखराम—मिलेगी ! हम एक सालकी कमाई दो साल तक खायेंगे। लेकिन हमारे पास गेहूँ रहने कहाँ पाता है ? खलिहानमें उतनी बड़ी रासि देखते हैं, लेकिन बैसाख बीतते-बीतते घरमें चूहे डंड पेलने लगते हैं, न जाने कहाँ वह रासि अलोप हो जाती है ?

भैया—कहाँ अलोप हो जाती है, क्या तुम जानते नहीं हो ? जो सब रासी तुम्हारे पास रहे तो कुछ गेहूँको दुक्खू अहीरको देकर तुम घी भी ले सकते हो कुछसे अपने लिए कपड़ा भी खरीद सकते हो ! लेकिन आधेसे बेसीको बेचकर तो तुम मालगुजारी भी नहीं दे पाते। फिर जमींदारकी हर-हकूमत, जरिवाना-सलवाना, पटवारी-मुन्सीको घूँस-रिसवत, थानेदारको माल-मलीदा, कचहरीके वकील-मुख्तारको मुँहसुँघाई, और सैकड़ों तरहके दूसरे खर्च किये बिना तुम्हारी जान नहीं बचेगी।

दुखराम—और आजकल लड़ाईके लिए तो और पचास तरहके डंड लगे हुए हैं। सरकारको चन्दा दो, लड़ाईमें खर्चा दो, नहीं तो तहसीलदार साहेब आँख निकाल लेंगे, थानेदार एक सौ दसमें चलान करनेकी धमकी देंगे। एक

आफत है हम लोगोंके सिर पर ?

भैया—तो तुम्हारे सामनेकी परोसी थाली खींच ली जाती है न ?

दुखराम—हाँ भैया ! यही कहना चाहिए। परोसी थाली तो खींच ली ही जाती है।

भैया—दुनियामें जितना धन है उसको पैदा करते हैं कमेरे लोग। किसान न हों तो मिट्टीका सोना कौन बनावे ?

दुखराम—हाँ, गेहूँ सोनासे भी बढ़कर है। अनाज न रहे तो सोना खाकर कोई नहीं जी सकता है, न सोना पहनकर जाड़ा काट सकता है !

भैया—मजूर न रहें तो चटकल-पटकलमें सूत कौन कातेगा ? तांत (करघा) कौन चलाएगा ? किसान कपास पैदा करता है, उसीका भाई मजूर कपड़ा तैयार करता है। लेकिन दोनोंको तन ढाँकनेके लिए पूरा कपड़ा भी नहीं मिलता।

दुखराम—दस रुपया जोड़ा धोती कौन खरीदेगा भैया ?

भैया—दस रुपया नहीं कुछ ही दिन पहले पन्द्रह-सोलह रुपया जोड़ा धोती बिकती रही है। आध सेर कपास लगा होगा, किसानको आठ आना दे दिया। मजूर ताँत पर दिनमें दो जोड़ेसे भी बेसी कपड़ा बुन सकता है। मँहगाई मिलाके तीस रुपया महीना मिलने पर धोतीके दाममेंसे आठ आना मिला।

सन्तोखी—आठ आना आठ आना, एक रुपया तो भैया ! चौदह रुपयाके धोती जोड़ामें एक रुपया न मजूर किसानको मिला, बाकी तेरह रुपया !

भैया—बाकी तेरहका हिसाब समझ लोगे तो पता लग जायगा कि इस दुनियाको नरक किसने बनाया। लड़ाईसे पहिले यह धोती जोड़ा साढ़े तीन-चार रुपयेमें मिलता था, उस वक्त किसान मजदूरको दस-बारह आना मुश्किलसे मिलता था, बाकी तीन सवा तीन रुपया उड़ जाते थे।

सन्तोखी—पहले तीन सवा तीन रुपया उड़ जाते थे, अब तेरह-तेरह रुपये और धोतीके बनाने वाले हैं मजूर-किसान !

भैया—किसी चीजके पैदा करनेमें जो देह गालता है, खून-पसीना एक करता है, वह है कमकर, कमेरा, कारीगर। घरके लोग काम कर रहे हों और

कोई आदमी छाँहमें बैठा रहे तो उसे क्या कहेंगे दुक्खू भाई ?

दुखराम—जांगरचोर कहेंगे, कामचोर कहेंगे, देहचोर कहेंगे और क्या कहेंगे भैया ? घरके लोग खून-पसीना बहा रहे हों और वह छाँहमें बैठा सोवे, वह भी कोई आदमी है ?

भैया—और, दुक्खू भाई ! जो वह कहीं शामको आकर कहे कि हम तो बासमतीका भात खायेंगे दालमें एक छटाँक घी डालकर, और उसके साथ आधासेर सजाव दही भी चाहिए, नेबुआ भी चाहिए, और छम-छम करके कोई गोरी परोसनेके लिए आए। तब क्या कहोगे दुक्खू भाई ?

दुखराम—कहनेकी बात पूछ रहे हो भैया ? उस कामचोरसे एक भी बात नहीं कहेंगे, उसका दोनों कान पकड़ेंगे, गाँवके सिवानेके बाहर ले जाएँगे और गालपर खूब जोरसे दो-दो थप्पड़ लगाएँगे। फिर कहेंगे—"कामचोर, जा मुँह काला करके चला जा, फिर हमारे घरकी ओर मुँह नहीं करना।"

भैया—तुम्हारा बेटा जीवे दुक्खू भाई। तुमने ठीक किया और ठीक कहा। किसान-मजूर, कमकर हैं, कामचोर नहीं हैं, उनके पल्ले पड़ा रुपया बारह आना और तेरह रुपया कामचोरोंके हाथमें गया, जो बासमतीका चावल खाते हैं, जिनकी थालमें गोरी छम-छम करके घी और सजाव दही परोसती है। वह तुमसे माँगने नहीं आते, तुम्हारे सामने हाथ नहीं पसारते कि तुम उनका कान पकड़कर गाँवकी सीमाके बाहर कर आओ।

सन्तोखी—भैया ! हम लोग तो छोटी-मोटी दौरी-दूकान करते हैं, रुपयेपर एक पैसा मिल गया तो उसीको बहुत समझते हैं। लेकिन एक असली काम करनेवालोंको एक रुपया थमाकर तेरह रुपया अपनी जेबमें रख लेना यह रोजिगार नहीं है भैया ! यह तो सीधी लूट है !

भैया—लेकिन यह तेरहों रुपया एक आदमीकी जेबमें नहीं जाता सन्तोखी भाई ! इसमें बहुत लोगोंको हिस्सा मिलता है।

दुखराम—चोरीका माल अकेले नहीं न पचता।

भैया—अच्छा तीनका हिसाब बताएँ कि तेरह का।

दुखराम—तीन-तेरह क्या भैया ?

भैया—अरे यही लड़ाईके पहले एक एक जोड़ेपर तीन रुपयेकी लूट थी और अब तेरहकी।

दुखराम—पहिले तीनके ही बारेमें बतलाओ भैया। पहिले हथौड़ाकी मार सह लें, फिर घनकी सहेंगे।

भैया—तीन रुपयेमें जाते तो सभी कामचोरोंके पास हैं, लेकिन उनमेंसे चार आना चला जाता है कल-मशीन बनानेवालोंके पास। जानते हो न? कल-मशीन बिलायतसे बन कर आती है।

दुखराम—तो यह चार आना कल-मशीन बनानेवाले मजूरोंके पास चला जाता है?

भैया—दुक्खू भाई! क्या तुम समझ रहे हो बिल्लाइतमें सतयुग चल रहा है? दुनिया भरमें सबसे ज्यादा जो परान देकर काम करते हैं, वही सबसे ज्यादा भूखे-नंगे रहते हैं। बिलायतके मजूरोंकी तनखाह बेसी है, उनको एक दिनका सात-आठ रुपया मिल जाता है।

दुखराम—जनु हमारे यहाँका एक महीना और वहाँका एकदिन बराबर है।

भैया—तो तुम समझते हो कि उनके पास रुपया रखनेकी जगह भी नहीं रह जाती होगी?

दुखराम—हाँ भैया। दो-दो ढाई-ढाई सौ रुपया महीनेमें जिसके घर आता हो उसके घरमें तो तोड़ेका तोड़ा रुपया गंज जाता होगा।

भैया—तोड़ा गाँजनेवाले दूसरे हैं, ये सब बिलायतके कामचोर हैं। मैंने बतलाया नहीं था, कि बारह आनामें तो वहाँ एक प्याला चाय और एक टुकड़ा रोटी मिलती है, और यह लड़ाईसे पहलेकी बात कह रहा हूँ।

दुखराम—तो क्या बेचारोंके पास बचता होगा!

भैया—तो धोती जोड़ेका चार आना जो बिलायत जाता है उसमें से एक-आना कल बनानेवाले मजूरोंको मिलता है, यानी तीन आना वहाँके कामचोरोंकी जेबमें।

सन्तोखी—तीन रुपैयेमें चार आनेका हिसाब तो मालूम हुआ बाकी पौनेतीनका!

भैया—चार आना और देना-पावना सूद-सादमें चला जाता है, आठ

आनामें सरकारी टिकस, खुदरा बेचनेवालोंके नफाको रख लो बाकी दो रुपया सीधा पटकलके मालिकके जेबमें जाता है।

दुखराम—तब भी भैया! बहुत है। मैं तो किसान हूं ही, एक साल कलकत्तामें पटकलमें कामकरके मजूरोंके भी दुखोंको जानता हूँ। कमेरोंको दस-बारह आना मिले और सेठ लोग दो रुपया अपनी जेबमें रख लें यह क्या कम लूट है, लेकिन तेरह रुपयेकी लूटके सामने तो यह कुछ भी नहीं है। यह कैसे हुई भैया!

भैया—लड़ाईके पहले जिस धोती-जोड़ेका दाम चार-साढ़े चार रुपये था, अब चौदह हो गया। वह इस तरहसे हुआ, सरकारने कलवाले मालिकोंसे कहा कि बहुत भारी लड़ाई हमारे सरपर आई है, उसके लिए हमें खर्च चाहिए, लड़ाईके कारण तुम्हें भी बहुत ज्यादा नफा होगा, इसलिए हम तुमसे टिकस लेंगे।

सन्तोखी—एकम टिकस न भैया!

भैया—हाँ इनकम टिकट लेकिन लड़ाईवाला एकम टिकस। सरकारने कहा कि रुपयेमें पौने पन्द्रह आना हमारा और पाँच पैसा तुम्हारा।

दुखराम—लेकिन यह सोरहो आना तो हम लोगोंके ही मत्थे न पड़ा?

सन्तोखी—जो जो कपड़ा पहिनता है उसीके मत्थे पड़ा, इसमें भी कोई पूछनेकी बात है।

भैया—सरकारने यह तो कह दिया कि सोलह आनेमें पौने-पन्द्रह आना हमारा और पाँच पैसा तुम्हारा, लेकिन यह नहीं हुकुम दिया कि धोती ४) जोड़ा ही बेचनी पड़ेगी।

सन्तोखी—तो मिलवालोंका हाथ खुला छोड़ दिया?

भैया—चार रुपयाकी धोती बेंचते तो साढ़े-उन्नीस आना सरकारके पास चला जाता, और पटकलवालेको मिलता दस पैसे। उसने धोती जोड़ेका दाम आठ रुपया लगा दिया। अब उसको मिलने लगा पाँच आना। फिर उसने सोचा कि जितना ही दाम बढ़ाओ, उतना ही हमारा पैसा ज्यादा होगा। सोलह रुपया करनेमें उसको दस आना मिलता। सरकारको भी नुकसान नहीं

था उसे भी सात रुपया छः आना मिल रहा था।

दुखराम—अब मालूम हुआ भैया ! कैसे कपड़ेको इतना महँगा कर दिया।

भैया—लासा या रबड़ तानने से बढ़ता है, लेकिन उसकी भी हद होती है कोस दो कोस तक कोई लासाको थोड़े ही तान सकता है ?

दुखराम—कोस दो कोस क्या हाथ दो हाथ भी नहीं खींच सकते।

भैया—कारखानेवालोंने नफा कमानेके लिए चीजोंका दाम चौगुना-पचगुना कर दिया। अब तुम्हीं बताओ, सोलह रुपया जोड़ा खरीदनेमें एक छोटी-मोटी भैंस बेचनी पड़ती न ? दस सेरका गेहूँ बेंचते तो चार मन गेहूँ घरसे निकालना पड़ता। किसान गँवार होते हैं, उनको समझ नहीं होती। सब कहा जाता है; लेकिन जब वह देखते हैं कि बाजारमें जिस चीज पर हाथ लगाते हैं, उसीका दाम चौगुना-पचगुना है, तो वह गेहूँको दस सेरका कैसे बेंचते ? गेहूँका दाम भी महँगा होने लगा। जब ढाई-दो सेरका होने लगा, तो पहिले उन लोगोंमें घबड़ाहट हुई, जो कि न किसान हैं, न सेठ हैं, न सरकार। अनाज महँगा होना उसके लिए उतना बुरा नहीं होगा जिसको देना-पावना बेबाक करके खाने भर को घर में अन्न रह जाता है। लेकिन जिसके घर में बैसाखमें ही अन्न नहीं रह जाता, वह क्वार तक कैसे काटेगा ? बंगालमें यही हुआ, चावल रुपयेका दो सेर नहीं दो रुपये सेर हो गया। अब तुम बताओ जिसके पास बैसाखमें ही अनाज खतम हो जाता है, वह दो रुपये सेर अनाज खरीदकर कितने दिनों तक खा सकता है ?

दुखराम—घर में दस परानी हुए तो पेट जिलानेके लिए भी तीन सेर चावल होना चाहिए। छः रुपया रोज लगनेपर तो असाढ़ ही तक बैल, घर दुआर, जर जमीन सब बिक जायगी।

भैया—सब बिक जायेगी तब घरवाले क्या करेंगे ?

दुखराम—वही भैया जो तुमने कहा है, लाज-सरम भी चली जायगी, इज्जत भी बिक जायगी, और तब भी नैया पार होगी कि नहीं इसमें भी सक है।

भैया—सो जो आठ लाख आदमी बंगालमें मर गये उसका कारन तुम्हें मालूम हुआ ? उनका खून किसकी गरदन पर है।

दुखराम—कारखानेवालों और सरकारके ऊपर उन्होंने ही अन्धेर-गरदी की, तभी न अन्न का दाम बढ़ा ?

भैया—दो गरदन तो तुमने ठीक बतलाई लेकिन एक गरदन अभी और बाकी है। नहीं बल्कि एक मद कहो, यह चोरबजार का मद है।

सन्तोखी—साहु लोगकी बाजार लगती है यह तो सब जानते हैं, क्या चोरोंकी भी बाजार होती है भैया ?

भैया—होती है और सरकार बहादुरके राजमें दिन दहाड़े लग रही है। कपड़ेके कारखानेवालोंने देखा, यह तो दस आना हमारे हाथमें थमाकर सात रुपया छः आना सरकार ले लेती है, क्यों न हम अपने मालको चोरी-चोरी बेंच लें। लाखों गाँठोंके बेचनेका सवाल था, सेर दो सेर चीनी नहीं थी कि छुपा छिपाके काम चल जाता।

सन्तोखी—लेकिन सरकारने तो कारखानेवालोंका हाथ खुला छोड़ दिया था ?

भैया—खुला छोड़ दिया था कि जितना चाहें दाम रखें, लेकिन दामको बिक्रीखातेमें लिखना पड़ता, फिर धोती पीछे दस आना और सात रुपये छः आनाका हिसाब रहता। मालिकोंने सोचा, बिना खाताबहीपर लिखे माल बेंच डालो।

दुखराम—न रहेगा बाँस न बजेगी बासुरी।

भैया—उन्होंने जाली बहीखाते रखे, बहुत अधिक मालको चोरी-चोरी बेंचा, इसीको कहते हैं चोर बाजार। तुम कहोगे, बहीखाता जाली बनाना और सरकारी टिकिस अदा करनेमें धोखा देना यह तो बहुत भारी कसूर है। लेकिन जहाँ करोड़ोंका वारा-न्यारा हो, वहाँ लाखोंकी घूस रिसवत चलती है। फिर कौन है जो घर आई लक्ष्मीको लौटायेगा ? हजार दो हजार नहीं एक लाख एक मूठ घूस दिया जाता है ! बताओ कितने मिलेंगे इन्कार करनेवाले ? कालों हीके बारेमें नहीं कहता गोरे साहबोंकी भी बात पूँछ रहा हूँ।

सन्तोखी—तब तो भैया ! सबका इमान-धरम डिग गया होगा ?

भैया—लाख ही नहीं सन्तोखी भाई ! करोड़की भी रिश्वत चली है, उसमें

हिमालयकी सबसे ऊँची चोटियों तकको भी ढाँक दिया है। लोग टुक-टुक देखते रहे, सब जानते हुए भी; लेकिन करें क्या किसके पास फरियाद ले जाएँ ?

दुखराम—चोर बजारवालोंने कहर किया भैया !

भैया—इन कपड़े और दूसरी चीजोंके कारखानेवालोंने करोड़ों रुपये बनाए, मालामाल हो गये। कितनोंने तो पाँच सौ पाने लायक नौकर पन्द्रह सौ रुपयेमें रखखा, पाँच सौ उसे दिया, डेढ़ हजारकी रसीद लिखाई और एक हजार अपनी जेबमें रख लिया। बताओ इन करोड़पतियोंको कौन पकड़ सकता है, यहाँ कागज पत्तर भी ठीक है। फिर अनाजके चोरोंके अपराधको तो कोई भूल ही नहीं सकता।

सन्तोखी—अनाज चोरोंने क्या किया भैया ?

भैया—जानते हो न ? चैतमें गेहूँ तैयार हुआ या अगहनमें धान। घर आया, दो महीनेके भीतर ही खाने या भूखे मरनेके लिए जो कुछ अन्न घरमें रह गया वह रह गया, नहीं तो सब झार-भूर कर बनिएके पास चला गया। सन्तोखी दास ! तुम भी अनाज खरीदते हो, बताओ उसे कितने महीने तक अपने घरमें रखते हो ?

सन्तोखी—महीने और घरमें रखना ! हमारे पास तो उतना पैसा भी नहीं होता। किरानावाले बड़े-बड़े-से हैं, हम उनके लिए अनाज खरीदते हैं। रुपया पीछे पैसा दो पैसा बच गया तो बहुत है।

भैया—तुम्हारे सेठ लाखवाले होंगे ?

सन्तोखी—हाँ, यही लाख दो लाखका रोजगार होगा और क्या ?

भैया—किरानाके असली मालिक लाख-दो लाख नहीं पाँच-दस करोड़का रोजगार करते हैं। चैतमें तुमने खरीदा, तो बैसाख-जेठमें वह अनाज करोड़पति सेठोंका हो जाता है। और दाम तो असाढ़-सावनमें न बढ़ाकर आठ सेरके भावसे खरीदा और दो सेर तीन सेर कर दिया। अब यह दुगुना-तिगुना नफा किसके पेटमें गया ?

सन्तोखी—उन्हीं करोड़पति सेठोंके मुँहमें।

दुखराम—लेकिन भैया ! अन्न तो जीवका अहार है । अन्नको महँगा करके यह तो लोगोंको जबह करना है । सरकार एक आदमी के खून करनेपर फाँसी चढ़ा देती है, फिर लाख-लाखके खूनपर चुप क्यों है ?

भैया—जब आदमी मरने लगे, हाय-हाय मचने लगी तो सरकारने भाव पक्का किया । लेकिन भाव पक्का करनेसे क्या होता है ? अनाज तो करोड़पतियों-के हाथमें था । जो एक करोड़ नफा हो तो बीस लाख घूस-रिसवत कौन नहीं दे देगा ।

सन्तोखी—तो छोटे-छोटे बच्चोंके बिलख-बिलखकर मरनेका ख्याल नहीं किया, पेटके लिए औरतोंकी इजत बेचनेका ख्याल नहीं किया, ख्याल किया तो एक अपने ही नफेका ? छी ! धिक्कार है ऐसे पापियोंको !!

भैया—धिक्कार मत कहो सन्तोखी भाई । वे बड़े धर्मात्मा हैं । उनके बड़े-बड़े मन्दिर हैं, तीर्थोंमें सदाबरत और धरमसाला चलती है, गोसालामें चन्दा देते हैं । साधू-सन्त और पंडित-पाधा लोग सेठकी जयजयकार मनाते हैं, मौलवी लोग सौदागरके लिए दुआ माँगते हैं ।

दुखराम—तो इन कसाइयोंमें हिन्दू-मुसलमान दोनों हैं ?

भैया—हाँ, सब अपने-अपने धरमके चौधरी हैं । हिन्दू सेठ दोनों साँझ ठाकुरजी का दरसन कर चरनामिरित लेते हैं; मुसलमान सेठ पाँच बेर नमाज पढ़ते हैं ।

दुखराम—भैया रजबली ! यह क्या है ?

भैया—मुँहमें राम बगलमें छूरी, और क्या ? लाखों औरतोंने अपनी इज्जत बेची खानगी बनी; लाखों बच्चोंने तड़प-तड़प कर जान दी, साठ लाख आदमी मर गए लेकिन इन मोटी तोंदवालोंके कानपर जूँ भी न रेंगी ।

सन्तोखी—इनके कानपर न जूँ रेंगी, तो भगवानके कानपर तो जूँ रेंगनी चाहिए थी ? राछछ आततायी ! साठ-साठ लाख आदमियों को तड़पा-तड़पा कर मार डाले ! भगवान अब भी अवतार न लें तो कब लेंगे ?

भैया—भगवान बहुत दूर रहते हैं सन्तोखी भाई ! कौन समुन्दरमें रहते हैं,

मुझे तो याद नहीं आता।

सन्तोखी—छीर समुन्दरमें भैया ! सेसनागके ऊपर सोते हैं और लच्छिमी चरन दबाती हैं।

भैया—एक तो दूर बहुत दूर छीर समुन्दर न जाने कहाँ है, भूख के मारे बोल भी न सकनेवाले इन लाखों आदमियोंकी सिसकीकी आवाज वहाँ तक पहुँचती भी कैसे ! फिर वह सेस (शेष) नागपर सोये हैं, गुलगुल बिछौनेपर नींद जल्दी आ जाती है ? तिसपरसे अपने नरम-नरम हाथोंसे लच्छिमीजी चरन दबा रही हैं, तो क्या मामूली नींद आएगी !

सन्तोखी—लेकिन भैया ! प्रहलादके ऊपर गाढ़ पड़ा, तो तुरन्त खम्भ फाड़कर निकल आए, ध्रुवने पुकारा, तो तुरन्त दरसन दे दिया, द्रौपदीकी चीर खींची जाने लगी तो आके उसमें समा गये !

भैया—पहलाज और धुरुब राजाके लड़के थे द्रौपदी रानी थी। राजा-रानी कोई मरता, तो जरूर भगवानकी नींद टूट जाती, वह नंगे पैर दौड़ पड़ते।

सन्तोखी—भगवानका राजा-रानीके साथ इतना प्रेम क्यों है भैया ?

दुखराम—मूर्ख चपाट। तुमको इतना भी पता नहीं है ? हमारे तुम्हारे बूतेका है कि भगवानके लिए मन्दिर बनवा दें। जो उनके लिए बड़े-बड़े मन्दिर बनाता है, छप्पन परकारका भोग बनवाता है, दान-दच्छिना देता है; भगवान उसके लिए अवतार न लेंगे तो क्या तुम्हारे-हमारे लिए लेंगे !

भैया—दुक्खू भाई ! तुमने बड़ी कड़ी बोली मारी !

दुखराम—बोलीकी चोट गोलीसे भी बढ़कर होती है भैया ! लेकिन सन्तोखी भाईका हम पैर पकड़ते हैं, वह हमारा अपराध जरूर छिमा कर देंगे।

सन्तोखी—नाहीं दुक्खू भाई ! हम तुम्हारे ऊपर भला नराज होंगे ! हम दोनों लड़कपनके सँघतिया।

भैया—तनिक कड़ा कहा लेकिन दुक्खू भाई, कहा तुमने बावन तोला पाव रत्ती ठीक ही।

दुखराम—भैया ! और तनिक आँख खोलो, चारों ओर मालूम होता है किसीने जकड़बन्द कर दिया है, साँस लेनेकी भी छुट्टी है। उधर सेठ लोगों की

धरमसाला और सदाबरत, इधर अजोधियाजीका सखी समाज, फिर क्षीरसागरने भगवान जो राजा-रानीके लिए नंगे पैर दौड़े-दौड़े आवें और पचास-पचास लाख गरीब कुत्तेकी मौत मार डाले जाय, और वह सुग बुगाएँ भी नहीं !

भैया—लेकिन दुक्खू भाई ! यहाँ हमारे सामने भगवान नहीं हैं कि उनको गाली फजीहत दें। भगवान बेचारेका दुनिया के बनाने-बिगाड़ने में कोई हाथ नहीं है।

दुखराम—तो वह हैं किस वास्ते ?

भैया—अभी हमें यह जानना है कि दुनिया को नरक किसने बनाया।

सन्तोखी—हाँ ठीक तो है दुक्खू भाई ! राजबली भैयाने तो कह दिया कि भगवानका दुनियाके बनाने-बिगाड़नेमें कोई हाथ नहीं। हम लोगोंको यह जानना चाहिए कि दुनिया को नरक बनाया किसने ? भगवानको लेकर हम क्या करें।

दुखराम—साँच ही कह रहे हो सन्तोखी भाई ! मुझे तो मालूम होता है कि भगवान-वगवान कोई नहीं है, यह केवल धोखाकी टट्टी है।

भैया—भगवानके बारेमें फिर किसी दिन पूछना दुक्खू भाई ! आज दुनिया को नरक बनानेवालोंकी बात सुनो। साठ लाख आदमियोंको किसने मारा ? कमेरों-कमकरों-किसान-मजूरोंने ? या कामचोरोंने ?

सन्तोखी—कामचोरोंने मारा। किसान-मजूरोंने तो अन्न-कपड़ा तैयार करके रख दिया था, लेकिन इन सेठोंने, इन घूसखोरोंने और अंधी लाल-पी सरकारने यह सब कहर किया। लेकिन इन कामचोरोंके ऊपर साठ ही लाखोंका खून नहीं, चार हजार बरससे इनके दाँतमें बेकसूरोंका खून लगा हुआ है।

दुखराम—चार हजार बरससे ! न जाने कितने करोड़ कितने अरब बेकसूरोंका खून किया !

भैया—इन्हींके जुलुमसे यह दुनिया नरक हो गई है। मैंने पहिले ही नहीं पूछा था कि हमारे गाँवके पासमें गढ़ही कैसे बन गई ? जो बड़े-बड़े कोठे-अटारी, मोटर-हाथी, लाव-लसकर, नोकर-चाकर और कम्पनछुरीका नाच तुम देख रहे हो, यह धन कहाँसे आता है ? लाख रुपया महीना लाट साहब और दो लाख

रुपया महीना बड़े लाटपर जो खरचा होता है, यह कहाँ से आता है। पाँच-पाँच सालमें एक चीनीकी मिल खोलकर दस दस लाख रुपया कमा लेना यह कहाँसे आता है यह चिकने-चिकने गाल और लाल-लाल ओठ किसके खूनसे रंगे जाते हैं !

सन्तोखी—कहते हैं, धन-वैभव भगवान देते हैं।

दुखराम—सन्तोखी भाई ! देखो हमारी-तुम्हारी बिगड़ जायेगी। चाहें तो पहिले ही भगवानके बारेमें फैसला कर लो नहीं तो भगवानका नाम अभी मत लो।

भैया—झगड़ो मत दोनों जने। सन्तोखी भाई जो कहते हैं वह दूसरोंकी सुनी-सुनाई बात है। अच्छा दुक्खू भाई ! जो हमारे गाँवमें यह घर-दीवार उठी है, इनके बारेमें कोई आकर कहे कि यह सब माटी भगवानने दी है तो क्या जवाब दोगे ?

दुखराम—पहिले जवाब नहीं दूँगा भैया। पहिले देखूँगा कि उसके आँख है कि नहीं। और आँख जो हुई, तो कान पकड़कर ले जाऊँगा गड़हीके पास और कहूँगा—"देख आँखके अंधे। यह जो जमीन गड़ही बन गई है, वह इन घरोंके कारण, यहाँकी माटी वहाँ गई है।"

भैया—सन्तोखी भाई ! किसीके आँगनमें सोनेका पेड़ नहीं है कि हिला-दिया और आँगन भर गया, किसीके घरमें हम सोने की बरखा होते नहीं देखते फिर हम कैसे मान लें कि जो यह भोग-विलास करोड़-करोड़ रुपयेपर पानी फेरना हो रहा है, वह भाग और भगवानकी ओरसे उनके पास जाता है ? किसान ऊख पैदा करता है, मिलवाले ऊखका कितना मन देते थे दुक्खू भाई।

दुखराम—एक बार तो चार आना मन भी नहीं दे रहे थे, फिर हम सब किसानोंने एका किया तब कुछ हल्ला गुल्ला हुआ, रजबली भैया ! तुमने ही तो मदद की थी ! तब आकर आठ आना मन हुआ था।

भैया—मन भर ऊखमें जानते हो कितनी चीनी होती है, चार सेर।

दुखराम—सो हमें आठ आना थमाके चार सेर चीनी ले लिया न ! डाकू

कहीं का।

भैया—तुम्हें भी लूटा और जो यह चार-चार आना मजूरीपर दस-दस घंटा खटते हैं, इन मजूरोंको भी लूटा। उसका दस-बारह आनासे बेसी नहीं खर्च हुआ।

सन्तोखी—और बेंचा डेढ़ रुपयेपर न! जनु दूनाका नफा।

दुखराम—जो जेठ-बैसाखकी धूपमें खून-पसीना एक करे, जो मसीनमें हाथ-पैर कटावे, और देह भर कोइला-कालिख लगावे, उसको तो चार आना और आठ आना मिले और यह ठंडे-ठंडे घरमें बैठे बिना हाथ-पैर डुलाए आधा हमारा लूट लें।

भैया—और जानते हो यह लूट रहे हैं दस-दस बीस-बीस हजार किसानोंको, सैकड़ों मजूरोंको तब न एक-एक सालमें दो-दो तीन-तीन लाखका नफा करके रख देते हैं! यदि यह कहें कि यह तीन लाख रुपया भगवानने छीरसागरसे भेजा है तो यह माननेकी बात है!

दुखराम—नहीं भैया! यह हमीं लोगोंके खूनको पीकर मोटे होते हैं।

भैया—यह जोंक हैं जोंक दुक्खू भाई!

दुखराम—जोंक! ठीक कहा भैया! यह जोंकही है और कितनी होशियार जोंक है कि लाखों आदमीका खून पी रहे हैं और किसी को पता भी नहीं लगता। एक बात कहें रजबली भैया! मैं तो समझता हूँ कि जोंकोंके छिपानेके लिए ही भाग-भगवानको किसीने गढ़ा है।

सन्तोखी— मैंने भगवानका जब नाम लिया तो दुक्खू भाई! तुम नाराज हो गये!

दुखराम—अच्छा सन्तोखी भाई! जीभ छुटपुटा गई छमा करना। हम पीछे ये बात पूछेंगे।

भैया—जबसे आदमियोंमें जोंक पैदा हुई, तभीसे यह दुनिया नरक बनी।

दुखराम—जोंक माने कामचोर जाँगरचोर, सेठ, राजा, नवाब यही न?

भैया—हाँ इन्होंने खून चूस-चूसकर किसानोंको, मजूरोंको, गरीब बना दिया, उनको किसी लायक नहीं रहने दिया। सरकारमें सब जगह यही काम आ

बैठे हैं, पलटन, पुलिस सब जोंकोंकी रक्षाके लिए बनी है।

दुखराम—जिसमें अपनी देहमें लगी जोंकको भी हम निकालकर फेंक न सकें।

भैया—जोंकोंको निकालकर फेंक दोगे तो वह जियेगी कैसे? उनके हाथ-पैर भी नहीं, वह घासपात भी नहीं खाती, उन्हें चाहिये तुम्हारा गरम-गरम खून। इसीलिए तो यह सब सरकार-दरबार बनाया गया है, यह लावलसकर रखी गई है, कि जिसमें तुम जोंकोंको निकालकर फेंक न सको। जिस दिन तुमने जोंकोंको निकाल फेंका उसी दिन यह दुनिया नरक से सरग हो जायगी।

दुखराम—भैया रजबली! अब आँख कुछ-कुछ खुलती है, कितना बड़ा पहर बाँधा हुआ था।

भैया—एक पीढ़ीका नहीं डेढ़ सौ पीढ़ीका पहर, और पीढ़ीमें जोंकोंने नया-नया पहर तुम्हारी आँखों पर चढ़वाया।

दुखराम—हाँ भैया, यह पहर उखाड़ फेंके बिना काम नहीं चलेगा।

सन्तोखी—इतने जोंकें जिसके सरीरमें लगी हों, उसके पास कहाँ से खून बँचा रहेगा।

भैया—और जोंकें दिन पर दिन बढ़ती गई हैं सन्तोखी भाई! पहिले एक अंगुलकी थी, फिर दो अंगुलकी और अब तो हाथ-हाथ भरकी हो गई हैं।

दुखराम—पूरा भैंसिया जोक, देखके डर लगता है। जब भैंसको लग जाती है तो वह नहीं पेट भर खाके छोड़ दे।

भैया—पेट भी तो उनका सरीरके छोटेसे कोने-अंतरेमें नहीं होता।

दुखराम—हाँ भैया, जोंकका तो सारा सरीर ही पेट होता है। जितना पीती है, उससे भी ज्यादा खून तो बाहर गिरा देती है। लेकिन भैया एक अंगुलकी जोंक एक हाथकी कैसे बन गई?

भैया—बतलाता हूँ, लेकिन यह भी मनमें रखना कि जैसे-जैसे जोंकें बढ़ी वैसे-वैसे दुनिया और नरक बनती गई। लेकिन पहले एक समय था दुक्खू भाई! जब आदमियोंमें जोंकें नहीं थी। और अब भी दुनियाका छठा भाग जिसमें जोंकें नहीं हैं।

दुखराम—तब तो वहाँ नरक नहीं होगा भैया, लेकिन कैसी जगह है वह जहाँ जोंकें नहीं हैं।

भैया—रूसका नाम सुना है न ?

दुखराम—हाँ भैया, रूसका नाम किसने नहीं सुना होगा ? वही न जिसमें आदमी पीछे पाँच बीघा (३ एकड़) खेत और गाय बाँटी थी !

भैया—हाँ वही, लेकिन बाँटनेकी बात सुरू-सुरूमें रही, पीछे तो उन्होंने गाँवके गाँवका सारा खेत साझेमें जोतना सुरू कर दिया।

सन्तोखी—वही न भैया जहाँ कि लाल सेनाकी वीरताकी खबर रोज अखबारोंमें सुननेमें आती है।

भैया—हाँ सन्तोखी भाई ! जो लाल सेना नहीं रही होती और रूस बे-जोंकवाला राज न रहा होता तो आज दुनिया भरमें रावनका राज हो गया होता। लेकिन रूस और रावनके बारेमें फिर किसी दिन बात करेंगे। आज तो अभी जोंकोंके पैदा होनेकी बात थोड़ी सुन लो।

दुखराम—हाँ सुनाओ भैया।

भैया—हम जानते हैं रात ज्यादा हो गई है फिर कातिककी भीड़ है। कल फिर तुम्हें दुक्खू भाई हल नाँधना पड़ेगा। पहिले जोंकें नहीं थीं, यह बहुत पुरानी बात है, लेकिन लाख दो लाख बरस नहीं। किसी देशमें जोंकोंको पैदा हुए दो हजार बरस हुआ, किसी देशमें चार हजार और ज्यादा से ज्यादा सात-आठ हजार समझ लो।

सन्तोखी—तो सात-आठ हजार बरस पहिले दुनियामें जोंकोंका कहीं नाम नहीं था ?

भैया—बिल्कुल नाम नहीं था। जब आदमी इतना ही कमा पाता था कि दिन भर के खानेसे निचिंत हो जाय, तो जोंक कैसे पैदा हों ? कलमुँहा और ललमुँहा बानरोंको तुमने देखा है न दुक्खू भाई ?

दुखराम—कलमुहाँ बानर तो हमारे ही गाँवमें बहुत हैं।

भैया—तो देखते हो न बानर पेड़से तोड़कर या जमीन से बीनकर अपना पेट भरता है। वह जमा नहीं कर पाता। इसीलिए दूसरेकी पैदाकी हुई चीज-

को हड़पनेवाली जोंकें वहाँ नहीं।

दुखराम—हाँ भैया ! उनमें जो सबसे बलिष्ठ हनुमान होता है, उसे हम लोग खेखर कहते हैं। लेकिन खेखरको भी आहारके लिए उतनी ही मेहनत करनी पड़ती है, जितनी दूसरे बानर-बानरियोंको।

भैया—लेकिन जिस समय आदमीमें जोंक नहीं थी, उस समय भी उसमें और बानरोंमें अन्तर था। आदमी अपने लिए पत्थर, सींग या लकड़ीका हथियार बनाता था। इन हथियारोंसे वह अपने शत्रुओंसे लड़ता और अपने लिए शिकार या फल गिरा करके आहार जमा करता।

दुखराम—तो भैया ! उस समय लोहेका हथियार नहीं था ? तीर-धनुष भी नहीं था।

भैया—लोहाको तो दुनियामें पैदा हुए चौंतीस सौ बरससे ज्यादा नहीं हुआ।

दुखराम—और भैया उससे पहले खाली सींग, लकड़ी-पत्थरका हथियार चलता था।

भैया—नहीं लोहासे पहले आदमीको ताँबेका पता लग गया था लेकिन उसे भी पाँच हजार बरससे ज्यादा नहीं हुआ। और यह भी दुनिया भरमें एकही बार सब जगह नहीं हुआ। अकबरके दादा बाबरके हिन्दुस्तानमें आनेके पहले हमारे यहाँ बारूदका कोई हथियार नहीं था, दूर तक मार करनेके लिए सिर्फ तीर-धनुष था तीरके मुँहपर तिकोना लोहा लगा रहता है, जिसको लोग बिखसे बुझाकर रखते थे। लेकिन जब तोप-तुपुक (बन्दूक) आई तो तीर-धनुषका रिवाज उठ गया, लेकिन भील-संथाल लोगोंमें अब भी तीर-धनुष चलता है।

सन्तोखी—हाँ भैया, यह तो हम भी संथाल परगनामें देख आए हैं।

दुखराम—तो पहले लोग सिकार और फलसे ही गुजारा करते थे क्या ?

भैया—हाँ दुक्खू भाई ! पहिले सिकार-फल फिर लोग पसु पालने लगे।

दुखराम—गाय, घोड़ा, भेड़, बकरी।

भैया—हाँ, पसु पालने लगे और जानते हो सिकार एक दिनसे ज्यादा रखा नहीं जा सकता। फल भी बहुत महीनों तक नहीं रह सकता। लेकिन पसु

धनको सालों तक रखा जा सकता है और जितने ही दिन रक्खें वह उतने ही दिन और बढ़ते जाते हैं।

दुखराम—सूअर तो भैया सालमें एकसे बीस हो जाती...

सन्तोखी—और दूसरे साल बीससे चारसौ !

भैया—जो खाए-पकाएसे बच गया या मरे-बरे नहीं। हाँ तो जब आदमीके पास पसु-धन हुआ जो बरसों तक उसके पास रह सकता है तब पहिले पहल जोंक पैदा हुई। बल्कि वह पूरे रूपमें जोंक नहीं थी, वह ज्यादातर दूसरे आदमियों जैसी ही थी।

सन्तोखी—वह कौन जोंक थी भैया, राजा या सेठ या कौन ?

भैया—अभी न राजा थे, न सेठ थे, यह पहिली जोंक थी पुरखा या पितर। जब आपसमें झगड़ा-झंझट होता तो एक पंचाइत देखनेवाले की जरूरत पड़ती थी। जब बाहरसे झगड़ा होता तो सेना चलानेके लिए एक नेताकी जरूरत होती। ये दोनों काम जो आदमी करता उसे पितर या महापितर कहते थे। अभी उसके सिरपर मुकुट नहीं आया था, अभी भी वह चटाईपर साथ बैठनेवाला बिरादरीका चौधरी था। लेकिन उसके पास धीरे-धीरे पसु बढ़ रहे थे, धन बढ़ रहा था।

सन्तोखी—तो भैया पसु पालनेसे पहिले ज्यादा दिन रहनेवाला धन तो किसीके पास था नहीं फिर धनी-गरीबका फरक भी नहीं रहा होगा।

भैया—पसु पालनके युगसे पहिले मेरा-तेराका सवाल ही नहीं था एक जगह रहनेवाले लोग साथ मिलकर सिकार करते, साथ मिलकर फल जमा करते थे और साथ ही खाते-पीते थे।

दुखराम—माँ-बाप, बहिन-भाई, चाचा-चाची सब न साथ रहते होंगे ! कितना बड़ा कुनबा रहता होगा।

भैया—अभी बाप नहीं बना था दुक्खू भाई !

दुखराम—बाप नहीं था इसका क्या मतलब भैया।

भैया—ब्याहका रवाज नहीं था। माँको तो सब जानते थे।

दुखराम—माँको क्यों नहीं जानेंगे। माके उदरसे तो बच्चा पैदा होते

देखा जाता है।

भैया—तो जंगलमें गाय, घोड़े, भेड़, बकरी रहा करते थे, उन्हींमेंसे कुछ तो लोगोंने पालतू बनाया। आखिर रोज-रोजका सिकार मिलना तो आसान नहीं था। पशु पालनेका काम मर्दने शुरू किया, उससे पहले परिवारकी मुखिया माँ होती। अब अधिक धनवाला पुरुख मुखिया हो गया।

दुखराम—जनुक तिरियाके राजकी जगह मरदका राज, माताके राजकी जगह पिताका राज शुरू हुआ।

भैया—अभी इतना ही समझो कि स्त्रीको हटाकर मरद मुखिया बन गया। लेकिन अभी जोंक नहीं तैयार हुई थी। जब पशुधन और बढ़ा, भीतरी और बाहरी झगड़े और बढ़े तब मुखियाका जोर बढ़ा, और कभी-कभी घर बैठे लोग उसके पास खानपान पहुँचाने लगे। बस छोटे रूपमें जोंक शुरू हो गई। मैंने बतलाया था न कि जोंकोंने दुनियाको नरक बनाया।

दुखराम—हाँ भैया!

भैया—तो जोंकोंका अवतार कैसे हुआ यह मैंने तुमसे कहा। लेकिन पूरा जोंक-पुरान आज नहीं कह सकता।

सन्तोखी—हाँ भैया आज रात बहुत हो गई है।

भैया—कल रातको इसी वक्त जोंक-पुरानकी कथा होगी।

अध्याय ३

जोंक-पुरान

सन्तोखी—भैया! बेचारा दुखराम आज बड़ी देर तक हल चलाता रहा। कातिक की भीड़ है न, आता ही होगा।

भैया—वह देखो पेट पर हाथ फेरते दुक्खू भाई आ रहे हैं। कहो दुक्खू भाई! आज बहुत डकार लेते चले आ रहे हो।

दुखराम—क्या पूँछते हो भैया, आज मलकिनने पूरी व खीर बनाई थी,

हम गरीबों को छठे-छमाहें कभी कुछ अच्छा खाना मिल जाता है तो अपनेको धन्न-धन्न समझने लगते हैं।

मैया—जो जोंकें न रहें तो छठे-छमाहे क्यों रोज अच्छा-अच्छा भोजन मिल सकता है और तेलकी पूरी और गुड़की खीर नहीं खालिस घीकी बनी पूड़ी और दूध-चीनीकी बनी खीर।

दुखराम—हाँ मैया! यह हो सकता है, इतनी-इतनी जोंकें जो हमारे गेहूँ घी-चीनीको छोड़ देंगी, तो क्यों नहीं हम मौजसे खायें-पियेंगे।

मैया—तो कल हमने जोंकका जनम बतलाया था! अब उसकी बाल-लीला, जवानी, और मरनेकी घड़ीकी बात सुनो।

सन्तोखी—मरनेकी घड़ी भी! क्या मैया जोंकोंके मरनेकी घड़ी आ गई!

मैया—मैंने बतलाया नहीं कि दुनियाके छ: भागमेंसे एक भाग रूसमें अब जोंकें नहीं हैं। वहाँ जोंकोंके मरनेकी घड़ी आजसे सत्ताईस बरस पहले बीत चुकी, लेकिन बाकी पाँच भागमें जोंकें अब भी हैं और बड़े जोरसे। यही समझ लो कि सिर्फ एक सूबामें पाँच-छ: महीनेके भीतर साठ-साठ लाख आदमियोंकी जान ले लेना बतला नहीं रहा है, कि वह कितनी भयंकर है।

सन्तोखी—हाँ मैया! हम तो भगवानसे रोज मनाते हैं कि कब यह जोंकें जाएँगी।

दुखराम—फिर सन्तोखी भाई तुमने भगवान का नाम लिया।

सन्तोखी—दुक्खू भाई, नाराज मत हो। न हमने भगवानसे अवतार लेनेके लिए कहा है और न पाव-पियादे दौड़नेके लिए। मैयाकी बात हमें ठीक मालूम होती है, भगवान इतनी गाढ़ी नींदमें सोये हैं, कि लाख दो लाख बरसमें भी उनके जागनेकी उमेद नहीं है।

दुखराम—वह सदाके लिए सो गए हैं सन्तोखी भाई! मैं तो यही मानता हूँ।

मैया—लो दुक्खू भाई जोंकोंकी बाल-लीला और पहिलेकी कथा मैं बहुत सनछेपमें कहूँगा, पीछेकी कथाको तुम्हें ज्यादा सुनना चाहिए।

दुखराम—हाँ मैया, पीछेही के जोंकोंसे तो हमें पाला पड़ा है।

भैया—मैंने बतलाया था कि पहिले इसतिरी मुखया होती थी, सारा परिवार उसका होता था, सबको ठीकसे रखना, सबकी देख-भाल करना उसीका काम था। पचीस, पचास या सौका जो भी परिवार होता था उसकी मुखया या महामातर इसतिरी होती थी। कभी दो-दो परिवारोंमें खून-खराबी भी होती थी।

दुखराम—खून-खराबी क्यों होती थी भैया, वहाँतो जोंकें नहीं थी।

भैया—जंगलके लिए झगड़ा हो जाता था। जिसका परिवार बढ़ जाता था उसे अधिक शिकार, अधिक फल बटोरनेकी जरूरत पड़ती थी।

सन्तोखी—तो वे उन्हीं पत्थर, सींग और लकड़ीके हथियारोंसे लड़ते होंगे?

भैया—वही तो उनके पास हथियार थे, उन्हींसे वे बैल, हरिन और भालूका शिकार करते थे, लेकिन जानते हो न जिसके पास आदमी ज्यादा हैं वही लड़ाईमें जीतता था, हथियार तो सबके पास एकसे थे। इसी वास्ते बलवान परिवारसे बचनेके लिए कितने ही छोटे-छोटे परिवार एक हो जाते हैं। उसको कहा जाने लगा जन।

सन्तोखी—हम लोग तो एक जन्म दो जन्म कहते हैं एक आदमी दो आदमीके वास्ते।

दुखराम—और जन मजूर भी कहते हैं, कमकरके वास्ते।

भैया—लेकिन पहले पहल जन एक आदमी या मजूरके लिए नहीं बोला जाता था। उस वक्त कई परिवारोंको मिलाकर जो एक बड़ा परिवार बनता था उसीको जन कहते हैं।

दुखराम—माने कई महामाताओंके परिवारको इकट्ठा कर दिया जाता था।

भैया—हाँ, इसीको जन कहते थे। जनवाले जुगमें भी जोंकें नहीं पैदा हुई थीं, जोंकें तब पैदा हुईं जब पशुपालके मरद धनवाला बन गया, वह महापितर बन गया और दूसरोंकी कमाई उसे मुफतमें मिलने लगी। धीरे-धीरे आदमीने खेती करना सीखा, फिर चमड़ेका सीना, फिर सूत कातना, और आखीरमें कपड़ा भी बुनने लगा। अब उसके पास ऐसी चीजें आनें लगी कि

जिन्हें बरस दो बरस रख सकता था। सिले चमड़ेको देकर खाने-पीनेकी चीजें बदल सकता था, कंबलसे भी अपने मनकी चीज़ बदल सकता था। जनके भीतर, या महापितरके बड़े गिरोहके भीतर कभी-कभी झगड़ा-बगड़ा हुआ तो उसका फैसला तो आपस ही में रह जाता था लेकिन बाहरके लोगोंसे जब-तब लड़ाई हो पड़ती थी। खेती शुरू करनेके बाद तो आदमी घरमें रहने लगा।

सन्तोखी—पहिले क्या घरमें नहीं रहता था।

भैया—पहिले सिकार और फलके पीछे एक बनसे दूसरे बनमें घूमता रहता था। जब ढोरडंगर पोसने लगा, तो जहाँ चराईका सुभीता होता वहाँ चला जाता। लेकिन खेती सुरूकर देनेपर वह कैसे जाती?

दुखराम—तो खेती आदमीके लिए खूटा हो गई, अब वह बँध गया।

भैया—हाँ बँध गया, अब उसने अपने लिए घर बनाया है, दूसरे गरोहसे बचनेके लिए सब लोगोंने अपना घर पासमें बनाया, जिसमें दुश्मनसे लड़नेके लिए जल्दी एक दूसरे की मदद कर सकें। पास-पासके घरोंको गाँव कहा गया, क्योंकि ग्रामका मतलब है झुन्ड।

दुखराम—घरोंका झुण्ड, यही मतलब है न गाँवका?

भैया—हाँ, महापितरोंके जुगमें लड़ाई और बढ़ी क्योंकि दुश्मनको हरानेसे सब पसु, सारा धन उसे मिल जाता था। महापितर मुखिया था। उसका लूटका माल ज्यादा मिलता था और दूसरोंको थोड़ा-थोड़ा।

सन्तोखी—तो धनी-गरीबका फरक और बेसी हुआ। हारे लोगोंके बचे हुए आदमियोंको क्या करते थे?

भैया—पहिले तो, जो आता सबको मारते जो औरतें हाथ आती उन्हें अपनेमें बाँट लेते।

दुखराम—तो मरद कोई नहीं बचने पाता था?

भैया—हाँ मरदका परान नहीं छोड़ते थे। लेकिन जब पीछे खेतीके कामके लिए, चमड़े-जूतेके कामके लिए, कपड़ा-मिट्टी का बर्त्तन बनानेके वास्ते आदमियोंकी अधिक जरूरत पड़ने लगी।

दुखराम—बेसी माल पैदा हुआ तो बदलकर खूब बेसी माल हाथ लगेगा,

यही सोचकर न भैया ?

भैया—हाँ, इसीलिए पहिले लड़ाईमें हारे शत्रुको कैदी नहीं बनाते थे, कौन उसे घर बैठाकर खिलाता। लेकिन जब देखा कि आदमी हाथसे मेहनत करके अपने खानेसे दुगुना-तिगुना पैदा कर सकता है तो हारे मरदोंको कैदी बनाने लगे। इनको दास या गुलाम कहा जाता।

दुखराम—तो यह गुलाम और दूसरे लोगोंमें बाँट दिए जाते होंगे ?

भैया—हाँ, अच्छे-अच्छे दास और दासी महापितरको मिलती, दूसरेको और लोग बाँट-चोट लेते।

सन्तोखी—तो यह दास-दासी भी ढोरकी तरह ही हुए ?

भैया—वह भी मालिकके धन थे, वह मालिकके लिए काम करते थे। यह जुग हुआ गुलामीका।

दुखराम—जनु तबसे गुलाम बनानेका रवाज हुआ।

भैया—गुलामको मालिक कपड़ा-खाना देता था। नहीं देता तो वह मर जाता। फिर उसका नुकसान होता। जानते हो न दुक्खू भाई! गुस्सा होनेपर बैलको मारते भी हैं, लेकिन इतने नहीं मारते कि वह मर जाय।

दुखराम—हाँ भैया! कौन अपना नुकसान करेगा।

भैया—गुलामोंके आनेसे अब कम्बल, जूता-चमड़ा और कई तरहकी चीजें बहुत इफरात बनने लगी। लोग उन्हें आपसमें बदलने लगे। बदलनेके सुभीताके लिए हाट लगने लगी। सब लोग अपना-अपना माल ले आते थे और जिसको जो लेता था, उसे अपनी चीजसे बदल लेते थे। लेकिन कभी-कभी हाटमें आदमीको अपने कामकी चीज जल्दी नहीं मिलती थी या अपनी चीजके खाहिस-बन्द नहीं मिलते। तब आदमीको बहुत हैरान होना पड़ता। सब काम-धन्धा छोड़कर दो-दो, तीन-तीन दिन हाट अगोरना पड़ता। फिर लोगोंने गाँव पीछे एक-दो आदमीके जिम्मे अपनी चीज लगाके छुट्टी ली। जो आदमी हाट अगोरता, उसने दूसरोंके लिए भी अपना काम-धन्धा छोड़ा, इसलिए सब लोग अपने मालमेंसे कुछ उस आदमीको दे देते थे।

दुखराम—जैसे भँड़भूजाको भूननेके लिए हम लोग थोड़ा-थोड़ा अनाज दे

देते हैं।

भैया—हाँ, तो पहिले तो हाट अगोरनेवाला अपने गाँवके दो-चार घरोंकी जिम्मेवारी लेकर बैठता था और सो भी कभी-कभी। फिर वह गाँव भरकी जिम्मे-वारी लेने लगा, और बराबर हाटमें बैठा रहता। उसका रूप अब कुछ कुछ बनिया जैसा था। लेकिन अभी दो आदमियोंकी चीजोंकी अदला-बदलीमें वह खाली एक ओरका बिचवई था, फिर वह दोनों ओरका बिचवई बन गया। जब उसके पास बेसी नफा जमा हो गया तो वह हर तरहकी चीजोंको अपने पास रखने लगा। इस चीजको मँहगा किया और दूसरी चीजको सस्तेमें खरीदा अब वह पूरा बनिया हो गया।

सन्तोखी—लेकिन रोजिगार तो था चीजका चीजसे बदलना ही न।

भैया—लेकिन जब ताँबा मिल गया, लोगोंने देखा कि उसकी धारा पत्थर और हड्डीसे ज्यादा तेज है, उसकी मार आदमी और पेड़को काटकर गिरा सकती है, तो सभी लोग ताँबेके हथियार रखना चाहने लगे। लेकिन ताँबा थोड़ा पैदा होता था, चाहनेवाले ज्यादा थे। एक दूसरेने चढ़ा-ऊपरी करके ताँबेका दाम और चढ़ा दिया। दस मन गेहूँके लिए दस सेर ताँबा काफ़ी समझा जाने लगा, अब बहुतसे लोग दस मन गेहूँ ढोकर ले जानेकी जगह दस सेर ताँबा ले जाने लगे। एक छटाँक ताँबा भी पास रहनेसे अढ़ाई सेर गेहूँ ढोनेका काम नहीं था।

सन्तोखी—तो ताँबा पैसे-रुपयेका काम देने लगा।

भैया—हाँ, पहले-पहल पैसे-रुपयेने इस सरूपमें औतार लिया। महापितर गुलामोंके कमाए धनसे और मोटी जोंक बन गया और इधर बनिया दूसरी जोंक तैयार हो गई।

दुक्खराम—उस बखत जो जोंकें न पैदा हुई होतीं भैया!

भैया—तो बहुत बुरा हुआ होता दुक्खू भाई! गाड़ी ही रुक जाती। आदमी पत्थर और सींगके हथियार ही चलाता रहता और हारे दुसमनको बीन-बीनकर मारता रहता।

सन्तोखी—तो जोंकोंने कुछ फ़ायदा भी किया था।

भैया—जो फायदा न पहुँचाया होता, तो जोंकें पैदा ही नहीं होतीं। लेकिन देख रहे हो न जोंकोंकी दो जाति अब तैयार हो गईं।

दुखराम—गिरोहका सरदार और बनिया, यही दोनों न भैया।

भैया—ठीक! गुलामीके जुगसे हम और आगे बढ़े। महापितर या सरदार तो भी अभी साथ चटाईपर बैठनेवाले चौधरी थे, लेकिन उसके पास धन ज्यादा था, लौंडे गुलाम ज्यादा थे, खिला-पिलाके बिरादरीके लोगोंमेंसे भी कितने हीको फोड़ लेनेमें सफल हुआ। वह आगे चलकर राजा बन गया।

सन्तोखी—तो अब राजसीठाट और हजार-हजार रनिवासोंका युग आ गया।

भैया—अब बड़ी ही मोटी और बड़ी ही भयंकर जोंक तैयार हो गई। वह सभी छोटी-बड़ी जोंकोंको अपने छतरछायामें रखने लगी। लेकिन लोग तो समझते थे कि यह कल तक हमारी बिरादरीका चौधरी था, एक साथ चटाईपर बैठता था, राजाने समझा कि हमारी नींव अभी मजबूत नहीं है जातिका चौधरी होनेसे, तैंतीसों कोटि देवताके सामने बलि देना, पूजा करना, महापितर हीका काम था। वह ओझा भी था, पुरोहित भी था और जातिका चौधरी भी।

दुखराम—ओझा भी था! जोंक जो ओझा भी हो जाय, यह खैरियत नहीं।

भैया—ठीक कहा दुक्खू भाई! महापितर अपने कामकी जो कोई बात करवाना चाहता तो आँख लाल-लाल करके सिर हिला देवताके नामसे कह देता; और उस समय आजकलसे बहुत बेसी देवता थे।

दुखराम—लोग भी बहुत सीधे-सादे रहे होंगे भैया!

भैया—बहुत सीधे-सादे लेकिन जब लड़ पड़ते तो उनका दिल भी बहुत कठोर होता। लेकिन महापितर या जातिका बड़ा चौधरी एक खूनकी बिरादरी-का ही अगुआ होता था। राजाकी तागत ज्यादा थी, हथियार भी चोखे थे, अपने धनका लोभ दिखा बिरादरीमें बेसी फूट डलवा सकता था। उसको एक बिरादरीपर सन्तोख नहीं हुआ, वह कई बिरादरियोंको हराकर उनका राजा बन गया।

दुखराम—तो जमात बढ़ती ही रही!

भैया—हाँ, माईसे महामाईकी जमात बड़ी थी, महामाईसे पितरकी जमात बड़ी थी, पितरसे सैकड़ों गुलाम रखनेवाले महापितरकी जमात बड़ी हुई। और महापितरसे भी बड़ी जमात राजाकी थी। लेकिन महापितर तक कुछ भाई-चारा था। अब राजाने बिरादरियोंसे अपनेको ऊपर कहना सुरू किया। लेकिन लोग कैसे मान लेते इसलिए उसने ओझा सोखासे मदद ली। किसी बड़े होसियार ओझाको अपना पुरोहित बनाया, उसने देवताके नामसे राजाको देवता बनाना सुरू किया इसके लिए राजा पुरोहितको भेंट चढ़ाने लगे।

दुखराम—तो भैया! पुरोहित एक और बड़ी जोंक पैदा हो गया?

भैया—देखा न दुक्खू भाई! कैसी हमारी-तुम्हारी आँखपर एकके बाद एक नये-नये पहर बाँधे जाने लगे।

सन्तोखी—जोंकोंने चारों ओर अपना जाल फैला दिया।

भैया—और कमेरे उस जालमें फँसने लगे। उनका बल घटने लगा। कमेरे देस भरमें बिखरे हुए थे, उनका कोई मजबूत दल नहीं था। राजाने लोभ देकर कमेरोंके बहुतसे लड़कोंको सिपाही बना लिया।

दुखराम इसीको कहते हैं काँटेसे काँटा निकालना। कमेरे जिसमें कान पूँछ न हिलाएँ इसलिए उन्हीके लड़कोंके हाथमें तलवार दे दी।

भैया—दुनियामें राजा लोग खूब मजबूत होने लगे। अपना राज बढ़ानेके लिए, और बेसी लोगोंका खून चूसनेके लिए एक-दूसरेसे लड़ने लगे, फिर बड़े-बड़े राज कायम हुए। दूर-दूरके देसों पर हाथ फैलाने लगे। पुरोहितोंका बल और धन भी बढ़ा, व्यौपारियोंका व्यौपार भी खूब चमका। इसी बीचमें लोहा निकल आया और खूब तेज-तेज तलवारें बनाने लगीं। पत्थरके रूपमें पड़ा सोना-चाँदी भी अलग करके निखालिस रूपमें तैयार होने लगा। असरफी, रुपया और ताँबेका पैसा बनने लगा, व्यौपारमें और तरक्की हुई लखपती सेठ जगह-जगह दिखलाई देने लगे। सेठ, पुरोहित और राजाका खूब गठबंधन था।

दुखराम—चोर-चोर मौसियौत, सभी जोंकें मिलकर कमेरोंका खून चूसने लगीं।

भैया—व्यौपारी, कारीगरों, किसानोंके पैदा किए हुए धन को दुगुने-तिगुने

दामपर दूर-दूर देसोंमें ले जाकर बेचने लगे। गंगामें बड़ी-बड़ी नॉव, समुन्दरमें बड़े-बड़े जहाज चलने लगे। बढ़िया कपड़ा, बढ़िया गहना और सौककी हजार तरहकी चीजोंकी माँग बढ़ी। कमेरों, मजूरों, किसानोंको इतनी ही मजूरी मिलती कि जिसमें उनका बंस खतम न हो जाय, लाख दो लाख भूखे मर जायं तो उसकी कोई परवाह नही, लेकिन देसके देसमें कोई दिया-बत्ती जलाने वाला न रह जाय इस बातको जोंकें पसन्द नहीं करतीं। जब जोंकें प्रजा पर दया करनेकी बात कहती हैं तब उसका मतलब यही है कि चिराग न बुझ जाय।

सन्तोखी—उनको अपना मतलब पूरा होना चाहिए दुनिया जाये चूल्हा भाँड़ में!

भैया—ब्यौपारसे बनियोंको खूब फायदा होने लगा जिसमें राजाको भी भाग मिलता था। हर राजा अपने बनियोंकी सहायता करनेके लिए तैयार रहता था। काठके बड़े-बड़े जहाज कपड़ेके बड़े-बड़े पाल उड़ाते समुन्दरको छान डालते थे। नफाकी कुछ न पूछो। ढाका का मलमल विलायतमें जाकर दुगुने-तिगुने नफेमें बिकता था। यूरुपके बनियोंने देखा कि इस ब्यौपारसे हमें भी नफा उठाना चाहिए। पहिले इटलीवाले ब्यौपार करने लगे फिर पुर्तगालवाले लिए चढ़ दौड़े। उसके बाद तो हालैण्ड भी, फ्रांस भी, इंग्लैण्ड भी कैसे पीछे रहता। सब जगहके बनियोंने अपनी-अपनी गुट्ट बनाई। उसके राजाओंने मदद दी। वह काले लोगोंके देसकी ओर दौर पड़े। लेकिन जो समुन्दरमें जहाज उड़ाने और मोल-तोल करनेकी ही चतुराईसे ही काम चल जाता तो हिन्दुस्तान के बनिए भी पीछे नहीं थे।

सन्तोखी—तो उनके पास और कौनसी बात थी भैया, जिससे वह दुनियाके राजा बन गए।

भैया—उनके पास बारूदका हथियार था, अच्छी-अच्छी तोपें, बन्दूकें तमन्चे।

दुखराम—क्या हमारे देसके लोग बारूदको नहीं जानते थे?

भैया—हमारे देसवाले तो नहीं जानते थे, लेकिन हमारे पड़ोसी चीनवाले जानते थे।

सन्तोखी—तो चीन वालोंने क्यों नहीं बारूदसे काम लिया।

भैया—वह समझते थे कि यह आतिसबाजीके खेलके ही कामकी है। चंगेजखाँ नामका एक मंगोल सरदार था उसने अपने घुड़सवारोंकी मददसे चीनको जीत लिया। बारूदकी बन्दूकें पहले-पहल उसीने बनवाईं। उसकी फौज दुनिया को जीतती हुई यूरुपमें घुस गई। मंगोलसे ही यूरुपवालोंने बारूदका भेद पाया, मंगोलसे ही यूरुपवालोंने किताब छापनेका ढंग सीखा।

सन्तोखी—तो किताब छापनेकी विद्या यूरुपवालोंको पहले नहीं मालूम थी?

भैया—चीन छोड़ कर किसीको नहीं हिन्दुस्तानको भी नहीं मालूम था। हमारे यहाँ भी उल्टा अच्छर पोतकर लोग अपनी-अपनी मुहर बनाते थे, लेकिन उन्हें यह सूझ नहीं आई कि पूरी किताबको लकड़ी पर उलटा खोदकर छापा जा सकता है।

सन्तोखी—तो चीनी लोग लकड़ीपर उलटा अच्छर खोदकर किताब छापते थे।

भैया—हाँ, फिर यूरुपवालोंने सोचा कि लकड़ी पर एक किताबको उल्टा खोदनेसे यह अच्छा होगा कि एक-एक अच्छर उल्टा बनाकर रख लिया जाय और उतने ही अच्छरोंके जोड़नेसे तो बड़ी से बड़ी पोथी बन जाती है, इस तरह एक बारके बनाए उल्टे अच्छर बहुतसी किताबोंके छापनेका काम देंगे। लकड़ीका अच्छर टिकाऊ नहीं होता, इसीवास्ते उन्होंने सीसेका अच्छर बनाया।

सन्तोखी—तो यूरुपवालोंने दूर तक सोचा?

भैया—बारूदके हथियारोंके बारेमें भी यूरुपवालोंने बहुत दूर तक सोचा और अच्छे अच्छे हथियार बनाए। आज-कलके इतने अच्छे-अच्छे हथियार तो नहीं है, लेकिन उस समय जो हथियार दुनियामें बनते थे उनसे यह बहुत अच्छा था।

दुखराम—तो भैया! पत्थर-लकड़ीके हथियारसे ताँबेकी तलवारोंका जमाना आया, फिर लोहेकी तलवारें, तीर और भाले, फिर बारूदकी तोपें ढलने लगीं?

भैया—लेकिन दुक्खू भाई ! तांबे, लोहे और बारूदके हथियारोंपर जोकोंने ही पूरा कबजा किया।

दुखराम—तभी तो हजार आदमीकी नकेल एक आदमीके हाथमें है।

भैया—बिलायतके ब्योपारी भी हिन्दुस्तानके ब्योपारीके साथ ब्योपार करने लगे। खूब दुगुना-चौगुना नफा कमाने लगे। हमारे यहाँके राजा, नवाब आपसमें लड़ रहे थे। उन्होंने बिलायतवालोंके हथियारोंको बहुत मजबूत देखा और वह गोरोंको लड़नेके लिए किरायेपर रखने लगे। गोरे ब्योपार भी करते थे और किरायेपर लड़ते भी थे।

सन्तोखी—हमारे देसवाले अपने ही क्यों नहीं उन हथियारोंको बनाने लगे ?

भैया—हमारे यहाँ तो सनातन धरम चलता है न ! जो चीज जितनी ही पुरानी है, उतनी ही ठीक है। जब नाक तक पानी आ जाता है, तब सनातन धरम का नसा टूटता है। लेकिन "अब पछताये होत क्या जब चिड़ियाँ चुग गईं खेत"। गोरोंने कुछ लड़ाइयोंमें अपने हथियारोंकी सफलता देखी, हिन्दुस्तानवासोंको एक-दूसरेके साथ खूब लड़ते देखा; फिर बिलायती बनियोंकी कम्पनीने ब्योपारके साथ-साथ देस जीतनेका काम भी अपने हाथमें लिया।

सन्तोखी—इस तरह हिन्दुस्तानमें कम्पनी बहादुरका राज कायम हो गया ?

भैया—हाँ, बिलायती बनियोंके गुटको कम्पनी बहादुर कहते हैं।

दुखराम—मैं तो समझता था कि कम्पनी बहादुर कोई राजा है।

भैया—कम्पनी कहते हैं, गुट्टको दुक्खू भाई ! १७५७ ई० से कम्पनीने हिन्दुस्तानमें अपने राजकी नींव मजबूत कर ली थी और तबसे आज तेरह कम दो सौ बरस हुए।

दुखराम—राजा भी जोंक, बनिया भी जोंक और जब वही आदमी राजा और बनिया दोनों हों, तो देहमें कहाँसे खून बच पाएगा !

भैया—आज सौ बरस हुआ मरकस बाबाने लिखा था कि हिन्दुस्तानके छः करोड़ आदमी जो कुछ साल भरमें कमाते हैं, वह सब बिलायती कम्पनी बिलायत ढो ले जाती है।

सन्तोखी—छः करोड़ आदमीकी सारी कमाई ।

भैया—उस समय हिन्दुस्तानमें बीस करोड़से कम ही आदमी रहते थे, इसलिए हर तीन आदमीमें एक आदमी बिलायतवालोंके लिए कमाता था। और इस रकममें वह धन शामिल नहीं हैं, जो कम्पनीके नौकर घूस-रिसवत, चोरी-ठगीसे जमा करते थे।

दुखराम—यह मरकस बाबा कौन हैं भैया ?

भैया—मरकस बाबाके बारेमें दुक्खू भाई ! फिर हम किसी दिन बताएँगे। मरकस बाबा हीने जोंक-पुरानका परदा खोला। उनके ही परतापसे कमेरोंकी आँखका पट खुला। उन्होंने ही बतलाया कि दुनियाको नरक बनानेका कारन यही जोंकें हैं, उन्होंने ही रास्ता दिखलाया कि कैसे जोंकोंसे पिण्ड छूटेगा, और दुनिया नरकसे सरग बनेगी।

सन्तोखी—तबतो मरकस बाबा कोई औतार हैं भैया।

दुखराम—किसके औतार हैं सन्तोखी भाई ? उन्हींके तो नहीं जो छीर सागरमें सदाके लिए सो गए हैं।

भैया—सन्तोखी भाईका मतलब है कि मरकस बाबा बहुत भारी परउपकारी जीव रहे हैं और उनकी सूझ ऐसी रही, जैसीकि और आदमियोंमें देखनेमें नहीं आती।

सन्तोखी—हाँ भैया ! यही मतलब है, क्या करें जो लबज लोग बोलते हैं, जान पड़ता है उसीमें बहुत खामी है।

दुखराम—खामी ही नहीं बहुत धोखा है सन्तोखी भाई ! और यह सब धोखा जोंकोंका फैलाया हुआ है। अपने जान जोंकोंने हमें साँस लेनेका भी कोई रास्ता नहीं छोड़ा था। लेकिन उनको क्या पता था कि कमेरोंका पच्छ करनेवाले मरकस बाबा दुनियामें पैदा होंगे। भैया ! तो जो तुम हम लोगोंके आँखका पट्ट खोल रहे हो, यह सब मरकस बाबा हीने बताया है ?

भैया—हाँ, दुक्खू भाई ! दुनियामें इतना बड़ा नबज पहचाननेवाला कोई बैद नहीं हुआ। उसने दुनियाके रोगका कारण बतलाया, फिर दवाई भी बत-लाई। उस दवाईको दुनियाके छठे भागके लोगोंने खाया, वह आज निरोग हो गए

हैं। मरकस बाबाने यह भी बतलाया कि अब तक जितनी जोंकें पैदा हुईं थीं, अब उन सबकी कान काटनेवाली सबसे बड़ी जोंक दुनियामें आ गई। इसको घड़े दो घड़े खूनसे सन्तोख नहीं हो सकता, इसके लिए समुन्दरका समुन्दर खून चाहिए।

सन्तोखी—वह सबसे बड़ी जोंक कौन है भैया?

भैया—पहले जनम होता है तब नाम रखा जाता है। सुनो जनमकी बात। बिलायती बनिये हिन्दुस्तानमें राज और व्योपार दोनों करने लगे—बल्कि राज भी वह व्योपार हीके लिए करते हैं। हिन्दुस्तानका माल वह खरीद-खरीदकर और बहुत कुछ नजर-सौगातमें ढो-ढोकर बिलायत ले जाने लगे। हिन्दुस्तानका कपड़ा आजसे सौ बरस पहिले भी बिलायत बहुत जाता था। हिन्दुस्तानके धनसे बिलायत कितना धनी हो गया, यह इसीसे समझ सकते हो, कि जहाँ १८१४ई०-में बिलायतकी सारी सम्पत्ति ३,० अरब रुपया (२३० करोड़ पौण्ड) थी वहाँ ६१ साल बाद १८७४ ई० में बढ़कर ११ खरब ५ अरब रुपया (८५०० करोड़ पौण्ड) हो गई। इस धनकी जो इतनी वृद्धि हुई उसमें थोड़ा ही बहुत और जगहसे आया, बाकी अधिक भाग हिन्दुस्तानसे गया।

दुक्खराम—माने अरब-खरब रुपया हमी लोगोंके देहका खून न खींच करके गया?

भैया—इसे भी क्या पूछना है। कम्पनी बहादुरने धरम कमानेके लिए थोड़े ही हिन्दुस्तानको अपने हाथमें लिया है। बंगालमें कम्पनीका राज कायम होनेके बाद १७६४-६५ ई० में जहाँ १ करोड़ ६ लाख ३४ हजार रुपया (८ लाख १८ हजार पौण्ड) मालगुजारी आई थी वहाँ दूसरे ही साल वह पौने दो गुना कर दी गई। (१४ लाख ७० हजार पौण्ड) और कम्पनीके ६३ वर्षोंके राज्यमें मालगुजारी बीस गुना बढ़ गई। और जानते हो इसका फल? अकाल हर दूसरे-तीसरे साल दौड़ने लगे। कम्पनी बहादुरके राज कायम होनेके छठवें ही साल (१७७०) में बंगालमें एक करोड़ आदमी भूखों मर गए।

दुक्खराम—भैया तुम चाहे कुछ भी दबाओ और सन्तोखी भाई कितना ही नाराज हों मैं तो समझता हूँ कि भगवान कहीं भी नहीं हैं, और आसरमें भी नहीं हैं, कभी पैदा भी हुए हों तो उनको मरे-मिटे हजारों बरस हो चुके।

सन्तोखी—इतना तो मै भी कहूँगा दुक्खू भाई कि एक-एक सालमें एक-एक करोड़ या साठ-साठ लाख आदमियों को जोंकें चूसकर मार डालें फिर भी भगवान औतार न लें तो उनके सब औतारोंकी कथा झूठी है।

भैया—हिन्दुस्तानसे जो धन दुहा जाता था उसमें कपड़ेका भी बहुत भाग रहता था। बिलायतके कुछ ब्योपारियोंने सोचा कि यदि हम हिन्दुस्तानसे भी सस्ता और अच्छा कपड़ा दे सकें तो उल्टी गंगा बहा देंगे।

सन्तोखी—मानो कपड़ेके नइहरमें कपड़ा बनाकर भेजेंगे!

भैया—इतना ही नहीं, नइहरकी ही रुई लेकर, क्यों कि बिलायतमें कपास नहीं पैदा होती है। विचार करनेवालोंने बुद्धि लड़ानी शुरू की। अठारहवीं सदीके अन्त तक भापके इंजनका पता लग गया और कपड़े बुननेके करघे भापसे चलाये जाने लगे। मशीनकी चीज हाथकी बनी चीजसे सस्ती होती है।

दुखराम—यह क्यों होता है भैया। हम देखते हैं कि मिलकी बनी चीज देखनेमे बुरी नही होती मजबूत भी होती, फिर सस्ती क्यों होती है?

भैया—आदमीका जाँगर (परिश्रम या मेहनत) जितना लगता है, चीजका दाम भी उतना ही होता है। गाढ़ा कपड़ा सस्ता होता है और बनारसी किमखाब बहुत महँगा क्यों कि गाढ़ेमें उतना आदमीका जाँगर नहीं लगता जितना कि किमखाबमें। अब हाथके करघेपर पुराने ढंगसे कपड़ा बुननेमें एक आदमी पाँच गजसे ज्यादा कपड़ा नहीं बुन सकता और वह भी हाथ सवा हाथ अरजका। और कपड़ेकी मिलमें एक आदमी दोसे चार करघे तक सँभाल सकता है।

दुखराम—हाँ भैया उसमें हाथसे ढरकी थोड़े ही चलानी पड़ती है। सब तो अपने ही आप होता है, कहीं सूत टूट जाता है तो उसे जोड़ देना होता है।

भैया—कितनी तेजीसे बुनाई होती है! एक दिनमें एक आदमी करघोंके मुताबिक सौ, डेढ़ सौ, दो सौ गज तक कपड़ा बिन सकता है। १०० गज लेने पर भी हाथके करघेसे जितना काम १० आदमी करेंगे मशीनपर उतने कामके लिए सिर्फ एक आदमी चाहिए। अब तुम्हीं बतलाओ १० आदमी के जाँगरसे बना कपड़ा सस्ता होगा या एक आदमीके जाँगरसे बना उतना ही कपड़ा?

सन्तोखी—एक आदमीके जाँगर वाला भैया! क्यों कि उसमें मजूरी कम

देनी पड़ेगी।

भैया—कलवाले कारखानोंने हाथकी कारीगरीको तबाह कर दिया, इसी-लिए कि कल लगानेसे थोड़े ही आदमी ज्यादा काम कर सकते हैं। कुछ दिनों पहले जानते हो न, चीनी और गुड़ करीब-करीब एक भाव बिकते थे वह भी इसीलिए कि मिलोंमें चीनी बनानेमें बहुत कम आदमी लगते हैं। देखा रहा है एक ओरसे बोझाकी बोझा ऊख खीची जा रही है और पच्चीसों कलोंमें होते दूसरे छोर पर दानादार सफेद चीनी बोरेमें बन्द होती जा रही है।

दुखराम—कल-मशीनसे भैया चीज बहुत सस्ती तैयार होती है, यह तो हम रोज देखते हैं।

भैया—सस्ती ही नहीं होती दुक्खू भाई! वह इतनी इफरात होती है कि अगर मिलवालोंको सस्ती पड़ जानेसे घाटा होनेका डर न होता तो थोड़े ही जोर लगानेसे आदमी पीछे एक मन चीनी हर साल हिन्दुस्तानमें बाँटी जा सकती है। कल-मशीनने आदमीके खाने, पहिनने, रहनेकी चीजोंको इतना इफरात कर दिया है कि जो जोंकें बाधा न डालें तो दुनियामें एक भी आदमी भूखा नंगा नहीं रह सकता। लेकिन इस बातको अभी हम आगे कहेंगे दुक्खू भाई! अभी तो यही हम बतला रहे थे कि सबसे बड़ी जोंक कैसे पैदा हुई। जब कल-मशीनों को दिमागवालोंने सोचकर बनाया तो ब्योपारी तुरंत दौड़ पड़े। उन्होंने सोचा कि अब धुनिया, जुलाहा, लुहाराके पीछे दौड़नेकी हमें कोई जरूरत नहीं। हम रुई खरीद कर कारखाने लाएँगे और कल उसका सूत कात कपड़ा बना देगी। इसी समय रेल और जहाजवाले इंजन भी बन गये इसलिए माल एक जगहसे दूसरी जगह भेजना भी सस्ता हो गया। ब्योपारियोंके पास करोड़ों की पूँजी थी, दिमागवालोंकी सोची चीजको तुरंत ले लिया और सब तरहके लाखों कारखाने खोल दिये। अब नफाका क्या ठिकाना! किसानसे रुई खरीद रहे हैं उससे भी कारखानेवालेको नफा। रेलसे भेजते हैं, रेल भी कारखाने वालोंकी है उसका भी नफा। जहाजसे सामान बिलायत भेजते हैं उसका किराया लगता है, जहाज भी कारखानेवालोंका। फिर कपड़ेकी मिल भी कारखानेवालोंकी है, उसका भी नफा है उन्हींको। उसके बाद कपड़ा हिन्दुस्तानको लौटता है वहाँ

भी हर जहाज और रेल हर जगह पूँजीपतिका नफा धरा हुआ है। पुराने व्यापारी इतना नफा नहीं कमा सकते थे क्योंकि वह सिर्फ तैयार मालको एक जगहसे दूसरी जगह भेजते थे और आजके यह पूँजीपति कच्ची रुईमें हाथ लगानेसे लेकर हर पग पर नफा कमाते हैं।

सन्तोखी—यह ठीक कहा भैया! हम लोग रुपया पीछे पैसा दो पैसा बहुत समझते हैं और यह तो आठ आनेके कपासमें चौदह रुपयेकी धोती बेचते हैं, फिर इनके नफेका क्या पूछना।

भैया—विलायतवाले पूँजीपति...

दुखराम—पूँजीपति क्या है, सो अच्छी तरह नहीं समझा भैया?

भैया—पूँजी तो समझते हो दुक्खू भाई?

दुखराम—रुपया-पैसा, जमा-पूँजी यही न भैया?

भैया—हाँ, यही रुपया-पैसा लेकिन जो रुपया-पैसा कल कारखानेमें लगा है जिसके कारण पूँजीवाला आठ आनेकी कपासको चौदह आनेमें बेचता है उसे पूँजी कहते हैं और जो अपनी पूँजीसे इन कल-कारखानोंको खड़ा करते हैं उसीको कहते हैं पूँजीपति। पूँजीपतियोंके नफेके सामने व्यौपारियोंका नफा कुछ नहीं है।

सन्तोखी—ठीक कहा भैया। जो मारवाड़ी, सेठ लोग खाली व्यौपार करते थे, अब सब अपनी चीनी मिल, कपड़ा मिल, जूट मिल, सीमेन्ट मिल, कागज मिल खोलते जा रहे हैं। अब उनका ध्यान कोई दूसरी ओर जाता ही नहीं।

भैया—बिड़ला, डालमिया, सिंघानियाँ, एक ही पीढ़ी पहले खाली व्यौपारी थे, दूसरे कारखानेका माल खरीद कर बेंचते थे। थोड़ासा उन्हें भी नफा हो जाता था। लेकिन अब देख रहे हो न? बिड़लाके कितनी ही चीनीकी मिलें, कपड़ा और जूटकी मिलें, हिन्द बाइसिकल कारखाना और अब मोटरका भी कारखाना खुल रहा है। पूँजीपतिके नफेके सामने व्यौपारीका नफा कुछ भी नहीं है दुक्खू भाई!

दुखराम—मैंने तो एक ही बात गाँठ बाँध ली है। जो आठ आनेके कपासको लेकर उसे १४) की धोती बना सकता है, उसके नफेके बारेमें क्या कहना है।

भैया—विलायतवाले पूँजीपति दुनिया भरका धन लूटकर अपने घरमें गाँज रहे थे, इसे देखकर दूसरे मुल्कवाले कैसे चुप रहते ! फ्रांसने भी कारखाने खोले, अमेरिकाने भी कारखाने खोले, रूसने भी कारखाने खोले।

सन्तोखी—जापानने भी कारखाने खोले।

भैया—हाँ जापानने भी खोले लेकिन अभी हमको जो समझाना है, उसमें जापानका उतना काम नहीं है। विलायतने कारखाना खोला था। पहिले तो दुनियामें और किसी मुल्कमें कारखाने खुले ही न थे इसीलिए। 'चारों मुलक जगीरीमें' उसीके था। लेकिन जब फ्राँसने कारखाना खोला तो दुनियामें जिन-जिन मुल्कोंको फ्राँसीसियोंने अपना गुलाम बनाया था वहाँ फ्रांसके कारखानेका ही माल बिक सकता था। अमेरिकाके पास अपना ही बहुत बड़ा मुल्क है, इसलिए कितने ही सालों तक माल बेंचने के लिए उसे गाहक ढूंढ़नेकी जरूरत नहीं थी। जर्मनीके लिए आफत थी वह सबसे पीछे कारखाने खोलने लगा, लेकिन अपनी विद्या-बुद्धिसे वह बहुत तेजीसे बढ़ा। माल टालका टाल जमा हो गया, बेचनेके लिए दुनियामें जहाँ भी जाते हैं, जवाब मिलता है—हटो-हटो यह तो हमारा राज्य है। अफ्रीकामें जाते हैं यही बात, हिन्दुस्तानमें आते हैं यही बात, अब तुम्हीं बतलाओ, जो ठ्रप लगा जाए तो उसका क्या मतलब होगा ?

सन्तोखी—कारखाने बन्द हो जाँएगे, पूँजीपतियोंका दिवाला निकल जायगा और क्या होगा ?

भैया—और यह भी समझो कि अब दुनियामें राजाओंका राज नहीं है।

दुखराम—क्यों भैया, राजाओंका राज नहीं है तो किसका राज है ?

भैया—पूँजीपतियोंका राज है, कल-कारखानेवाले करोड़पतियोंका राज है। आजसे तीन सौ बरस पहले (३० जनवरी १६४६ ई०)को विलायतके व्यापारियोंने अपने राजा चार्ल्सका सिर कुल्हाड़ेसे काट डाला था, उसी दिनसे प्रभुता व्यापारियोंके हाथमें चली गई लेकिन कारखानोंके खुलने और पूँजीपतियोंके पैदा होनेमें अभी डेढ़ सौ साल और लगनेवाले थे। व्यापारियोंमें से ही पूँजीपति पैदा हुए और पूँजीपतियोंको सिर काटने भरसे सन्तोख नहीं हो

सकता था बल्कि वह सिर काटनेको नुकसानकी बात समझने लगे !

दुखराम—नुकसानकी बात क्यों मानने लगे ?

भैया—जोंक हैं न ! जोंकोंको बहुत परदाकी जरूरत होती है नहीं तो—"उघरे अन्त न होहि निबाहू", राजाके रहनेपर खूब बड़ा-बड़ा दरबार लगेगा, झंडा पताका निकलेगा, सहर सजाया जायगा, हीरा-पन्ना जड़े मुकुटको दिखलाकर लोगोंकी आँख चौंधियायी जायगी, राजपुरोहित भगवानके नामसे उसके सिरपर मुकुट रखेंगे और अबूझ कमेरोंकी आँखमें धूल झोंककर बतलाया जायगा कि यहाँ कोई जोंक है नहीं है यह सब भगवानकी दाया-माया है।

सन्तोखी—तो पूँजीपतियोंने माटीकी मूर्त्ती बनाके रखना चाहा।

भैया—हाँ, देखा नहीं आठवें एडवर्डको किसने निकाला ? वह बाल्डविन था बाल्डविन !!

सन्तोखी—बाल्डविन कौन था भैया ?

भैया—बाल्डविन इङ्गलैंडका महामन्त्री था। लेकिन उससे भी बढ़कर वह था गेस्ट, कीन, आदि बड़ी-बड़ी कम्पनियोंका करोड़पति, पूँजीपति।

दुखराम—तब तो भैया राजा कोई रहे बिलायतके असली राजा तो यही पूँजीपति हैं।

सन्तोखी—और हिन्दुस्तानके असली राजा ?

भैया—जब बिलायतके राजाको ही उन्होंने गुड़िया बना दिया तो हिन्दुस्तानके बड़े लाट, छोटे लाट, हैदराबाद, बड़ौदा, मैसूरके बारेमें क्या पूँछना है ? यह सब उन्हींके बरदान पर हिल-डुल रहे हैं।

दुखराम—यह तो कठपुतलीका नाच मालूम होता है।

भैया—ठीक कहा दुक्खू भाई ! है यह कठपुतलीका नाच ही। सब सूत बिलायतके छः सौ परिवार—पूँजीपतियों—के हाथमें है और "सबहि नचावै राम गोसाईं।" तो मैं बतला रहा था कि जर्मनीने अपने यहाँ कारखाने ठीक किये। मालको बेंचनेके लिए जिस देशमें भी गये वहाँ धक्का मिला तो वहाँके पूँजीपति चुप कैसे रहते ? उन्होंने कहा कि जो खुसीसे दरवाजा नहीं खोलोगे तो हम दरवाजा तोड़कर भीतर चले आवेंगे। यही कारण था जो

आजसे तीस बरस पहले जर्मनीने लड़ाई छेड़ दी। उसने सोचा था कि दुनियाके चार हिस्सोंमें एक हिस्सा भूमि और आदमी अँगरेज लोगोंके हाथमें है जो इनको खतम कर दिया, तो सब जगह हमारा राज होगा, हमारा माल बिकेगा। फ्रान्सने भी दुनियाका बहुत-सा हिस्सा घेर लिया। उसके खतम होने पर हमारे मालके लिए और भी बाजार मिलेगी।

दुखराम—तो भैया! गयाके पण्डे बन गये। जैसे वह जजमानके लिए लड़ जाते हैं वैसे ही ये गाहकोंके लिए लड़ गये।

भैया—हाँ, यह गाहकोंके लिए लड़ाई हुई। जितना ही अधिक गाहक मिलेंगे उतना ही अधिक माल बेचेंगे और यदि गाहक अपने ही गुलाम हुए, तब उनसे खाली कपास पैदा कराना जैसा सस्ता-सस्ता काम करायेंगे। और आठ आनाका चौदह रुपया बनायेंगे। पूँजीपति तभी इच्छा भर खून पीने पायेंगे। बल्कि इच्छा भर मत कहो, यदि समुन्दर भर भी खून मिले तो भी इन जोंकोंकी इच्छा पूरी नहीं होगी। और इन जोंकोंके खूनके प्यासके लिए तीस साल पहलेवाली लड़ाईमें इतने लोग मरे और घायल हुए:—

	मरे	घायल
अँगरेजी राज्य	१०८६,६१६	२४,००,६८८
फ्रान्स	३०,६३,२८८	४०,६०,०००
जर्मनी	२०,५०,४६६	४२,००,०१०
अमेरिका	१,१५,६६०	२,०५,७००

यह है जोंक पुरानका भयानक अध्याय लेकिन यही आखिरी अध्याय नहीं है।

अध्याय ४

जोंकोंके दुसमन मरकस बाबा

दुखराम · आज तो भैया मरकस बाबाके बारेमें कुछ बताओ!

सन्तोखी—हाँ, भैया जोंकोंकी बात सुनकरके तो हमारा दिल खौलने लगा।

उनके सामने गाय, भैंसकी देहमें लगनेवाली जोंकें तो कुछ भी नहीं।

भैया—देखा न सन्तोखी भाई, जोंकोंकी सकल-सूरत चाहे कितनी ही देखनेमें सुन्दर हो, उनके आस-पास कितनी ही दया-धरमकी बात चलती हो, लेकिन उनके चारों ओरकी धरती खूनसे लथपथ हो रही है।

सन्तोखी—इनके बड़े-बड़े महलोंके नीचे न जाने कितनी जिन्दा लासें पड़ी हुई हैं और हर पग-पगपर उनके खूनकी प्यास बढ़ती ही गई है।

भैया—हाँ पहिले बिरादरी-बिरादरीकी छोटी-मोटी लड़ाई होती थी फिर राजाओंकी बड़ी-बड़ी लड़ाई हुई। लेकिन इन जोंकोंकी लड़ाइयोंके सामने तो पहिलेकी लड़ाइयाँ कुछ भी नहीं। आज भी जो इतनी बड़ी लड़ाई हो रही है सो भी उन्हीं जोंकोंके कारन। जबसे जोंकोंका त्रास बढ़ा तभीसे कितने ही दया रखनेवाले महात्मा सोचने लगे कि कैसे दुनियाका दुख कटे। उन्होंने सोचा कि जब तक धनी-गरीब रहेंगे तब तक लोगोंको सुख-चैन नहीं मिलेगा, क्योंकि धनी होते ही हैं बहुतसे लोगोंको गरीब बनाकर। जो धनी-गरीबका भेद मिटा दिया जाय तो दुनियामें इतना दुःख नहीं रह जायगा।

दुखराम—क्यों भैया, ऐसे महात्मा लोग दुनियामें पहिले भी पैदा हुए हैं?

भैया—पैदा हुए, लेकिन उन्हें ठीकसे नबज नहीं मालूम। वह रोगके असली कारणका पता नहीं लगा सके।

दुखराम—कारणका पता नहीं लगेगा तब दवा कैसे बतायेंगे!

भैया—खूनके भीतरके रोगको पानीसे धोनेसे क्या होता है? अढ़ाई हजार बरस पहले हमारे ही देसमें बुद्ध नामके महात्मा हुए थे।

सन्तोखी—वही बौधावतार भैया?

दुखराम—बस सन्तोखी भाई! मालूम पड़ता है कि औतार तुम्हारे मुंहसे नहीं छूटेगा। कौन औतार? किसका औतार? कहीं उसका पता भी है? बिलायती बनियोंने एक बरसमें एक करोड़ आदमियोंको मार डाला, लेकिन औतारका कहीं पता नहीं! जोंकोंने पारसाल आठ लाख आदमियोंको तड़पा-तड़पाकर मार डाला, लाखों तिरियोंसे इज्जत बेचवाई, तब भी उस औतारका पता नहीं! छोड़ो औतारकी बात। औतार होता है राजाओं-रानियोंका। दुनिया

भरकी जोंकोंको बचानेके लिए हमें औतारसे कोई मतलब नहीं।

भैया—हाँ दुक्खू भाई ! बुद्धने अपनेको किसीका औतार नहीं कहा, वह मानुख थे और मानुखोंका हित चाहते थे। उन्होंने सोचा कि सारी दुनियाको धनी-गरीबका भेद मिटानेके लिए तैयार करना मुश्किल होगा, राजा और सेठ दोनों बड़ी बड़ी जोंकें खिलाफ हो जायँगी; इसलिए उन्होंने चाहा जो थोड़ेसे समझदार और त्यागी आदमी अपने भीतरसे धनी-गरीबका भेद मिटाकर अपने सुन्दर जीवनसे दिखला दें तो क्या जानें दूसरे लोग भी पसन्द करें और उसी रास्तेपर चलें।

सन्तोखी—तो बुद्धने ऐसे लोगोंकी जमात बना ली थी कि जिसमें धनी-गरीबका कोई भेद न था ?

भैया—हाँ, ऐसे औरत-मरदोंकी जमात बनाई थी जिसमें न कोई धनी था न गरीब था। उनका घर-द्वार, खटिया-बिछौना, खाना-पीना सब साझेमें रहता। बाभन हो या चंडाल उनके भीतर कोई जात-पाँतका भेद न था, सब एक साथ खाते, एक साथ सोते, एक दूसरेके दुख-सुखमें सरीक होते।

दुखराम—बड़ी अच्छी जमात बनाई थी भैया !

भैया—लेकिन जोंकोंका इससे क्या बिगड़ा। बड़ी-बड़ी जोंकोंने इस जमातके लिए बड़े-बड़े महल बनवा दिए थे, गाँव और जमीन दे दी, खाने-पीनेका आराम कर दिया। फिर कहने लगे यह तो महात्मा लोग हैं, संसारत्यागी भिच्छु संन्यासी हैं, इनमें सब सामरथ हैं।

सन्तोखी—माने उनके चारों ओर दीवार घेरकर उसीमें उनको बन्द कर दिया, जिसमें उनके आचरनका दूसरों पर कोई असर न पड़े।

भैया—और असर नहीं पड़ा, क्योंकि लोग समझने लगे कि ऐसा जीवन तो साधू-सन्यासी ही बिता सकते हैं, सारी दुनियाके लिए सम्भव नहीं। इस तरह बुद्धकी दवा सारी दुनियाके लिए नहीं रह गई और फिर जोंकोंने उस जमातको बिगाड़ना शुरू किया। बुद्धने कहा था कि जिस किसीको कुछ दान देना हो तो सारी जमातको दे, एक आदमीको नहीं। लेकिन बुद्धके देह छूटनेके बाद जोंकोंने बड़ा-बड़ा दान जमातके नाम नहीं, आदमीके नाम देना शुरू किया। जमातमें फूट पड़

गई, धनी-गरीबका भेद फिर शुरू हो गया, जोंकोंका बाल भी बाँका न हुआ। जैसे बुद्धने हमारे देसमें किया वैसे दूसरे देसों चीन, ईरान, यूरुप--में भी कितने ही महात्मा पैदा हुए जिन्होंने धनी-गरीबका भेद मिटाना चाहा पर कोई सफल नहीं हुआ। अन्तमें कल-मसीनकी विद्याका पता लगा। व्योपारियोंने कारखाने खोल लिये, एक-एक कारखानेमें एक छतके नीचे हजार-हजार दो-दो हजार मजूर काम करने लगे। कारीगरोंका रोजगार कलोंने चौपट कर दिया। धुनिया, जुलाहा, बढ़ई, लोहार, रंगरेज, कुम्हार, लहेरा, ठठेरा कलकी चीजोंके सामने सबको हार माननी पड़ी। सबका घर उजड़ा और कारखानेमें मजूरी करना छोड़ जीनेका कोई रास्ता नहीं दिखाई दिया। लाखों मजूर बिलायतके कारखानोंमें मजूरी करने लगे। मालिक तो गुलाम चाहते हैं, मजूर नहीं चाहते। गुलामको चाहे मारो-पीटो उसको कहीं ठार नहीं है। उसकी देह तो मालिकके हाथमें बिक चुकी है। मजूरोंके साथ भी मालिक ऐसा ही सलूक करना चाहते थे। जब चाहा किसीको नौकर रख लिया, नाराज हुए तो निकाल दिया। लेकिन कारखानेवाले मजदूरोंका घर तो पहले ही उजड़ गया था, अब मालिकके निकालने पर जायें तो कहाँ जायँ! अपने भाई मजूरके ऊपर जुलुम करते देख दूसरे मजूरोंका भी दिल पसीज गया। वह यह भी समझने लगे जो आज इसकी गति है वही कल हमारी होगी। मजूरोंमें एका होने लगा, उन्होंने कहा कि हमारे भाईको कामसे निकालना ठीक नहीं, निकालोगे तो हम काम नहीं करेंगे।

दुखराम—हड़ताल करेंगे।

सन्तोखी—हड़ताल क्या दुक्खू भाई!

दुखराम—सब तुम्हीं समझ लोगे! मजूर कारखानेका काम छोड़ देते हैं, इसीको हड़ताल कहते हैं।

भैया—पूँजीपति जोंकोंको यह पता नहीं था। उन्होंने समझा कि जिनका घर-द्वार नहीं, ठौर-ठिकाना नहीं, उनकी क्या मजाल है कि हमें आँख दिखायें। लेकिन उन्हें यह नहीं समझमें आया कि जिन कल-कारखानोंने उनके घरोंमें करोड़ोंकी बरसा की उन्होंने इन हजारों मजदूरोंको एक जगह कर दिया, एक साथमें बैठा दिया। अब सबका अच्छा-बुरा एक ही तरहका था। एकके ऊपर संकट पड़नेपर

दूसरे चुप कैसे रह सकते थे। मजूरोंकी एक बिरादरी बन गई। उन्होंने हड़तालें कीं, हड़ताल करने पर उनके बाल-बच्चोंको भूखा मरना पड़ता लेकिन मालिकका भी लाखोंका नुकसान होता। सरकार भी मालिकोंकी। पुलिस और पलटन भी पूँजीपतियोंकी। सबने मजूरोंको एक ओरसे दबाया, कितने ही गोलीसे मरते, कितनोंहीको जहलखाना भेजा जाता और कितने ही भूखके मारे तड़पते; लेकिन यह एक दिनकी आफत तो नहीं थी कि मजूर सिर नवा देते। 'बुढ़ियाके मरनेका डर नहीं था, डर था जमके परक जानेका'। हारते, तकलीफ सहते भी मजूरोंकी बहुतसी माँगोंको पूँजीपति माननेके लिए मजबूर थे। यह अठारह सौ ईसवीसे कुछ पहिले और कुछ पीछेकी बात है। इसके बाद ही आजसे सवा सौ वर्ष (५ मई १८१८ ई०) पहले मरकस बाबाका जनम जर्मनीमें हुआ। राइनलैंड इलाकेके ट्रेवेज नगरमें उनके पिता एक यहूदी वकील थे। मारकस यह खान्दान का नाम था। बाबाका नाम था कारल।

दुखराम—पूरा नाम कारल मारकस हुआ न भैया?

भैया—हाँ, लेकिन दुनियामें मारकस नाम हीको सब जानते हैं।

दुखराम—और यहूदी क्या है?

भैया—यहूदी एक जाति है, जिसमें बड़े-बड़े पूँजीपति भी हैं, बड़े-बड़े पंडित भी हैं लेकिन सबसे अधिक मजूर हैं। दुनियाँमें हर जगह वह बिखरे हुए हैं। ईसा मसीहको १९४४ बरस पहले कुछ यहूदियोंने चुगली करके फाँसी पर चढ़वा दिया, इसी वास्ते ईसा मसीहके माननेवाले किरिस्तान लोग यहूदियोंसे घिनाते हैं। मरकस बाबाके पिता वकील थे, जब मरकस बाबा छः ही बरसके थे तभी उनके पिता यहूदी धरम छोड़ कर ईसाई हो गये थे। मरकस बाबा लड़कपन हीसे बुद्धिके बड़े तेज थे।

दुखराम—तेज न होते तो जोंकोंके चार हजार बरसके जालको तोड़ पाते!

भैया—मरकस बाबाने अपने सहरके इसकूलमें पढ़ा। कभी-कभी अपने पिताके दोस्त एक ताल्लुकदारसे भी सतसंग होता था। ताल्लुकदार विद्वान थे और विद्याका आदर करते थे। इसकूलकी पढ़ाई खतम करके सत्रह बरसकी उमरमें वह बोन सहरके विश्वविद्यालयमें वकालत पढ़ने लगे। लेकिन एक

साल बाद मरकस बाबाका मन उचट गया। तब वह जर्मनीके सबसे बड़े सहर बर्लिनके विस्सविद्यालयमें चले गये। वकालतका पढ़ना छोड़ दिया अब वह पढ़ने लगे इतिहास, कविता और दरसन।

दुखराम—दरसन क्या है भैया!

सन्तोखी—दरसन भी नहीं जानते! रोज हम लोग दरसन-परसन करते हैं।

दुखराम—तो इस दरसन-परसनमें पढ़ना क्या है, यह कोई दूसरा ही दरसन होगा। सखी-समाजवालोंको जैसे भगवान दरसन देते हैं वैसा दरसन तो नहीं है भैया!

भैया—हाँ, कुछ वैसा ही है! है तो यह अँधेरी कोठरीमें काली बिल्लीका पकड़ना। बल्कि खाली अँधेरी कोठरीमें काली बिल्लीका पकड़ना। लेकिन इसको लोग समझते हैं कि वहीं जाकर विद्याका ओर होता है।

दुखराम—यहाँ भी तो जोंकोंकी माया नहीं है भैया!

भैया—बहुत भारी माया है। दरसनवाले कहते हैं कि यह दुनिया सब माया है।

दुखराम—उनके सामने जब थाली परोसकर रख दी जाती है तो वह अपना हाथ उधर फैलाते हैं कि नहीं!

भैया—फैलाते हैं, खाते हैं, मौज करते हैं।

दुखराम—बस-बस हो गया भैया! यह भारी धोखा है, जोंकोंका बड़ा भारी जाल है, जोंकोंका छप्पन परकार तो छिनाएगा नहीं। उनका सराब और परियोंका नाच चलता ही रहेगा। वह लोगोंका खून पी-पीकर सालमें करोड़-करोड़ आदमी मारते रहेंगे। उनके भोग-बिलासमें यह दरसन कोई दखल नहीं देगा। वह बस यही चाहता है कि जोंकोंके जुलुमको लोग माया समझें। दुनियाको नरक बनानेका सारा कसूर जोंकोंका है, लेकिन वह लोगोंको बतलाना चाहते हैं कि यह सब माया है।

भैया—तुम्हारा कहना ठीक है दुक्खू भाई! लोगोंको भूल-भुलैयामें डालने-के लिए हिन्दुस्तानमें भी दरसनवाले ग्यानी पैदा हुए, यूरुपमें भी पैदा हुए। मरकस बाबाने जवानीमें दरसन पढ़ा तो अच्छा ही किया। जब मरकस बाबा

उन्नैस सालके थे तभी कांट और फिकटे जैसे चोटीके पंडितोंका दरसन उन्हें थोथी कल्पना मालूम होने लगी, फिर मरकस बाबाको एक और दरसनके पंडित हेगलकी किताब पढ़नेको मिली। हेगलकी यह बात मरकस बाबाको बहुत पसन्द आई कि दुनिया जो यह चित्तर-विचित्तर दिखाई दे रही है वह इसीलिए कि वह हर छन बदल रही है। दुनियाकी कोई चीज छोटीसे छोटी या बड़ीसे बड़ी नहीं जो न बदले। हमारे यहाँ भी हेगलसे चौबीस सौ बरस पहले बुद्ध महात्माने यह कहा था।

दुखराम—चौबीस सौ बरस पहिले! और बुद्ध महात्मा भी तो धनी-गरीब-का भेद मिटाना चाहते थे। वह भगवानको मानते थे कि नहीं भैया!

भैया—नहीं, बिल्कुल नहीं। वे कहते थे कि है कहकर जिसे हम पुकारते हैं वह सभी चीजें छन-छन बदलती हैं। जो बदलती नहीं है ऐसी दुनियामें कोई चीज नहीं।

दुखराम—जो सन्तोखी भाई बुद्ध महात्मासे पूछते कि भगवान हैं कि नहीं तो क्या जवाब देते?

भैया—पहले सन्तोखी भाईसे पूँछते कि भगवान बदलते हैं कि नहीं, माने बिल्कुल मर जाते हैं कि नहीं और फिर उनकी जगह कोई दूसरा बिल्कुल नया भगवान पैदा होता है कि नहीं? पहले बुद्ध महात्मा सन्तोखी भाईसे यह सवाल करते।

दुखराम—सन्तोखी भाई! बताओ तुम क्या जवाब देते?

सन्तोखी—जो भगवानको मानता है, वह उन्हें जनम-मरनसे परे मानता है।

भैया—तो ऐसी चीजके बारेमें बुद्ध महात्मा कहते कि वह अफीमचीकी पिनक है। ऐसी चीज दुनियामें कोई नहीं हो सकती।

दुखराम—तो सब चीज बदली रहती है। दुनियामें न बदलनेवाली चीज कोई नहीं है, यही बात मरकस बाबाको पसन्द आई न भैया?

भैया—बरलिनसे फिर मरकसबाबा जेना सहरके विश्वविद्यालय में पढ़ने गए और तेईस बरसकी उमरमें विद्या-पारंगत होनेके लिए उनको डाक्टरकी पदवी मिली।

दुखराम—दवाई देनेवाला डाक्टर भैया ?

भैया—ज्ञानका डाक्टर भाई दुक्खू ! मरकस बाबाने ज्ञान तो सब पढ़ लिया, लेकिन दुनियामें देखा, सब जगह नरककी आग धाँय-धाँय जल रही है। उनकी कलममें बज्जरकी ताकत थी। उनकी नजर इतनी पैनी थी कि गहरीसे गहरी जगहमें घुस जाती थी। विसविद्यालयसे पढ़कर निकलनेके बाद मरकस बाबा एक अखबारके सम्पादक हो गये।

दुखराम—सम्पादक क्या है भैया ?

भैया—अखबारके सब लेखोंके परखने और रास्ते दिखलानेके लिए मुख्य लेख लिखनेकी जिसपर जिम्मेवारी हो उसे ही सम्पादक कहते हैं। इसी सम्पादक रहते वक्त मरकस बाबाको मजूरोंकी दुख तकलीफ जाननेका और मौका मिला, फिर दो-साल तक उन्होंने उसके कारण ढूँढ़ने और दवाइका पता लगानेके लिए खूब सोचा, खूब पढ़ा, खूब गुना। जब मरकस बाबा पचास बरस (१८४३)के थे तभी अपने एक दोस्तको खत लिखा था—"बटोरने और व्यौपार करनेका जो ढंग दुनियामें चल रहा है, मानुस जातिको गुलाम बनाने और खून चूसनेका जो ढंग चल रहा है वह सारे समाजकी जड़को भीतर ही भीतर जल्दी-जल्दी कुतर रहा है; जितनी जल्दी-जल्दी आदमियोंकी तादाद बढ़ रही है उससे भी जल्दी-जल्दी कुतर रहा है। इस घावको पुराना (जोंकोंवाला) ढंग भर नहीं सकता। क्यों कि उसके पास भरनेकी कोई ताकत ही नहीं। वह (जोंकोंका ढंग) तो सिरिफ भोग करना और अपने जीना, बस इतना ही जानता है।" मरकस बाबाने उसी साल अपने पिताके दोस्त ताल्लुकदारकी लड़की, जेनीसे ब्याह किया।

दुखराम—जोंककी लड़कीसे ब्याह किया ?

भैया—जोंक आदमीसे पैदा हुई है और जोंकोंमें भी कोई-कोई आदमी पैदा हो सकता है कि नहीं ?

दुखराम—हो सकता है भैया।

भैया—जेनी उसी तरहकी आदमी थी। जोंकोंके घरमें उसने जनम लिया। तेइस-चौबिस बरस तक जोंकोंके सुख और भोगमें पली लेकिन बाकी सारा

जीवन उसने कितनी तपेस्सा की, कितना कष्ट सहा, उसको सुनकर रोआँ खड़ा हो जाता है। पच्चीस बरसके ही मरकस बाबा हो पाये थे कि जर्मन सरकार उनके विचारोंको जानकर घबराने लगी। जानते हो न कि दुनिया भरकी सरकारें जोंकोंकी सरकार हैं। जोंकोंके स्वारथको बचाना ही उनका सबसे पहला काम है। जर्मन सरकारने मरकस बाबाको जेहलमें डाल देना चाहा। लेकिन बाबा और जेनी दोनों उनके हाथमें नहीं आये वे फ्रांसकी राजधानी पेरिसमें चले गये।

दुखराम—चाबस (शाबास)! बाबा जर्मन जोंकोंके पंजेसे बच गये।

भैया—लेकिन जर्मन जोंकोंकी सरकारने फ्रांसकी जोंकोंके सरकारपर दबाव डालना सुरू किया। और डेढ़-दो साल बाद फ्रांसकी सरकारने अपने देससे निकल जानेका हुकुम दिया। बाबाको वहाँसे (१८४५में) बेल्जियमके सहर ब्रूसेल्समें चला जाना पड़ा। दो बरस बेल्जियममें रहे। बड़ी गरीबीकी जिन्दगी बिताई। जेनीको सब काम अपने हाथ करना पड़ता, बाबा खाली जोंकोंसे कमेरोंकी मुकती कैसे हो इसीपर सोचते और लिखते रहे। १८४३ में न्याव-वालों की सभा—(जिसे पहले ही से बिदेसमें भागे जर्मन मजूरोंने कायम किया था) की बड़ी सभा लन्दनमें हुई थी, उस सभामें मरकस बाबा और जिनगी भरके साथी ऐंगल्स बाबा भी बुलाये गये थे। मरकस बाबासे वहीं सभा-वालोंने कहा कि हम लोगोंका एक ढिंढोरा पत्तर (घोषणापत्र) लिख दीजिए जिससे जोंकोंको भी पता लग जाय कि कमेरे क्या करना चाहते हैं और दुनिया भरके कमेरोंको भी पता लगे कि दुनियाके इस नरकको ढहानेके लिए उनको क्या करना है। जोंकोंको देहसे छुड़ानेके लिए कौनसा रास्ता पकड़ना है। मरकस बाबाने बत्तिस सालकी उमरमें यह ढिंढोरा पत्तर लिखा, जो हिन्दीमें भी 'कमूनिस्ट घोषणा' के नाम से छप गया है। बीस-पचीस पन्नेकी इस छोटी-सी पोथीमें जो ताकत है वह दुनियाकी किसी बड़ी-सी-बड़ी किताबमें भी नहीं देखी गई। दुनियाके कमेरोंकी आँख खोलनेमें इस ढिंढोरा-पत्तर जितना काम किसीने नहीं किया। किताब खतम करते हुए बाबाने कहा "कमेरो! अपने पैर-की बेड़ियोंको छोड़कर तुम्हारे पास खोनेके लिए रखा ही क्या है (जोंकोंको खतम कर देनेपर) यह सारा संसार तुम्हारा है। सभी देसोंके कमेरो! एक

हो जाओ।"

दुखराम—वाह रे बाबा, आज तू मिलता, तो अपने आसुओंसे तेरा पैर पोंछता।

भैया—अगले साल (१८४८) फ्रांसमें बड़े जोंकराजाके तखतको उलट दिया गया। दुनियाके मुकुटधारी काँपने लगे। फ्रांसके लोगोंने पंचायती राज कायम किया। मरकस बाबाको सरकारके मुखयाने (१ मार्च १८४८ के) बड़े आदरभावसे आनेके लिए बिनती की। बाबा पेरिस सहरमें आये। जर्मनीमें भी कमेरोंने जोंकोंके खिलाफ बगावत की। उसके लिए एङ्गल बाबा और दूसरे कई साथियोंको बाबाने जर्मनी भेजा और अपने भी राइनलैण्ड इलाकेमें पहुँच गये, वहाँसे कमेरोंको रास्ता दिखलानेके लिए एक अखबार निकाला। जोंकोंकी सरकार दब गई थी, इसलिए मरकस बाबाकी ओर उसने हाथ नहीं बढ़ाया। डेढ़ बरस अखबार निकालनेमें बाबा और जेनीमाईके पास जो कुछ भी कौड़ी-पैसा था सब चला गया। जर्मन जोंकोंकी सरकारका फिर कुछ हौसला होने लगा, इसलिए बाबा और जेनी पेरिस चले आये। लेकिन पेरिसके कमेरोंने जोंकोंके स्वाभावको ठीकसे पहचाना नहीं। उन्होंने जोंकोंको अंगूठेसे दबाया, खून निकल जानेसे वह सुटुककर पतली हो गई। कमेरोंने समझा अब यह कुछ नहीं कर सकती, इसलिए उन्हें उठाकर फेंक दिया।

दुखराम—जोंकोंका जीव बड़ा कड़ा होता है भैया! उनको तो जब-तक गत्तर-गत्तर काट-चीथकर न फेंका जाय तब-तक वह मरती नहीं।

भैया—पेरिसमें फिर जोंकोंका जोर बढ़ गया और १८४९ में मरकस बाबाको फ्रान्ससे निकल जानेका हुक्म हुआ। बाबा और जेनी कमेरोंकी भलाईके लिए सब दुख सहने के लिए तैयार थे, घर छूटा, देस छुड़ाया गया और जिस देसमें भी जाते वहाँकी जोंकें उनके पीछे पड़ जातीं। अब वह लन्दन चले गये। १८४९से १८८३ तकके लिए (चौंतीस बरसोंके लिए) लन्दन ही मरकस बाबाका घर बना।

दुखराम—लन्दन तो सबसे बड़ी-बड़ी जोंकोंकी राजधानी है, वहाँ मरकस बाबाको कैसे जगह मिली।

भैया—जोंक सरकारोंका आपसमें भी झगड़ा है, यह तो तीस साल पहले-वाली लड़ाई और आजकी लड़ाईसे तुम्हें मालूम है। इसलिए भी अपने मुद्दई जर्मनी और फ्रान्सकी जोंकोंके दुसमन मरकसको अपने यहाँ रहने देनेमें उन्हें कोई हरकत नहीं मालूम हुई, और सारे अँगरेजोंके गुलाम देसोंका इतना अधिक धन आता था कि अपने यहाँके मजदूरोंको सह कुछ दे दिवाकर संतुष्ट कर देते थे। मरकस बाबाने बड़ी-बड़ी पोथियाँ लिखीं, दुनिया भरके कमेरोंपर उनकी नजर रहती थी।

दुखराम—हिन्दुस्तानके रहनेवाले हम कमेरोंके बारेमें बाबाने कुछ सोचा और लिखा?

भैया—हाँ दुक्खू भैया! बाबाके सामने आज से ९१ साल पहले भी हिन्दुस्तानका कोई रोग छिपा नहीं था। बाबाने उस वक्त लिखा था—"काहे अँगरेज हिन्दुस्तान के मालिक बन गये? मुगल सूबेदारोंने मुगलाई राज-सँगठनको तोड़ा। सूबेदारोंकी तागतको मराठोंने तोड़ा, मराठोंकी तागतको (पानीपतकी लड़ाईमें) अफगानोंने तोड़ा और जब यह सभी सबके खिलाफ लड़ रहे थे तो अँगरेज चढ़ दौड़े और उन्होंने सब को दबा दिया। (क्यों दबा सके?) यह देस सिर्फ हिन्दू, मुसलमानोंमें ही बँटा नहीं है बल्कि खोम-खोम और जाति-जातिमें बँटा है। यहाँके समाजका ढाँचा इस तरह कसकर बाँधकर रखा गया है कि आदमी-आदमीके बीच बिख-राव और बेमेलपन फैला है। जो देस, जो समाज ऐसा हो, वह हारनेके लिए, गुलाम होनेके लिए नहीं बना तो किस लिए बना था। चाहे हिन्दुस्तानका पुराना इतिहास हम न भी जानते हों, तो भी इस बातमें तो कोई दोमत नहीं है कि इस छन भी हिन्दुस्तान अँगरेजोंकी गुलामीमें जकड़बन्द है। और उस जकड़बन्दीका काम करती है हिन्दुस्तानी फौज, जिसका खर्च भी हिन्दुस्तान ही देता है। ऐसा भारत गुलाम होनेसे कैसे बच सकता है।

दुखराम—भैया! बाबाने सचमुच हम लोगोंके रोगको पहिचाना।

भैया—बाबाने एक और भी बात लिखी है। उन्होंने हिन्दुस्तानके पुराने जमानेमें गाँवका जो पंचायती इन्तजाम था उसके बारेमें कहा था—"ये सुन्दर

(गाँवके) प्रजातन्त्र सिर्फ पड़ोसी गाँवसे अपने गाँवकी सीमाकी रच्छाके लिए मुस्तैदी दिखा सकते थे। लेकिन वहाँ के राजाओंकी मनमानीको रोकनेकी उनमें जरा भी ताकत नहीं थी।"

दुखराम—क्यों भैया! गाँवका पंचायती राज क्या बुरा था।

भैया—पंचायती राजको बुरा कोई नहीं कहता। बाबाने भी कहा न कि जो कनैलाकी कोई जमीन या तालपोखरीका हक भदया छीनने लगे, तो कनैलावाले कितना मनसे लड़ेंगे?

दुखराम—भैया! गाँवका बच्चा-बच्चा लाठी लेकर दौड़ पड़ेगा। कोई घर बैठा रह सकता है? न जाने कितनी बार कनैला नरेहतासे लड़ा, उमरपुरका दाँत खट्टा किया, भदयाको सिवानामें घुसने नहीं दिया।

भैया—बाबा यही कहते हैं कि जब देसमें इतना बिखराव हो जाता है कि लोगोंको सारा देस तो भूल जाता है, याद रहता है सिर्फ अपना गाँव; तो गाँवकी सीमाकी रच्छा भले ही हो जाय, लेकिन देसकी सीमाकी रच्छा नहीं हो सकती। क्यों कि लोग अपनेको उतनाही मनसे देसका बासी नहीं समझते, जितना मन-से कि गाँवका बासी समझते हैं। इसीलिए हिन्दुस्तानकी सीमाकी रच्छाकी जिम्मेवारी सिर्फ राजाओंको रह गई। राजाओंका जुल्म और मनमानापन लाखों गाँवोंके पंचायती राज्योंमें बँटे हिन्दुस्तानी लोगोंके रोकने की चीज नहीं रह गया। गाँवकी पंचायतोंने कारीगरोंको हजारों बरस पुराने असूले और कलानियों-से चिपके रहने दिया, किसानोंको हँसुओं, फालोंसे एक कदम भी आगे नहीं बढ़ने दिया। जबकि दूसरे मुल्कवाले अपने जुल्मी राजाओंकी गरदन कुल्हाड़ेसे काट रहे थे, उस वक्त सब जुलुम, सब अन्याय बरदास करते हिन्दुस्तानी लोग कहते थे, "कोउ नृप होइ हमैं का हानी" इससे वह यही दिखलाते थे कि हमारा हाथ-पाँव बँधा हुआ है, हम कुछ नहीं कर सकते। हमारे इस गाँव-गाँवके बिखराव, जाति-जातिके बिखराव, धरम-धरमके बिखरावने हमें बिलकुल कमजोर बना दिया। हम हिल-डोल नहीं सकते। हम समय देखकर अपनेको बदल नहीं सकते। हम अचल मुरदा बने रहना चाहते थे लेकिन यदि कोई दूसरा न छेड़ता तब न? मुसलमानोंने राज किया, उससे पहिले सकों और यूनानियोंने

भी राज किया था, लेकिन हिन्दुस्तानके समाजके पुराने ढाँचों, गाँव-गाँवके अलग-बिलग संगठनों और जाति-पाँतिको कोई नहीं तोड़ सका। लेकिन वह काम अँगरेजोंने किया। उन्होंने मुरदेको खूब झकझोरा, जो बिलकुल मुरदा नहीं था। उन्होंने हजारों बरससे चले आये हमारे चरखों को तोड़ डाला। पुराने करघेको बिदा किया। यह सब कैसे किया? अपने यहांके मिलके बने सस्ते कपड़ोंको भेज कर। बाबाने लिखा—"अँगरेजोंने कपासकी जनम-भूमिमें कपड़ेकी बाढ़ ला दी। १८१८में उन्होंने जितना कपड़ा भेजा था उससे ५२ गुना कपड़ा १८ बरस बाद १८३६में अँगरेजोंने हिन्दुस्तान भेजा। १८३७में मुश्किलसे दस लाख गज बिलायती मलमल हिन्दुस्तानमें आया था लेकिन दस ही बरस बाद १८४७में ६ करोड़ ४० लाख गजसे ऊपर मलमल हिन्दुस्तान आया। लेकिन इसी बीचमें ढाका सहर उजड़ गया, वह डेढ़ लाखकी जगह सिर्फ २० हजारकी बस्ती रह गया। इस तरह अपनी कारीगरीके लिए दुनिया भरमें मसहूर हिन्दुस्तानके सहर बरबाद हो गये।"

दुखराम—जोंकोंने बड़ा जुलम किया भैया!

भैया—बाबाने भी लिखा था—"यह सब देखकर आदमीका दिल व्याकुल हो जाता है। हिन्दुस्तान जो अनगिनत पंचायती गाँवोंमें सान्तीके साथ जिन्दगी बिता रहा था, उसके सारे संगठनको जोंकोंने तितर-बितर कर दिया, लोगोंको कस्टोंके समुन्दरमें फेंक दिया। पीढ़ियोंसे चले आते जीविका कमानेके रास्ते बंद कर दिये। यह सब ठीक है, और गाँवोंका पुराना पंचायती संगठन बहुत सुन्दर था, वह देखनेमें (दुधमुँहे बच्चेकी तरह) बहुत ही भोला-भाला था। लेकिन यह भी याद रखना चाहिए कि पूरबी देशोंमें (जोंकोंको) मनमानी करनेमें सबसे बड़ी मदद इसी भोले-भालेपनने की। इसने आदमी के दिमागको नन्हीं-नन्हीं कोठरियोंमें बन्द कर दिया। गप्पों और झूठे बिस्वासोंको चुपचाप माननेके लिए यहाँके लोगोंको तैयार किया, उन्हें पुराने रवाजोंका गुलाम बनाया। हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि एक छोटी-सी जमीनकी टुकड़ीमें ही जब सारी ममता बटुरे गई हो, तो बिसाल देसका बिधंस क्यों नहीं होता। इसी छोटी ममताने कितना जुलुम सहनेके लिए लोगोंको मजबूर किया। बड़े-बड़े सहरोंमें

भयंकर हत्या करवाई, (जिसमें लाखों बालक, बूढ़े नर-नारी गाजर-मूलीकी तरह काट डाले गये) हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि यह अपमान-भरा जीवन, मुरदे कीड़े-मकोड़ेका जीवन ही, बिलकुल जड़ जीवन ही था जिसको देखकर जंगलियों, अत्याचारियों, सत्यानाशियोंको वैसा करनेकी हिम्मत हुई। हमें यह न भूलना चाहिए कि भारतकी यह (गाँव-गाँवमें) बिखरी छोटी-छोटी जमात भी सैकड़ों जातोंमें बँटी थी, गुलामीके रोगमें फँसी थी। जहाँ मानुखका काम है ऊपर उठकर जो भी रास्तेमें बाधाएँ आएँ उनको परास्त करना, वहाँ हिन्दुस्तानियोंको परिस्थितियोंका गुलाम बनना पड़ा। उसीके कारण मानुख-समाजको जहाँ बहती गंगाकी धाराकी तरह बराबर बढ़ते रहना चाहिए था, वहाँ वह अचल बनकर जमानेके हाथकी कठपुतली बन गई। मानुख अन्धे जमानेका दास हो गया। जिस मानुखको जमानाका राजा बनना था वह इतना पतित हुआ कि बानर हनुमान और कपिला गायके सामने घुटने टेकने लगा।"

सन्तोखी—क्यों भैया ! बाबाको हनुमानजीकी पूजा और गोमूत्र पीनेकी बात मालूम थी ?

दुखराम—खूब मालूम थी सन्तोखी भाई और बाबाने हम मूढ़ोंके गाल-पर खूब चपत लगाया लेकिन यह चपत ऐसे माँ-बापका था, जिसका हृदय भीतर ही भीतर रो रहा हो।

भैया—बाबाने और कहा "हिन्दुस्तानमें अँगरेज जो समाजमें उलट-पुलट कर रहे हैं उसके पीछे उनका एक बहुत ही नीचा स्वारथ छिपा हुआ है। लेकिन हम पूछेंगे कि क्या, एसियावासियोंके समाजको बिना उलटे-पुलटे मानुख जाति अपने पहुँचनेकी जगह पहुँच सकती है ? अगर नहीं पहुँच सकती है तो अँगरेजोंने चाहे जितना भी पाप किया, उन्होंने अनजाने ही इस हित-कारी उलट-पुलटको करनेमें सहायता की फिर चाहे (हिन्दुस्तानमें) टूट-टूटकर गिरती हुई पुरानी जिंदगीको देखकर हमारा दिल कितना ही बिकल क्यों न हो जाय, उसके खिलाफ हमारे दिलमें कितना ही आग क्यों न लग जाय लेकिन उसने उलट-पुलट करके हिन्दुस्तानका नया इतिहास बनानेमें मदद की है।"

दुखराम—बात तो भैया ! बाबाने सच्ची-सच्ची कह डाली चाहे किसीके

गले उतरे या न उतरे।

भैया—बाबाने एक ओर जुगोंसे चले आये हिन्दुस्तानको लाखों गाँवोंमें छिन्न-भिन्न देखकर उसे बुरा कहा। गाँई संगठन और उलट-पुलटको आगेकी भलाईके लिए जरूरी बतलाया। और यह भी कहा—"अंगरेजोंने तलवारसे जो एकता हिन्दुस्तानके ऊपर जबर्दस्ती लाद दी है उसे बिजलीके तार और भी मजबूत और बहुत दिन तक रहनेवाली बना रहे हैं। अँगरेज सरजन्ट जो हिन्दुस्तानी सेनाको परेड सिखला रहे हैं, उसका संगठन कर रहे हैं वह हिन्दुस्तानी सेना बिदेसियोंके हमलेसे ही देसको नहीं बचाएगी बल्कि वह देसको छुटकारा दिलानेका काम करेगी। अखबार व छापाखाना नया हिन्दुस्तान बनानेके बड़े ही जबर्दस्त हथियार हैं। जो हिन्दुस्तानी अंगरेजोंसे पच्छिमी विद्या सीख रहे हैं, वह राज चलानेके काम और पच्छिमके सायंसमें चतुर हो रहे हैं। यह भी हित करनेवाला है। भापके इंजनने हिन्दुस्तानकी यूरपके साथ आने-जानेमें और सहायता की है। हिन्दुस्तानके मुक्खि-मुक्खि बन्दरगाह अब इंग्लैण्डके बन्दरगाहोंसे जुड़ गए हैं जिसके कारन अब हिन्दुस्तान अलग-बिलग नहीं रह सकता और यह जड़ताईको जड़मूलसे उखाड़ फेंकेगा। वह दिन दूर नहीं है जब भापसे चलनेवाली रेल और जहाज मिलकर इंग्लैंडको आठ दिनके रास्ते पर ले आ देंगे, उस समय हिन्दुस्तान भी पच्छिमी देसोंका पड़ोसी देस बन जायगा बिलायत की राज करनेवाली जमातने हिन्दुस्तानमें जो कुछ तरक्कीका काम किया है वह अनजाने और सिरिफ अपने स्वारथसे किया। बिलायती सरदार हिन्दुस्तानको जीतना चाहते थे, बिलायती थैली साह (बनिए) उसे लूटना चाहते थे और मिलसाह (पूँजीपति) गलाकट्टी कर रहे थे। .....अब मिलसाह सारे भारतमें रेलोंका जाल बिछाना चाहते हैं। और वह ऐसा करके रहेंगे।... मैं जानता हूँ कि अँगरेज मिलसाह (पूँजीपति) हिन्दुस्तानमें रेल सिरिफ इसीलिए बिछाना चाहते हैं कि बहुत थोड़े खर्चमें हिन्दुस्तानके कपास और दूसरे कच्चे मालको अपने कारखानोंमें ले आएँ, लेकिन अँगरेज ऐसे देसमें कल-मसीनको ले जा रहे हैं, जहाँ कोयला और लोहा मौजूद है। फिर कोयला लोहाके धंधेको आगे बढ़नेसे कौन रोक सकता है।...हिन्दुस्तानियोंमें ऐसे बहुत

लोग हैं जो कल-मसीनकी इलिमको समझ सकते हैं, वह पूँजी भी जमा कर सकत हैं, उनमें बड़ा दिमाग भी है ! यह इसीसे मालूम है कि गिनती (हिसाब) जैसे इलिममें वे बहुत चतुर होते है। उनकी बुद्धि बड़ी तेज है।"

दुखराम—बाबाने देख लिया था कि हिन्दुस्तानी लोगोंकी आखें जरूर खुलेंगी और वह अपनी विद्याको अपनी भलाई, अपनी मुकतीके लिए इस्तेमाल करेंगे।

भैया—बाबाने यह भी सोच लिया था कि हिन्दुस्तानको आजाद करने, उसके आगे बढ़नेमें बिलायतके कमेरोंकी भी सहायता जरूरी होगी।

दुखराम—बिलायतके कमेरोंमें भी क्या बाबाके माननेवाले लोग हैं ?

भैया—बाबाने उनकी भी आँख खोल दी है दुक्खू भाई ! बिलायतमें एक लाख तो बाबाके पार्टीके खास लोग हैं और वहाँकी जोंकें बहुत घबरा रही हैं कि लड़ाई खतम होते कहीं उनका भी तखता न उलट जाय। बाबाने ८१ बरस पहले लिखा था—"जब तक खुद बिलायतमें वहाँके कमेरे अपने जोंक राजको हटाकर अपना राज न कायम कर लें या खुद हिन्दुस्तानी ही इतने मज-बूत न हो जायँ कि अँगरेजोंके जूएको उतार फेंकें (तब तक हिन्दुस्तानके लिए वह सुन्दर दिन नहीं आ सकता)। चाहे कुछ भी हो थोड़े या अधिक दूरके समयमें वह दिन जरूर आएगा जब बिसाल मनोहर हिन्दुस्तान देसका नया जनम होगा। वह देस जिसके नरम सुभाववाले निबासियोंमें आजकी गुलामीमें भी एक तरहकी साँति और अभिमान है। आलसीसे दिखाई देने-पर भी जिन्होंने अपनी बहादुरी से अँगरेजोंको चकित कर दिया, जिनका देस हमारी भाखाओंका हमारे धरमोंका मूल रहा; जिसके जाट अपनी बहादुरीमें पुराने जर्मनों जैसे हैं; जिसके बाम्हन ग्यानमें पुराने यूनानियों जैसे हैं उस देसका जरूर उद्धार हो कर रहेगा।"

सन्तोखी—बाबा क्या हिन्दुस्तानमें आये थे भैया !

भैया—हिन्दुस्तान नहीं आये थे लेकिन सैकड़ों बरसोंसे अँगरेज लोग हिन्दुस्तानके बारेमें लिख-लिख कर जो ढेर किये हुए थे, उस सबको बाबाने पढ़ा, हिन्दुस्तानसे जानेवाले आदमियोंसे बात चीत की, उसीसे उनको सब बातें

मालूम हुई । हम कहते थे कि बाबाको असली रोग और दवाका पता लगा । उन्होंने समझा कि रोग है यही जोंकें, जिनमें सबसे बड़ी हैं यह पूँजीपति, मिल-मालिक, कारखानेवाले जो ।।)का १४) बनाते हैं और दुनिया भर राज करते हैं । बिलायतके मजूरोंने इन जोंकोंसे लड़ाई ठानी । जब पेट काटा जाय, बेकसूर आदमी निकाल बाहर किये जायँ, तो भला कैसे चुप रहें । जोंकोंका अपार धन, उनकी पलटन, पुलिस, धरम और पुरोहित सब कमेरोंको पीस देना चाहते थे; लेकिन वे तीस चालिस बरसरो बराबर लड़ते रहे । तोंद पचकती देख जोंकोंको कितनी बातें माननी पड़ीं और कमेरोंका बल घटने की जगह और बढ़ता गया । बाबाने समझा कि जोंकोंकी असली दवा यह कल-कारखानेके मजूर हैं । जो यह हजारों लाखों गाँवोंमें बिखरे रहते तो यह जोंकोंका मुकाबिला नहीं कर सकते । अपने कारखानोंको चलानेके लिए जोंकोंने उन्हें सहरोंमें एक जगह जमा कर दिया । यह बड़ी तागत है । जोंकों हीने इन्हें अपने स्वारथके लिए इकट्ठा किया और यही जोंकोंको तबाह करेंगे ।

दुखराम—हाँ भैया ! चटकल-पटकलमें लाखों मजूर काम करते हैं । जब मालिक कोई जुलुम करने लगते हैं, तो सब एका करते हैं । दस-दस बीस-बीस दिन काम छोड़नेपर मजदूरोंको तो तकलीफ बहुत होती है, लेकिन मालिकोंको मानना पड़ता है ।

भैया—मानना क्यों न पड़े, जो मजूरोंका चार आना जाता है तो जोंकोंका तेरह रुपया । लेकिन बाबाने कहा कि मजूरी बढ़वाने और छोटे-मोटे जुलुमको हटवानेसे काम नहीं चलेगा, दुनिया भरके किसानों मजूरों—सभी कमेरोंको एका करके जोंकोंका राज खतम करना होगा । पुलिस-पलटन, अदालत-कचहरी, कल-कारखाना सबको जोंकोंके हाथसे छीन लेना होगा । हवा-पानीकी तरह धरती-धन सब कुछ सबका साझेका करना होगा; तब जाकरके दुनियाका यह नरक खतम होगा ।

सन्तोखी—हाँ भैया ! बाबाने बड़े कामकी बात बतलाई ।

भैया—अब सुनो बाबाका बाकी जीवन चरित्तर । ३१ सालकी उमरमें बाबा कहाँ-कहाँकी जोंक सरकारोंसे बचते लंदन पहुँचे । और वहीं ६५ बरसकी उमरमें

बाबाका देह छूटा। बाबाने अमेरिका, यूरप सब जगहके मजूरोंको जोंकोंसे लड़नेमें मदद दी। रास्ता बतलानेके लिए किताबें लिखीं। कोलोनके कमूनिस्टोंके ऊपर मुकदमा चल रहा था।

दुखराम—कमूनिस्ट कौन हैं भैया।

भैया—बाबाके चेला लोगोंको, बाबाके पार्टीवालोंको कमूनिस्ट कहते हैं। दुनिया भरकी जोंकें कमूनिस्टोंसे बहुत डरती हैं। कमूनिस्टोंने कमेरोंकी लड़ाइयाँ खूब बहादुरीसे लड़ी हैं, अपना सरबस होम दिया है। रूससे जोंकोंका राज उन्होंने ही खतम किया।

दुखराम—तो भैया! हमारे देसमें भी ऐसे कमूनिस्ट होने चाहिएँ। बाबाके चेला हम लोगोंको रास्ता नहीं बतलाएँगे तो हम कैसे लड़ पाएँगे।

भैया—हमारे यहाँ भी बाबाके चेला हैं दुक्खू भाई! लेकिन ४० करोड़की आबादीमें, २५, ३० हजार कमूनिस्ट तो बहुत कम होते हैं न? सरकारने अब भी एक हजार कमूनिस्टोंको जेलमें बन्द करके रखा है और जोंक और पुलिस दोनों उन्हें फूटी आँखसे भी नहीं देखना चाहती; लेकिन वह रकतबीजकी तरह बढ़ते रहे। सहर-दिहात सबमें छा जायँगे। बाबाका पंथ कौन कमेरा है जिसको पसन्द न होगा?

दुखराम— हाँ भैया! वह अभागा ही होगा। बाबाने सब दुख तकलीफ सहकर हमारे ही फायदाके लिए न काम किया?

भैया—बाबाने कमूनिस्टोंके मुकदमेंके लिए किताब लिखी लेकिन छापनेके लिए कागज नहीं था, उनके पास एक कोट बच रहा था। उसे भी उन्होंने बंधक रख दिया।

दुखराम—तो बाबा बिना कोट हीके रह गए? सुनते हैं, बिलायतमें हाड़ चीरनेवाला जाड़ा पड़ता है।

भैया—बाबा अपने लिए कस्ट सहनेको तैयार थे! और जेनी माईकी तकलीफको सोचो दुक्खू भाई! एक ताल्लुकदारकी लड़की, बड़ो लाड़-प्यारसे पली, वह भी बाबाके साथ गली-गली मारी-मारी फिरती रही। लेकिन उसने एक दिन भी अफसोस नहीं किया। बाबा इतने पंडित थे कि हजार दो हजार

कमा सकते थे। और अपने बाल-बच्चोंको आरामसे रख सकते थे। लेकिन बाबाने कमेरोंकी सेवाके लिए अपना जीवन दे दिया था। बाबाके दो लड़के चार लड़कियाँ हुईं लेकिन दोनों लड़के और एक लड़की ज्यादा दिन नहीं जी सके। बीमार पड़ते तो दवाई और पथका पाना मुसकिल होता। बाबाने कमेरोंके लिए गरीबीकी जिन्दगी बिताई, जोंकें उनको फूटी आँखों नहीं देखना चाहती थीं। गरीबीके कारन बाबाके तीनों बच्चे मर गये लेकिन बाबाने सोचा, हजारों बरसोंसे जोंकें कमेरोंके करोड़ों बच्चोंको मार चुकी हैं, उन्हीं बच्चोंमें मेरे भी तीनों बच्चे मर गये।

सन्तोखी—बाबा जैसी तपेस्सा कौन करेगा भैया! दूसरे तपेस्सा करनेवाले तो जोंकोंकी जड़ में पानी डालते हैं, जोंकोंको और मजबूत करते हैं।

दुखराम—बाबाने भी जोंकोंकी जड़ में पानी डाला, लेकिन खूब खौलाकर गरम-गरम पानी।

भैया—बाबाके साथी एङ्गल बाबाने भी बड़ी तपेस्सा की। उन्होंने ब्याह नहीं किया। और कमा-कमाकर हर साल साढ़े तीन सौ गिन्नी मरकस बाबाको देते गए। जो एङ्गल बाबाने यह तपस्या न की होती तो बाबाके ऊपर और आफत आती। बड़े बाबाने एङ्गल बाबाको एक चिट्ठीमें लिखा था—तुम्हारे बिना मैं कभी अपने कामको पूरा न कर सका होता। सिर्फ मेरे लिए तुमने अपनी जबरदस्त बुद्धिको बेकार जाने दिया, और गलाघोंट्ट ब्योपार-जिनगी अपनायी।

सन्तोखी—क्या एङ्गल बाबा ब्यौपारी थे भैया?

भैया—हाँ, उनके बापका कारखाना था, उसीको एङ्गल बाबाने सँभाला कि वह कितना ऊब गये उनकी इस चिट्ठीसे यह मालूम हो जाता है—"मैं किसी चीजको उतना नहीं चाहता जितना कि इस ब्यौपारीकी जिनगीसे भाग निकलनेको।" बाबाके जीवनमें ही (१८ मार्च १८७१में पेरिसके कमेरोंने वहाँसे जोंकोंका राज कुछ महीनोंके लिए उठा दिया। कमेरोंकी ताकत अभी उतनी मजबूत नहीं थी, इसलिए जोंकोंने फिर हजारों मजूरोंको कतल करके अपना राज जमा लिया। लेकिन पेरिसके कमेरोंने जितना अच्छी तरहसे

अपना राज चलाया उससे यह पता लग गया कि कमेरे जोंकोंको हटा सकते हैं और अच्छी तरह राज चला सकते हैं। पेरिसके कमेरोंने क्या गलती की थी इसे बाबाने लिख दिया था। फिर ४६ वर्ष बाद जब रूसके कमेरोंने जोंकोंका राज उलटा तो उस वखत बाबाकी वही सिच्छा बड़े काम आई। ४१ साल तक कमेरोंकी लड़ाई लड़ते-लड़ते बाबाने आखिर ६५ सालकी उमरमें (१४ मार्च १८८३को) देह छोड़ा। लन्दनके हाईगेटके कबरिस्तानमें अब भी बाबाकी समाधि है। कौन होगा जो बाबाकी समाधि पर फूल चढ़ानेकी लालसा न रखता हो। बाबाके मरने पर एङ्गल बाबाने लिखा था—"मानुख जातके पास जितने दिमाग हैं, उनमें सबसे बड़ा दिमाग आज खो गया। कमेरा दलकी लड़ाई चलती रहेगी, लेकिन वह दिमाग चल बसा जिसकी ओर फ्रांस, रूस, अमेरिका, और जर्मनी के कमेरे गाढ़ेके समय आँख दौड़ाते थे और वह दिमाग सदा बहुत साफ दो टूक सलाह देता था।"

दुखराम—धन्न है भैया ! मरकस बाबा और धन्न है सती जेनी माई।

भैया—सती जेनीकी तपेस्साकी बहुत सी बातें हैं जिनको सुननेपर आँसू रोकना मुसकिल है। अब दुक्खू भाई, बाबाकी मोटी-मोटी सिच्छा सुनो।

दुखराम—हाँ भैया ! वह जरूर सुनाओ।

भैया—बाबाने पहली बात यह बतलाई कि रोटी, कपड़ा, घर आदमीको सदासे जरूरत रहे हैं, इनको पैदा करना मानुख का सबसे पहला काम रहा है। मानुख इनके पैदा करनेके लिए नये-नये हथियार, नये-नये ढंग सोचता रहा है। जिससे रोटी-कपड़ा घरके पैदा करनेका ढंग बदलता रहा है। वह पहले सिकार करके जीता था, फिर खेती करने लगा, खेतीसे फिर कारीगरीकी ओर बढ़ा, कारीगरीसे ब्योपार होने लगा, ब्योपारसे कारखानेके ढंगपर चला आया। पैदा करनेका ढंग जैसे-जैसे बदलता गया, वैसे-वैसे मानुखकी जमात भी बदलती रही और पहली जमातबन्दी टूटती गई। सिकार और फल जमा करके जीविका करते समय माईका राज और सबका एक परिवार चल सकता था। लेकिन जब खेती आई, ताँबा आया तब वह पुराना ढाँचा नहीं चल सकता था। रोटी-कपड़ा वगैरह पैदा करनेके ढंगके बदलनेके साथही मानुख समाजके ढाँचेको

बदलनेसे रोका नहीं जा सकता। और जब ढाँचा बदलता है तो उसका कानून आचार-विचार सब बदलता है आदमीका मन तक बदल जाता है। बाबाने एक जगह लिखा है कि रोटी-कपड़ा इत्तादिके पैदा करनेका ढंग बदल गया। और जहाँ मानुख पुराने ढर्रेको छोड़ना नहीं चाहता, पुराने ही तरहका मालिक मिल्कियतका ख्याल रखता है वहाँ तो दोनोंका संग्राम छिड़ जायगा।

दुखराम---भैया! थोड़ा समझाके कहो।

भैया---देखो, जब कपड़ा चरखा और करघासे बनता था, घर-घरमें लोग चरखा लगाते थे और गाँवका जुलाहा कपड़ा बुन देता था; उसी तरह बढ़ई लोहार भी अपना-अपना काम करते थे। तब गाँव अपने कामकी करीब-करीब सभी चीजोंको पैदा कर लेता था, सबको चीज भी मिल जाती थी, सबको काम भी मिल जाता था। यह उस समयकी बात है जब रोटी-कपड़ाके पैदा करनेका ढग खाली हाथसे किया जाता था। इसके बाद भापकी कल-मसीन बनी! कल-मसीनने इतना सस्ता कपड़ा और चीज तैयार किया कि हाथकी कारीगरी चौपट हो गई।

दुखराम---यह तो देखा भैया! हमारे देसके सब जुलाहे करघा छोड़-छोड़के चटकल-पटकलमें भाग गये।

भैया---तो अबका पौनी-परजा मालिक जजमान ओगैरहवाला गाँवका ढाँचा टूटने लगा कि नहीं।

दुखराम---बहुत टूट गया भैया! और टूटनेके लिए लोग हाय-हाय करते हैं, कलजुगका दोख देते हैं। लेकिन जान पड़ता है भैया! यह किसीका दोख नहीं है। पत्थर, ताँबा, लोहा, कल, मसीन जैसे-जैसे नई चीज, नया ढंग आदमीके हाथमें आता गया वैसी ही मानुख जातिका ढाँचा भी बदलता गया, टिटिहिरीके पैर रोपनेसे असमान ऊपर नहीं टँगा रहेगा।

भैया---इसी तरहका एक और भी संकट आया है। कल-मसीनसे अन्न भी बेसी पैदा किया जा सकता है। रूस और अमेरिकामें नई-नई खाद और मोटरका हल लगाकर बिगहा पीछे चालिस-चालिस पचास-पचास मन अनाज पैदा करते हैं और एक-एक खेतमें, समूचा देसमें। इसी तरह चीनी, कपड़ा, लालटेन

दुनियाकी सभी खाने-पहनने और रहनेकी सभी चीजें कल-कारखानोंमें इतनी पैदा की जा सकती हैं कि सारी धरतीके दो अरब लोग एक सालकी उपजसे दो-दो साल तक खूब आरामसे रहें लेकिन हो क्या रहा है ? दुनियामें गरीबी बढ़ रही है। लोग और ज्यादा नंगे-भूखे रह रहे हैं।

दुखराम—इसका कारण तो जोंकें ही न हैं भैया ?

भैया—हाँ, जोंकें ही हैं दुक्खू भाई ! लेकिन उसको इस तरह समझो। अब एक-एक बढ़ई लोहार अपना-अपना हथौड़ा बसुला लेकर अलग-अलग काम तो नहीं कर सकता। कारखानोंके कारण अब सभी काम साझेमें एक दूसरेसे मिलकर करना होता है। यह छोटी-सी सुई जो बनकर आती है, वह भी सैकड़ों हाथोंमें होते तैयार होती है। काम साझे—सबको मिलकर करना होता है लेकिन चीजोंका मालिक है जोंक। जोंक कहती है यह हमारी चीज है इसलिए हम १४)की चीज बनानेवाले मजूरको ।) देंगे, किसानको उसके कपासका ।।) देंगे। और बाकीको वह अपने पास रखना चाहता है। लेकिन सूईवाली जोंक नफेमें सूई अपने पास नहीं रखना चाहती। वह चाहती है कि उसका सब माल बिक जाय लेकिन बिकनेके लिए पैसा चाहिए। किसानको उसने ।।) दिया मजूर को ।) दिया कमेरोंके हाथमें कुल मिलाकर रुपया ही दो रुपया गया है। अब बताओ १४)की चीज कैसे खरीदे।

दुखराम—तो भैया ! यही न हुआ कि जोंकें हमारे पास पैसा भी नहीं आने देतीं और बेसी माल पैदा करके खरीदनेको कहती हैं।

भैया—हाँ, इसीलिए तो जोंकोंका दिवाला निकलता रहता है। जब माल बेसी हो जाता है और खरीदनेवालोंके पास पैसा नहीं रहता तब भारी सस्ती लग जाती है। याद है न तेरह-चौदह बरस पहिलेकी बात ?

दुखराम—मत कहो भैया ! उस वक्त तो अनाज इतना सस्ता लग गया था कि बेचकर जमीदारकी मालगुजारी भी बेबाक नहीं कर सकते थे। कितनों-की जमीन नीलाम हो गई। बड़ी साँसत हुई।

भैया—एक ओर लोग सस्ती होनेपर भी पैसा बिना कपड़ा नहीं खरीद सकते थे और दूसरी तरफ कपड़ा गोदामोंमें सड़ रहे थे। जब पहिले हीका कपड़ा

जा हुआ है तो नया कपड़ा क्यों बनवाया जायगा ? जोंकोंने उस मंदीके दिनोंमें करोड़ मजदूरोंको कामसे निकाल दिया। काम बन्द हो गये।

सन्तोखी—तब तो भैया ! इन करोड़ों मजूरोंके पास भी पैसा नहीं कि मालको खरीदें, इससे तो माल गोदाम हीमें सड़ेगा न, कौन उसे खरीदेगा ?

भैया—इसीको कहते हैं कबीर साहबकी उलटबाँसी 'पानीमें भी मीन पियासी।' एक ओर उसी अमरीकामें बेरोजगार होनेसे करोड़ों मजूर भूखे मर रहे थे दूसरी ओर अमरीकाकी जोंकोंकी सरकारने १९३२ में पचास लाख सूअर खरीदकर मारकर फेंकवा दिया—भूखोंको खानेको नहीं दिया।

दुखराम—आततायी ! जोंकोंको क्या दया माया होगी !

भैया—डेनमार्क देसमें हर हफ्ता १५०० गाएँ मारकर उनका मांस जमीनमें गाड़ दिया जाता था। अर्जनतीन देसमें लाखों भेड़ोंको कारकर नस्ट कर दिया। अमेरिकामें लाखों मन गेहूँको आगमें झोंक दिया, जहाजों भरी नारंगियाँ समुन्दरमें फेंक दी गईं।

सन्तोखी—भैया ! क्या दुनिया बौरे गई।

भैया—दुनियाकी बात मत कहो सन्तोखी भाई ! दुनिया तो भूखों मर रही है। यह जोंकोंका कसाईपन है, वह सोचते थे कि २ रुपया मन गेहूँ है जो ५० लाख मन गेहूँ और बजारमें चला गया तो वह और सस्ता हो जायगा, फिर नफा कहाँसे मिलेगा इसलिए पचास लाख मन गेहूँ या पचास लाख सूअरोंको बरबाद कर दिया जिसमें कि वह बाजारमें बाकी जो चीजें भेजेंगे उसका दाम ज्यादा मिलेगा।

सन्तोखी—हाँ भैया ! बाजारमें माल कम और गाहक ज्यादा हो तो दाम चढ़ जाता है।

भैया—यही दाम चढ़ाने के लिए जोंकोंने आदमीके मुँहका आहार, तनका कपड़ा सब चीज बरबाद किया।

दुखराम—और नये गाहक ढूँढ़नेके लिए जर्मन जोंकोंने तीस साल पहले-वाली लड़ाई छेड़ी।

भैया—और आजकलकी लड़ाई भी जोंकोंने उसी मतलबसे छेड़ी है दुखरू

भाई ! बाबाने कहा कि जैसे सब दुनिया भरकी चीजें मिलकर पैदा करते हैं। उसी तरह सबको मिलकर उन चीजोंका मालिक बनना चाहिए तभी दुनियामें सुख-शान्ती होगी।

दुखराम—मिलकर मालिक बनना कैसे होगा भैया ?

भैया—जैसे दुक्खू भाई ! तुम्हारे घरमें पचास परानी हैं कोई खेती देखता है, कोई गाय-भैंस देखता है, कोई रसोई बनाता है, मतलब कि परिवारका हर आदमी रोटी-कपड़ा आदिके लिए कोई न कोई काम करता है। घरमें तो कायदा है न कि सब लोगोंके खाना-कपड़ा इत्यादिका काम किया जाय। अब तुम ऐसा कायदा चलाओ कि—नहीं, हम तो सबके कामकी मजूरी देंगे और दो रुपयाके कामकी चार आनासे बेसी नहीं। अब इसका फल क्या होगा ? जितना काम लोगोंने किया है उसका आठवाँ ही हिस्सा मजूरीमें उनके पास है, वह सब चीजको खरीद नहीं सकते हैं। अब वही जोंकोंवाली बलाय आएगी कि नहीं ?

दुखराम—हाँ भैया ! आठ भागमें सात भागको खरीदनेके लिए किसीके पास पैसा ही नहीं है तब वह चीज सड़ेगी कि नहीं। लेकिन ऐसा परिवार कहाँ होगा ?

भैया—हाँ, यह जोंकें ही कर सकती हैं, मरकस बाबा कहते हैं कि यह नफाकी बात उठा देनी चाहिए और लोग एक परिवारकी तरह साथ ही चीज पैदा करें और साथ ही भोगें।

दुखराम—तब जोंकें कहाँ रहेंगी भैया !

भैया—इसीलिए तो बाबा कहते हैं कि जोंकोंका काम खतम हो गया, उन्होंने राजाओंकी ताकतको नस्ट करके कल-कारखानोंका रास्ता दिखला दिया। अब उनका एक दिन भी जीना करोड़ों आदमीको भूखों मारने और लड़ाइयोंमें कतल होनेके लिए होगा।

दुखराम—यह बात बहुत पक्की है भैया !

भैया—दूसरी बात बाबाने बताई कि मानुख जातिमें जबसे जोंकें पैदा हुईं तभीसे जोंकों और कमेरोंका झगड़ा सुरू हुआ और यह तब-तक बन्द नहीं

होगा जब-तक कि जोंकें खतम न हो जाएँगी। जोंकें अहिंसा और दयाका ढोंग भले ही करें, लेकिन वह अहिंसा दयाका कभी विस्वास नहीं करतीं। सौमें पंचानवे कमेरे (मजूर) हैं और पाँच जोंकें हैं। उन्होंने पंचानवे आदमियों-को पुलिस-पलटन-जेलके बल पर दबाकर रक्खा है। एँड़ीसे चोटी तक जोंकें हथियारसे लैस हैं, उनका सारा राज-पाट हिन्सा, खून, लूट, झूठ और धोखापर है। वे किसी साधू-महात्माकी बचनमें आकर गलेमें कण्ठी बाँध लेंगी यह सोचना पागलपन है। जोंकोंको और बड़े हथियारसे और बड़े संगठनसे और बड़े त्यागके कल-बलसे पछाड़ना होगा, उनका हथियार छीनना होगा और पूरी तरह मीस-मास देना होगा।

दुखराम—देखता हूँ भैया! मरकस बाबाने जो भी कहा है वह एक-एक बात मेरे दिलमें घुसती चली जा रही है। बाबाने धोखेवाली बात नहीं कही है। सुनते हैं महात्मा गांधी तालुकदारों-जमीदारों, सेठों-साहूकारोंको कंठी पहिनाना चाहते हैं और कितने लोग तो कहते फिरते हैं कि गांधी महात्माने सेर-बकरीको एक जगह पानी पिला दिया। लेकिन मुझे यह बात तो धोखेकी मालूम होती है। बच्चा जब नहीं सोता है, तो माँ लोरी गाती है, जिससे वह सो जाय। मुझे तो यह लोरी ही जैसी बात मालूम होती है।

भैया— गांधी महात्माके रास्तेके बारेमें मैं फिर कहूँगा दुक्खू भाई! और गांधी बाबाने कोई नई बात नहीं कही है। महात्मा-बुद्ध, ईसामसीह और भी सैकड़ों महापुरुष कण्ठी बाँधकर सेरको भेड़ बनानेकी कोसिस करते रहे लेकिन कोई सफल नहीं हुआ। जोंकोंको कहीं कंठ भी है कि उसमें कण्ठी बाँधी जायगी, घोड़ा घाससे यारी करेगा तो जिन्दा रहेगा। जोंकोंको खतम कर देना बस यही एक रास्ता है।

अध्याय ५

वह देस जहाँ जोंकें नहीं हैं

दुखराम—सन्तोखी भाई ! देख रहे हो न कैसी-कैसी बात सुननेमें आ रही है। हम लोग समझे थे कि धनी-गरीब भगवानने बनाया है अब मालूम हो रहा है कि यह सब जोंकोंका जाल है। इस जाल-फरेबसे जोंकोंको ही फायदा है। बढ़िया खाना खाते और बढ़िया कपड़ा पहनते हैं। और हम लोग जो ढेला फोड़-फोड़कर मर जाते, भर पेट अन्न भी नहीं मिलता—

सन्तोखी—हम लोग छोटी-छोटी दुकान खोलकर जो दिन-रात चिन्तामें रहते हैं, यह भी तो जोंकोंकी ही ताबेदारी है। दिन-रात फिकरमें मरते हैं। सब नफा तो जोंकोंके पास चला जाता है। चारकी धोती चौदह रुपयापर जो दूकानदार बेचता है तो गिरस्त समझता है कि सब हम लूट रहे हैं। सब गाली हम लोग सुनते हैं और जिसके पास पौने चौदह रुपया चला जाता है उसको कोई नहीं पूछता।

दुखराम—वह तो कलकत्ता बम्बईमें बैठे हुए हैं, उनसे कौन पूछने जायगा। लेकिन मजूर उनकी भी खबर ले रहे हैं। अब मोटी तोंद ज्यादा दिन नहीं चलेगी। अच्छा, भैया रजबली आ गये।

भैया—दुक्खू भाई ! कमेरोंकी जीतका रास्ता बहुत टेढ़ा-मेढ़ा है, उसको समझना-समझाना और भी मुश्किल है ! मैं जो कुछ कहता हूँ यदि सोलह आनामें आठ आना भी तुम्हारी समझमें आ जाय तो बड़ी बात है।

दुखराम—आठ आना नहीं भैया, मैं तो पन्द्रह आना समझ रहा हूँ। बात तो सब याद नहीं रहेगी, लेकिन एक-एक चीज दिलमें बैठती जा रही है।

भैया—याद होनेकी जरूरत नहीं है, बस दिलमें बैठना चाहिए। मरकस बाबाने बतला दिया था कि पूँजीपतिके राजमें हर दसवें साल भाव गिर जाना, मन्दी पड़ना, करोड़ों मजूरोंका बेकार होकर भूखों मरना, करोड़ों किसानोंका अनाजके सस्ता होनेसे उजड़ जाना, और सबके ऊपर संसार भरको लड़ाईमें

झोंक देना यह बातें रोकी नहीं जा सकतीं। इन सबसे बचनेका उपाय यही है कि जोंकोंकी सरकारको हटाकर कमेरोंकी सरकार बैठाई जाय, और देश भर एक परिवार बना दिया जाय। बाबाने जो रास्ता दिखलाया था, उसीसे चलकर पेरिसके कमेरोंने जोंकोंको उलट दिया। लेकिन पेरिसके मजूरोंने यह नहीं समझा कि किसानोंको भी वही दुख तकलीफ है। उन्हें भी हमें अपने साथ मिलाना है। किसान ज्यादा भोले-भाले होते हैं, गाँवमें एक कोनामें रहते हैं, दुनिया जहानका उन्हें पता नहीं रहता है, अलग-बिलग रहनेसे उनका एक करना भी मुश्किल होता है। उनको पचास तरहसे भड़काया जा सकता है। जोंकोंने इसी तरह भड़काया। मजूर बड़ी बहादुरीसे लड़े, लेकिन जोंकोंने सारे फ्रांस भरकी पल्टनको उनके ऊपर झोंक दिया। उसी समय (१८७०-७१) जर्मन जोंकोंने फ्रांसीसी जोंकोंकी सरकारको हरा दिया। लाखों सिपाहियोंको कैद कर लिया लेकिन जैसे ही मालूम हुआ, पेरिसमें मजूरोंने अपना राज कायम कर दिया तो वह घबरा गईं, जर्मन जोंकोंने फ्रांसके सभी कैदी सिपाहियोंको छोड़ दिया जिसमें कि वह पेरिसमें जाकर मजूरोंके राजको बरबाद कर दें।

दुखराम—एक दूसरेके खूनकी प्यासी जोंकें आपसमें मिल गईं जैसे ही उन्हें कमेरोंका डर मालूम होने लगा।

भैया—तीस साल बाद जो महाभारत जर्मनोंने छेड़ा था पता है न, वह जर्मन जोंकोंके फायदाके ही लिए। इस वक्त तक मरकस बाबाके एक परतापी चेला लेनिन पैदा हो गये थे।

दुखराम—लेनिन कौन थे भैया—कहाँके थे ?

भैया—लेनिनका जनम रूसमें हुआ था, मजूरों-किसानोंको उन्होंने मरकस बाबाका रस्ता बतलाया, मजूरोंके ऊपर होनेवाले जुलुमके लिए वह जोंकोंसे लड़ते रहे। जोंकोंकी सरकार और पुलिसने उनके बड़े भाईकी फाँसी चढ़ा और उनको भी काला पानी भेज दिया। लेनिन जहाँ भी रहते, वहाँसे कमेरोंको रास्ता बतलाते रहते। जेहलखाना और काला पानीमें रखकर भी जोंक उन्हें रोक नहीं सकती थी। ३६ वर्ष पहले (१६०५) लेनिन अगुआ बने और कमेरोंने जोंकोंके खिलाफ तलवार उठाई। उस वक्त इनकी ताकत उतनी मज-

बूत नहीं थी इसलिए जोंक सरकारने दबा दिया। हजारोंको गोलीसे उड़ा दिया गया, उनसे भी ज्यादा जेलोंमें ठूँस दिए गये। जोंकें जीत गईं, कमेरे हार गए। लेकिन जोंकोंका एकबारका हारना सदाके लिए उनका खतम हो जाना है, कमेरोंका एकबार हारने से कुछ नहीं होता, वह तो धूल झाड़कर फिर-फिर लड़ते रहेंगे। कमेरे लड़ते हैं रोटी-कपड़ेके लिए, रोटी-कपड़ेका जब दुख मिटेगा तभी न वह लड़ाई करना छोड़ेंगे।

दुखराम—अंगरेजोंके राजमें रोटी-कपड़ा सबको कहाँसे मिल सकता है।

भैया—लेनिन महात्माको रूसकी जोंकें जो पकड़ पातीं तो फाँसी चढ़ा देतीं, इसलिए वह रूससे बाहर चले गये थे, लेकिन उनके बहुतसे साथी देशके भीतर रहकर कमेरोंमें काम करते थे। लेनिन उनको रास्ता बतलानेके लिए किताबें लिखते थे और लोग जोखिम उठाकर उन किताबोंको रूसके भीतर ले जाते थे।

दुखराम—जोखिम क्या भैया!

भैया—पकड़े जाते तो फाँसी-डामलकी ही सजा होती।

दुखराम—किताब कौन इतने खतरेकी चीज थी, भैया!

भैया— मरकस बाबा और उनके चेला लोगोंकी किताबोंको जोंकें तोप बन्दूकसे भी ज्यादा डरती थी। वह समझती है गोला, गंठा तो गरीबोंके लड़कोंके ही पास रहता है। जोंकोंके लड़के थोड़े ही पन्द्रह रुपयेके सिपाही बनते हैं! इसीलिए जोंकें समझती हैं कि जिस दिन गरीबों और उनके लड़कों-को जोंकोंके पापका पता लग गया उस दिन फिर खैरियत नहीं। जब लेनिन महात्मा रूससे बाहर कभी लंडन, कभी फ्रांस, कभी स्वीजरलैण्ड इत्यादि देसोंमें मारे-मारे फिर रहे थे उनके साथ उनकी स्त्री (क्रुपसकाया) क्रुप्स-काया भी दुख झेल रही थी, उसी वक्त १९१४में जर्मन जोंकोंने अपना माल बेचनेका कहीं रास्ता न देखकर दूसरी मोटी-मोटी जोंकोंपर धावा बोल दिया। इंग्लैण्ड, फ्रांस और रूस और पीछे अमेरिका एक ओर हुए, जर्मनी-आस्ट्रिया एक ओर हुए। जर्मन जोंकें कमजोर रहीं, और उनके दुसमन जीत गए। लेकिन जोंकोंके हारनेसे-जीतनेकी बात नहीं समझना है। समझना यह है कि

कैसे रूसमें लेनिन महात्मा और उनके कमेरे साथियोंने जोंकोंका टाट उलट दिया।

दुखराम—हाँ भैया ! यह हमारे बहुत कामकी बात है।

भैया—रूसकी जोंकें जर्मन जोंकोंसे भिड़ रही थीं। नफा नुकसान तो जोंकोंका था, लेकिन लड़नेवाली जोंकें थोड़े ही होती हैं। जैसे भड़भूजा भाड़में पत्ती झोंकता है, उसी तरह रूसी जोंकें अपने देसके कमेरों और उनके लड़कोंको जर्मन-तोपोंके मुँहमें झोंकने लगीं। लेकिन जर्मन ज्यादा मजबूत थे। वह रूसियोंको हराने लगे। रूसी जोंकें घबराने लगीं, उन्होंने और कमेरोंको और उनके बच्चोंको लड़ाईमें भेजा। कितनोंको तो बन्दूक भी नहीं दिया।

सन्तोखी—बन्दूक बिना लड़ते कैसे भैया।

भैया—जोंकोंने कहा कि वहीं जाके, जो सिपाही मरें उनकी बन्दूकें ले लो। जोंकोंके अपने लड़के नहीं न थे गरीबोंके लड़कोंको भाड़में झोंकनेसे क्यों हिचकिचाते ! गरीबोंके बच्चे समझने लगे कि जोंकें उनके साथ चाल चल रही हैं। उधर लेनिन महात्मा भी किसानों, मजूरों और उनके लड़के सिपाहियोंकी आँख खोलने लगे। जोंकों-जोंकोंकी लड़ाईमें नाहक गरीबोंका वध कराया जा रहा है। लेकिन महात्माने कहा कि जवानों ! तुम्हारे दुसमन बाहर नहीं तुम्हारे घरकी जोंकें हैं। बन्दूकें खूब हाथमें आ गईं, बन्दूकोंका मोहरा फेर दो और घरकी जोंकोंको खतम कर दो।

दुखराम—मरकस बाबाके चेला लेनिन महात्मा भी कम नहीं थे।

भैया—लेनिन महात्मा मरकस बाबाके बड़े लायक चेला थे दुक्खू भाई ! हाँ, तो मजूर-किसान उठ खड़े हुए, उन्हींके लड़के सिपाही थे, सबको वह तेईस बरससे समझा रहे थे। अब (नवम्बर सन् १९१७) उनको बात समझमें आ गई। उस वखत पेतरोग्राद सहर रूसकी राजधानी रही। जिसका नाम पीछेसे लेनिनग्राद हो गया। लेनिन महात्माने पेतरोग्रादमें कमेरोंकी सरकार कायम की। पेतरोग्रादमें लाखों मजूर कारखानोंमें काम करते थे। वह लेनिन महात्माको खूब जानते थे और परानसे भी अधिक प्यार करते थे। अब मजूर बन्दूक लेकर अपना लाल झंडा गाड़ रहे थे तो जोंकोंने पलटन-पर-पलटन उनके खिलाफ

भेजी। लेकिन सिपाही अपने भाई-बहनोंको पहचानते थे वह जोंकोंकी बातमें नहीं आये। वह अपनी बन्दूक लिये दिये कमेरोंके साथ मिल गये। पलटनके अफसर जोंकोंके लड़के थे। लेकिन हजार सिपाहीमें दस अफसर क्या करते? अफसर सिपाही बन गये और उन्होंने कमेरोंकी पलटनपर गोली चलाई लेकिन गोली जल्दी खतम हो गई और वह भी ठंडे हो गये। फिर जोंकोंने लड़ाईके मैदानसे पलटनें मँगवाईं, और उन्हें कमेरोंके साथ लड़नेके लिए भेजा। पचास-पचास हजार पलटन कूच करती चली आतीं लेकिन जहाँ पेतरोग्रात राजधानीकी सीमामें पहुँचतीं कि जेठकी दुपहरियामें मक्खनकी तरह पिघलकर लोप हो जातीं।

सन्तोखी—लोप कैसे हो जातीं भैया।

भैया—लोप हो जानेका मतलब है कि सब सिपाही कमेरोंकी पलटनमें मिल गये। अफसरोंमें जिन्होंने तीन-पाँच किया वह वहीं मार दिये गये बाकी भाग निकले। कमेरोंके राज सँभालनेकी खबर जहाँ-जहाँ पहुँची, वहाँ-वहाँ जोंकों और कमेरोंका दो-दल हो गया और सब जगह जोंकोंको निकाल बाहर किया। कमेरोंकी सरकारने तुरन्त कानून बना दिया कि जितने ताल्लुकदार-जमीदार, राजा-नवाब हैं, उनकी सारी जमीदारी आजसे सारे रूसके कमेरोंकी हुई। जितने कल-कारखाने हैं, आजसे जोंक उनके कुछ नहीं हैं, अब सारे कमेरे उनके मालिक हैं, जितने रेल, जहाज वगैरह कंपनियाँ हैं, वह सब अब कमेरोंकी है; जितनी कोयलेकी खानें, तेलकी खानें, हर तरहकी खानें हैं, वह सब कमेरोंकी हैं, जितने बंक और उनके पास करोड़ों अरबोंका खजाना है, वह कमेरोंका है; जोंकोंके जितने महल-कोठा, अटारी, बाग, बँगले हैं वह सब कमेरोंके हैं।

दुखराम—तो मरकस बाबाने जो बात बतलाई थी उसे लेकिन महात्माने पूरा कर दिया।

भैया—हाँ, पूरा कर दिया। पेतरोग्रात राजधानीमें आधेके करीब गरीब लोगोंके रहनेका कोई ठौर-ठिकाना नहीं था। लोग सड़ी गन्दी गलियोंमें रहते थे, लाखों मजूर तो फटे टीन और कनस्तरकी छतों-दिवारोंवाली सूअरकी खोभार

जैसी छोटी-छोटी झोपड़ियोंमें रहते थे। पाँच हाथ लम्बी, चार हाथ चौड़ी झोपड़ियोंमें दस-दस आदमियोंका परिवार रहता था। रूसका जाड़ा बहुत कड़ा तिसमें पेतरोग्रातका तो और ज्यादा। सरदीके मारे वहाँ नदी, समुन्दर सब जमकर बरफ हो जाते हैं।

सन्तोखी—पत्थर जैसी बरफ ?

भैया—सन्तोखी भाई! यदि तुम जाड़ामें वहाँ पहुँच जाओ तो साँस लेनेसे जो भाप नाकसे बाहर निकलेगी वह पहले पानी बनकर तुम्हारी बड़ी-बड़ी मूँछोंमें समा जायगी और छन भर हीमें मालूम होगा कि तुम्हारी मूँछें सीसेके भीतर जमी हुई हैं। इतनी सरदीपर भी मजूरोंको उन्हीं टीनोंकी खोभारोंमें रहना पड़ता, उनके पास आग जलानेके लिए कोयला भी नहीं रहता।

दुखराम—जोंकोंका कदम जहाँ गया वहाँ नरक छोड़ और क्या होगा ?

भैया—कमेरोंकी सरकारने तुरन्त हुकुम निकाला और जोंकोंके बड़े-बड़े महलों और कोठोंको कमेरोंके लिए खोल दिया। उन्होंने जोंकोंसे कह दिया कि जो कमेरोंकी सरकारके खिलाफ है, उनके ही ऊपर हम हाथ उठायेंगे। जो जोंकका धरम छोड़कर आदमी बननेके लिए तैयार हैं, उनको हम भाई मानेंगे और काम देंगे। जोंकोंमें जो मानुख बन गये उनको, उन्हींके घरोंकी एक कोठरी दे दी और बाकी मकानमें सूअरकी खोभारसे निकालकर कमेरोंको ला बसाया। कमेरोंका राज कायम होते ही रानियों, ताल्लुकदारनियों और सेठानियोंकी लौंड़ियाँ काम छोड़कर अलग हो गईं।

सन्तोखी—जब जमीन, मकान, बंकका रुपया और कल-कारखाना सभी छीन लिया गया तो लौंड़ियोंको कैसे रखतीं ?

भैया—नौकर-चाकर भी जोंकोंको छोड़कर हट गये।

दुखराम—अब रानी भरती होंगी पानी !

भैया—बिना देह हिलाये हरामका पैसा थोड़े ही मिल सकता था ? कमेरोंकी सरकारने सबको काम देनेका इन्तजाम किया। जब इङ्गलैण्ड, फ्रान्स अमेरिका, जापान और दूसरे देसोंकी जोंकोंको पता लगा तो उनकी नींद हराम हो गई, रूस छोटा-मोटा देस नहीं है दुनियाके छ भागमें एक भाग रूसका

है। उसके पूरबी किनारेसे पच्छिमी किनारे तक डाकगाड़ीसे जायँ तो १५ दिन १५ रात लगती है।

दुखराम—बम्बईसे प्रयाग तो भैया! एक दिन एक रात हीमें चले आते, रूस बहुत भारी देस होगा।

भैया—हाँ, हिन्दुस्तान ऐसे सात देसोंकी धरती इकट्ठा जोड़ी जाय तो रूसके बराबर होगी। इसीलिए बाहरी देसोंकी जोंकें बहुत घबराईं लेकिन साल भर तक वह बहुत नहीं कर सकीं। जब जर्मनी हार गया तो जीतनेवाली सारी जोंकें इतनी घबराईं जितना कंस भी कन्हैयाके पैदा होनेसे नहीं घबराया होगा। उन्होंने अपनी फौज, गोला-बारूद सब लेकर बोलसेविकोंके ऊपर धावा बोल दिया।

दुखराम—बोलसेविक कौन भैया?

भैया—रूसमें मरकस बाबाके सेवकको बोलसेविक कहा जाता है।

दुखराम—तो बोलसेविक भी कमूनिस्तोंकी तरह हम कमेरोंके आदमी हैं।

भैया—बोलसेविक कमूनिस्त एक ही है। चर्चिल उस वक्त बिलायतका युद्ध मंत्री था, वह तो बोलसेविकोंको कच्चा खा जाना चाहता था।

दुखराम—यही चर्चिल न भैया। जो आजकल बिलायतका महा मंत्री है।

भैया—हाँ, यही जो चाहता है कि परलय तक हिन्दुस्तानकी छातीपर कोदो दरें। इसने भी अपनी पलटन और गोला-बारूद रूसमें उतारी। फ्रान्सने भी अपनी पलटन भेजी। अमेरिकाने भी। जापानने भी। चौदह बादसाहोंने अपनी-अपनी पलटन कमेरोंकी सरकारको बरबाद कर डालनेके लिए रूस भेजा, क्यों भेजा, क्या रूसके कमेरे किसीकी एक अंगुल भी जमीन लेना चाहते थे?

दुखराम—दुनिया भरकी जोंकोंने समझा कि जो धरती के छ भागोंसे एक भागकी जोंकोंको खतमकर कमेरोंने अपना राज कायम कर लिया, तो बाकी पाँच भागके कमेरोंका भी मन बिगड़ जायगा, फिर बकरीकी माँ कै दिन खैर मनायेगी?

भैया—बड़े संकटकी बेला थी। दुनिया भरकी जोंकें गला फाड़-फाड़कर

चिल्ला रही थीं अखबारोंमें छाप रही थीं कि वे अधरमी है; वे बच्चोंको मार डालते हैं और बूढ़ोंको भी नहीं छोड़ते। उन्होंने सभी औरतोंको बेसवा बना दिया। मसजिदों-मंदिरोंको तोड़ दिया, हराम हलालकी बात उठा दी इत्यादि हजारों झूठ फैलाये जाने लगे।

दुखराम—हिन्दुस्तानमें भी भैया यही बात करेंगे, जोंकें समझती हैं कि कमेरे मूरख अनपढ़ होते हैं, उनके सामने झूठ-साँच कहकर मरकस बाबाके रास्तेके खिलाफ कर देंगे। भैया! हम लोगोंको बहुत सजग रहना होगा, तुम भगवानकी बातको दबा देते रहे, अब उसका फायदा मुझे मालूम हो रहा है। भगवान और धरमसे हमें पहिले नहीं झगड़ना है, पहिले हमें जोंकोंसे निपट लेना है। कमेरे भाई बहुत दिनोंसे जालमें फँसे हैं, हम लोग धरम और भगवान-के खिलाफ बोलनेमें ही ताकत लगा देंगे तो जोंकें उन्हें बहकाने लगेंगी।

भैया—हाँ दुक्खू भाई! सबकी जड़ यही जोंकें हैं, जड़ काटना अच्छा है कि पत्ता नोचना अच्छा है?

दुखराम—जड़ काटना अच्छा है भैया!

भैया—लेकिन जोंकें सभी कमेरोंकी आँखमें धूल नहीं झोंक सकतीं, बिला-यतके मजूरोंको जब मालूम हुआ कि हमारे देसकी जोंकें रूसके कमेरा राजको सत्यानास करनेके लिए तोप-बन्दूक, गोला-बारूद भेज रही हैं, तो उन्होंने जहाजपर माल लादनेसे इनकार कर दिया। खलासियों-मल्लाहोंने जहाज छोड़ दिया। फ्रांसकी पलटनें लड़नेके लिए रूस पहुँचीं और सभी कमेरोंने जान जोखिममें डालकर फ्रांसीसी सिपाहियोंके पास पहुँच सब बात कही तो पलटनें बिगड़ चलीं। अँगरेजी पलटनोंमें भी यही बात दिखाई देने लगी। रूसी कमेरे अब जोंकोंके लिए नहीं, अपने लिए लड़ रहे थे, इसलिए जानपर खेलना उनके लिए खेल था। बाहरकी जोंक सरकारोंने समझ लिया कि अपनी पलटनको जो वहाँ लड़नेके लिए भेजा, तो बोलसेविकोंकी बीमारी हमारे देसमें चली आयेगी। उन्होंने अपनी पलटनें लौटा लीं। लेकिन हाथपर हाथ धरकर बैठते कैसे? रूसी जोंकोंके कितने ही जरनैल और बच्चे कमेरोंके राजसे जहाँ-तहाँ लड़ रहे थे। बड़े-बड़े महंत भी तो जोंक ही हैं न? उन्होंने धरमके नाम

पर कितने ही किसानोंको बहकाया। बिलायत और दूसरे मुल्कोंकी जोंक सरकारोंने सोचा कि रूसी जोंक जरनैलों और उनके आदमियोंको ही सिखण्डी बनाकर टट्टीकी आड़में सिकार करें। चर्चिल साहब और दूसरे भी देसोंके जोंकराजोंके मंत्रियोंने जोंक जरनैलोंको रुपए-पैसे, गोला-बारूद, हवाई जहाज आदिसे खूब मदद किया। जोंकें आखिर रूसमें रह न सकीं; लेकिन चलते चलते भी उन्होंने रूसको भयानक नरक बना दिया। सहर और गाँव तबाह कर दिया। जोंक जरनैलोंने औरतों और बूढ़ोंपर दिल खोल कर हाथ साफ किया।

दुखराम—वह तालुकदारों, राजा-नवाबों, सेठ-साहूकरोंके लड़के थे न? वह सोच रहे होंगे कि अब हमारे महल और अप्सरायें फिर कहाँ मिलेंगी?

भैया—हाँ, और यह बात सभी जगह दुहराई जायगी। जोंकें जल्दी हार नहीं मानेंगी। जोंक जरनैलोंने खेती बरबाद करदी, अनाज जला दिया। बाहरके किसी मुलुकसे कमेरोंकी सरकार कोई चीज न मँगा ले इसके लिए बिलायत और दूसरे मुल्कोंके जहाज पहरा देते थे और जहाँ कोई जहाज कमेरोंके लिए आता या जाता दिखाई दिया उसे डुबा देते। जितने लड़ाईमें नहीं मरे थे, उससे कई गुना ज्यादा आदमी-बच्चे-औरतें भूखके मारे मर गईं। एक करोड़ से ज्यादा आदमी मरे थे।

दुखराम—जब बिना लड़ाईके बंगालमें साठ लाख आदमी बलि चढ़ गये तो वहाँ के बारेमें क्या पूछना है?

भैया—पाँच बरस तक (१९१७-२२) रूसके कमेरोंने अपने यहाँकी जोंकों और बाहरवाली जोंकोंके साथ लोहा लिया। लाखोंने हँस-हँस कर जान दी, अन्त में जयमाला कमेरोंके गलेमें पड़ी। लाल झंडा अचल होकर गया और लाल पलटनके नामसे जोंकें घबड़ाने लगीं।

दुखराम—लाल झंडा और लाल पलटन क्या है भैया?

भैया—लाल झंडा तुमने देखा नहीं है दुक्खू भाई! कलकत्ताके मजूर भी जब कोई अपना जलसा या सभा करते होंगे तो लाल झंडा ही लेकर चलते होंगे!

दुखराम—देखा तो था भैया, लेकिन मैंने समझा था महाबीरी झंडा है।

भैया—तुम्हारी चटकलके मुसलमान मजूर उस झंडेके साथ-साथ थे कि नहीं ?"

दुखराम—थे भैया ! जुम्मन काका सुकरू भैया बहुतसे थे। और अब मुझे समझमें आता है उस झंडेपर महाबीरजी की मूरत नहीं थी।

भैया—कमेरोंका झंडा लाल चौकोर होता है। उस पर हंसिया और हथौड़ाका चीन्ह बना रहता है। हँसिया है किसानोंका हथियार और हथौड़ा है मजूरोंका। झंडेका लाल रंग कमेरोंका खून है।

दुखराम—अब मालूम हुआ लाल झंडेका मतलब। हमें भी अपने झंडे-को खूनसे लाल करना होगा। भैया यह लाल रंग कमेरोंका अपना लाल रंग तो नहीं है।

भैया—हाँ, अपना रंग है, इसी वास्ते रूसके कमेरोंकी पलटनका नाम है लाल पलटन।

दुखराम—उस दिन भैया ! तुमने अखबारमें पढ़कर सुनाया कि लाल पलटनके सामनेसे भागते-भागते जर्मन जोंकोंकी फौजें अपने घरमें घुस गईं।

भैया—हाँ, और लाल फौज उनके घरमें घुसकर जोंकों और उनकी सेना-का संहार कर रही हैं। रूसमें १८२ कौमें बसती हैं।

दुखराम—तो वहाँ एक खोम नहीं है ?

भैया—एक खोम नहीं है, लेकिन कमेरोंका राज्य है न इसलिए सभी १८२ खोमें रहती हैं। बाहरकी जोंकोंने बाकी खोमोंको बहकानेमें कोई कोसिस नहीं बाकी रखी। किसीको मुसलमान कहके बहकाया, किसीको किरिस्तान कह-कर, किसीको यहूदी कहकर, किसीको बौद्ध कहकर अलग करना चाहा, लेकिन कमेरे-कमेरे सब एक हो गये। लेनिन महात्माकी पारटीने लड़ाईसे पहिले ही बात पक्की कर दी थी कि रूसमें १८२ खोमें हैं, १८२ भासा हैं, चार-चार धरम हैं, काले लोग भी हैं, गोरे लोग भी हैं। लेकिन कोई छोटा-बड़ा नहीं है, सब बराबर हैं। जमीन-मकान, कल-कारखाना, रेल-खान सब १८२ खोमोंके हैं। जो किसी खोमको दबाया जाय, तो वह जब चाहे तब अपना देस अलग कर सकती है।

दुखराम—दिल साफ था भैया ! छल-कपटकी कोई बात नहीं थी ।

भैया—इसलिए दुक्खू भाई १८२ कौममेंसे किसीने अलग होनेका नाम नहीं लिया । बल्कि पाँच खोम बाहरसे आकर फिर मिल गईं ।

दुखराम—बड़ा भारी परिवार है भैया !

भैया—बीस करोड़का परिवार है, और सब एक दूसरेके वास्ते प्रान देते हैं । लड़ाई-झगड़ा करना खून चूसनेवाली जोंकोंका काम है । कमेरोंको तो खूब मेहनत करके अधिक अन्न उपजाना है, अधिक कपड़ा पैदा करना है, अच्छा घर बनवाना है, सबके पढ़ने-लिखनेका, दवाई-दरपनका इन्तजाम करना है ।

दुखराम—जिसमें सब सुखी रहें, कहीं नरकका, निशान न रह जाय । दुनिया भरकी जोंकोंके मुँह पर कालिख पुत गया न भैया ।

भैया—कालिख तो पुत गया, लेकिन उनका दिल भी थरथर काँपने लगा । वे समझने लगीं कि जब तक रूसमें कमेरोंका राज रहेगा तब तक हमारी जान हर वक्त खतरेमें है । लेनिन महात्मा पर उन्होंने गोली चलवाई, घाव तो भारी था लेकिन उस वक्त वह बच गए, तो भी वह दिनपर दिन कमजोर होते गए । और कमेरोंके राजके कायम होनेसे सात बरस बाद (जनवरी १९२४) मर गये ।

दुखराम—हत्यारे पापी !

भैया—लेकिन दुक्खू भाई ! मरकस बाबाका रास्ता इतना कच्चा नहीं है कि एक नेताके मार देनेसे वह खतम हो जाएगा । लेनिन महात्माने रूसके कमेरोंको सिच्छा दी थी कि एक-एक कमेरा पुरुष या नारीको राज चलानेका ढंग सीखना होगा । कमेरे लेनिन महात्माकी एक-एक बात पर जान देनेके लिए तैयार थे । रूसकी जोंकोंसे तो अब कोई आसा नहीं रह गई थी, इसलिए बाहरी देशोंकी जोंकोंने दूसरा रास्ता लेना चाहा । रूसके कमेरोंकी बातको सुन-कर हंगरी देसमें भी कमेरोंका राज कायम हुआ । लेकिन इंग्लैण्ड, फ्रांस और अमेरिकाकी जोंकोंने उसे दबा दिया । इटलीमें भी जब कमेरोंने जोर लगाया, तो राजा-ताल्लुकदार, सेठ-महाजन काँपने लगे । उन्होंने एक गुण्डेकी पीठ ठोंकी जिसका नाम मुसोलिनी था और राजकी लगाम उसके हाथमें दे दी, मुसोलिनी-

ने कमेरोंका-पच्छ लेनेवाले एक-एक कमूनिस्तको चुन-चुनकर मारा। बिला-यती जोंकें खूब खुश हुईं, उनके बड़े-बड़े मंत्री तक मुसोलिनीको बधाई देने इटली गये। मुसोलिनीने लाखों कमेरों और कमूनिस्तोंके खूनकी होली खेली, लेकिन दुनियाकी जोंकोंने मुसोलिनीको महापुरुष और क्या कह-कहकर तारीफ की। जर्मनीके भी कमेरे जोंकोंके पीछे पड़े। इसको देख कर भीतर और बाहर-की जोंकें खूब घबराईं। वह चारों ओर आँख फाड़-फाड़कर सहारा ढूंढ़ने लगीं। जब जर्मनीमें भी मुसोलिनीकी तरह का एक दूसरा गुंडा हिटलर पैदा हो गया, तो जोंकोंका दिल ठंडा हुआ। बिलायतकी जोंकोंने हिटलर की हिम्मतको खूब बढ़ाया। हिटलर कहता था कि दुनिया भरके सबसे बड़े दुसमन यही बोलसेविक हैं।

दुखराम—दुनिया भर के दुसमन नहीं, जोंकोंके दुसमन हैं।

भैया—लेकिन दुक्खू भाई! सच्ची बात वह कैसे कहता? जरमनीके करोड़-पति पूँजीपतियोंने हिटलरके लिए थैली खोल दी, तालुकदार पहले कुछ सन्देह करने लगे।

सन्तोखी—तालुकदार क्यों सन्देह करने लगे? पूँजीपति और तालुकदार तो एक ही तरहकी जोंकें है।

भैया—बिलायतमें जैसे बड़े-बड़े जमींदार बड़े-बड़े पूँजीपति कारखानेदार भी हैं जर्मनीमें अभी उतना नहीं हो पाया है। जर्मनीमें नवाब-तालुकदार अपनी अकड़में रहते थे और उनमेंसे बहुत कम कारखानेदार बनना चाहते थे। कारखानेदार पूँजीपति हिटलरकी पीठपर थे, इससे वह समझने लगे कि कहीं पूंजीपतियोंका पलरा भारी न हो जाय। पूँजीपतियोंके पास जो करोड़ोंके कारखाने थे, उनके पास रुपयेका बल था; तो जर्मनीके तालुकदार-नवाबोंके हाथमें सारी सेना थी। जर्मन फौजके बड़े-बड़े अफसरोंमें सभी और छोटोंमें-से भी अधिक तालुकदार घरानेके लड़के थे। इधर पूँजीपतियों और तालुकदारों-में अभी गठबन्धन नहीं हो पाया था, उधर कमकरोंकी ताकत बढ़ रही थी। बाहरकी जोंकोंने भी समझाया, तालुकदारोंने भी झख मारा। और कमेरोंके भारी खतरेको देखकर जर्मनीके प्रेसीडेन्ट और एक बड़े तालुकदार हिन्डन

वर्गने हिटलरके हाथमें राज दे दिया। अब गुंडा राज पूरीतौरसे अपना रूप दिखलाने लगा। कमेरोंकी सभाओं और जमात बन्दीको खूनी हाथोंसे बन्द कर दिया गया। गोली और फाँसीसे मारे जानेवालोंकी गिनती नहीं हो सकती थी। हजारों हजार मरद मेहरारू नरकसे भी बुरे जेलोंमें डाल दिये गये जहाँ उनमें से अधिक भूखे रहकर या पागल होकर मर गये।

दुखराम—तो हिटलर सबसे बड़ा खूनी निकला भैया! और उस दिन वह सफेद टोपीवाले बाबू हिटलरको देवता बना रहे थे।

भैया—वह क्या, दुनिया भरकी जोंकें हिटलरको देवता बना रही थी। यह तो अँगरेज, फ्रांसीसी और अमेरिकावाली जोंकोंपर जब हिटलरने हल्ला बोल दिया तब उसे गाली देने लगे। लेकिन हिटलरको मजबूत करनेमें सबसे बड़ा हाथ बिलायतकी जोंकोंका है। उन्होंने उसे दिल खोलकर धन और बरदान दिया।

सन्तोखी—तो भैया सिउजीसे बरदान पाकर भसमासुर उन्हींके सिरपर हाथ रखने चला?

भैया—हाँ दुक्खू भाई! हिटलरने जर्मनीके लोगोंका कान भरना सुरू किया कि भगवानने नीली आँखों और भूरे बालोंवाली जातिको ही दुनियामें राज करनेके लिए पैदा किया। ऐसी जाति जर्मनीसे बाहर कहीं नहीं। जर्मन ही वह आर्य जाति है, जिसे भगवानने दुनिया का राजा बनाया।

सन्तोखी—तो हिटलर अपनेको अरिया कहता है भैया।

भैया—हाँ, वह अपनेको अरिया कहता है और स्वस्तिक (सतिया)का चीन्ह अपने झंडे पर लगाता है।

सन्तोखी—अब पता लगा उस दिन महासय भड़ामसिंह उपदेसक बड़े जोर जोरसे कह रहे थे कि जर्मनीने भी अरिया धरमको मान लिया।

भैया—लेकिन महासय भड़ामसिंहको यह मालूम नहीं है कि हिटलर हिन्दुस्तानियोंको काला पसु जैसा मानता है, उसने अपनी किताबमें लिखा है कि हिन्दुस्तानी लोग सिरिफ गुलाम रहनेके लिए पैदा भये हैं। वह तो फ्रांस और इंग्लैंड जैसे गोरे-गोरे लोगोंको भी बरनसंकर कहता है।

दुखराम—बड़े-बड़े बहे जायँ गदहा कहे कितना पानी; भइामसिंह अरिया समाजी है और हिटलर अरिया है। छिः! छिः!! भइामसिंहने समझा होगा कि हिटलर और जर्मनीके अरिया बननेकी बात कहनेसे सारा हिन्दुस्तान अरिया समाजी बन जायगा।

भैया—उसने जर्मनीके लोगोंकी आँखोंमें धूल झोंकनेके लिए यह झूठी-झूठी बात गढ़ी थी। पिछली लड़ाईमें जर्मन हार गये थे, हिटलरने हजारों स्वयं सेवकोंको भूरी उरदी पहनाकर सड़कोंपर परेड कराना शुरू किया। जोंकों और उनके पिट्ठुओंने सोचा कि राजा विलियम तो दुम दबाकर भाग गया अब क्या जाने हिटलरके हाथसे जर्मनीका भाग फिर पलटे। इसमें कमेरोंके नेताओंने विश्वासघात करके उसको मदद दी।

दुखराम—कमेरोंके नेताओंने कैसे धोखा दिया भैया?

भैया—इसमें हमेशा खतरा रहता है दुक्खू भाई! मरकस बाबा और लेनिन महात्मा दोनों कह गये हैं कि कमेरोंको अपने नेताओंकी सदा परख करते रहना चाहिए। जोंकोंके पास करोड़ोंका धन है, वह लाखोंकी घूस-रिसवत दे सकते हैं। इसलिए यदि कमेरे सजग नहीं रहेंगे तो बेईमान नेता उनको धोखा दे देंगे। बिलायतमें ऐसा ही हो रहा है। मजूर नेताओंको हिन्दुस्तानके कमेरोंका खयाल होना चाहिए, क्यों कि हिन्दुस्तान और बिलायत दोनों जगहके कमेरे एक ही नाव पर बैठे हुए हैं। यदि बिलायतके कमेरोंने अपने यहाँ जोंकोंका राज खतम किया तो उनके पिट्ठू हिन्दुस्तानमें राज नहीं कर सकते। जो हिन्दुस्तान-पर जोंकोंका राज मजबूत रहा तो बिलायतके कमेरे आजाद नहीं हो सकते। सात ही बरस पहले हमने असपेन देसमें देखा है कि जब वहाँके कमेरे जोंकोंका राज खतम करने लगे तो असपेनकी गोरी जोंकोंने मराको (अफरीका की) काली फौज लेकर असपेनी कमेरोंपर धावा बोल दिया और फिर जोंकोंका राज कायम किया।

सन्तोखो—तो भैया! तुम समझते हो कि जो कभी बिलायतके कमेरोंने अपने यहाँसे जोंकोंका राज हटाया तो बिलायती जोंकें यहाँसे हिन्दुस्तानी फौज-को अपने भाइयोंके साथ लड़नेके लिए ले जायँगी?

भैया—कमेरे जोंकोंके भाई-बन्द नहीं हैं। जहाँ वे अपना महल, कल-कारखाना करोड़ों रुपया हाथसे निकलते देखेंगी तो जानते हो वे चुप बैठी रहेंगी! वह कोई बात उठा न रक्खेंगी।

दुखराम—हाँ भैया! जोंकोंको न कोई लाज-सरम न दया-माया; उनके लिए तो टका ही भगवान है।

भैया—जर्मनीके कमेरोंके नेताओंमें कुछने तो अपनेको जोंकोंके हाथमें बेंच डाला था, और कुछ हिजड़े थे। वह मरकस बाबाके नामकी माला जपते थे, इसलिए बहुतसे कमेरे धोखेमें पड़ गये। एक बार कमेरोंके हाथमें राज आया तो उनको चाहिए था कि जोंकोंका सब कुछ छीन लेते, उन्हें पीस-पास कर रख देते, लेकिन नकली सियारोंने कहना सुरू किया कि जल्दी मत करो, बहुत खून-खराबी होगी। धीरे-धीरे सब हो जायगा। जर्मनीमें कमूनिस्त भी थे, लेकिन कमेरोंके दूसरे नेताओंने कमेरोंके भीतर फूट डाल दी थी। सब एक नहीं हो सके। लोग कितने बरस तक इन्तजार करते!

दुखराम—और बीचमें जोंकें चुप नहीं रही होंगी भैया!

भैया—चुप कैसे रहतीं, उनके मरने-जीनेका सवाल था। उधर हिटलरने जोंकोंके पैसेसे अपना बल बढ़ाया, इङ्गलैण्डके जोंकोंसे खूब मदद मिली। अन्त-में तालुकदारोंने भी राज उसके हाथोंमें दे दिया। राज हाथमें आते ही उसने अपनी सेना और हथियार बढ़ाना सुरू किया। उसने कहा—मक्खन खानेसे बन्दूक रखना अच्छा है। फ्रान्सकी जोंकें कुछ घबड़ाईं क्योंकि पिछली लड़ाई-में जर्मनोंने उनका बहुत नुकसान किया था लेकिन बिलायती जोंकोंका हाथ बराबर हिटलरकी पीठपर रहा, उनको यह ख्याल नहीं था कि कहीं हिटलर हमारे ऊपर न दौड़ आये। हिटलरने राज संभालते ही कमेरोंको बेदरदीसे दबा दिया, लेकिन बिलायती जोंकोंकी नजर रूसके कमेरोंपर थी। उन्होंने समझा था कि जर्मनीमें सात, आठ करोड़ आदमी रहते हैं, जो हिटलरने सबको तैयार करके रूस पर हमला कर दिया, तो बोलसेविकोंका राज नस्ट हो जानेसे दुनिया भरकी जोंकें चैनकी बन्सी बजायेंगी। लेकिन रूसके कमेरोंका नेता स्तालिन बीर गाफिल नहीं था।

दुखराम—स्तालिन वीर कौन है भैया !

भैया—लेनिन महात्माका सबसे लायक चेला, लेनिन महात्माके मरनेपर उसीको रूसके कमेरोंने अपना अगुआ माना। स्तालिनका मतलब है, फौलाद।

दुखराम—तो स्तालिन वीर फौलाद ही जैसा होगा भैया !

भैया—उसका मनसूबा फौलाद ही जैसा है दुक्खू भाई ! और उसके ऐसा दूर देखनेवाला तो आज दुनियामें कोई नहीं है। उसने रूसके कमेरोंसे कहा, दुनियाकी जोंकें चार बरस तक आपसमें लड़कर बहुत कमजोर हो गईं, उन्होंने कमेरोंके राजको खतम करना चाहा, लेकिन वह उसे कर न सके। तो भी जैसे ही मौका मिलेगा वैसे ही वह कमेरोंके राजका गला घोटनेके लिए एक होकर दौड़ पड़ेंगे।

सन्तोखी—फिर स्तालिन वीरने क्या इन्तजाम किया भैया ?

भैया—रोटी-कपड़ा और पढ़ने-लिखनेके साथ-साथ अपने देसको कल-कारखानासे इतना मजबूत कर दिया कि जिसमें जोंकोंके हमला करनेपर हमें बाहरका मुँह ताकना न पड़े। पहिले तो राज हाथमें लेते ही लेनिन महात्माने और कामोंके साथ यह काम जरूरी समझा कि रूसमें जितने नर-नारी हैं उनमें कोई अनपढ़ न रह जाय। लेकिन पढ़ाई कौन भाखामें हो ? दूसरेकी भाखामें पढ़ाई हो तो भाखा ही सीखनेमें बहुत दिन लग जायँगे। लेनिन महात्माने कहा कि हमारे यहाँ १८२ खौम हैं। सौमें नब्बे, पंचानबे अनपढ़ हैं; लेकिन कोई खौम गूँगी नहीं है।

दुखराम—एकाध आदमी गूँगा हो सकता है, सारीकी सारी खौम गूँगी कैसे होगी ?

भैया—हाँ, उन्होंने कहा कि एकसौ बयासी, खौमोंकी सबकी अपनी बोली है। बस जो-जो बोली बोलता है उसे उसी बोलीकी किताब पढ़ाना चाहिए। कमेरा राजसे पहले पाँच-छः खौमोंको छोड़कर किसीकी बोलीमें कोई किताब नहीं लिखी गई न उनका कोई अच्छर था। पंडितोंने हरेक आवाजके लिए अच्छर चुना और फिर इसके बाद किताब लिख-लिखकर छापने लगे।

दुखराम—अपनी भाखा हो तब क्या सीखनेमें देर लगेगी भैया ! दूसरेकी

भाखामें पढ़ाई करनेका नतीजा देख रहे हो न ! हम चार दरजा हिन्दी पढ़े हैं लेकिन घरमें तो हिन्दी बोलते नहीं हमारी अपनी बोली है, उसीको बोलते हैं, और बड़ी मीठी बोली है भैया ! हम लोग जो बोली बोलते हैं इसका नाम क्या है भैया ?

भैया—आजमगढ़, गाजीपुर, बनारस, मिरजापुर, जौनपुर ये सब पुराने जमानेमें कासी देस कहा जाता था। इसलिए हमारे यहाँकी भासाको कासिका कहना चाहिए।

दुखराम—हमारे यहाँ भी भैया ! जो कासिका बोलीमें पढ़ाई होने लगे तो क्या कोई अनपढ़ रह जायगा ? खाली अच्छर सीखना है और अच्छर तो आदमी तीन दिनमें सीख सकता है। लेनिन महात्माने ठीक कहा भैया ! कि कोई खौम गूँगी नहीं है। लेकिन हम लोगोंको गूँगा बना दिया गया। हँसते, रोते, बोलते, गाते हैं हम अपनी कासिकामें और हमको पढ़ाई जाती है अरबी, फ़ारसी भाखा।

भैया—हिन्दी पढ़ना खराब नहीं है दुक्खू भाई ! लेकिन सुरूहीसे अपनी भाखाको छुड़ाके हिन्दी पढ़ानेका यही नतीजा होता है कि लड़के मिडिल पास कर जाते हैं। लेकिन तो भी न सुद्ध हिन्दी लिख सकते हैं न हिन्दीकी बड़ी-बड़ी किताबें समझ सकते हैं। आठ बरस पढ़ना अकारथ ही गया न ?

सन्तोखी—अपनी भाखामें पढ़ाई होगी तभी भैया कोई मरद-औरत अनपढ़ नहीं रहेगा और सब किताब, अखबार पढ़ समझ लेंगे।

भैया—लेनिन महात्माने सोचा कि अब हमारा राज जोंकोंका राज नहीं है, कमेरा लोगोंको अपना राज चलाना है, और कमेरा मरद-औरत जो अनपढ़ रहेंगे तो राज-काज कैसे चलायेंगे। इसलिए उन्होंने पंडितोंको इस कामके लिए बैठा दिया। उन्होंने रोमन अच्छरका क ख बनाया और किताबें छाप-छापकर स्कूलोंमें भेजना सुरू किया। लेनिन महात्मा और स्तालिन बीरका कहना सुनते ही समूचे देसके लोग बिद्यारथी बन गये। सत्तर सालके बूढ़े-बूढ़ियों तकने अपने पोतोंके साथ बैठकर अच्छर सीखा।

दुखराम—अपनी बोलीमें जो पढ़नेका इन्तजाम नहीं हुआ होता तो बूढ़े-

बूढ़ियों छोड़ जवानोंको भी पढ़नेकी हिम्मत न होती । हमारे यहाँ देखो न, अपनी भाखाको तो कोई पूछता ही नहीं, हिन्दी पढ़ाई जाती है, लेकिन वह भी नाम करनेके लिए, नहीं तो बड़ी-बड़ी पढ़ाई तो सब अँगरेजीमें होती है ।

भैया—और अँगरेजी चौदह बरस पढ़नेके बाद भी बहुत थोड़े ही आदमी लिख-बोल सकते हैं ।

दुखराम—हमको तो मालूम होता है कि जोंकें हमें पढ़ने देना नहीं चाहतीं । अपनी भाखामें पढ़ाई हुई तो सब मरद-औरत पढ़ जाएँगे तब वह दुनिया जहानकी बात जानने लगेंगे फिर उनकी आँखमें धूल कौन झोंकेगा । हम लोग तो भैया अपने ही देसमें पराए हो गए हैं । न थानामें हमारी बोली, न कचहरीमें, न इसकूलमें, न इस्टेसनमें । वैसी तो अँगरेजी ही है फिर जो हिन्दी-उर्दू है उसमें जो चार आना भी हम लोग समझ जायँ तो धन भाग है । रूसमें तो ऐसा नहीं होगा भैया ?

भैया—वहाँ चार आना नहीं सोलहो आने समझ जाते हैं दुक्खू भाई ! जौन इलाकामें जो बोली लोग बोलते हैं वहाँ उसी बोलीमें इसकूल लगता है । थाना, डाकखाना, कचहरी, इस्टेसन सब जगह वही बोली चलती है । अखबार भी उसी बोलीमें छपते हैं, सिनेमा भी उसी बोलीमें चलता है । जो कोई दूसरी बोली भी सीखना चाहता है उसके सीखनेका इन्तजाम है । १८२ भाखा बोलने-वाले सभी कमेरे तो अब सगे भाई हैं । इसलिए वह एक-दूसरेसे बात भी करना चाहते हैं इसके लिए रूसी भाखा जो पढ़ना चाहिए, उसका इन्तजाम है ।

दुखराम—उसी तरह यदि हमारे यहाँ हिन्दी पढ़ना हो तो कोई हरज नहीं । हम लोग सब कुछ अपनी कासिका भाखामें पढ़ें, ऊपरसे हिन्दी भी कुछ सीख लें, तो अच्छा ही है, दिल्ली, बम्बई, कलकत्ता जानेपर बात-चीतमें सुभीता होगा ।

भैया—अपनी बोलीमें पढ़ानेका यह फायदा हुआ कि आठ ही नव-बरस-के भीतर वहाँ एक भी आदमी अनपढ़ नहीं रह गया ।

दुखराम—हिन्दुस्तानसे सात गुना बड़ा है न भैया ! और तीस करोड़ आदमी बसते हैं । तो सारे रूसमें अब कोई मूरख बेपढ़ नहीं है न !

भैया—इस बातको तो कई बरस हो गया ।

दुखराम—यह बहुत बड़ा काम है भैया, अन्धेको आँख देना है !

भैया—जोंकें लोगोंको अन्धा रखना चाहती हैं। जितने कल-कारखाने लड़ाईके वक्त टूट गये थे, जितनी रेलकी सड़कें और खानें बिगड़ गईं थीं स्तालिन बीरने सबको फिरसे तैयार करने कहा। रूसके सारे मर्द-औरत सभी मिसतिरी इनजिनियर जुट गये और कमेरा राज कायम हुए दस साल भी नहीं बीता कि कल-कारखाना, रेल, खान सब पहिले इतना माल पैदा करने लगे। खेत भी फिरसे आबाद हो गया, और उतना ही अनाज पैदा होने लगा। अब स्तालिन बीरने कहा कि पैर बढ़ाके चलनेसे काम नहीं चलेगा, अब सारे देसको दौड़ना होगा, जिसमें हमारे देसमें सब जगह हजारों नये बड़े-बड़े कारखाने खुलें। तेल, कोयला, लोहा इतना पैदा हो कि कोई जोंकोंका देस हमारा मुकाबला न कर सके। गाँव-गाँवमें बिजली और पानीका नल लग जाय। और खेतमें दिनमें दस बिस्वा (कट्ठा) जोतनेवाले हल नहीं सौ बीघा जोतनेवाले मोटरके हल चलें। सिंचाईके लिए जहाँ नदीसे नहर निकल सके वहाँ नहर निकले, जहाँ धरतीमें पाइप गाड़नेसे पानी निकले, वहाँ पाइप गाड़कर, सींचनेका इन्तजाम किया जाय।

दुखराम—लकड़ीके हलकी जगह मोटरका हल ! और वह इतना बेसी खेत जोतता है भैया !

भैया—मोटरके हलमें सात-सात फार होते हैं और फार एक-एक हाथ गहरी जुताई करता है। तुम्हारे खेतमें जितनी जंगली घास कुसकास जमती है, उसकी जड़ खोदकर देखें कि वह धरतीमें कितने नीचे तक गई है फिर फालको उतना ही बड़ा लगा दें। एक बार खेत जोत देनेपर सब घास जड़ मूलसे निकल जाएगी। और तीन बरस तक तो खेतमें कोई जंगली घास नहीं निकलेगी। गहरी जुताईका यह भी फायदा है कि सीड़ बनी रहती है, गेहूँ-चनेकी जड़ धरतीमें नीचे तक पैठती है, और बरखा-बुन्दी कम भी हो तो भी नीचेकी सीड़से काम चल जाता है। नई-नई तरहकी खाद तैयार करनेके लिए भी स्तालिन बीरने हजारों कारखानें खुलवाए। उन्होंने किसानोंको समझाया कि हजारों टुकड़ोंमें बंटे गाँवके खेतोंमें मोटरका हल नहीं चल सकता।

दुखराम—१०० बीघा रोज जोतनेका मोटरवाला हल छोटे-छोटे कोलेमें कैसे चलेगा भैया !

भैया—इसीलिए स्तालिन वीरने किसानोंसे कहा—गाँव भरका खेत इकट्ठा कर दो, मेंड़ें तोड़ दो, गाँव भरके लोग एक परिवारकी तरह मिलकर साझेमें खेती करें।

सन्तोखी—किसीके पास कम और किसीके पास बेसी खेत होता है भैया !

भैया—स्तालिन वीरने कहा कि जो साझे की खेतीमें नहीं सामिल होते हैं उनका खेत अलग दे दो और गाँवके जितने लोग इकट्ठा खेती करना चाहते हों, उनके खेतोंको एक जगह कर दो, परतीसे खेत बनानेका हक उन्हींको हो। ज्यादा खेतवाले किसान कुछ समय अलग जोतते-बोते रहे, लेकिन उनके पास चार अंगुल खुरचनेवाला हल सतजुगसे चला आया था। उनके पास खाद और सिंचाईका उतना इन्तजाम नहीं था जबकि उनकी बगलके बड़े-बड़े खेतोंमें मोटरके हल चल रहे थे, पाइप से सिंचाइ होती थी, कल खेत काटती और दाँवती थी। उन्होंने देखा कि बेसी खेत रहनेपर भी हम उतना नहीं पैदा कर पाते, जितना साझीवाले किसानको मिलता है फिर वे किसान भी आकर पंचायतके पैरों पड़े।

दुखराम—वहाँ सब काम पंचायतसे होता है भैया !

भैया—रूसमें लोग अपने देसको अब रूस नहीं कहते उसे सोवियत कहके पुकारा जाता है और सोवियतका मतलब वही जो हमारी भाखामें पंचायतका। वहाँ एकसौ बयासी खौमें बसती हैं, उनमेंसे एक है रूसी खौम इसीलिए स्तालिन वीरने कहा कि हमें कई तरह की खौमोंवाले देसको किसी एक खौमके नामसे नहीं पुकारना चाहिए। दुक्खू भाई ! आसानीसे समझानेके लिए अब रूस-रूस कहते रहें नहीं तो अब उसका नाम है साम्यवादी पँचायती प्रजातन्त्र-संघ !

दुखराम—सामवादी क्या है भैया !

भैया—मरकस बाबाने जो सिच्छा दी है न कि देस भरके कमेरोंका एक साझा परिवार हो, और देस भरकी धन-धरतीका मालिक कोई एक आदमी

नहीं बल्कि वही बड़ा परिवार। इसी सिच्छापर जो चले उसे सामवादी कहते हैं।

दुखराम—पँचायती तो हम समझ गये लेकिन परजातंतर क्या?

भैया—जहाँ राजाका काम न हो, प्रजा ही अपना राज चलाती हो, उसको प्रजातन्त्र कहते हैं।

सन्तोखी—और संघ तो जमातको कहते हैं न भैया?

भैया—हाँ, वहाँ साम्यवादी पंचायती प्रजातन्त्र एक-एक खौमका अलग-अलग है। और सब प्रजातन्त्र एक जमात बन गया। इसीलिए संघ कहा गया।

दुखराम—तो वहाँ पक्का पँचायती राज है।

भैया—गाँव, जिला, देस और सारे १८२ खौमोंका, मुलुकका, इन्तजाम पँचायतें करती हैं। मरद हो चाहे औरत, सहर हो चाहे गाँव, अठारह बरससे बेसी जिसकी उमर है वह वोट देकर पँचायत—सोवियत चुनता है। गाँवके पंचायतमें पच्चीस-तीस या चालिस मेम्बर चुने जाते हैं। फिर इन मेम्बरोंकी पाँच-छकी छोटी पंचायतें बना ली जाती हैं। इन छोटी पँचायतोंमें किसीका काम होता है आपसी झगड़ोंका फैसला करना और पुलिसका इन्तजाम देखना, किसीका काम होता है असपताल और बीमारोंका ध्यान रखना, किसीका काम होता है इसकुल, सिनेमा, पुस्तकालय आदिका परबन्ध करना। किसीका काम होता है खेतीबारीका इन्तजाम करना।

दुखराम—तो भैया! सोवियतवालोंने इस कहानीको झूठा कर दिया "साझेके सुई सगन्दासे उठे" लेकिन भैया! मुझे तो मालूम होता है कि जोंकोंने जान बूझकर ऐसी ऐसी कहावतें गढ़कर कमेरोंके भीतर फैला दीं। कमेरोंमें एक-के पास उतना धन और नौकर-चाकर है नहीं कि उसके बलपर कोई बड़ा काम उठावें, साझे का काम करनेसे उनका बल बढ़ता है, उसीको तोड़नेके लिए जोंकोंने कहावत गढ़ी छोटी-सी सुई भी साझेके होनेपर बड़े-बड़े बाँसके उठानेकी तदबीर सोची जाती है।

भैया—हाँ दुक्खू भाई! कमेरोंको पैर फूँक-फूँक कर रखना है। हजारों बरसोंसे जोंकें राज कर रही हैं। उन्होंने हर जगह अपना जाल बिछा रखा है।

दुखराम—भैया ठीक कह रहे हो। मैंने ही न जाने कितनी ही बार दुहराया

होगा और मैं समझता था कि यह कोई विधि-ब्रह्माका बचन है लेकिन अब न मालूम हो रहा है कि जोंकोंने इसे गढ़कर हमारे भीतर फैला दिया है जिससे मिलकर हम कोई काम कर न सकें।

भैया—जुलाहा अकेले ही न कपड़ा बुनता था, और चटकल-पटकलमें कितने सौ जुलाहे एक साथ काम करते हैं! देखो साझेवाला काम कितना जोरसे चल रहा है और अकेले काम करनेवाले जुलाहे उजड़ गये।

दुखराम—तो भैया! सोवियत देसके किसानों और उनके गाँवोंकी सकल ही बिलकुल बदल गई होगी?

भैया—पहिली बात तो यह है कि वहाँ अब छोटे-छोटे खेत नहीं रह गये हैं। तीन-तीन सौ चार-चार सौ बीघाके खेत हैं जिनको जोतनेके लिए पाँच लाखसे ज्यादा मोटरहल और डेढ़ लाखसे ज्यादा काटने-दाँवनेवाली कल हैं।

दुखराम—और यह मोटर और कल कहाँसे आती है भैया?

भैया—१९२८ ई०से पहिले रूसमें एक भी मोटरहल नहीं बनता था, जोंकोंके राजमें कोई मोटर कारखाना नहीं था। लेकिन स्तालिन वीरने कहा कि हमें सब चीजें अपने यहाँ बनानी होंगी नहीं तो किसी वक्त बाहरकी जोंकें गला दबाकर हमें मार डालेंगी। अब खाली एक गोरकी सहरके कारखानेमें हर साल एक लाख मोटरें बनती हैं। मोटरलारी, मोटरहल, हवाई जहाज, सब सोवियतके कारखानोंमें बनते हैं। हर बारह-बारह चौदह-चौदह गाँवपर एक-एक मसीन मोटरहलका इस्टेसन, उसे बड़ा गाँव समझो दुक्खू भाई! उस गाँवमें जितने लोग हैं सब मोटर मसीन चलाना, उनकी मरम्मत करना, बस यही काम करते हैं। गाँवकी पंचायत अपने गाँवका लेखा करती है; कितना बीघा खेत एक हाथ गहरा खोदना है, कितना बीघा पौन हाथ और कितना जोतना है। इसका हिसाब करके मोटर इस्टेसनमें जाती है। जोताई आदिकी दर बँधी हुई है, दोनों ओरसे कागज-पत्तरपर दसखत हो जाते हैं, फिर मोटरहलवाले आकर खेत जोत-बो देते हैं। छोटे-मोटे कामके लिए एकाध मोटरहल गाँवमें भी होता है।

दुखराम—तो गाँव भरके साझे खेती होती है और काम कैसे बाँटा

जाता है ?

भैया—हर कामका नाप बँधा हुआ है। जैसे समझ लो एक आदमीको एक दिनमें दस बिस्वा जोतना चाहिए जो किसीने पन्द्रह जोत दिया, तो एक ही दिनके कामके लिए उसे डेढ़ दिन समझा जायगा। यदि कोई पाँच बिस्वा ही जोत सका उसका आधा ही दिन होगा। हर आदमीके कामका बहीखाता होता है, जिसमें रोज-रोजका काम लिखा जाता है।

दुखराम—तो बड़ा हिसाब-किताब रखना पड़ता होगा ?

भैया—सैकड़ों आदमियोंका काम, हिसाब-किताब नहीं रखा जायगा तो गड़बड़ी नहीं मचेगी ? मान लो हमारे घरमें सौ औरत और एक सौ पचास मरद काम करने वाले हैं। दस-दस आदमीकी एक-एक टोली बन जाय, टोली अपना मुखिया बनायेगी। फिर दस-दस या पन्द्रह-पन्द्रह टोलोंकी एक बड़ी जमात होगी। जिसको वहाँ बिरगेड कहते हैं। बिरगेड अपनेमेंसे सबसे लायक औरत या मरदको अपना मुखिया चुनता है जिसको बिरगेडियर कहते हैं। टोलीका मुखिया अपनी टोलीके साथ काम करता है, लेकिन बिरगेडियरको बहुत काम देखना-भालना होता है, आजके काममें कितना हुआ, कितना नहीं हुआ इसका हिसाब देखना और तनेही करनी पड़ती है। इसलिए उसे और आदमियोंके साथ अपने हाथ जोतने-बोनेका काम नहीं करना पड़ता। लेकिन बिरगेडियर लोग उन्हीं कुदाल, फावड़ा चलानेवाले लोगोंमें बनते हैं !

सन्तोखी—खाद, पानी, अच्छी जुताई, अच्छा बीजका इन्तजाम होनेसे वहाँ पैदावार भी ज्यादा होगी।

भैया—देखते नहीं गाँवको, गोएड़के खेतमें फसल कितनी पैदा होती है !

दुखराम—सुतर जाय तो कमईमें तीन-तीन मोटी बाल लगती है भैया !

भैया—वहाँ भगवानके भरोसेपर खेती नहीं करते, कहते हैं जब आसमानसे पानी नहीं बरसा तो धरतीमें तो पानी है ही। पाइप लगाकर धरतीके भीतरके पानीसे खेत सींच डालते हैं। और फसल कितनी होती है, यह इसीसे समझ सकते हो कि एक-एक बीघा ($\frac{1}{2}$ एकड़) में बीस-बीस मन तक चीनी उन्होंने पैदा किया है।

दुखराम—एक-एक बीघामें बीस-बीस मन चीनी ! हमने तो बीस मन गेहूँ भी पैदा होते नहीं देखा ! वहाँकी ऊख बहुत मोटी होगी ?

भैया—वह बहुत ठंढा मुल्क है दुक्खू भाई ! वहाँ ऊख नहीं पैदा होती । हमारे यहाँ जैसे सकरकंद होता है वैसे ही वहाँ एक चीज पैदा होती है जिसको चुकंदर कहते हैं, वह बहुत मीठा होता है, उसीसे चीनी बनाई जाती है । ऊख-की चीनी जैसी वह भी मीठी, दानेदार और सफेद होती है और कपास बीघामें बारह-तेरह मन खूब बारीक रेशावाला बिनौला निकालकर पैदा होता है । तीस-तीस मन बीघा धान पैदा कर लेते हैं और जानते हो न दुक्खू भाई ! खाली हाथसे कुदाल चलानेसे ही काम नहीं चलता । जब कुदालके साथ दिमाग भी लगता है, तो धरती सोना उगलने लगती है । वहाँ ऐसा-ऐसा गेहूँ निकला है कि एक बार बोनेपर चार-चार साल तक फसल काटते हैं । धानका बीज ऐसे तैयार किये हैं कि अगहनी धान कातिकहीमें कट जाता है ।

दुखराम—भैया ! जो ऐसा बीज हमको मिलता तो हमारी दस बीघाकी धानकी कियारी भी दोफसला हो जाती । चढ़ते कातिकमें धान कट जाय तो खेत जोत-जातकर कातिकके अन्तमें गेहूँ बो सकते हैं ।

भैया—जोंकोंका राज बिना हटाये यह नहीं हो सकता दुक्खू भाई ! वहाँ जिस फसलको तीन-चार हफ्ता पहले काटना चाहते हैं उसके बीज भिगोकर बड़े-बड़े गोदाममें फैलाकर रखते हैं और जानकर पंडित गरमी-सरदी नापते रहते हैं । दो दिन वैसा करके फिर बीजको सुखा लेते हैं । हिन्दुस्तानमें कहाँ उतने-उतने बड़े गोदाम, सरदी-गरमी नापनेकी कल और लाखों रुपयेकी दूसरी चीजें हैं, यहाँ भी सरकारने जो बड़े-बड़े खेतीके कालेज खोले हैं उनमें पाव-आध-सेर बीज तैयार करके देखा गया है कि रूसी बिदियामानोंका कहना गलत नहीं है । लेकिन जोंकें अगर करोड़ों रुपया लगाकर देहातमें वैसा इन्तजाम करने लगें, तो उनकी तोंद नहीं पचक जायगी ?

दुखराम—ठीक कहा भैया ! बिना जोंकोंके हटाये हमारा दुख दूर नहीं हो सकता । जहाँ इतना अन्न, धन पैदा होता है वहाँके लोग तो बड़े खुसहाल होंगे ।

भैया—खुसहाल ! वहाँ किसीकी हड्डी निकली दिखलाई नहीं पड़ेगी ।

आज जो अपने गाँवमें तुम आये लड़कोंको हाड़-हाड़ निकले, फटी लँगोटी पहिने देखते हो इसका कोई वहाँ पता नहीं। पहर भर रातसे आधीरात तक जो मरद-औरतको यहाँ खटना पड़ता है, वह भी वहाँ नहीं है। बिरगेडियरको इस फसलमें कितना काम करना है यह पंचायत बता देती है और देखती रहती है। बिरगेडियर हर टोलीको हफ्ते-हफ्तेका काम बाँट देता है और देखता रहता है कि काम ठीक-ठीक चल रहा है न? टोली भी अपने कामका हिसाब मिलाती रहती है। टोली-टोलीमें होड़ लगी रहती है। एक टोली जब पाँच दिनमें सोहनी खतम करना चाहती है तो दूसरी चार ही दिनमें खतम कर चाबस्सी (साबासी) लेना चाहती है। फिर एक गाँवके दूसरे गाँवसे, एक परगनेसे दूसरे परगने की होड़ रहती है कि कौन अपने काम अच्छी तरह और जल्दीसे खतम करता है।

दुखराम—गाँव-गाँव और परगने-परगनेमें होड़ (लागडाट) लगती है, हमारे यहाँ तो कुश्तीमें, कभी-कभी दौड़ने और कूदनेमें होड़ लगती है।

भैया—वहाँ जिलाकी ओरसे लाल झंडा रखा जाता है, कि जो परगना सबसे पहले काम करे सबसे अधिक फसल पैदा करे उसको लाल झंडा दिया जाय इसी तरह गाँवके लिए भी लाल झंडा रहता है। मर्द-औरत सब जी छोड़कर काम करते हैं कि झंडा उनके गाँवमें आये और झंडा जब किसी गाँवको मिलता है तो मेला लग जाता है आस-पासके गाँवोंसे हजारों मर्द-औरत अपने-अपने गाँवोंकी लारियोंपर चढ़कर आते हैं।

दुखराम—तो वहाँ गाँव-गाँवमें लारियाँ हैं भैया!

भैया—न अब वहाँ बैलवाले हल रह गये और न गाड़ियाँ। हर गाँवमें आठ-आठ सात-सात बड़ी-बड़ी लारियाँ रहती हैं। काम भी आदमीको ७ घन्टेसे बेसी नहीं करना पड़ता। और काम करनेमें आनन्द आता है दुक्खू भाई! लोग तरह-तरहका गाना गाते हुए काम करते हैं। खाने का वक्त हुआ तो किसी पेड़के नीचे खाना लेकर लारी आ गई। सब लोग बैठ गये, रोटी-तरकारी, भात, मांस-मछली, दूध-दही सब तैयार है। परोसनेवाले परोस रहे हैं, औरत-मर्द सब बैठकर भोजन कर रहे हैं। एक ओर रेडियो बाजा लगा दिया, और दुनिया भरकी खबर और मीठे-मीठे गीत सुन रहे हैं।

दुखराम—रेडियो बाजा क्या है ? क्या यह कोई फोनोगिलाफ है ?

भैया—जानते हो न दुक्खू भाई। पत्थर हड्डीके हथियारों और तीर-धनुष-के जुगसे मानुख-जाति अब बहुत आगे चली आई है। यह मानुखके दिमाग-की करामात है, लेकिन, अफसोस है कि इस करामातका फायदा जोंकोंहीको मिल रहा है। रेडियो बाजा होता तो है एक चौकोर बाकस, लेकिन उसमें बिलायत, अमेरिका, रूस, कलकत्ता, बम्बई, दिल्ली सब जगहका गाना और खबर चली आती है।

दुखराम—क्या वह तारकी तरहसे है भैया ?

भैया—तार नहीं लगा रहता दुक्खू भाई। यहाँ कनैलामें जो रेडियो बाजा आज आ जाए तो यहीं सब तुम्हें सुनाई देने लगेगा।

दुखराम—बड़े अचरजकी बात है भैया ! सोमारु राउत सुनेंगे तो कहेंगे कि इसमें जरूर कोई जादू है।

भैया—जादू नहीं है दुक्खू भाई ! हम तीन हाथ परसे बोल रहे हैं हमारे मुँहसे जो आवाज निकल रही है, वह तुम्हारे कान तक पहुँच रही है न ?

दुखराम—हाँ पहुँच रही है, मैं सुन रहा हूँ।

भैया—जो मैं सौ हाथसे बात करूँ, तो तुम्हें आवाज सुनाई देगी कि नहीं।

दुखराम—बहुत कम, और शायद नहीं भी सुनाई दे।

भैया—आवाज तो तुम्हारे कानमें आती है दुक्खू भाई, लेकिन कान कुछ ऊँचा सुनता है, माने कान अच्छी तरह पकड़ नहीं पाता, कानकी तागत कम-जोर हो जाती है। कानकी तागत और बढ़ा दी जाय, या आवाज को और तेज कर दी जाय तब तुम सुनने लगोगे दुक्खू भाई ! कलकत्ता, दिल्ली या मास्को, लंदनसे जो आवाज निकलती है वह हवा पर तैरते हुए हमारे गाँवमें भी पहुँचती है लेकिन वह इतनी मन्द हो जाती है कि हमारा कान उसे पकड़ नहीं पाता। रेडियो बाजाका यही काम है कि जो आवाज दुनिया भरसे चलके हमारे यहाँ आई है उसे पहले पकड़े और फिर तेज करके फोनोगिलाफ बाजाकी तरह निकाले। और कोई जादू-वादू नहीं है। रूसमें किसान जब खाना खाने बैठते हैं तो उस वक्त रेडियो बाजा गाना सुनाता है, देस-देस की खबरें सुनाता है और

अब तो वह ऐसी तदबीर कर रहे हैं कि आवाज ही नहीं रूप भी दिखलाई पड़ने लगे और लोग बैठे-बैठे मास्को और लन्दनका नाच और नाटक देखें।

दुखराम—क्या भैया! ऐसा भी होने लगेगा?

भैया—देखते नहीं दुक्खू भाई! दस हाथपर खड़े रहते हो और तुम्हारा मुँह दरपनमें दिखाई पड़ता है। रूपवाला बाजा भी तैयार हो गया है लेकिन अभी रूप उतना साफ नहीं आता। कुछ दिनोंमें वह भी ठीक हो जायगा।

दुखराम—होगा भैया! लेकिन हम लोगोंको तो रेडियो बाजा भी देखनेको नहीं मिलता। कब जोंकोंका नास होगा? और वहाँ भैया! सब मेहरारू काम करती हैं?

भैया—बड़े-छोटे सब घरकी मेहरारू? यही न पूछ रहे हो दुक्खू भाई? लेकिन हमने बतलाया वहाँ कोई बड़ा-छोटा नहीं, कोई जात-पाँत नहीं, सब बराबर हैं। भाई-भाई हैं। जोंकोंके राजमें मक्खन जैसे मुलायम हाथकी तारीफ की जाती है, सोवियतमें घट्टा पड़े कड़े हाथोंकी तारीफ होती है। जोंकोंके मुल्कमें कामचोर देहचोरकी इज्जत की जाती है, सोवियतमें मेहनती मजूर-किसान काम करनेवाले लोगकी इज्जत होती है, बीमार, बूढ़े, बच्चेको वहाँ काम करना नहीं पड़ता। नहीं तो जो कोई रानी बनकर बैठी तो दूसरे दिन भूखा मरने पड़ेगा।

दुखराम—तो रानी फूलमती कुँअरिके लिए तो आफत हो जायगा, भैया!

भैया—इसीलिए न राजा-रानी, सेठ-सेठानी, महंत-महंथिन, मौलवी-मौलवियानी सब एक ओरसे मरकस बाबाकी सिच्छाको बुरा कहते हैं, रूसको गाली देते हैं। लेकिन दुक्खू भाई! वहाँ जो काम करना पड़ता है वह तकलीफ-का काम नहीं होता। गाँव भरकी औरतोंको काम करना पड़ता है लेकिन बच्चा पैदा होनेसे महीना दो महीना पहलेहीसे उन्हें छुट्टी मिल जायगी और बच्चा होनेके बाद भी डेढ़ दो महीने छुट्टी रहेगी। उस बखत भी दूध-दवाई, डाक्टर-दाई सबका खर्च पंचायतकी ओरसे मिलता है। औरतें खेत काटनेके लिए आती हैं तो बच्चोंका तम्बू पहले ही पड़ जाता है और दाइयाँ बच्चों-को सँभाल लेती हैं। वहाँ बच्चोंके लिए खिलौना रहता है, पालने रहता है,

दाइयाँ कहानी सुनाती हैं।

दुखराम—तो वहाँ बच्चोंको पीटा नहीं जाता।

भैया—बच्चोंके पीटनेका काम नहीं, क्योंकि जब माँ-बाप काम करते हैं तो बच्चे दाइयोंके पास रहते हैं। जब काम नहीं रहता तब बच्चोंको ले आते हैं, उनके साथ खेलते हैं, कहानी सुनाते हैं, लाड़-प्यार करते हैं।

दुखराम—सपना जैसा मालूम होता है भैया!

भैया—सरगको किसीने नहीं देखा लेकिन हजारों सालसे सरगके नामपर ठगे जा रहे हैं। लेकिन मैं जिस सोवियतकी बात कर रहा हूँ वह सरग जैसी सपनेकी चीज नहीं। जो जोंकें हमारा रास्ता न रोकें तो यहाँसे पाँचवें दिन उस देसमें पहुँच सकते हैं।

दुखराम—हवाई जहाज, सुनते हैं, दो घंटेमें कलकत्तेसे चला जाता है।

भैया—हवाईसे नहीं दुक्खू भाई। दो दिनमें रेलसे पेशावर और वहाँ से काबुल होते तीसरे दिन कमेरोंके राजमें पहुँच जाएँगे। किराया भी ४०)से बेसी नहीं लगेगा।

दुखराम—तब तो भैया बहुत नजदीक है।

भैया—नजदीक है; लेकिन जोंकोंने हजार तरहकी पहरा चौकी बैठाई है, जिसमें बाहरके कमेरे रूसको आँखोंसे न देख सकें न वहाँकी बात ठीक तौरसे समझ सकें। वहाँके लोग बहुत खुशहाल हैं दुक्खू भाई। गाँव-गाँवमें स्कूल है, असपताल है, पुसतकालय है, सिनेमाघर है।

दुखराम—सिनेमाघर भी है गाँव-गाँवमें भैया!

भैया—हाँ काम सब पंचायती होता है इसलिए हर गाँवमें एक इतना बड़ा घर होता है कि वहाँ के सारे नर-नारी बैठ सकें। उसी घरमें सभा होती है जो बड़े गाँव हैं उनमें तो रोज सिनेमाका तमासा होता है, लेकिन छोटे गाँवोंमें सिनेमा मोटरसे घूमता रहता है। आज कनैलामें आया, और दो तरहका तमासा यहाँ दिखला दिया फिर तीसरे दिन यहाँसे भदया चला गया; वहाँ भी दो तमासा दिखलाया। इसी तरह वह आगे बढ़ता गया, दूसरे हफ्ते दूसरी सिनेमा-मोटर आई और वह भी उसी तरह दो-दो तमासा दिखाती चली गई। गाँवमें

पंचायतकी ओरसे दूकान होती है, जिसमें पचासों तरहकी चीजें बिकती हैं, और नफाका सवाल नहीं, क्योंकि दूकान गाँव भरकी ह। गाँव भरके लोगोंने मिलकर खेती की, कपड़ा, जूता, मोजा, सिलाईके भी कारखाने गाँवोंमें होते हैं, उनमें भी जितना काम किया सबका काम बही-खाता पर लिखा हुआ है और कितना पैदा किया वह भी सामने। मान लो दस लाख रुपयाका सामान गाँव ने पैदा किया और दो लाख दिन गाँव भरके लोगोंने मिलकर काम किया तो इसका मतलब हुआ एक दिनके कामका ५)। लेकिन पाँच लाखमंसे पहिले साझेका खर्च, अस्पताल, दाई-घर, पुस्तकालय, नाटकमंडली आदिके लिए दो लाख या जितना हो, निकाल दिया जायगा। अब एक रोजके काम की ४) पैदावार हुई। गाँवमें जिसने जितना दिन काम किया है, उसीके अनुसार पंचायत उन्हे पैसा दे देगी। उससे आदमी घर-घरके लिए कपड़ा बनवायेगा, जूता खरीदेगा या फोनोगिलाफ बाजा खरीदेगा, मेला-तमासा देखेगा, खाना खायेगा।

दुखराम—गाँव भरका चूल्हा एक नहीं हो गया है?

भैया—कहीं-कहीं हो गया है, लेकिन बहुत जगह नहीं हुआ है। सहरोंमें ऐसा बहुत हुआ।

सन्तोखी—सहरोंकी भी एकाध बात बतलाएँ भैया!

भैया—सहरोंमें जानते हो न सन्तोखी भाई, सब मकान-जमीन बड़ी-बड़ी जोंकोंके होती है। राज सँभालते ही कमेरोंकी सरकारने जोंकोंकी जायदातको छीन लिया। सहरोंके सब घर कमेरोंके सरकारके। जो झोंपड़ियाँ और गन्दी गलियाँ पहिले थी, उन सबको तोड़करके पाँच-पाँच छः-छः तल्लाके बड़े-बड़े मकान बन गये। जोंकोंके राजमें राजधानीमें तेरह लाख आदमी बसते थे जिनमें आधे सूअरकी खोभारोंमें रहते थे, आज आबादी दुगुनासे भी अधिक तीस लाख है, लेकिन अब उन खोभारोंका पता नहीं है, अब सबके लिए अच्छे-अच्छे मकान, चौड़ी सड़कें, जगह-जगह लड़कोंके खेलनेके लिए बगीचे तथा खेलके मैदान हैं। मकानकी मरम्मत, बिजली-पानीका इंतजाम लोगोंकी चुनी हुई छोटी-छोटी पंचायतें करती हैं। महल्ले-महल्ले रसोई-घर हैं, जिनमें हजार दो हजारसे दस-

रस बारह-बारह हजार आदमियोंका खाना बनता है। सिरिफ दाल-भात उबाल कर रख नहीं दिया जाता बल्कि पचास-पचास साठ-साठ तरहके भोजन बनते हैं। जिन औरत-मर्दोंको रसोई बनानेका काम है वह रसोई-घरमें जाते हैं। सबेरेका जलपान और दोपहरका भोजन करा दिया बस छुट्टी, तिपहरीका जलपान और रातका भोजन बनानेका इन्तजाम आकर दूसरी टोली करेगी।

दुखराम—औरतोंको तो वहाँ और भी आराम है भैया! हमारे यहां तो बेचारी पहर भर रात रहते ही चक्की पीसने लगती है, चौका-बासन करना, खाना बनाके खिलाना, बीचमें लड़का रोने लगा तो उसे दो थप्पड़ लगाना, चावल कूटना, दाल दरना, फिर चौका-बासन करना, गोपठेकी धूएँ से आखें फोड़ते खाना बनाना, खिलाते-पिलाते आधी रात हो जाता है। बेचारियोंको फिर पहर भर रात हीसे जागना पड़ता है, वहाँ तो इतना काम नहीं पड़ता।

भैया—वहाँ इतना काम कहाँ, बतलाया नहीं, सबेरे ६ बजे ड्यूटी पर गईं तो बारह एक बजे तक उनकी छुट्टी। आटा पीसना, चावल कूटना तो कल-मसीन का काम है। बरतन धोनेके लिए भी बहुत जगह कल लगी हुई है। मसीन घूम रही है, एक ओरसे बर्तन डालते हैं, एक साबुन लगा देती है, बुरुसवाली मसीन मल देती है, दूसरी मसीन गरम पानीसे धो देती है फिर साफ बर्तन दूसरी ओरसे बाहर चला आता है। औरतने जाकर ६-७ घंटे रसोई घरमें काम कर दिया अब उसे अपने लड़केको लाड़-प्यार करना, मित्रोंसे बात-चीत करना, किताब पढ़ना या कोई और मन बहलावा छोड़कर कोई दूसरा काम करना है करके लोग चाहे रसोई-घरके बड़े-बड़े मकानोंमें जाकर खाना खा सकते हैं और चाहें तो गरमागरम भोजन अपने घरमें लाकर खा सकते हैं।

सन्तोखी—दुकान-उकान तो वहाँ भी होगी भैया।

भैया—दुकान बहुत है सन्तोखी भाई और इतनी बड़ी-बड़ी कि जिसमें हजार-हजार आदमी गाहकोंको सौदा बेचते हैं। लेकिन सब दुकानें पंचायती हैं, कमेरोंके पंचायती राजकी, चाहे छोटी-सी सिगरेटकी दुकान हो चाहे बड़ीसे बड़ी दुकान हो जो लोग बेंच रहे हैं वह किसी साहु महाजनके नफाके लिए नहीं कर रहे हैं। सब लोगोंकी ड्यूटी है। घंटेसे काम करना अच्छा है नहीं

६-७ घंटा. फिर अपना मौज करें। बीमार होनेपर डाक्टर मुफ्त, दवा मुफ्त, पथ मुफ्त, और तनख्वाह भी नहीं कटती। बूढ़ा होनेपर सबको पेन्शन।

सन्तोखी—तब काहेको वहाँ किसीको चिन्ता होगी।

भैया—चिन्ता बिलकुल नहीं! लड़के-लड़कियोंके पढ़नेके लिए फीस नहीं देना पड़ता, और सात बरस तक सबको पढ़ना होता है। दोपहरका खाना लड़कोंको स्कूलसे मिलता है और डाक्टर जैसा खाना बतलाए वैसा खाना। दो बच्चोंके बाद जितने बच्चे पैदा होंगे उनका सब खर्च कमेरा सरकार देती है। अढ़ाई रुपया रोजसे कम किसीकी मजूरी नहीं। जो घरमें मरद-औरत दो ही कमानेवाले हों तो भी पाँच रुपया रोज या डेढ़ सौ रुपया महीना तो जरूर ही आएगा। बताओ उनको क्या चिन्ता हो सकती है?

सन्तोखी—तभी तो भैया! रूसवाले इतनी बहादुरी से लड़ रहे हैं? उन्होंने अपने हाथसे धरतीपर सरग रचा, जर्मन जोंकोंके रूसमें बैठनेका मतलब क्या होगा, इसे वह अच्छी तरह समझते थे।

भैया—स्तालिन वीरने कह कर नहीं दिखाया करके दिखाया। बीस बरसमें रूसके कमेरोंका अगुआ है स्तालिन वीर। मरकस बाबाने जोंकोंके जाल-फरेब को देखनेके लिए आँख दी और लड़नेका ढंग बतलाया। लेनिन महात्माने कमेरोंको लड़नेके लिए तैयार किया फिर पाँच बरस तक लड़ाई लड़ी और दुनियाके छठे भागसे जोंकोंका नाम मिटा दिया। स्तालिन महात्माने सरगको धरतीपर उतारा। गाँवोंको बदल दिया। कारखानोंसे देसको भर दिया। लोगोंको दिखला दिया कि जोंकोंके हटानेसे दुनिया नरकसे सरग बन जाती है। लेकिन स्तालिन वीरने यह भी आगेसे सोच लिया था कि जोंकोंसे हमें लड़ना पड़ेगा। इसीलिए अपने हथियारको मजबूत किया, हर नौजवानके लिए फौजमें दो-तीन बरस रहना लाजिमी कर दिया। सब विद्या सिखाई गई। करोड़ोंकी पलटन तैयार हो गई। मरद ही नहीं औरतों तकने भी हथियार चलाना सीखा। हवाई जहाज उड़ाने लगीं। बच्चे लड़कपनहीसे सौ-सौ, डेढ़-डेढ़ सौ हाथ ऊँचे मीनारोंपर से छतरी-के सहारे कूद करके निडर होने लगे जिसमें कि हवाई जहाजसे कूदनेमें उन्हें भय न मालूम हो। मोटरके हलोंको ऐसा बनाया कि ऊपरके थोड़ेसे हिस्सेको

हटाकर दूसरा रख देनेसे वह टंक बन जाता था।

दुखराम—टंक क्या है भैया!

भैया—टंक आज-कलकी लड़ाईका बहुत जबर्दस्त हथियार है, जिसपर बन्दूककी गोली क्या तोपका गोला भी असर नहीं करता। उसके पहिएमें रबड़की टायर नहीं, मोटी जंजीर होती है। चारों ओर तीन अंगुल मोटे फौलादकी चद्दर लगी रहती है, भीतर ही तोप रहती है। ऊँची-नीची सब जमीनपर चला जाता है। बड़े-बड़े पक्के मकानोंको तोड़ते हुए तो ऐसे घुसता जाता है जैसे सूखे पत्तोंके ढेरमें लोहेका लाल छड़। स्तालिन बीरने लड़ाईके लिए कमेरोंको पहले हीसे तैयार कर लिया।

सन्तोखी—स्तालिन बीरका तो बहुत बड़ा दिमाग है भैया!

भैया—कमेरोंके लड़कोंमें कितने ही बड़े-बड़े दिमाग पैदा होते हैं लेकिन उनको काम करनेका मौका ही नहीं मिलता, आज जब सारी दुनियाको पछाड़नेवाली हिटलरी फौजको लाल फौजने तहस-नहस किया, भगाकर उसे जर्मनीके भीतर जाकर उसका सत्यानास कर रही है तो सारी दुनियामें लाल फौजके महासेनापति बीर यूसुफ स्तालिनका नाम लिया जा रहा है, सब उसकी बुद्धि और बहादुरीका लोहा मानते हैं। लेकिन स्तालिन बीर मजूरी करके खानेवाले एक चमारका लड़का है और गोरे भी नहीं काले चमारका लड़का है। स्तालिनने चौदह बरसकी उमरसे ही जोंकोंकी जड़ काटनेका काम शुरू किया। चौदह-चौदह बार उसे कालेपानीकी सजा हुई तो भी वह जेलसे निकल भागता रहा और भेस बदलकर कमेरोंमें काम करता रहा। कमेरोंने जो रूसकी जोंकोंसे पाँच साल लड़ाई लड़ी उसके जीतनेमें लेनिन महात्माके बाद जो सबसे बड़ा दिमाग था वह इसी चमारके लड़केका।

दुखराम—हमारे यहाँ भी भैया! हम चमार कहकर अछूत कहकर पशु बनाकर रखे हैं और जिनके साथ जरा भी दया-मायाकी बात कहनेपर पंडित लोग पोथी लेकर मारने दौड़ते हैं। जो जोंकें न रहें, तो उनमें भी न जानें कितने-कितने बीर-बहादुर निकलेंगे कितने दिमागवाले दिखाई पड़ेंगे।

अध्याय ६

भसमासुर भूतनाथपर चढ़ दौड़ा

भैया—उस दिन दुक्खू भाई तुमने ठीक कहा था, सचमुच ही हिटलरने वही किया जो भसमासुरने भूतनाथके साथ किया। बिलायतकी जोंकोंने हिटलर-को अपना लाड़ला बेटा बनाया था। जब (३० जनवरी १९३३ को) जर्मनीका राज जोंकोंके इस गुण्डेके हाथमें आ गया तो बिलायतकी जोंकें फूली न समाती थीं। उन्होंने सोचा कि हिटलरको इतना मजबूत कर दिया कि वह रूसके बोल-सेविकोंपर टूट पड़े और हमारा यह सबसे बड़ा दुसमन बरबाद हो जाय। पिछली लड़ाईमें जर्मनीने जो खूनी जंग छेड़ा था, उसको देखकर अँगरेज, फ्रान्सीसी और उनके दूसरे मित्रोंने जर्मनीसे ऐसी-ऐसी सरतें मनवाई थीं कि जिसमें वह फिर सिर उठाने लायक न रह जाय। हिटलर एक ओर अपने देस-वालोंसे कहता था कि हमें पंगु नहीं रहना चाहिए। दूसरी ओर बाहरी देसोंकी जोंकोंको खुस करनेके लिए वह बोलसेविकोंके सत्यानास करनेकी बात करता था। जर्मनी और फ्रांसके सरहदपर राइन नामकी एक नदी है। जर्मनीने यह शर्त मानी थी कि वह राइनके इलाकेमें कोई फौज नहीं रक्खेगा और यह भी कि लोगोंको जबरजस्ती फौजी विद्या सिखाकर अपनी सेनाको नहीं बढ़ायेगा। हिटलरने कमेरोंको अपनी तरफ खींचनेके लिए भी झूठ बोलना सुरू किया था कि हम भी अपनी खोमका सामवाद (जोंक बिना राज) चाहते हैं। कुछ लोग आसा रखते थे कि हिटलर कमेरोंकी भलाईके लिए कुछ करेगा लेकिन हिटलर तो जोंकोंके हाथकी कठपुतली था, उसने तो कमेरोंपर ही खूब जुलुम किया। इसपर झूठी आसावाले लोग कुछ तिलमिलाने लगे फिर तो राज सँभाले डेढ़ बरस भी नहीं हुआ कि उसने ३० जून १९३४को हजारों अपने ही साथियोंको बड़ी बेदरदीसे कतल करवा डाला। इनमें उसके ऐसे भी साथी थे जिनकी मददके बिना वह इतना बढ़ न सकता था। बिलायतकी जोंकें और भी खुस हुईं।

सन्तोखी—क्यों न खुश होतीं, उन्होंने सोचा होगा कि हिटलरके आस-पास जो थोड़े-बहुत जोंकोंके विरोधी रह गये थे वह भी खतम हो गये।

भैया—हिटलरने दो साल और तैयारी की और मार्च १९३५में जबरजस्ती सेना बढ़ानेवाली सर्त भी तोड़ दी। पड़ोसी फ्रांस बहुत घबराया। बिलायती जोंकें कहने लगीं कि जो फौज न बढ़ायेगा तो बोलसेविकोंसे लड़ेगा कैसे? हिटलरने अब बड़े जोर-सोरसे सेना और हथियार बढ़ाना सुरू किया। साल भर और बीता और ७ मार्च १९३६को राइनके इलाकेमें उसने एक बहुत बड़ी फौज भेज दी। फ्रांस बहुत फड़फड़ाया। लेकिन बिलायती जोंकें समझने लगीं कि बोलसेविकोंसे लड़नेके लिए हिटलरको ऐसा करना ही चाहिए। दुनियाके लोग आँख मलमलकर देखने लगे। उन्हें साफ मालूम होने लगा कि अब फिर दूसरा महाभारत होगा। बूढ़े बाल्डवीन बिलायतकी जोंकोंके बड़े सरदार वहाँके महामंत्री थे। बुढ़ापेके कारण उन्होंने गद्दी छोड़ी और उनकी जगहपर जोंकोंका सरदार नेविल चेम्बरलेन ३१ अगस्त १९३७को बिलायतका महामंत्री बना। जोंकोंका सरदार होनेके लिए जितने गुनोंकी जरूरत है वह सब इस आदमीमें थे। और उसके साथी भी उसीकी तरह एकसे एक छँटे थैलीसाह थे। साइमन, होर, और हेलीफॉक्स (जो पहिले हिन्दुस्तानका बड़ा लाट इरविन था) सभी एक ही हाँड़ीके नहलाये हुए थे, "कोऊ बड़ छोट कहत बड़ दोसू।"

सन्तोखी—इरविन वाइसराय! ऐसे ही ऐसे न हिन्दुस्तानमें बड़ा लाट बनकर आते हैं।

भैया—और क्या? जोंकें बेवकूफ थोड़े ही हैं, छँटे आदमियोंको वह हिन्दुस्तान भेजती हैं। चेम्बरलेन और उसकी गुटका यही मंत्र था, "थैली माता, थैली पिता, थैली बंधू, थैली सखा"। चेम्बरलेनने हिटलरको और बढ़ावा दिया। वह समझ गया कि बिलायतकी जोंकें हमारे रास्ते में कोई बाधा न डालेंगी। उसने १२ मार्च १९३८को आस्ट्रियाके राजपर कब्जा कर लिया। बिलायतकी कुछ जोंकें घबड़ाईं लेकिन उनके सरदारोंको चंडाल-चौकड़ी तो आसा बाँधे हुए थी कि हिटलर बोलसेविकोंके नास करनेकी बड़ी भारी तैयारी कर रहा है। हिटलरने पाँच बरसोंमें अपने सारे कारखानोंको लड़ाईका सामान तैयार करनेमें

लगा दिया था, और नौजवानोंको फौजमें भरती कर लिया था। उसके टंक, तोप, हवाई-जहाज और लाखोंकी पलटनका तमासा देखनेके लिए बिलायतकी भी जोंकें जर्मनी जाती थीं और बहुत खुस होती थीं। छः महीने और बीते। सितम्बर १९३८में हिटलरने अपने पूरबके पड़ोसी चेकोस्लोवाकियापर लाल-लाल आँखकी। चेम्बरलेन बिलायतसे दो-दो बार उड़कर हिटलरके दरबारमें गया। और अन्तमें १९ दिसम्बरको उसने, दिलादिए (फ्रांस) आदि जोंक सरदारोंने चेकोस्लोवाकियाकी बलि दे दी। पहले उसने थोड़ा-सा हिस्सा लिया, फिर १५ मार्च १९३९ को सारे चेकोस्लोवाकियाको हड़प लिया।

सन्तोखी—दूसरे-दूसरे मुल्कोंको हिटलर हड़पता जा रहा था, तो क्यों बिलायती जोंकोंको भय नहीं हुआ; आखिर यह देस भी तो जोंकों हीके थे।

भैया—चेम्बरलेन जैसे जोंक सरदारोंका ख्याल था कि चेकोस्लोवाकियासे ही रूस नजदीक है, इसलिए बोलसेविकोंको नास करने के लिए हिटलरको वह मिलना ही चाहिए। चर्चिल जैसी कुछ जोंकें घबड़ा रही थीं, क्योंकि वह समझती थी कि जर्मनीकी ताकत बहुत बढ़ जानेपर जो कहीं उसने हमारी तरह मुँह मोड़ा तो कैसे जान बचेगी।

सन्तोखी—यह बात चेम्बरलेन और उसकी चंडाल-चौकड़ीकी समझमें क्यों नहीं आई।

भैया—स्वारथी अन्धा होता है। चंडाल-चौकड़ी करोड़पतियोंकी गुट थी। चेम्बरलेनका बाप अपने समयमें बिलायतका एक मंत्री था। उसका अपना, एक लोहेका कारखाना था। १९०० ई०में दक्खिनी अफरीकामें लड़ाई हो रही थी, चेम्बरलेन मंत्री भी था, उसने कारखानेकी चीजोंका दाम दुगना-तिगना कर दिया। फौजके लिए उसीके यहाँसे सामान खरीदा जाता। उसने दोनों हाथसे खूब लूटा। उस वक्त बिलायतमें कहावत थी, जितना ही अँगरेजी राज बढ़ता है, उतना ही चेम्बरलेनका ठेका बढ़ता है। यह तो बाप चेम्बरलेनकी बात हुई। बेटे चेम्बरलेनकी भी सुनिए। उसके हथियारके एक कारखाने (बर्मिंघम स्माल आर्म्स) को १९३५में दो-सौ गिनी नफा हुआ था लेकिन

उसी कम्पनीने १९३८में साढ़े चार लाख पौंड नफा लूटा—इस वक्त चेम्बरलेन बिलायतका महामंत्री था।

सन्तोखी—सरम होनी चाहिए थी भैया! अपने ही सरकारका मुखिया और सरकारी खजानेसे इतना-इतना रुपया अपने रोजगारको दिलवाना।

भैया—जोंकोंके समाजमें ऐसी बातको सरम नहीं कहा जाता, इसे कहते हैं ईमानदारीका ब्योपार! चेकोस्लोवाकियापर हिटलर ने जब दाँत गड़ाया था उस वक्त चंडाल-चौकड़ीको थोड़ा डर तो लगा, लेकिन चेम्बरलेन, बाल्डविन, होर, साइमन, बरसोंसे रुपया बटोरनेमें लगे हुए थे। तोप, बन्दूक, टंक, हवाई-जहाज बनानेके लिए करोड़ों रुपया चाहिए और यह रुपये जोंकोंकी ही तोंद काटनेसे न आते, इसलिए वह उसके लिए क्यों तैयार होते। उधर हिटलरके पास पलटन और हथियार अनगिनत थे, वहाँ बिलायती सूमड़ोंने मुट्ठी बाँध ली थी, और अपने कारखानोंसे चौगुने दाम पर खरीदे थोड़ेसे हथियार दिखलानेके लिए रखे हुए थे। हिटलर जानता था, कि यह बंदरभभकी देनेसे और अधिक कुछ नहीं कर सकते। अब हिटलरने यूरपके एक बड़े भागपर कब्जा कर लिया था। जर्मनी, आस्ट्रिया, चेकोस्लोवाकिया सभी देसोंके हथियारोंके कारखाने उसके लिए काम कर रहे थे। बीस बरससे सिर झुकाए हुए जर्मनोंको यह सब जादू जैसा दिखाई पड़ने लगा। हिटलरने जर्मन आरिया जातिको सारी दुनियापर राज करनेके लिए भगवानकी ओरसे भेजा गया कहा था, और साथ ही यह भी कि हर जातिमें नेता भी भगवान ही भेजते हैं। हिटलर सारी मानुख जातिपर राज करनेके लिए भेजा गया था, जर्मन जातिको इसका गर्व होने लगा। हिटलरने मक्खनकी जगह बन्दूक बनवानेकी बात कह-कहकर जर्मनोंको आलू खानेके लिए मजबूर किया। उसने दिलासा दिया था कि जब संसार भरपर जर्मन जातिका झंडा गड़ जायगा तब दुनियाके सभी लोगोंका धरम जर्मन जातिके आराम और भोगके लिए काम करना होगा। हिटलर उतावला हो रहा था संसार विजयके लिए। अब उसके सामने दो रास्ते थे एक तो अपने पहले कहे मुताबिक बोलसेविकोंके ऊपर दौड़े और दूसरा रास्ता था बाहरी जोंकोंके ऊपर झपटनेका। फ्रांस, इंग्लैंड सब जगहकी जोंकोंने पैसा बचा-

बचाकर रखा था, फौजके मदमें जो रुपया मंजूर भी किया था, उसे भी चौगुने दामपर रद्दी-सद्दी हथियार देकर लौटा दिया था। जोंकोंके पास न हथियार था, न पलटन थी, जो हिटलरकी फौजका सामना कर सकतीं। लेकिन बोलसेविकोंके यहाँ आँखमें धूल झोंकनेकी कोई बात नहीं थी, वह समझते थे कि दुनियाकी जोंकें हमें खा जाने के लिए तैयार बैठी हैं। हमारी तभी रच्छा हो सकती है जब हमारे पास अच्छे-अच्छे हथियार और पलटन हों। उन्होंने बीस बरससे बराबर इसके लिए तैयारी की थी। जिस वक्त जर्मनीको निहत्था बना दिया गया था, और वह नाम मात्रके लिए थोड़ी-सी पलटन रख सकता था और जर्मन जरनैल टके-टकेपर मारे-मारे फिरते थे उस वक्त बोलसेविकोंने उन्हें अपने यहाँ नौकर रखा और लड़ाईकी विद्या सिखानेके लिए कहा। यह जरनैल कई-कई साल रूसमें रह चुके थे। उन्होंने वहाँकी लाल फौजको बहुत नजदीकसे देखा था। हिटलरको मालूम था कि लाल फौजकी ओर बढ़ना अक्लमंदी नहीं है।

दुखराम—बेचारी जोंकें ताकती ही रह गईं।

भैया—पोलैंड जर्मनी और रूसके बीचमें पड़ता है। पोलैंडने बीस सालसे अपने यहाँ तालुकदारोंका खूनी राज कायम कर रखा था और किसानों और मजूरोंको हर तरहसे पीसना ही अपना काम समझा था। हिटलरने दो-चार मरतबे इन तालुकदारोंको चाय पीनेके लिए बुलाया, फिर क्या था इनका मिजाज आसमानपर चढ़ गया। यह भी तीसमारखाँ बन गए। जब हिटलरने चेकोस्लोवाकिया पर कबजा किया, तो इन तालुकदारोंने भी बढ़कर एक परगना पर झपट्टा मारा। हिटलर मुस्कुरा रहा होगा, मेढक मच्छरको निगलनेके लिए मुँह बा रहा है उसे यह मालूम नहीं कि उसकी पिछली टाँगें साँपके मुँहमें हैं।

दुखराम—तो हिटलर पोलैंड लेनेका निश्चय कर चुका था क्या?

भैया—हिटलर जानता था कि अब आगेका कदम ऐसा होगा कि बिलायत और फ्रांसकी जोंकें चुप नहीं बैठ सकेंगी। वह फ्रांसपर हमला कर सकता था लेकिन फ्रांसकी पलटनके बारेमें बहुत लम्बी-चौड़ी बातें कही जाती थीं। अंग्रेज कहते थे कि दुनियामें तो दो ही पलटन हैं—धरतीकी पलटन फ्रांसके पास और

समुन्दरकी पलटन हमारे पास।

दुखराम—और धरतीकी सबसे बड़ी पलटन हिटलर से कितने साल तक डटी भैया !

भैया—तीन हफ्ता।

दुखराम—तीन साल भी नहीं, तीन महीना भी नहीं, तीन हफ़्ता ! और लाल पलटनके बारे में क्या कहते थे।

भैया—वह लड़नेवाली पलटन नहीं है, वह खाली तमासा देखनेके लिए है। लेकिन आखिरमें बिलायत और फ्रांस और दुनियाकी सभी जोंकोंको लाल पलटनका लोहा मानना पड़ा। बिलायती जोंकोंके सरदार चर्चिलने कहा कि लाल पलटन न होती तो हमारा कहीं ठौर-ठिकाना न रहता। लेकिन हिटलर ऐसा नहीं समझता था वह सोचने लगा कि बाकी दो रास्ते हैं पौलैंडकी ओर दौड़ा जाय तो पच्छिमकी जोंकें गला फाड़ती भले ही रहें लेकिन वह मदद कुछ भी नहीं कर सकतीं। फ्रांस, बेल्जियम या हालैंडकी ओर बढ़नेपर इन जोंकोको कुछ करनेका मौका मिलेगा।

दुखराम—कॉंल (दाब) बैठा रहा था।

भैया—लेकिन पासा डालनेसे पहिले उसे कुछ और भी सोचना था। बोलसेविकोंने सुरूसे ही दूसरी सरकारोंको समझाया था कि दुनियाकी सांतीके लिए सबको मिलकर कोशिश करनी चाहिए। लेकिन जोंकोंको सान्तीसे क्या मतलब ? जब तक अपने घरमें नहीं लगती तब आग बेसम्तर होती है लेकिन जब हिटलरका खतरा साफ दिखाई देने लगा तब फ्रांस और इंगलैंडने रूसको अपनी ओर मिलाना चाहा। रूसने सोचा कि जोंकोंका गुंडा ज्यादा खराब होता है, इसलिए इस गुंडे हिटलरको खतम करनेके लिए कुछ किया जा सके तो अच्छा है। फ्रांस और इंगलैंडने अपने अफसर मास्को भेजे। लेकिन वह हिटलरसे लड़नेके लिए बात करने नहीं गए थे बल्कि चाहते थे कि हिटलर उतावला होकर रूसपर दौड़ पड़े। लेकिन कमेरोंके नेता कच्चे गुँइयाँ नहीं हैं। स्तालिन बीरने कह दिया कि हम दूसरेकी आगमें जलनेके लिए तैयार नहीं हैं। जोंकोंके मुखिया मास्कोसे खाली हाथ लौट आए। उधर हिटलरने २३ अगस्त

१९३९ को अपने लड़ाईके मंत्रीको मास्को भेजकर बोलसेविकोंसे कहा कि न हम तुमपर हमला करें न तुम हमारे ऊपर करो। कागज़पर दोनों ओरकी दस्तखत हुई। ११ दिन बाद ३ सितंबर १९३९को हिटलरने पोलैंड पर हमला कर दिया। बिलायत और फ्रांसकी जोंकोंके लिए कोई चारा नहीं था, उन्होंने भी हिटलरके खिलाफ लड़ाई छेड़ दी लेकिन पोलैंडके ताल्लुकदारोंका कोई मदद नहीं पहुँचा सके। कुछ ही दिनोंमें सारे पोलैंडको हिटलरने ले लिया। लेकिन पोलैंडने २१ साल पहिले रूसके कुछ जमीनको दबा लिया। जब हिटलरकी फौज उधर बढ़ना चाहती थी तो लाल फौजने आगे बढ़कर अपने पुराने इलाकेको ले लिया। हिटलर मुँह ताकता रह गया। बिलायती जोंकें बकने लगीं कि बोलसेविकोंने तो पोलैंडकी जमीन ले ली और घायल पोलेंडकी बेबसीको देखकर ऐसी कायरता दिखलाई। लेकिन इन जोंकोंको यह कहनेमें जरा भी सरम न आई कि उन्हींके सरदार लार्ड कर्जनने रूसकी सीमा जहाँ तक ठीक की थी, लाल-सेनाने उतना ही लिया। हिटलरको इस तरह बढ़ते हुए देख बोलसेविकोंको अपनी सीमाकी रच्छाका पूरा खयाल करना ही था। रूसकी पुरानी राजधानी, और मास्कोके बाद सबसे बड़ा सहर लेनिनग्रात खतरेमें था। फिनलैंडकी सीमा उससे १४ ही मीलपर थी। फिनलैंड भी ताल्लुकदारोंके हाथमें था, उन्होंने ४० हजार कमेरोंके खूनसे अपने हाथको रंगा था और हिटलरके छुटभैया बननेके लिए बराबर तैयार थे। सोवियतने फिनलैंडसे कहा कि इस सीमाको थोड़ा और पीछे हटाओ, हम तुम्हारी बगल हीमें तुम्हें तिगुनी जमीन बदलेमें देते हैं। लेकिन वह इसके लिए क्यों तैयार होने लगे? वह भी तो समझते थे कि जब तक पड़ोसमें कमेरोंका राज है तब तक हमारी गद्दीकी खैरियत नहीं। फिनलैंडने जब किसी तरह बात नहीं मानी और सरहदकी लाल फौजपर गोली भी चला दी तब कोई रास्ता नहीं था। लाल फौजकी फिनलैंडके ताल्लुकदारोंसे लड़ाई छिड़ गई। उस वक्त चेम्बरलेनको फिर जोश आया।

दुखराम—हिटलरसे लड़नेके लिए?

भैया—हिटलरसे नहीं, रूससे लड़नेके लिए। लाखसे ऊपर पलटन फ्रांस और इंग्लैंडसे भेजी जानेवाली थी लेकिन बीच हीमें फिनलैंडका दिमाग

ठंढा हो गया और उसने सोवियतकी बात मान ली। कमेरोंका राज कायम होने-पर चार जातियाँ और बिछुड़ गई थीं, जिनमें एस्तोनियाँ, लतविया, लिथुआ-नियाँ इन तीनों देसोंकी जोंकोंने अपने मतलबके लिए अपने देसको अलग किया था। वहाँके कमेरोंने देखा कि उनके सीमाके उस पार कैसा सुरंग तैयार हो रहा है। तीनों देसोंके क़मेरोंने अपने यहाँकी जोंकोंको बिदा किया और वोट देकर तय किया कि हम भी सोवियत राजमें सामिल होंगे, और वे १९४०में सोवियतमें सामिल हो गए। दक्खिन-पच्छिममें वेसराबियाका इलाका था जिसे रोमानियाँकी जोंकोंने दखल कर लिया था। सोवियतने रुमानियाँसे अपनी जमीन लौटानेके लिए कहा। रुमानियाँकी जोंकें पसंद तो नहीं करती थीं लेकिन करें क्या? वेसराबियाको छोड़ना पड़ा। सोवियतमें अब सब मिलाकर सोलह बड़े-बड़े पंचायती राज हैं।

दुखराम—नाम क्या-क्या है भैया।

भैया—(१) रूस, (२) उक्रइन, (३) बेलोरूसिया, (४) फिनो-करेलिया, (५) एस्तोनिया, (६) लतविया, (७) लिथुवानिया, (८) बस-राबिया, (९) जार्जिया, (१०) आरमेनिया, (११) आजुरबाइजान, (१२) तुर्कमानस्तान, (१३) उज्वेकिस्तान, (१४) ताजिकिस्तान, (१५) करगि-जिस्तान; (१६) कजाकस्तान।

दुखराम—यह तो बड़े-बड़े परजातंतर हैं और कितने ही छोटे-छोटे होंगे?

भैया—हाँ, लेकिन इनका नाम देनेसे क्या फायदा कभी नकसा मिलेगा तो तुम्हें दिखला देंगे।

दुखराम—हिटलरने आगे क्या किया भैया!

भैया—हिटलर चुप तो नहीं बैठ सकता था। वह जानता था कि जब तक फ्रांस और इंग्लैंडको नहीं पछाड़ते तब तक दुनियाके आधे भागको हम अपनी जोंकोंको चूसनेके लिए नहीं दे सकते।

सन्तोखी—तो हिटलर भी जोंकों हीके लिए सब कुछ कर रहा था?

भैया—जोंकोंका ही तो वह आखिरी नायक था। इंग्लैंड और फ्रांसकी पूँजीपति जोंकोंने अपने यहाँके ताल्लुकदारों (सामंतों)को पछाड़नेके लिए

जनताकी गुहार उठाई थी। काम बन जानेपर तो उन्होंने जनताको चूसनेके सिवाय और कोई काम नहीं किया लेकिन यह काम वह परदा डालकर करते आए थे और वोट और चुनावका नाटक करते थे।

सन्तोखी—नाटक क्यों भैया ?

भैया—जानते हो न, जोंकोंके राजमें वोटकी बिक्री होती है। कोई करोड़पति कौन्सिल एसंवलीके लिए खड़ा होगा वह वोटरोंको रुपया बाँटता फिरेगा।, अपने दलालोंको रुपया देकर वोट लेनेकी कोशिश करेगा। उसके सामने कोई किसान-मजूर कैसे खड़ा हो सकेगा।

दुखराम—उसकी जमा-पूँजी तो मोटरके तेलमें ही बिक जायगी।

भैया—इसीलिए मैंने कहा कि जोंकोंके राजमें ईमानदारीसे वोट कैसे दिया जा सकता है। लेकिन, कभी-कभी इस वोटसे जोंकें घबराती भी हैं। जर्मनीमें हिटलरने कहा—नेताको भगवान चुनते हैं, इसलिए उसको किसी पाखंडकी जरूरत नहीं लेकिन तब भी अपनी गीत सुनानेके लिए वह कभी-कभी वोटका नाटक खेलता था। उसके गुंडे देखा करते थे कि कोई आदमी वोट देने-से जी तो नहीं चुराता या गड़बड़ तो नहीं करता। जहाँ पता चला तो बेचारेपर आफत है।,

सन्तोखी—गुंडोंको भी भैया जोंकें ही पैदा करती हैं ?

भैया—हिटलरने डेनमार्क और नारवे जीता। फिर बिल्जयम और हालैंड-को खतम किया और तीन ही हफ्तेमें फ्रांसकी जबरजस्त सेनाने भी हथियार रख दिया।

दुखराम—जबरजस्त सेना होनेपर इतना जल्दी हथियार क्यों रख दिया भैया ?

भैया—सुना है, हिन्दुस्तानके किसी राजाका अफसर अंगरेजोंसे मिल गया और उसने किलेमें बारूदकी जगह भूसी भरवा दी थी।

दुखराम—इसी तरहका बिसवासघात हुआ फ्रांस में क्या ?

भैया—फ्रांसका राज दो सौ जोंक परिवारोंके हाथमें था। यही वहाँ के करोड़-पति थे। फ्रांसमें तीन बार कमेरोंने अपना जोर दिखलाया था और आखिरी

बार तो कई महीने पेरिसमें राज भी किया था। फ्रांसकी जोंकोंको डर था कि फिर कहीं कमेरे उठ खड़े न हों, इसलिए भीतर ही भीतर वह जरमन जोंकोंसे मिल गए। फ्राँसीसी बहुत बहादुर जाति है। वहाँ सिपाही डरना नहीं जानते लेकिन उनके हथियार निकम्मे थे और जरनैल तो और निकम्मे थे। जो तीन महीने में हिटलरने फ्रांसको हरा दिया तो इसमें हिटलरी फौजकी बहादुरी उतना कारन नहीं थी, जितना कि फ्रांसकी जोंकोंका बिसवासघात। फ्रांसके खतम होनेके बाद तो अब जर्मन गुंडोंको दौड़ लगानेकी जरूरत थी। मसोलिनी पहिले ही गिद्धकी तरह ताक लगाए हुए था। अभी वह इंग्लैंड और फ्रांसके जंगी जहाजोंसे डरता था। लेकिन अब पीछे रहनेका मतलब था लूटमें हिस्सा न पाना इसलिए वह भी हिटलरके साथ सामिल हो गया। हंगरी, रुमानियाँ और बोल्गारियाने बिना लड़े ही हिटलरकी गुलामी मान ली। यूगोसलाविया और यूनानको उसने पीस दिया। लड़ाई अफ्रीकामें चली आई। अब सोवियतसे बाहरका सारा यूरप हिट-लरके हाथमें था। सभी मुल्कोंके कल-कारखाने उसके लिए काम करते थे।

सन्तोखी—तो यूरपमें कोई नहीं बच रहा था।

भैया—बच रहा था इंग्लैंड क्योंकि वह यूरपसे बाहर समुन्दरके बीचका टापू था। हिटलरके पास उतने जंगी जहाज नहीं थे। अपने हवाई जहाजोंको वह भेजकर लन्दन और दूसरे सहरोंको तहस-नहस करता रहा।

सन्तोखी—फ्रांसकी जोंकें तो हिटलरके जूते चाटने लगीं, लेकिन चेम्बर-लेनका क्या हुआ?

भैया—जानते हो न जोंकोंमें भी बेसी धनी और कम धनीका फरक होता है। दोनों एक-दूसरेसे घिन करते हैं। हाँ, जब जोंकोंके धनपर कमेरे दाँत गाड़ने लगते हैं तब सभी जोंकें एक हो जाती हैं। हिटलर और इंग्लैंडके बीच-में एक पतलीसी खाड़ी रह गई थी। बिलायती जोंकें घबरा गईं। फ्रांसकी दसा क्या हुई, इसको उन्होंने अभी-अभी देखा था। उन्होंने समझा शान्तिके समय जिस जोंकसे काम चल सकता है, लड़ाईके समय उसीसे काम नहीं चल सकता। चेम्बरलेनका पाप एक-एक करके गिनाया जाने लगा। बेचारेको गद्दी छोड़नी पड़ी और चर्चिल उसकी जगह महामन्त्री बना।

दुखराम—चर्चिल भी तो जोंक है भैया !

भैया—बड़ी जोंक और हिन्दुस्तानके लिए तो वह काला साँप है। लेकिन इसके बारेमें हम फिर किसी दिन कहेंगे। इतनी बात जरूर है कि हिटलरको बहुत आगे बढ़ते देखकर चर्चिल पहिलेसे ही बोलने लगा था, हमें लड़नेके लिए तैयार होना चाहिए। जोंकोंमें वही आदमी था जो इंग्लैण्डको कुछ आसा दिला सकता था। वह पिछली लड़ाईमें भी लड़ाईका मन्त्री था ?

दुखराम—उसीने न कमेरोंके राजको खतम करनेके लिए पलटन भेजी थी ?

भैया—और वह बीस बरस तक सोवियतको गाली देता रहा। लेकिन बिलायत पारलियामेंट सभामें जोंकोंका ही जोर था। इसीलिए उसको महामन्त्री बना दिया गया।

अध्याय ७

पागल सियार गांवकी ओर

भैया—दुक्खू भाई ! बहुत नाम कहनेसे समझनेमें गड़बड़ मच जाती है। यूरपके छोटे-मोटे कितने देसोंका नाम मैंने गिना दिया है। कहनेसे नकसा दिखानेमें जल्दी समझमें आती बात। देखो जो कहीं नकसा मिल गया, तो मैं ले आकर दिखलाऊँगा। लेकिन एक नाँव और सुन लो। अमेरिका, नाम सुना है ?

दुखराम—हाँ भैया ! नाम सुना है सोमारू काका कहते थे कि परागराजमें अमेरिकाकी पलटन आई है। लेकिन भैया ! अमेरिका अँगरेजोंकी इतनी मदद क्यों करता है ?

भैया—कमाके खानेवालोंमें सच्ची दोस्ती हो सकती है, लेकिन लुटेरोंमें कभी नहीं हो सकती। जब हिटलर इतना बढ़ने लगा, तो अमेरिकाको भी भय लगने लगा। उसने समझा जो फ्रांस और इङ्गलैण्डको चित करके आधी दुनियांपर कबजा हो गया और फिर दलबलके साथ वह हमारे ऊपर झपटा तो

तेरह करोड़ आबादीका अमेरिका उसके सामने कितने दिनों तक ठटेगा। इसीलिए अमेरिका पहले हीसे इङ्गलैण्ड और फ्राँसको हथियार बेंच रहा था।

सन्तोखी—बेंचनेमें तो नफा ही है न भैया ?

भैया—और खतरा भी है। जो कहीं हिटलर जीत जाता, तब तो पहिले हीसे उसे नराज कर लिया न ! अमेरिकाके परमुख परधान रूजवेल्टने कई बार हिटलरको जली-कटी भी सुनाई।

दुखराम—दोनोंकी भेट हुई थी क्या भैया ?

भैया—दोनोंके भेंट होनेका क्या काम है दुक्खू भाई ! रेडियो बाजा एक-की बात दूसरी जगह पहुँचानेको तैयार ही है। अब सुनो, हिटलर क्या सोच रहा था सारे फ्रांस और सारे यूरपके ले लेनेके बाद अब वह सोचने लगा कि इङ्गलैण्डकी ओर बढ़ें या क्या करें। अमेरिका इङ्गलैण्डकी ओरसे लड़ाईमें कूदनेके लिए तैयार दिखाई पड़ता था। उसने सोचा जो मैं इंग्लैण्ड और अमेरिकासे भिड़ गया तो अमेरिकाकी तागत बहुत बड़ी है। उसके पास इतने बड़े-बड़े कारखानें हैं कि वह पतंगकी तरह चुटकी बजाते-बजाते हवाई जहाज बनाते जाएँगे। जर्मनोंसे करीब-करीब दूनी उसकी आबादी है। वहाँ तक पहुँचने-में मुश्किल पड़े। और जो कहीं लड़ाई ज्यादा दिन चली और लड़ते-लड़ते जर्मनी बहुत धौस (निरबल) हो गया। और इधर बोलसेविक चुप-चाप अपनी फौज बढ़ा रहे हैं, हथियारपर सान लगा रहे हैं, फिर तो सब कुछ कर-धरके भी हमें मरना ही होगा। बोलसेविकोंकी कोई ऐसी नियत नहीं थी। हाँ, वह हिटलरकी बातपर कभी विसवास नहीं कर सकते थे।

दुखराम—जब जोंकोंपर ही विसवास नहीं करते थे तब जोंकोंके गुंडेपर कैसे करते।

भैया—यूरप जीतनेसे हिटलरका दिमाग फिर गया। उसने सोचा फ्राँस, बेल्जियम, जर्मनी, आस्ट्रिया, चेकोस्लोवाकियाके बड़े-बड़े गोला-बारूद बनाने-वाले कारखाने हमारे लिए हथियार बना रहे हैं, हमारे सामने फ्राँस तीन हफ्ते नहीं ठहर सका। अब हमारी ताकत इतनी है कि बोलसेविकोंको पीस सकते हैं। उसके जरनैलोंमेंसे कुछने समझाया कि लाल पलटनके बारेमें ऐसा सोचना

अच्छा नहीं है। लेकिन वह जरनैलोंकी बातको माननेके लिए तैयार नहीं था।

दुखराम—क्यों मानेगा? भगवानने दुनियापर राज करनेके लिए जरनैलोंको भेजा है या हिटलरको?

भैया—हिटलर यह भी ख्याल करता था, कि चारों खूँट तक विजयपताका गाड़े बिना तो मेरे लिए खैरियत नहीं, जो इतने दिनों तक मक्खनकी जगह आलू खाते आये हैं वह मुझे ही खाने लगेंगे। और इंग्लैण्ड, अमेरिकाके हरानेमें कमजोर हो जानेपर फिर बोलसेविकोंका कुछ नहीं कर सकेंगे।

दुखराम—और बोलसेविकोंके हरानेकी आशामें जर्मनीवाले पचीसों साल तक न आलू खानेके लिए तैयार होंगे और न यही आशा थी कि हिटलर अमिरतकी घरिया पीकर आया है।

भैया—हिटलरके लिए कागजपर दसखत करना कोई चीज नहीं। वह कह ही चुका है, कागजपर दसखतकी जाती है फाड़नेके ही लिए।

दुखराम—जोंकोंका यही धरम है।

भैया—आखिर २८ जून १९४१को हिटलरने कमेरोंकी धरतीपर हमला कर दिया। हिटलरने जितनी तैयारी की थी, अभी लाल सेना उतनी तैयार न थी। लाल सेनाको पीछे हटना पड़ा। और कभी-कभी तो दस-दस बारह-बारह मील एक दिनमें पीछे हटना पड़ा। लाल सेना बहुत बहादुरीसे लड़ी। कितने ही बार ऐसा देखा गया कि किलेको तब तक नहीं छोड़ा जब तक कि एक सिपाही जिन्दा रहा लेकिन उसे अपार हानि उठानी पड़ी।

सन्तोखी—उस वक्त तो भैया! मैंने भी सुना था कि रूस कुछ ही दिनोंमें खतम हो जाएगा।

भैया—हिटलरने खुद कहा था कि मैं तीन मासमें रूसको पीस दूँगा। रूसके ऊपर हमला होते ही चर्चिलके जानमें जान आई। चेम्बरलेन बेचारा तब तक मर गया था नहीं तो न जाने उसे क्या होता। चर्चिल अभी तक आसावान नहीं था। लेकिन अब उसे बिस्वास होने लगा कि रूसके कारण इंग्लैंड बच जायगा। हिटलरने अपने दाहिने हाथ हेसको बिलायत भेजा था। हेस जिस बड़ी जोंकके घरके पास उतरना चाहता था, वहाँसे दूर किसी जगहमें

उसे हवाई जहाजसे उतरना पड़ा। लोगोंने पकड़ लिया। बात पहिले हीसे खुल गई। तब भी बिलायत की जोंकोंको उसने बहुत समझानेकी कोसिस की—हिटलर इंग्लैंडसे दोस्ती करना चाहता है, वह सिर्फ बोलसेविकोंको खतम करना चाहता है। वह पक्का बचन देनेको तैयार है कि वह कभी इंग्लैंड और उसके राजकी ओर आँख नहीं लगायेगा। लेकिन आप लोग हिटलरसे दोसती कर लें। उसने बहुत समझानेकी कोसिस की कि बोलसेविक ही हम सबके सबसे बड़े दुसमन हैं। हिटलरके इस काममें सबको मदद देनी चाहिए।

दुखराम—तो बिलायती जोंकोंने हिटलरकी बात क्यों नहीं माना भैया! वह तो उन्हींकी भलाईकी बात कह रहा था।

भैया—हिटलरकी बातपर कैसे बिसवास कर लेते। चर्चिल जानता था कि जो रूस भी खतम हो गया तो हम अकेले हिटलरसे कभी नहीं बच सकते। उस वक्त अकेले लड़ना अपने ही हाथों अपने गलेमें फाँसी लगाना होगा।

सन्तोखी—यह तो ठीक है लेकिन बिलायती जोंकें बोलसेविकोंको भी तो अपना दुसमन समझती थीं।

भैया—रूसपर हमला होते ही चर्चिलने रेडियोबाजामें तुरन्त कहा कि इंग्लैंड तन-मनसे रूसके साथ है। साथ ही उसने कहा था कि बीस बरसमें मैंने बोलसेविकोंके खिलाफ जो कुछ कहा है, उसमेंसे एक अच्छर भी लौटानेके लिए तैयार नहीं। यह सब कहते हुए भी चर्चिल इतना जानता था कि बोलसेविक हिटलरकी तरह दूसरे देसोंमें अपनी फौज भेजकर वहाँ के सहरोंको उजाड़कर बच्चों-बूढ़ोंको मारकर रूसका राज कायम करने नहीं जायँगे। इसीलिए चर्चिलने उस बखत हिटलरके छुटभैया हेसकी बातको ठुकरा दिया और स्तालिनसे हाथ मिलाया।

सन्तोखी—और हिटलरकी फौज जोरसे आगे बढ़ती गई!

भैया—जोरसे बढ़ती गई, और मैं कहूँ सन्तोखी भाई! मुझे एक छनके लिए भी कभी मनमें नहीं आया कि हिटलर लाल सेनाको हरा सकेगा, किन्तु जितनी तेजीसे वह मास्को और लेनिनग्राडकी ओर बढ़ रहा था उससे दिल घबरा रहा था। और मास्कोके बीस मील नजदीक पहुँचनेपर जब लाल पलटन

की मार पड़ी और जिस वखत जोंक गुंडेको पीछे हटना पड़ा तो लोगोंको पता लगने लगा कि लाल पलटनने पहिलेसे अपने लड़नेका ढंग सोच लिया था।

सन्तोखी—लेकिन भैया ! लाल पलटन इतना पीछे क्यों हटती गई, पहिले ही क्यों नहीं पूरी तागतसे लड़ी।

भैया—सन्तोखी भाई ! जो कोई आदमी जोरसे बेल फेंक रहा हो और तुम सीधे अपनी हथेलीपर ओड़ने (रोकने) जाओ, तो पत्थरकी तरह चोट लगेगी; लेकिन तुम दोनों हथेलीके बीचमें उसको आने दो और जैसे ही हाथको छुए वैसे ही हाथको खिचा दो खिचा पीछे हटा लो, तो फिर बेलका सारा जोर खतम हो जायगा। इसी तरह लाल पलटनने सोचा कि हिटलर अपनी सारी तागतसे हमला कर रहा है और कहाँ ज्यादा हमला करना है और कहाँ कम यह बात भी वही जानता है, इसलिए इस वखत सरबसकी बाजी लगाकर लड़नेमें हमारा नुकसान ज्यादा पड़ेगा। इसलिए वह हिटलरकी चोटको सहते हुए पीछे हट गई लेकिन कहाँ पहुँचकर फिर पीछे नहीं हटना है, यह भी वह जानती थी। हिटलरने गाल बजाया था कि रूसको तीन महीनेमें खतम कर दूंगा। मास्को पहुँचनेका दिन तक धर दिया था और सिपाहियोंमें बाँटनेके लिए ढेरके ढेर तमगे भी ढाल लिए गये थे। लेकिन मास्कोके नजदीक पहुँचते ही जैसे लाल पलटन अपना पंजा बाहर निकालकर झपटी कि हिटलरको लाखके करीब बढ़िया जवानवाली अपनी मजबूत पलटनको मरवाकर पचासों मील हट जाना पड़ा। लेनिनग्राडसे दस मीलपर हिटलरी पलटन पहुँच गई। और दो बरस तक घेरा डालकर बैठी रही, लेकिन मजाल क्या कि एक कदम आगे बढ़े ! इन दोनों बातोंने बतला दिया कि लाल पलटनका पीछे हटना हारे हुए जोधाका भागना नहीं है।

दुखराम—तो यह उसकी दाँव-पेंच न थी भैया ?

भैया—हाँ, दाँव-पेंच थी। इसी तरह हिटलरको जब सीधे मास्कोपर चढ़ाई करनेकी उम्मेद न रही, तो वह आगेसे घेर लेनेके लिए वोरोनेजपर कम कसके पड़ा, लेकिन लाल पलटनने दाँत तोड़ दिया और हिटलरी गुंडोंको पीछे हटना पड़ा। यह तीसरी जगह थी, जिसने बतला दिया कि लाल फौजके तरकस-

में अभी बहुत तीर है।

दुखराम—सचमुच ही भैया! हिटलर और उसकी सेना गुंडोंकी है, नहीं तो इस तरह बचन देकर तोड़ते।

भैया—बचन तोड़नेकी ही बात नहीं है दुक्खू भाई! हिटलरने जो जुलुम रूसमें किया है वैसा कभी नहीं सुना गया। वीरका काम है लड़नेवालोंसे लड़ना कि बरस-बरसके बच्चोंको मारते जाना!

दुखराम—क्यों भैया! हिटलरने बच्चोंको भी मरवाया?

भैया—एक दो नहीं, पचासों हजारको। कितनोंको बिखवाली हवा देकर मारा, कितनोंका खून निकाल-निकालकर मारा।

सन्तोखी—खून भी क्या पीते हैं भैया?

भैया—वह पीने ही जैसा था। लड़ाईमें जो बहुत घायल होते हैं उनको ताजा खून पिचकारीसे देना पड़ता है। सब जगह आजकल खून जमा करनेका इन्तजाम है। जवान हट्टे-कट्टे आदमीके शरीरसे खून लिया जाता है। दस सेर खूनमेंसे छटाँक दो छटाँक खून लेनेसे आदमी नहीं मरता। मैं भी दो-तीन बार खून दे आया हूँ।

दुखराम—तो भैया! तुम्हें तकलीफ नहीं हुई?

भैया—तुमने कभी दवाईकी सूई ली है दुक्खू भाई!

दुखराम—हाँ भैया! एक बेर तिल्ली (बरबट, पिलही) बढ़ गई थी, उसीके लिए चार-पाँच सूई ली थी।

भैया—तो सूई देनेमें तकलीफ हुई थी कि नहीं?

दुखराम—क्या तकलीफ होगी, जरा-सा चुन-सा काँटा-सा लगा, और फिर सूईके पीछे पिचकारीमें दवा भरी थी, जिसे नसमें डाल दिया।

भैया—उसी तरह सूई चुभाकर पिचकारीमें खून निकालनेसे कोई तकलीफ नहीं होती, लेकिन जो ज्यादा खून निकाल लिया जाय तो आदमी मर जाता है।

दुखराम—तो राच्छसोंने ज्यादा-ज्यादा खून निकालकर बच्चोंको मार डाला?

भैया—हजारों बच्चोंको खून निकालके मारा, हजारों बच्चोंको गोली लगाके

मार दिया, हजारों बेकसूर बूढ़ोंको मारा और औरतोंको तो लाखोंकी तादादमें मारा। हाथ बाँधकर लोगोंको सहरके बाहर ले जाते थे और हुकुम देते थे कि खाईं खोदो। खाईं खोदनेपर, फिर तड़-तड़ गोली चला देते थे, और सब उसी खाईं में गिर जाते।

सन्तोखी—कैसे आदमीका दिल इतना राच्छस जैसा हो सकता है ?

भैया—मैं भी सन्तोखी भाई ! इन बातोंपर विश्वास नहीं करना चाहता था। जानते हो न लड़ाईमें झूठ-साँच भी बहुत चलती है लेकिन जब लाल फौजने हिटलरी गुंडोंको पीछे ढकेलना सुरू किया और कमेरोंके सहर और गाँव फिर आजाद होने लगे, तो उन खाइयोंको खोदा गया। पिघली हुई बरफके नीचेसे सैकड़ों लासें निकलीं। उनका फोटो लिया गया। मैंने उन फोटुओंको बंबईमें देखा, तो सच कहता हूँ दिल खौलने लगता है। नन्हे-नन्हे बच्चे, दो बरस, तीन बरस, चार बरसके नन्हें-नन्हें एक नहीं, दो-दो नहीं, पाँच-पाँच, सात-सात सौ मरकर सूखे पड़े हुए हैं। औरतोंको पेट फाड़कर बेइज्जती करके मारा गया। सैकड़ों बेकसूर आदमियोंको फाँसीपर झुलाकर महीने-महीने तक सहरके चौरस्तेपर लटका छोड़ दिया।

दुखराम—तो इन राच्छसोंको गुंडा ही कहनेसे काम नहीं चलेगा, और कोई नाम ढूँढ़ना चाहिए।

भैया—उनका जुलुम भी ऐसा है दुक्खू भाई, कि जुलुम कहनेसे वह पूरा समझमें नहीं आ सकता। लेकिन जब गुंडोंने इस तरह जुलुम करना सुरू किया एक-एक सहरमें चालिस-चालिस पचास-पचास हजार निहत्थे आदमियोंको मार डाला, सोवियत निवासियोंने भी जानपर खेलना सुरू किया। बारह बरसके लड़केसे सौ बरसके बूढ़ों तकने जान हथेली पर रखकर गुंडेके साथ मुकाबिला करनेका निश्चय किया। जो इलाका जर्मनोंके भी हाथमें चला गया था वहाँके कितने ही नरनारी जंगलोंमें भाग गए और उन्हें तो अपने इलाकेका कोना कोना मालूम था। गाँवकी गली-गली अँगुलीपर थी। वह रातको जिस वक्त भी मौका मिलता जर्मन पलटनियोंपर छापा मारने लगे। छापा मारके सिपाहियोंके बन्दूक मसीनगन सब छीन लेते थे। कुछ ही समयमें सारा इलाका छापामारोंसे

भर जाता और जर्मनोंको अपनी छावनियोंसे बाहर निकलनेकी हिम्मत न होती।

दुखराम—छापामार क्या भैया ?

भैया—अपने दुसमनोंसे बदला लेनेके लिए जो यह बहादुर लोग दिन या रातको, इक्के-दुक्के या गफलतमें पाकर हमला करते, इसीको छापा मारना कहते हैं। इसीलिए इन बहादुरोंको छापामार कहते हैं।

सन्तोखी—हाँ भैया ! जब बराबरका जोर नहीं हो और एकके पास बड़े-बड़े हथियार और दूसरेके पास मुसकिलसे कहीं एकाध बन्दूक हो फिर यह छोड़ दूसरा रास्ता क्या था ?

भैया—हाँ सन्तोखी भाई ! जर्मनोंके पास हजार-हजार पन्द्रह-पन्द्रहसौ मनके टंक थे, अनगिनत हवाई जहाज थे, बड़ी-बड़ी तोपें थी, मिनट-मिनटमें हजार गोली चलानेवाली मसीनगनें थीं। उधर लाल पलटन पीछे हट गई थी, और यहाँ रह गये थे गावों-सहरोंके निहत्थे नर-नारी। किन्हीं-किन्ही गावोंमें तो बन्दूकें भी न थी, क्योंकि जर्मन गाँवमें पहुँचते ही बन्दूक छीन लेते थे, फिर खाने-पीने की चीजें, रुपया-पैसा सब छीन लेते थे। लेकिन सोवियतके कमेरे जानते थे कि हमारे सरगमें यह राच्छस घुस आए हैं। इनको सान्तिसे नहीं बैठने देना होगा। कभी-कभी तो बिना एक भी बन्दूकके छापामारोंने अपना काम सुरू किया।। जंगलमेंसे आकर कहीं अँधेरेमें छिपे रहते। जोखिम तो था, लेकिन गाँवके लोग जंगलमें छिपे छापेमारोंके पास खाना पहुँचाते थे। गुन्डे कहाँ-कहाँ हैं, इसकी खबर देते थे। गुन्डे सिपाही चौबीस घन्टा तो सजग नहीं रह सकते और न चौबीसों घन्टा एक जगह एक-हातेमें बन्द रह सकते थे। छापेमार अचानक उनके ऊपर कुल्हाड़ा, कुदाल, भाला कोई चीज लेकर टूट पड़ते। चार गुन्डोंको मारा, तो चार बन्दूक और गोली-गन्डा मिला।

सन्तोखी—फिर तो सूद-मूर लेकर इसी तरह बढ़ता चला जायगा।

भैया—हाँ, दो बन्दूक छीनी, फिर अब दो बन्दूक लेकर छापे मारे और चार नई बन्दूकें हाथमें आईं। इस तरह सैकड़ों, हजारों बन्दूकें, मसीनगनें हाथके बम, पिस्तौल और बहुतसे हथियार छापामारोंके हाथमें चले आए। टैंक और बड़ी तोप भी कभी-कभी पकड़ लेते थे, लेकिन उनको जंगलोंमें

ले जाकर छिपाना आसान नहीं था। बाकी हथियारोंको छापेमार खूब चलाते थे।

दुखराम—खूब जवाब दिया भैया! रूसके कमेरोंने और खूब बहादुरी दिखलाई।

भैया—दुनिया चकित है दुक्खू भाई! उनकी बहादुरीसे। जर्मन सिपाहियों हीको वह नहीं मारते बल्कि रास्तेकी सड़कों, पुलों, रेलोंको तोड़ देते थे जिसके वजहसे जर्मनोंको सामान पहुँचना मुश्किल होता था। उनके सामनेसे लाल पलटन लड़ रही थी, और पीछेसे लड़ रहे थे लाखो छापामार और छापा-मारिनें। इतने बहादुर लड़नेवाले साथी अँगरेजोंको मिले, तब उनका भी हौसला बढ़ा।

सन्तोखी—भैया, रूसके कमेरोंकी बहादुरी और उनका मरकस बाबाके रास्तेपर चलनेकी बात देखकर तो मैं समझता हूँ कि दुनिया भरके कमेरे उनके साथ प्रेम करते हैं, और सगे भाईकी तरह समूची दुनियाके कमेरोंका दुख-सुख एक-सा है, और हैं भी वे सगे भाई। लेकिन अँगरेज जोंकें जो अबकी बच गईं, यह अच्छा नहीं हुआ।

भैया—जब पहिले जोंकों ही जोंकोंकी लड़ाई थी तो सन्तोखी भाई, मैं तुमसे क्या कहता था?

सन्तोखी—यही कि तालुकदारों-तालुकदारोंके झगड़ेमें हमको मरनेकी जरूरत क्या? भले दोनों लड़ मरें।

भैया—हाँ, तो उस वक्त लड़ाई जोंकों-जोंकोंकी थी, बिलायती जोंकें दो सौ बरसोंसे हमारा खून चूस रही हैं, उन्होंने हमारी छातीपर कितना कोदो दला है, उस सबको देखकर हम क्यों इन जोंकोंकी मदद करने जायँ। लेकिन जब गुन्डा हिटलर कमेरोंके राजपर चढ़ दौड़ा तो बिलकुल रंग बदल गया। पानी-की नाली बह रही हो, तुम उसमेंसे अँजली भरकर पियोगे, प्यास बुझाओगे। लेकिन, उस नालीमें जैसे लाल जहरकी पुड़िया डाल दी गयी उस पानीका गुन बदल गया न?

दुखराम—हाँ भैया, हिटलरने जिस दिन हमारे कमेरे भाइयोंपर हमला

किया, बच्चोंको खून निकाल-निकलकर मारा, निहत्थोंको उनके हाथ कबर खुदवाकर गोली चलवाई तो दुनियामें कौन कमेरा—किसान, मजूर होगा जिसके आँखसे आग न निकलने लगे और हिटलरको कच्चा खा जानेके लिए तैयार न हो।

भैया—ठीक कहा दुक्खू भाई! हिटलरने जिस दिन सोवियतके कमेरोंपर हमला किया, उसी दिन दुनिया भरके मजूरों-किसानोंपर हमला कर दिया। हिटलर जोंकोंका सबसे बड़ा खूनी राज कायम करना चाहता है, उसने अपने यहाँके किसानों-मजूरोंको पीसा। पहिले हीसे हम यह सब जानते थे और हिट-लरको फूटी आँखों भी देखना नहीं चाहते थे, लेकिन जब तक उसकी लड़ाई सिर्फ जोंकोंसे रही तो एक जोंकको छोड़कर दूसरी जोंकको हम कैसे पसन्द करते। लेकिन अब बात वैसी नहीं थी। जो हिटलर रूसको जीत लेता तो दुनियासे मजूर-किसान राज खतम हो जाता। हजारों बरसोंसे बड़े-बड़े महात्माओं और त्यागियोंने सपना देखा था कि एक ऐसा मानुख समाज हो जिसमें जोंकों-का नाम न रहे। उनका सपना ठीक था लेकिन रास्ता वह ठीक नहीं जान सके।

दुखराम—रास्ता तो भैया मरकस बाबा हीने बतलाया।

भैया—हाँ, मरकस बाबा हीने बतलाया। फिर पेरिसमें लाखों मजूरोंने प्राण दिया कमेरा राज कायम करनेके लिए; फिर रूसमें करोड़ों कमेरोंने लड़ाई और भूखसे जान दी तब जाकर दुनियामें पहले-पहल एक मजबूत कमेरा राज कायम हुआ। पच्चीस बरसमें उसने दुनियाके छठे हिस्सेको बहुत कुछ सरग बना दिया। उसको देखकर दुनिया भरके कमेरोंकी हिम्मत बढ़ी कि हम भी किसी दिन जोंकोंको निकालकर बाहर करेंगे। जो रूससे कमेरा राज खतम हो जाता तो दुक्खू भाई! यह सारी दुनियाके कमेरोंका नुकसान होता कि सिर्फ रूस ही वालोंका।

दुखराम—सारी दुनियाके कमेरोंका भैया! मैं तो जानता हूँ कि खूँटेके बलसे बछरू (बछड़ा) कूदता है। जब हमने रूसके कमेरा राजके बारेमें सुना तो उसीसे हमारी भी हिम्मत न बढ़ी, और हम भी लाल झंडा लेकर

कूदने लगे।

भैया—एक सड़ी मछली तालाब गन्दा कर देती है, दुनियामें एक भी जोंक बच जाय, तो भी कमेरोंके लिए खतरा है। और एक बार मानुख जातिमें जोंकोंकी इतनी भारी हारके बाद वह फिर पहिलेकी तरहसे सारी दुनियापर छा गई तो लाल झण्डा फहराना सैकड़ों बरसकी बात हो जायगी। दुनिया जोंकोंके लिए अकण्टक हो जायगी।

भैया—इसीलिए दुक्खू भाई, जिस दिन हिटलरने सोवियतपर धावा बोला उसी दिन मैंने अपने दोस्तोंसे कह दिया कि अब जोंकों-जोंकोंकी लड़ाई नहीं है। हिटलरके हरानेका मतलब है कि जोंकोंके सबसे बड़े गुन्डोंको खतम करना, ऐसे गुन्डेको खतम करना जिसकी ओर सारी दुनियाकी जोंकें आसा लगाये बैठी थीं। सोवियतका जीतना दुनिया भरके कमेरोंकी जीत है।

सन्तोखी—यह बात साफ मालूम हो रही है भैया!

भैया—हिटलरने जब मासको-लेनिनग्राडका रास्ता बन्द देखा तो दक्खिन-से बढ़ा और बढ़ते-बढ़ते वोल्गा गंगाके किनारे बसे स्तालिनग्राड सहर तक पहुँच गया। स्तालिन वीरने अपने लाल जरनैलोंको हुकुम दिया कि अब एक कदम भी पीछे नहीं हटना है और वह एक कदम भी पीछे नहीं हटे। यहींपर हिटलरको सबसे बड़ी हार खानी पड़ी। उसके दो लाख सिपाही मारे गये और एक लाख सिपाहियोंको लाल पलटनने कैद किया। हिटलरको जो वहाँ हार नहीं हुई होती, तो वह बाकू होते बाकूकी तेलकी खानोंको लेते ईरानमें पहुँचता और फिर उसके बाद हिन्दुस्तान ही रह जाता था।

दुखराम—तब तो भैया स्तालिनग्राडकी लड़ाई रूसके ही कमेरोंके लिए खतरेकी चीज नहीं थी बल्कि हिन्दुस्तानके लिए भी खतरा हो गया था।

भैया—फिर हिटलरी गुंडे हिन्दुस्तान भी आते। यहाँ भी वे लाखों औरतोंकी इज्जत लूटते, बच्चों-औरतोंके खूनसे अपने हाथ रंगते और सैकड़ों सहर और गाँव जलाकर छार कर जाते। लेकिन लाल पलटन पूरी तैयारीके साथ हिटलर का दाँत खट्टा करनेके लिए तैयार थी। स्तालिनग्राडपर मार खाकर जो हिटलर पीछेकी ओर भगा, तो भागता ही गया। फिर उसका पैर कहीं नहीं ठहरा।

हिटलर एक हजार मील तक सोवियतकी धरतीमें घुस आया था। लेकिन अब पिटाई शुरू हुई। एक-एक जगहसे पिटता वह घरकी ओर भगा। पागल सियार गाँवकी ओर आया, जब लाठी पड़ने लगी तो अपनी माँदकी ओर भगा। सोवियतकी अंगुल-अंगुल धरतीसे पापी निकाले गए। अब वह अपनी धरतीपर भगकर गये, लेकिन लाल फौज इन पागल सियारोंकी माँदमें बैठकर भी जीने नहीं देगी। उसने तय किया है कि पागल सियारोंमेंसे एकको भी नहीं छोड़ा जाय।

दुखराम—और भैया, इन गुंडोंने जो बच्चोंको मारा है, औरतोंको इजत बिगाड़कर गोली मारी है, इसका भी बदला खूब लेना चाहिए। इन गुंडोंको कुत्तेकी मौत मारना चाहिए।

भैया—लाल पलटन बदला लेगी दुक्खू भाई, लेकिन पागल बनकर बदला नहीं लेगी। स्तालिन बीरने कह दिया है कि जर्मनीके कमेरोंको वहाँकी जनताको हम अपना दुसमन नहीं मानते। राच्छस आततायी हैं हिटलरी गुंडे, हम इन्हीं गुंडोंको उनके कियेका मजा चखायेंगे। फिर जर्मनीकी जनता गुंडों-के हाथसे छुट्टी पायेगी।

सन्तोखी—तब तो भैया, जरमनीमें भी अब जोंकोंकी खैरियत नहीं है, वहाँ भी हिटलरी गुंडोंके खतम होनेके बाद कमेरों हीका राज कायम होगा, लेकिन बिलायत और अमेरिकाकी जोंकें इसको क्या पसन्द करेंगी?

भैया—जोंकें क्यों पसन्द करने लगीं? लेकिन स्तालिन बीरने कह दिया है कि वहाँ ऐसा राज कायम हो कि इसे वहाँ हीके लोगोंपर छोड़ देना चाहिए और न लाल पलटन अपने मनका राज कायम करनेकी कोशिश करेगी और न इंग्लैंड-अमेरिकाको ऐसी कोशिश करनी चाहिए।

सन्तोखी—लेकिन भैया, बाहरकी जोंकोंने जो मदद नहीं किया और उधर जरमनीकी बड़ी-बड़ी जोंकें और उनके पायक हिटलरी गुंडे खतम हो गये, तो वहाँ कमेरोंका राज छोड़ दूसरा कौन राज कायम हो सकता है।

भैया—लेकिन सन्तोखी भाई इंग्लैंड और अमेरिकाकी जोंकें चुप तो नहीं रहेंगी। सोवियत और लाल पलटनको देखने हीसे उनका प्राण निकल रहा

था, जो सात करोड़के जरमनीमें भी कमेरा राज कायम हो गया, तो दुनियामें जोंकें कै दिन टिकेंगी।

दुखराम—तो कहीं ऐसा न हो भैया, कि जोंकें हिटलरसे सुलह कर लें।

भैया—सुलह नहीं कर सकतीं सन्तोखी भाई! जिस दिन चर्चिल सुलहकी बात भी जीभपर लायेगा, उस दिन ही बिलायतके जोंकोंकी खैरियत नहीं। बिलायतके लोगोंने तीस साल पहिलेकी लड़ाईमें भी अपने लाखों बेटोंको मरवाया उस वक्त भी बिलायती जोंकोंने उनके सामने बड़ी लम्बी-लम्बी बातें कहीं, जिनसे मालूम होता था कि अब कमेरोंकी जिन्दगी सरगकी जिन्दगी हो जायगी। लेकिन जब वह लड़ाई खतम हुई उसके बादके इक्कीस सालोंमें उनकी जिन्दगी और अधिक नरक बन गई। तीस-तीस, चालीस-चालीस लाख तक आदमी बेरोजगार हो गए, उन्हें भूखे मरना पड़ता था और बाल्डविन चेम्बरलेन जैसी जोंकोंने हजारोंकी जगह लाखोंका नफा कमाया। जब तक हिटलर खतम नहीं हो जाता तब तक बिलायती जोंकोंको पैंतरा बदलनेके लिए कोई जगह नहीं है।

सन्तोखी—लेकिन हिटलरके खतम होनेके बाद सायद वह रूससे लड़ पड़े।

भैया—तुम यही ख्याल करके कह रहे हो न सन्तोखी भाई! कि जोंकें नहीं चाहेंगी कि जरमनी जैसे बड़े मुल्कमें कमेरोंका राज हो जिससे सारी दुनिया की जोंकोंके आगे अँधेरा छा जाय। लेकिन इस लड़ाईका फल क्या होगा, इसके बारेमें हम किसी दूसरे दिन बतलायेंगे। अब तुमको यह जानना चाहिए कि क्या बात थी कि हिटलरी फौजके सामने फ्रांसकी जैसी जबरदस्त सेना तीन हफ्ते भी नहीं ठहर सकी। वहाँ हिटलर तीन महीनेमें रूस ले लेनेकी बात कह-कर गाल बजाता ही रहा, लेकिन अब उसको रूसकी धरती छोड़कर अपने घरमें लड़ना पड़ रहा है।

सन्तोखी—और अब तो जान पड़ता है भैया कि गुंडे बहुत दिन तक नहीं डट सकते, उनके सिरपर काल नाच रहा है।

भैया—ठीक है और इसका कारण यही हुआ कि पागल कुत्ता रूसकी

ओर दौड़ा। मैंने बतलाया न कि सोवियतके कमेरे कितने तैयार हैं। लाल सिपाही तनखाहके लिए नहीं लड़ता।

दुखराम—तनखाहके लिए लड़ते हैं जोंकोंके सिपाही। जोंकें तनखाह छोड़कर कोई ऐसी चीज उनके सामने नहीं रखती हैं कि जिसके लिए वह जी-जानसे लड़ें।

भैया—रूसमें कमेरे अपने ही अपनी पंचायत चुनते हैं और यही पंचायत राज चलाती है। गाँवमें भी १८ बरससे बेसीके मर्द-औरत वोट देकर पंचायत चुनते हैं, जिलेकी भी पंचायत वही चुनते हैं, अपने-अपने प्रजातंत्रकी भी पंचायत उन्हींको चुननी होती है। फिर हिन्दुस्तान ऐसे सात देसोंके बराबर सारे सोवियत देसकी सबसे बड़ी पंचायत वही चुनते हैं।

दुखराम—तो नीचेसे ऊपर तक सब पंचायती ही काम है भैया!

भैया—हाँ, सब पंचायती है। सबसे बड़ी पंचायत(महासोवियत)के लिए तीन लाख आदमीपर एक लाख आदमी चुना जाता है। उस पंचायतके दो हिस्से या घर हैं; एक घरके लिए हर तीन लाखपर एक आदमी चुना जाता है। दूसरे घरके लिए हर खोमका आदमी चुना जाता है, चाहे कोई खोम पचास ही हजार आदमियोंकी हो। रूसी खोमकी आबादी बारह करोड़के करीब है और हिन्दुस्तानके पड़ोसमें रहनेवाली ताजिक खोम चौदह ही लाख है, लेकिन दोनों पचीस ही पचीस पंच चुनते हैं। इसीलिए कि जिसमें ज्यादा आदमी रहनेवाली खोमके ही पंच न अधिक चुन लिए जायँ। यही बड़ी पंचायत सारे सोवियत देसके मंत्रियोंको चुनती है। स्तालिन वीरने सोवियतको जितना धनवान, बलवान बना दिया है, उसके कारन सोवियतका बच्चा-बच्चा उसे प्रानसे भी अधिक प्यारा समझता है। लेकिन इस लड़ाईके पहिले स्तालिन वीरने कोई सरकारी दर्जा नहीं लिया था। जब लड़ाईका खतरा बहुत बढ़ गया तो बड़ी पंचायतने स्तालिनको ही अपना महामंत्री और महासेनापति बनाया।

दुखराम—और स्तालिन वीरने वह करामात दिखाई कि सोवियत क्या दुनिया भरके कमेरे कभी उनका उपकार नहीं भूलेंगे।

भैया—सोवियतने अपनेको फौलाद जैसा मजबूत बनानेका काम बहुत

पहलेसे सुरू कर दिया था। जरनैल, जानते हो, पलटनका सबसे बड़ा अफसर होता है, उसके उपर मार्सल होता है। जोंकोंके राजमें पचास बरसकी उमरसे पहिले कोई जरनैल बननेका सपना भी नहीं देख सकता था। लेकिन सोवियतमें बत्तिस-बत्तिस तैंतिस-तैंतिस बरसके जरनैल हैं। पैंतिस-छत्तिसके तो वहाँ मार्सल हैं। चार साल पहिले जो यह बात सुने होते, तो बिलायतकी जोंकें जानते हो क्या कहतीं।

दुखराम—क्या कहतीं भैया !

भैया—कहतीं कि जिनको अभी माँका दूध पीना चाहिए उन छोंकरोंको जरनैल बना दिया।

दुखराम—तो जोंकोंके यहाँ बूढ़ों हीका मान ज्यादा है ?

भैया—सोवियतमें भी बूढ़ोंका मान करते हैं लेकिन जवानोंपर उनका बिसवास ज्यादा है। जानते हो न लड़ाईके हथियार और लड़ाईके दाँव-पेचमें रोज नई बातें निकलती आती हैं। नई बातोंको नया दिमाग जितनी जल्दी पकड़ सकता है उतना जल्दी बूढ़ा दिमाग नहीं पकड़ सकता।

दुखराम—हाँ भैया ! तीर-धनुसके जमानेके जरनैल जो आजकी लड़ाईमें जरनैल बना दिए जायँ तो उनके दिमागमें तीर-धनुस ही ज्यादा रहेगा, उनकी पैतराबाजी भी उसी जुगकी होगी। जुमराती दादाको देखते नहीं, नब्बे बरससे इधरकी कोई बात ही नहीं करते। लड़के साबुन लगाते हैं तो उसपर भी गाली देते हैं। बहुओंके साबुन लगानेकी बात सुनते हैं तो कह देते हैं बस सब बेसया हो गईं। बूढ़ोंका दिमाग ऐसा ही होता है न। मैं तो समझता हूँ भैया ! फ्रांसके इतना जल्दी हारनेके भी कारण ऐसे बूढ़े जरनैल रहे होंगे।

भैया—यह बात बिल्कुल ठीक है दुक्खू भाई ! बिलायतके जरनैलोंकी भी वही हालत है। पाँच हिस्सामें चार हिस्सा हिटलरकी फौज लाल सेनासे लड़नेमें लगी हुई है। लेकिन पाँचवें हिस्से पलटनसे भी लड़नेमें यह बूढ़े जरनैल चीटीकी चालसे बढ़ते हैं। अफरीकामें यही देखा, इटलीमें यही देख रहे हैं और फ्रांसमें भी अँगरेजोंकी पलटन यही कर रही है। एक तो इनके जरनैल पचास-साठ बरसके बूढ़े होते हैं ऊपरसे ताल्लुकदारों और करोड़पतियोंके बेटे।

दुखराम—एक तो करैला (तितलौकी) दूसरे नीमपर चढ़ा, लेकिन जोंकों-का इसमें भी मतलब होगा कुछ भैया !

भैया—कुछ नहीं, बहुत मतलब है। एक तो बिलायतके तालुकदारों-जमीदारोंमें आपकी मिल्कियतका मालिक सिर्फ बड़ा लड़का होता है। छोटे लड़कोंको कोई नहीं पूछता। उनके लिए भी खाने-चबानेका कोई इन्तजाम होना चाहिए। दूसरे जोंकें भी समझते हैं कि सिपाही तो कमेरोंके बेटे हैं जो अफसर भी कमेरोंके बेटे हो गये, तो पलटन हमारे हाथमें न रहेगी। पलटन हीके बलपर न जोंकें कमेरोंका खून चूस रही हैं। इसी वास्ते तालुकदारों और जोंकों-के ही लड़कोंको अफसर बनाया जाता है। जो कहीं मामूली आदमी किसी तरह घुसकर छोटा लफ्टेन्ट हो भी गया, तो बिना बड़े अफसरोंके सिफारसके तरक्की होगी नहीं और बेचारेको कप्तान और मेजर तक ही जिन्दगी बिता देनी पड़ती है। दूसरी ओर सिफारिसके बलपर तालुकदारोंके नालायक लड़के भी खट-खट ऊपर चढ़ते चले जाते हैं।

दुखराम—तब तो भैया पलटनमें भी जोंकोंने 'छीया-छीया' कर दिया ?

भैया—ऊपर-भीतर, अगल-बगल सब जगह जोंकोंकी लाश सड़ रही है। नाक बिना लोग परख नहीं पाते। यही भाग समझो कि लाल पलटन लड़नेके लिए चली आई, नहीं तो ये नवाब कहींके नहीं रहते। अँगरेज कमेरोंके लड़के लड़नेमें किसीसे कम नहीं हैं। लेकिन सोवियतका कुछ दूसरा ढंग है। वहाँ जवानोंपर पूरा विसवास किया जाता है। तालुकदार, नवाब जोंकें रह ही नहीं गई हैं कि उनके लड़के पलटनमें आवें और सिफारिसके बलपर जरनैल बन जायँ। वहाँ सिपाहीसे लेकर जरनैल-मार्सल तक सभी कमेरोंकी सन्तान हैं। तरक्की होनेमें कोई देर नहीं लगती यदि आदमी लायक है। कोयलाकी खानका मजूर वोरोशिलोफ आज मारसल है। सोवियतमें लड़कोंके पढ़ने-लिखनेका इन्तजाम ही ऐसा है कि जिसमें जिस कामके लायक काबिलियत है वह वहाँ पहुँच जाते हैं।

सन्तोखी—क्या बात है भैया ?

भैया—मैंने पहले बतलाया है न कि वहाँ हर लड़के-लड़कीको जबरदस्ती

पढ़ाया जाता है। मास्कोमें नौ बरसकी पढ़ाई है और बाकी सारी सोवियत भूमिमें सात बरसकी। सातवें बरससे पढ़ाई सुरू होती है और चौदहवेंमें खतम होती है।

सन्तोखी—हिन्दुस्तानसे सातगुना बड़ा सोवियत देस है न भैया ? तो क्या सब जगह एक-एक गाँवमें मदरसा है ?

भैया—हाँ, जैसे हवा, पानी, अन्न वैसे ही वहाँ पढ़ाई समझी जाती है। फिर लड़के तो मदरसामें सात बरसके होकर जाते हैं लेकिन उनकी पढ़ाई पैदा होते ही होने लगती है।

दुखराम—पैदा होते कैसे लड़का पढ़ेगा भैया ?

भैया—हमने कहा था न कि वहाँ बच्चोंके रखनेके लिए दाईघर बने हुए हैं। माँ जब काम करने जाती है तो बच्चेको दाईघरमें दे आती है। दाइयाँ बेपढ़ औरतें नहीं हैं। वह भी पढ़ी-लिखी रहती हैं और यह भी सीखे रहती हैं कि बच्चोंको कैसे रखना चाहिए। पालनेवाला बच्चा पालनेमें झूलता है, आँखसे जिस चीजके देखने, कान से गाना सुनने या तरह तरहके खिलौनोंको देकर उनको बहलाया ही नहीं जाता बल्कि हर तरहकी चीजका ज्ञान कराया जाता है। जब लड़के कुछ बोलने और बात समझने लगते हैं, तब उन्हें ज्ञान बढ़ानेवाली छोटी-छोटी कहानियाँ सुनाई जाती हैं। लड़कोंके खेलनेके लिए हरेक दाईघरमें सैकड़ों खिलौने होते हैं, मोटर होती है जो चाभी देनेसे चलती है। रेल और हवाई जहाज होती हैं वह भी चलते हैं। कुछ बड़ा होनेपर लड़कोंके अपनी रेलवेलाइन हैं जिसमें इञ्जन चलानेवाला भी लड़का है, गार्ड भी लड़का ही है और तीन-तीन चार-चार मील तक वह अपनी रेल चलाकर लौटाते हैं।

दुखराम—भैया! इतने छोटे-छोटे बेवूझ लड़कोंको इञ्जन थमा दिया जाता है, तो खतरा नहीं होता ?

भैया—खतराकी बात उनको पहिले बतला दी जाती है। और उनका इञ्जन भी पाँच-छ: मीलसे वेसी घन्टेमें नहीं चल सकता। लड़के तो देखते ही हो कि पहिले खड़े होते हैं तो गिरते ही हैं तो क्या पैर टूटनेके डरसे उनको

खेलने न दिया जाय। कितने माँ-बाप लड़कोंको पेड़पर चढ़ने नहीं देते, पानीमें तैरने नहीं देते लेकिन यह ठीक नहीं है। आदमीका बच्चा पान-फूल बनाकर रखनेके लिए नहीं है। जवान होनेपर न जाने वह कहाँ-कहाँ जाएगा, कहीं जंगलमें जान बचानेके लिए उसे पेड़पर चढ़ना होगा, नाव डूबनेपर तैरना पड़ेगा।

दुखराम—लो सन्तोखी भाई तुम भी सामूको पान-फूल बनाकर रखते हो न !

सन्तोखी—हाँ भैया, हमें भी यह बात ठीक नहीं मालूम होती, हाथ-पैर तो चारपाईसे गिरकर भी टूट जाता।

भैया—लड़कोंको बहुत तरहका खिलौना मिलता है, फिर कागज-पेंसिल मिलती है, वह अपने मनकी तसवीर खींचते हैं, गानेका खेल खेलाया जाता है। वे तरह-तरहके गानोंको सीखते हैं, नकलका खेल खेलते हैं, लेक्चर (व्याख्यान) देते हैं, गिन्ती सीखते हैं और मुँहजबानी हिसाब लगाते हैं। फिर लड़कोंके अपने सिनेमा होते हैं।

सन्तोखी—अपने सिनेमा क्या भैया !

भैया—चार-छः बरसके लड़के सयानोंके सिनेमाको देखकर क्या समझ पाएँगे। इसलिए उनके सिनेमोंमें कुत्ते, बिल्ली, भालू, गदहा इत्तादि आते हैं। और वह तरह-तरहकी हँसानेवाली बात कहते हैं, गाना गाते हैं, हँसी-हँसीमें ही जोंकों और कमेरोंके झगड़ेकी भी बात चली आती है। छः बरस तक उनको अच्छर नहीं सिखलाया जाता। अपने जो कहीं लुक-छिपकर किसी बड़े लड़केसे अच्छर सीख लें तो दूसरी बात है। दाई-घरमें रहते वखत ही गजबकी जेहन-वाले बच्चे छाँट लिए जाते हैं। चार-चार साल तक उनकी खींची तसवीरें और उनकी तरक्कीको देखकर पारखी पहचान लेते हैं कि यह लड़का आगे चलकर गजबका तसवीर बनानेवाला होगा।

सन्तोखी—हाँ भैया ! लड़के चीन्हा बहुत खींचना चाहते हैं लेकिन हम लोग डाँट देते हैं कि कागज-पेंसिल खराब करेगा।

भैया—वहाँ डाँटते नहीं हैं, उन्हें रंग-बिरंगी पेंसिल और कागज देते हैं।

दाई-घरमें एक उमरके लड़के एक कोठरीमें रहते हैं। एक बरसवाले एक कोठरीमें, दो बरसवाले दूसरी कोठरीमें, तीन बरसवाले तीसरी कोठरीमें। जो तुम किसी दाई-घरमें पहुँच जाओ सन्तोखी भाई तो बहुत हँसोगे। चार-चार बरसके दस-बारह लड़के कागज-पेन्सिल लिये तसवीर खींच रहे हैं। कोई बिल्ली बना रहा है कोई कुत्ता। कोई साँप बना रहा है कोई चिड़िया। बीचमें एक दूसरेकी तसवीरको झाँक भी लेते हैं फिर अपनी तसवीर बनानेमें लग जाते है। दाई छड़ी लेकर तसवीर नहीं बनवाती। सबने "अम्मा! मुझे कागज-पेन्सिल दो, मुझे कागज पेंसिल दो" कहकर कागज-पेंसिल लाए हैं और सब अपने मनसे तसवीर बना रहे हैं। अम्मा यह चालाकी जरूर करती है कि उनके समझने लायक चीन्हेवाली कुत्ता-बिल्लीके छपे कागजको जब तक फेंक देती है। बच्चे कितने ही बार समझते हैं कि पड़ा हुआ कागज है और उसे आँखसे देखकर कागजपर उतारनेकी कोशिश करते हैं। वह जितने कागजको रद्दी करते हैं उनको फेंका नहीं जाता, एक-एक लड़केके कागजको नाम लिखकर जमा किया जाता है। *तीन-चार बरसके बाद कौन लड़का गजबका तसवीर बनानेवाला* होगा यह समझना आसान हो जाता है। तसवीरकी ही तरह गाने, नकल करने, लेक्चर देने, हिसाब लगाने, में गजबकी जेहनवाले लड़कोंको भी छाँट लिया जाता है। लड़कोंके झगड़ेका फैसला लड़कोंकी पंचायत करती है और वह अपने ही अपना नेता भी चुनते हैं। दाई-घरमें रहते ही उन गजबवाले जेहनके लड़कोंको पहचान लिया जाता है जो कभी हजारों-लाखों आदमियोंके नेता बनेंगे।

दुखराम—भैया! हमारे यहाँ तो गरीब घरोंमें चमार और अछूत कहे जाने वाले माँ-बापके घरमें न जाने कितने गजबकी जेहनवाले बच्चे पैदा होते हैं लेकिन कूड़े परके फूलकी तरह वहीं पैदा होकर बिना फूले ही कुम्हला जाते हैं।

भैया—यही समझो दुक्खू भाई कि २० करोड़ आदमियोंमें एक भी गजबकी जेहनवाला बच्चा न मुरझाने पायेगा, न जेहनवाला मुरझाने पायेगा, न कम जेहनवाला। गजबकी जेहनवाले लड़कोंके पढ़नेका अलग इन्तजाम होता

है। घुड़-दौड़ दौड़नेवाले घोड़ेको बैलके साथ नाधनेमें नुकसान है। यह बत्तीस बरसके जो जरनैल हैं वह कमेरा राज्य कायम होते समय चार-पाँच बरसके रहे होंगे। उनको भी नहीं सिच्छा पानेका मौका मिला, और पीछेके लड़कोंको तो और भी।

सन्तोखी—जो ऐसा इन्तजाम हमारे देसमें हो तो हमारी ४० करोड़की आबादीमें न जाने कितने गजबके तसवीर बनानेवाले, गजबके गानेवाले, गजबके नाटक खेलने वाले, गजबके हिसाब लगाने वाले, गजबके नेता मिलेंगे।

भैया—यह है सन्तोखी भाई जो लाल पलटनके जरनैल लड़नेका इतना जबरजस्त दाव-पेंच जानते हैं कि जब दुसमन और दुनिया जानती है कि लाल पलटन हारके भाग रही है, उस बखत वह दुसमनपर जाल फैलाकर चुपचाप बैठे हुए हैं। जोंकोंकी पलटनमें छोटा लपटेन या थानेदार भी मामूली सिपाहीसे रे छोड़कर दूसरी तरहसे बात नहीं करेंगे, लेकिन लाल पलटनका सबसे बड़ा अफसर जरनैल और मामूली सिपाही दोनों सगे भाई जैसे हैं। जब ड्यूटीपर हैं तब वह सिपाही और वह जरनैल बाकी बखतमें दोनों एक चारपाईपर बैठेंगे, साथ खेलेंगे, कूदेंगे-नाचेंगे, हँसी-मजाक करेंगे। उस बखत देखनेवालेको पता ही न चलेगा कि यह जरनैल है और यह सिपाही।

दुखराम—जोंकों तुम्हारा सत्यानास हो।

भैया—स्तालिन वीरने अपने जरनैलोंको एक बार कहा था कि वह अफसर ठीक अफसर नहीं हो सकता जो सिपाहीसे ऐसा काम कराना चाहता है, जिसे वह खुद नहीं कर सकता। अमेरिकाका एक अखबारवाला सोवियतकी लड़ाई देखने गया था। मैदानके पास पहुँचा तो वहाँ मोटरका कोई ठीक रास्ता नहीं था। मोटर रुक गई। उसी वक्त एक आदमी आया उसने फावड़ेसे काटकर रास्ता ठीक कर दिया। अमेरिकन अखबारवालेने आदमीकी उरदीको देखा तो मालूम हुआ वह मेजर है। उसको बड़ा अचरज हुआ।

दुखराम—भला जोंकोंके मुलुकमें कपतान और मेजर फावड़ेपर थूक भी सकते हैं।

सन्तोखी—हिटलर सचमुच ही पागल सियार बनकर गाँवकी ओर चला।

लेकिन भैया पागल कहकर छोड़ नहीं देना होगा। जर्मन गुंडोंने खून सुखा देनेवाले जैसे-जैसे जुलुम किए हैं उसके लिए उनकी पूरी सजा होनी चाहिए।

भैया—तीनों लोकमें कोई उन्हें नहीं बचा सकता।

अध्याय ८

जोंकोंके मन्सूबे

सन्तोखी—आज भैया एक और सरोता (सुनवैया) बढ़े। मैंने तो सोहन-लालसे कहा कि क्या सुनके करोगे हमारे दिहाती लोगोंकी बातचीत है। लेकिन वह कहने लगा—"मामा! मैं बनारसमें पैदा हुआ तो क्या हुआ मेरी माँ तो दिहाती थी"। यह बी० ए० तक पढ़ चुके हैं।

भैया—सन्तोखी भाई, सोहनलाल बाबूके रोता बननेमें तो कोई हरज नहीं है लेकिन यह हैं बी० ए० पास, शहरमें सदा रहे और अरबी-फारसी बोलते हैं। यह बीचमें ऐसा सवाल पूछने लगे कि जिसमें तुमको और दुक्खू भाईको सुननेमें कोई लज्जत नहीं आई, तो बताओ हमारी कथा ठीकसे चलेगी।

सोहनलाल—राजबली भैया! मामासे सब बातें सुन ली हैं। मैं भी मरकस बाबाके रास्ताको मानता हूँ। मैं कोई अरबी-तरबी नहीं बोलूँगा, न कोई ऐसा सवाल करूँगा जिसमें सन्तोखी मामा और दुखराम मामाके न समझमें आने-वाली बोलीमें बोलना पड़े। मरकस बाबाने कभी विश्वास नहीं किया कि बड़े आदमी लम्बी नाकवाले बगुलेके परकी तरह साफसूफ कुरता-टोपी पहिरनेवाले लोग जोंकोंको खतम करेंगे। किसान और मजदूर इनके ही भीतर वह ताकत है जिससे जोंकोंका टाट उलट सकते हैं। राजबली भैया, मैं तुमसे सीखने आया हूँ, कि कैसे मरकस बाबाकी सिच्छा किसानोंके पास पहुँचाई जाय?

दुखराम—मैं तो जरा मैने (भानजा) डरने लगा कि कहीं तुम अपनी पढ़ी-लिखी बोलीको यहाँ छाँटने लगे तो हम कोरे ही रह जायँगे लेकिन जान पड़ता है मरकस बाबाका एक भी छींटा जिसके ऊपर पड़ा है वह बन गया है।

लेकिन भैने हमने जो कुछ मरकस बाबाकी बात सुनी है, भैया रजबलीने बताया है, उससे जान पड़ता है कि मरकस बाबाकी सिच्छाको जितना पढ़ना-सुनना है, उससे भी बेसी उसको गुनना है और गुननेसे भी बेसी उसपर चलना है। चलना सबसे मुस्किल है, ठट्ठा नहीं, तलवारकी धारपर चलना है।

भैया—दुक्खू भाईने एक लाखकी बात कही है। अच्छा तो सन्तोखी भाई! तुमने कल पूछा था कि लाल पलटन जो हिटलरी गुन्डोंका इतना संहार कर रही है और साथ ही जोंकोंका भी आगम अंधार होता जा रहा है, तो इससे क्या जोंकें कुछ कर न बैठेंगी। आज इसी बातको मैं तुम्हारे सामने कहना चाहता हूँ।

दुखराम—हाँ भैया! यही बात बतलाओ। लाल पलटन तो पागल सियार-को खदेड़कर माँदमें ढकेल ले गई। और अब सियार मरनेवाला है, इसमें सक-सुबहा नहीं है। लेकिन पागल सियारको पैदा करनेमें तो बाहरकी जोंकोंका ही सबसे बड़ा हाथ रहा होगा। कौन-सा नाम बतला रहे थे वह बड़ी जोंक चमलेन, जो दो-दो मरतबे उड़-उड़कर हिटलरके पास जुहार करने गया था। वह और उसका बाप न जाने कितने सालसे इस गुन्डे और इसकी सेनाको पालने-पोसने और बढ़ानेमें लगाये थे।

भैया—चमलेनका बाप नहीं दुक्खू भाई! बाल्डविन उसी तरहकी एक बड़ी जोंक था। यह ठीक है कि बिलायतकी जोंकें और अमेरिकाकी जोंकें पुरानी दुनियाको जैसाका तैसा रखना चाहती हैं, उसमें एक जौ भी फेर-बदल करना नहीं चाहतीं। फ्रांसकी जोंकें भी जोर लगातीं, लेकिन अब बेचारी उतना जोरदार नहीं हैं।

दुखराम—क्यों भैया! फ्रांसकी जोंकें क्यों जोरदार नहीं हैं?

भैया—"उघरे अंत न होहिं निबाहू" उनका परदा उघर गया। कमेरोंके डरके मारे उन्होंने हिटलरको फ्रांसमें बुलानेमें पूरी तरहसे मदद की। जब हिटलर फ्रांसमें आकर बैठ गया, तो अपने देसवालोंके खूनसे धरतीके रँगनेमें हिटलरी गुन्डोंके आगे-आगे रहे। द-गालने पहिले भी देसको सजग किया था कि हमारी पलटन और हथियार मजबूत नहीं हो रहे हैं। फौजके मदका रुपया

बड़े-बड़े कारखानेवाले आँख मूँदकर लूट रहे हैं। बूढ़े-निकम्मे जरनैल कोई हितकी बात सुननेके लिए तैयार नही है। फ्रांस तो हिटलरी गुन्डों और उसके कुत्तोंके पैरोंके नीचे रौंदा जाने लगा, लेकिन जरनैल द-गाल बाहर निकल आया। उसने बचे-खुचे फ्रांसीसी देस-भगतोंको इकट्ठा किया और मरते दम तक लड़नेका बीड़ा उठाया। उधर मरकस बाबाके रास्तेपर चलनेवाले लाखों नर-नारी फ्रांसके भीतर रहकर हिटलरी गुन्डोंको तबाह करने लगे। पचास हजार आदमियोंको मार डाला तो भी मरकस बाबाके चेले दबे नहीं। जब अफ्रीकासे गुन्डे भगा दिये गये, तो फ्रांसके कब्जेका मुलुक अलजीरिया द-गाल और उनके साथियोंका अड्डा बना। उन्होंने अपनी सरकार बनाई, जिनमें कम्युनिस्ट भी मिल गए। सैकड़ों बरसों से काले-गोरोंका जो भेद-भाव चला आता था उसको उन्होंने खतम कर दिया और काले (अफ्रीकावाले) सिपाहियोंकी वही तनखाह कर दी, जो फ्रांसीसी गोरे सिपाहियोंकी थी।

सन्तोखी—और हमारे हिन्दुस्तानमें तो काले-गोरे सिपाहियोंमें अब भी बड़ा फरक है।

भैया—हाँ, तीस और डेढ़ सौका। वहाँ यह इसीलिए हो सका कि अब जोंकोंका बल नही रहा, नई फ्रांसीसी सरकारने कानून पास किया, कि रेल, जहाज, खान, बड़े-बड़े कारखाने, बड़े-बड़े बंक और उनके करोड़ोंका खजाना अब धनियोंके हाथमें नहीं बल्कि सारी फ्रांसीसी जनताकी सम्पत्ति होगी।

दुखराम—तो मरकस बाबाकी कितनी ही बातोंको मान लिया!

भैया—इसीलिए तो जब अमरीका और इंग्लैंडकी पलटन जून (१९४४) में फ्रांसकी भूमिपर जर्मनोंसे लड़नेके लिए उतरी तो उन्होंने पहले द-गाल-की सरकारको नहीं माना। लेकिन जोंकोंकी बात नहीं चली। तो भी यह मालूम होता है कि एक-एक अंगुलके लिए बिना अड़ंगा लगाए जोंकें पीछे हटनेके लिए तैयार नहीं होतीं, लेकिन अन्तमें झखमारके उन्हें पीछे हटना पड़ता है। सिवाय उन फ्रांसीसियोंके जो हिटलरके हाथमें बिक गए थे, बाकी सभी द-गाल की सरकारसे प्रेम रखते हैं। इंग्लैंड-अमरीकाकी जोंकोंने देखा कि बिना द-गालकी सरकारको साथ लिए काम नहीं चलेगा। उधर इंग्लैंड

और अमेरिकाके लोगोंने हल्ला सुरू किया। बेचारी जोंकें अकुताईं-पछताईं और द-गालकी सरकारको मानना ही पड़ा।

सन्तोखी—साँपका जीव बहुत कठोर होता है भैया!

भैया—हाँ, जल्दी नहीं मरता। इटलीमें भी मुसोलिनी और उसके गुन्डे जब भागनेके लिए मजबूर हुए तो बाईस बरससे मुसोलिनीके साथ लड़नेवाले देस-भगतोंने चाहा कि देसका इन्तजाम वह अपने हाथमें लें; लेकिन इंगलैंड और अमेरिकाकी जोंकोंको डर लगने लगा कि राज उनके हाथमें देनेपर वहाँ जोंकोंका नाम निसान नही रह जायेगा, और कमेरे मजबूत हो जाएँगे, इसीलिए राजको इटलीके बादसाह और उसके पिट्ठू बोदागलियोंके हाथमें रहने दिया। बाईस सालसे यह दोनों गुन्डे मुसोलिनीके दाएँ बाएँ हाथ थे। मुसोलिनीने इटलीके लाखों कमेरोंके खूनसे अपने हाथको रँगा और यह दोनों भी उसके सभी पापोंमें सामिल थे। तो भी इंग्लैंड-अमेरिकाकी जोंकोंने राजको इनके हाथमें इसीलिए रहने दिया कि इटलीमें जोंकें बनी रहेंगी। उसके साथ बहुत-सा राजका इन्तजाम उन्होंने अपने पिनसिनिहा फोजी अफसरोंके हाथमें दे दिया। जैसे हिन्दुस्तानके लोग आज जर्मन और जापानी गुन्डोंसे लड़नेके लिए तैयार हैं, वह चाहते हैं कि हमारी अपनी सरकार बने। और पचीस लाख नहीं दो करोड़की पलटन बनाकर हिन्दुस्तानी इन गुन्डोंसे लड़ने जायँ। लेकिन चर्चल और दूसरी बिलायती जोंकें यह नहीं चाहतीं कि हिन्दुस्तानी अपने मनसे लड़ाई लड़ें। उनको डर है कि जो हिन्दुस्तानी अपने मनसे लड़े तो उनका मन बहुत बढ़ जायगा, वह अपनेको अंगरेजोंका नहीं समझेंगे और हथियार तो उनके हाथमें आ ही जायगा फिर स्वराज किसको देना किसको लेना। यही बात वह इटलीमें भी सोच रहे थे और चाहते थे कि वहाँ कमेरोंका जोर न बढ़ने पाये। इटलीके मामलेमें वह सोवियतको भी नहीं पूछना चाहते थे, लेकिन स्तालिन बीरका दिमाग जोंकोंसे कहीं बढ़-चढ़कर है। बोदोगोलियोंकी इटलीमें जो सरकार थी, उसे जोंकें कमेरोंके हाथमें ताकत जानेसे रोकनेके लिए मानती न थीं, दूसरी ओर राजकाज चलानेकी बहुत-सी बातें अपने हाथमें रखती थीं, और उसे पूरी सरकार नहीं मानती थीं। स्तालिन-

वीरने सोचा कि किला बाहरसे हमला करनेसे टूट रहा हो तो भीतर घुसकर तोड़ना चाहिए। उसने बोदोगोलियोंकी इटली सरकारको मान लिया और अपना राजदूत इटलीमें भेज दिया। चर्चिल और उसके साथी तिलमिलाये बहुत लेकिन क्या करते, उसीके साथ स्तालिनने कमूनिस्तों और दूसरे इटालियन देस-भगतोंको कह दिया कि अलग रूठकर बैठनेसे काम नहीं चलेगा। यह जिद्द मत करो कि जब तक इटलीका बादसाह और बोदोगोलियों दोनों खूनी सरकारसे नहीं हटते तब तक हम सरकार नहीं बनायेंगे। कमूनिस्तों और देस-भगतोंके समझमें बात आ गई। वह सरकारमें सामिल हुए। कुछ ही दिनोंमें बोदोगोलियो और बादसाहको सरकार छोड़कर भागना पड़ा और इटलीके देस-भगतोंने राज सँभाल लिया। चर्चिल और उसके साथी जोंकोंकी चाल नहीं चली।

सन्तोखी—इस तरह फ्रांस ही नहीं इटलीमें भी जोंकोंको पछताना भर ही हाथ आया।

भैया—जोंकोंको बहुत जगह पछताना पड़ा और आगे भी पछताना पड़ेगा, लेकिन इससे वह अपने जोंक धरमको छोड़ने के लिए तैयार नहीं। यूगोस्लावियामें भी उन्होंने यही चाल चली। हिटलरने जब यूगोस्लावियाको ले लिया तो वहाँकी जोंकोंकी सरकार भागकर लन्दन चली आई। जो जोंकें देसमें रह गई थीं, उन्होंने हिटलरका साथ दिया। कमेरोंपर खूब जुल्म होने लगा। उस बखत कमेरोंका नेता और पक्का कमूनिस्त तीतो देससे बाहर नहीं भागा। किसानोंने मजूरोंने जानपर खेलके तीतोको अपने घरों में जगह दी। तीतोने देस-भगतोंकी छापेमार पलटन तैयार की।

दुखराम—वैसी ही छापामार पलटन भैया जैसे रूसमें तैयार हुई?

भैया—हाँ, यह एक छोटी-सी चिनगारी थी लेकिन बढ़ते-बढ़ते बनकी आग बन गई। यूगोस्लावियाके जवान तीतोके पास जमा होने लगे। तीतो आज उनका मारसल (सबसे बड़ा सेनापति) था। डेढ़-दो लाख जरमन पलटन और बहुतसे घरके बिभीखन तीतोसे लड़ रहे हैं, लेकिन चिनगारी अब वह छोटी चिनगारी नहीं है। लन्दनमें बैठी यूगोस्लावियाकी सरकार बराबर झूठी-

झूठी खबर फैलाती रही कि तीतो कुछ नहीं है, वह तो डाकू है। जर्मनोंसे लड़ रहा है हमारा सेनापति जरनैल मिखाइलोविच और उसके चेतनिक लड़ रहे हैं। इङ्गलैंड और अमेरिकासे कितना ही हथियार भी मिखाइलोविचके पास पहुँचाया गया। अभी (अगस्त) तीन महीना पहले तक हिन्दुस्तानके सिनेमा घरोंमें "चेतनिकों" की बहादुरीका फिल्म दिखाया जाता था। बिलायत और अमेरिकाकी जोंक सरकारें तीतोको इसलिए नहीं मानना चाहती थीं कि वह कम्‌निस्त है और उसका जोर बढ़नेपर यूगोस्लावियामें नवाब और जोंकें नहीं रह जायँगी। लेकिन असली लड़नेवाला था तीतो और उसके जवान। मिखाइ-लोविच और उसके चेतनिक हिटलरसे लड़ नहीं रहे हैं, उसके जूते चाट रहे हैं; वह लड़ रहे हैं तीतोके बहादुरोंके साथ। तीतोने यूगोस्लावियाके बहुतसे भागको हिटलरी गुंडों और उसके कुत्तोंसे आजाद कर लिया था तो भी अभी बिलायती और अमेरिकन सरकारें तीतोको माननेके लिए तैयार नहीं थीं लेकिन अन्तमें मिखाइलोविच और चेतनिकोंका भंडाफोड़ हुआ। चर्चिलके अपने बेटेने तीतोके जवानोंकी बहादुरीको देखकर बापसे कहा। चर्चिलको लाचार होकर तीतोकी सरकारको मानना पड़ा।

दुखराम—तो यूगोस्लावियामें भी जोंकोंकी चाल नहीं चली।

भैया—यूगोस्लावियामें जब जोंकोंका राज रहा तो क्रोत, सर्ब, मुसलमान वगैरह जातियोंको एक दूसरेसे बराबर लड़ाया जाता था, और अब उस खून-खराबीका कहीं पता नहीं। तीतोने जो आजादीका झंडा उठाया है, उसके नीचे सभी जातियाँ अपना खून बहा रही हैं। आज यूगोस्लावियाके लोग जिस देसपर सबसे अधिक विसवास करते हैं, जिसके साथ सबसे अधिक प्रेम करते हैं वह है सोवियत।

दुखराम—तो भैया यूगोसलैयासे भी जोंकोंका डंडा-कुंडा उठा ही समझो।

भैया—वहाँकी राजधानी बेलग्रादके छोरपर लाल सेना पहुँच गई है। लेकिन देखा न, बिलायती जोंकोंने वहाँ भी अपना मतलब साधनेके लिए कोई बात उठा नहीं रक्खी। पोलंदमें भी ऐसे ही हुआ। मैंने पहिले कहा था कि वहाँ खूसी जमींदारोंका राज था, जो हमेशा हिटलरी गुंडोंकी नकल करनेके

लिए तैयार थे और जब सोवियत-संघ अपना परान बचानेके लिए भीतरी-बाहरी दुसमनोंसे लड़ रहा था, उस वखत सोवियतकी भूमि और एक करोड़ दस लाख आदमियोंको उन्होंने अपना गुलाम बना लिया। जब हिटलरने पोलैंडपर चढ़ाई की तो लड़ने की जगह ये जमीदार हवाई जहाजों और मोटरोंसे सोने और बाल-बच्चोंके ढोनेमें लगे हुए थे। पोलैंडके सिपाहियोंसे जो कुछ बना लड़े। लाखों पोल नर-नारियोंको जर्मन गुंडोंने मौतके घाट उतारा। पोल नवाबोंकी सरकार भागकर लन्दन पहुँची। उसका सबसे बड़ा काम था, सोवियतको दुनिया भरमें बदनाम करना और उसपर झूठे-झूठे दोख लगाना। बिलायतकी जोंकें बराबर उसकी पीठ ठोंकती रहीं। पोलैंडकी बहुत-सी फौज रूसमें भाग गई थी, रूसने उन्हें सरन दी थी। जब हिटलरने सोवियतपर हमला कर दिया तो सोवियतने पोलैंडके सिपाहियोंको फिर हथियार-बंद कर दिया। पोल सिपाही लाल सेनाके साथ मिलकर हिटलरी गुंडोंसे लड़ना चाहते थे लेकिन जमीदार-नवाबोंके लड़के ही तो उनके जरनैल थे। उन्होंने यह सोचकर उन्हें लड़नेसे मना किया, कि हिटलर कुछ महीनोंमें बोलसेविकोंको खतम कर देगा, बोलसेविकोंका नाम निसान नहीं रह जायगा। फिर हमारा सबसे बड़ा दुसमन तो खतम हो जायगा।

सोहनलाल—लेकिन इन अकलके दुसमनोंने यह नहीं सोचा, कि फिर पोलैंडके आजाद होनेकी उम्मेद नहीं रह जायेगी।

भैया—वह मानते थे कि हिटलर हम लोगोंकी जमीदारी थोड़े ही छीनेगा। यही कि थोड़ा उसके पैरपर नाक रगड़नी पड़ेगी। वह दूसरोंसे यह भी कहते थे, कि बोलसेविक तो तीन-चार महीनेमें खतम हो जायँगे, लेकिन इंग्लैंड और अमेरिकाके सामने हिटलर नहीं टिक सकेगा, हमें तबके लिए तैयार रहना चाहिए।

दुखराम—सूअर, गदहे।

भैया—और यह सब कुछ वह तब कह रहे थे, जब वह सोवियतकी भूमिमें थे, सोवियतका अन्न-पानी खा रहे थे और सोवियतने उन्हें हथियार दिया था इतना ही नहीं जो किसी सिपाहीके बारेमें मालूम हो जाता कि इसका कुछ भी

नेह सोवियतके साथ है, तो उसपर झूठा इलजाम लगाकर गोली मार देते थे। जब हिटलरका जोर बढ़ चला तो पोल जोंकोंके जरनैल पचास हजार पोल पलटनको लेकर रूस छोड़ ईरानमें चले आये लेकिन कितने ही सिपाही और अफसर इन धोखेबाजोंके साथ नहीं हुए, वह वहीं रह गये और आज अपनी राजधानी वारसाको छुड़ानेके लिए लाल पलटनके साथ कंधेसे कंधा मिलाकर जर्मन गुंडोंसे लड़ रहे थे। पोल जोंकोंके पापोंको कहनेके लिए एक पोथा चाहिए। उन्होंने एक मरतबे हल्ला उठाया कि सोवियतने पोलैण्डके कितने ही मजूर नेताओंको मार दिया और इस खबरको पहिले हिटलर गुंडोंने रेडियो बाजापर कहा था। यह अति हो गई थी। सोवियतने इस धोखेबाज, नीच पोल सरकारसे अपना सारा सम्बन्ध तोड़ लिया। बिलायतकी जोंकें अब भी लन्दनमें बैठी पोल सरकारकी पीठपर हैं, लेकिन अब जानती हैं कि भगोड़ी सरकारको फिर पोलैण्डमें ले जाकर बैठाना उनके बसकी बात नहीं है। भगोड़ी सरकारके दो-एक आदमी बातको समझने लगे और सोचा कि सोवियतसे कह-सुनकर कुछ समझौता किया जाय। नवाबजादोंने समझा कि स्तालिनने तो कह दिया है कि हम ऐसी पोल-सरकारसे बात करनेके लिए तैयार नहीं जिसमें कि सोवियत-विरोधियोंकी भरमार है। जब भगोड़ी सरकारके महामन्त्री मास्को बात करनेके लिए गये, तो नवाबोंके पेटमें चूहा कूदने लगा। उन्होंने रेडियो बाजा बजाके चुपकेसे वारसामें खबर दे दी कि लाल सेना वारसाके किनारेपर आ गई है, तुम लोग जर्मनोंको सहरसे मार भगाओ। उन्होंने सोचा था, कि लाल सेनाके बगल-में आ जानेसे जरमन कमजोर पड़ ही गये हैं, यदि हमारे हुकुमके मुताबिक वारसासे जरमनोंको भगा दिया गया, तो हम हल्ला करेंगे कि राजधानीको हमारे आदमियोंने दखल कर लिया है, उसमें लाल पलटनको बिल्कुल हाथ नहीं डालना चाहिए।

सोहनलाल—लेकिन भैया! ये पोल भगोड़े जमींदार कितने नीच हैं, खुद हिजड़े तो हुई हैं, इनको यह ख्याल नहीं आया कि यह लाखों आदमीके मरने-जीनेका सवाल है। जब तक पूरी तैयारी न हो, तब तक वहांके लोगोंको लड़नेके लिए कहना उन्हें आगमें झोंकना है।

दुखराम—नहीं भैने ! जोंकोंसे कोई आसा मत रखो, करोड़ों आदमियोंको मारकर ही तो वह जीती हैं।

भैया—हाँ, सोहन भाई ! इन बेसरमोंको यह भी ख्याल नहीं आया कि वहाँ लड़नेका हुकुम देनेसे पहिले लाल सेनाको खबर दे दें। लाल सेना ही क्यों ? अमेरिका और इंग्लैंडके फौजी मुहकमोंसे भी उन्होंने नहीं पूछा। बेचारे लाखों आदमी मारे गये। लाल सेना वारसापर जोरसे हमला कर रही है, लेकिन जब तक वह वारसाके भीतर पहुँचेगी, तब तक न जाने कितने बहादुर मारे जा चुके होंगे। लेकिन इन बेसरम भगोड़ोंका यही आखिरी पाप है। पोलैंडके लोगोंने अपनी अलग सरकार बना ली है, सोवियत उसी सरकारको मानती है। लाखों पोल फौज लाल सेनासे मिलकर अपने देसको आजाद कर रही है। पोल लोगोंकी सरकार जरमनोंसे छुड़ाये इलाकेका राज-काज देख रही है। चर्चिल-की सरकार अब भी कह रही है, कि हम लन्दनमें बैठे नवाबोंकी सरकारको पोलैंडकी सरकार मानते हैं।

दुखराम—बेचारे तालुकदार-नवाब झख रहे होंगे अपने महलोंके लिए, अपने जिमीदारीके गाँवों और पुराने ऐस-जैसके लिए। लेकिन बेटे अब फिर पोलैंड नहीं लौट पायेंगे।

भैया—तो पोलैंडमें भी देखा न ! जोंक सरकारोंने आखिर तक अपना मनसूबा पूरा करनेकी कोसिस की, लेकिन उसकी कोई आसा नहीं। अब एक बार मैं और दुहरा दूँ, दुक्खू भाई, फ्रांसमें इनका मनसूबा टूटा, इटलीमें टूटा, यूगोस्लावियामें टूटा, पोलैंडमें टूटा। यूनानमें भी वहाँकी भगोड़ी जोंक सरकार-की यह पीठ ठोंक रही है। असली लड़नेवालोंको नहीं, जमींदारों-नवाबोंके मुट्ठी भर आदमियोंको जर्मनोंसे लड़नेकी वाहवाही दे रही हैं। लेकिन वहाँ भी इनका मनसूबा बहुत कुछ ढीला हो गया है।

सोहनलाल—इस तरह तो भैया ! जान पड़ता है कि इन देसोंमें जोंकोंके लिए कोई आसा नहीं है, लेकिन बुलगारिया, रूमानियाँ, हुँगरीके बारेमें तुम्हारी क्या राय है।

भैया—यह तीनों देस आज हिटलरके पैरोंके नीचे दबे रहे हैं और उनके

जमींदार पूँजीपति लोगोंपर जुलुम करनेमें जर्मन गुंडोंका साथ दे रहे थे। जर्मन गुंडोंके साथ इन जोंकोंका भी भाग बँधा है। जहाँ ये गुंडे भगे, कि वहाँ जोंकोंके लिए भी ठौर नहीं रह जायेगा।

सोहनलाल—लेकिन अँगरेज और अमेरिकन तो चाहेंगे न कि जमींदार और पूँजीपति वहाँ बने रहें।

भैया—हाँ, पूरी तौरसे चाहेंगे। लेकिन जानते हो न बुलगारियामें ज्यादा-तेर किसान बसते हैं! बुलगर और रूसी एक ही जातिके हैं, जिसके कारण वे सोवियतके लिए बहुत अभिमान और प्रेम रखते हैं। किसान अपने लाभका खयाल करके भी सोवियतके ढंगको पसन्द करते, इसलिए जोंकोंका खतम होना छोड़ और दूसरी बात नहीं हो सकती थी। वही हुआ, लाल सेना ने बुल्गारियामें पहुँचकर वहाँके कमेरोंको मुक्त किया। जोंकें भाग खड़ी हुई हैं। उनकी हिमायतके लिए कुछ अँगरेज-अमेरिकन पहुँचे थे, जिन्हें बहुत नरमीसे सीमा-पार भेज दिया गया। रूमानिया एक छोटा-सा देस है। वहाँके किसान लड़ाई-से पहले भी सोवियतकी तरक्कीको बड़ी लालसासे देखते थे। अब रूमानियासे-से भी हिटलरी गुंडे तथा उनके पिट्ठू खतम हो चुके, वहाँ लाल सेना पहुँच गई। हिटलरके लोप होनेके साथ उसके इसारेपर नाचनेवाली रूमानियाकी जोंकोंके लिए क्या कोई आसा हो सकती थी।

दुखराम—नहीं भैया! लाल पलटनका नाम सुननेसे तो कितना उछाह होता है। जब रूमानियाके किसान लाल पलटनको देखे होंगे, तो समझे होंगे कि वह जरमन डकइत नहीं हैं, बल्कि अपने ही भाई जैसे हैं, भला अब कमेरों-को छोड़ कौन दूसरा वहाँ राज करता!

भैया—हुंगरीमें पिछली लड़ाईके बाद कई महीने तक कमेरोंका राज रहा, फिर बाहरी जोंकोंने भीतरी जोंकोंको मदद दी। और बहुत खराबीके बाद कमेरों-का राज खतम हो गया। हुंगरीकी राजधानी बुदापेस्तके पास लाल सेना पहुँच गई है। सोहन भाई! तुम्हीं बताओ हुंगरीमें क्या बाहरी जोंकोंकी क्या फिर दाल गलेगी!

सोहनलाल—नहीं, लेकिन ......।

भैया—लेकिनको भी मैं समझता हूँ। मैं यह नहीं कहता कि इस लड़ाईके बाद सारा यूरप मरकस बाबाकी सिच्छाको पूरा मान लेगा, और वहाँ सोवियत जैसा कमेरोंका राज कायम हो जायगा। लेकिन एक बात तो साफ मालूम होती है कि बड़ी-बड़ी पूँजीपति जोंकों और तालुकदारों-जमींदारोंके लिए जगह नहीं रह जायगी। रेल, बंक, खान, बड़े-बड़े कारखाने यह सब चीजें जोंकोंके हाथसे निकल जायगी। हो सकता है कि कितनी ही जगह छोटी-छोटी खेती, छोटी-छोटी दूकान लोग अलग-अलग अपनी रखें। यह भी हो सकता है कि बहुत जगहोंमें रूस हीका ढंग चले।

सोहनलाल—कौन-कौन देसोंमें भैया सोवियत जैसा राज कायम होगा?

भैया—मैं जोतिसी नहीं हूँ सोहन भाई! लेकिन मुझे जान पड़ता है कि पोलैंड, हुंगरी, रुमानिया, बुलगारिया और यूगोस्लावियामें लोग सोवियतकी तरहका राज कायम करेंगे। चेकोस्लाविकियाके नेता ज्यादा दूर तक देखने-वाले हैं। सोवियतके साथ उन्होंने हमेसा दोस्ती रखी। देसकी भलाईके लिए वह बहुत कुछ खुद करेंगे और वहाँ भी मुझे सोवियत जैसा समाज ही आता दिखाई देता है। यूरपके बाकी देसोंमें चाहे मरकस बाबाकी पूरी सिच्छाके मुताबिक राज न कायम हो लेकिन जोंकोंके सभी बड़े-बड़े दाँत टूट जायँगे और सभी सोवियतको अपना सबसे बड़ा दोस्त मानेंगे।

सोहन—अच्छा यह तो यूरपकी बात हुई भैया! और मैं तो यह बात पक्की समझता हूँ, पिछली लड़ाईमें दुनियाके छठे हिस्सेसे जोंकोंका राज खतम हो गया और कमेरोंका राज कायम हो गया। इस लड़ाईमें उसमेंसे एक अंगुल भी नहीं निकलेगा यह बात तो निहचय है लेकिन इसके साथ यह भी निहचय है कि दुनियाके कुछ और भागसे जोंकोंका राज जायेगा। मैं समझता हूँ इस लड़ाईमें एक-चौथाई धरतीपर कमेरोंका राज हो जायगा बाकी तीन-चौथाई धरतीपर जो जोंकों हीका जोर रहा, तो एक और घमासान लड़ाई होगी। लेकिन उस लड़ाई और इस लड़ाईमें यह फरक रहेगा कि हिटलरने जो भूल की वह फिर कोई नहीं दुहरायेगा। सोवियतके कमेरोंका राज और लाल पलटन बस यही आखिरी लड़ाई। यह तो हुआ लेकिन मैं सुनना चाहता हूँ कुछ

हिन्दुस्तान और पूरबके देसोंके बारेमें ।

भैया—सोहन भाई ! सवाल तो तुम्हारा ठीक है लेकिन यह एक रातकी बैठकीमें खतम होनेवाला नहीं । हिन्दुस्तान काहे गुलाम हुआ इसकी बात हम पहिले ही कह चुके हैं । फिर हिन्दुस्तानने कब-कब और कैसे कैसे आजाद होना चाहा, यह भी बतलाना होगा । गाँधीजीने हमारे कामको कैसे आगे बढ़ाया इसे भी बताना होगा । फिर किस लड़ाईमें हमने क्या भूल-चूक की और हमारे दुस-मनोंने कैसे फायदा उठाया इसके बारेमें भी कहना होगा । लेकिन मैं समझता हूँ आज बिलायती जोंकोंके मनसूबे और अपनी कमजोरियोंके बारेमें कहूँ । बाकीको दूसरे दिन बतलाऊँगा ।

दुखराम—हाँ भैया, अभी जोंकोंके मनसूबेकी बात चल रही है, इसीलिए उसीको लेते अपने देसके बारेमें कुछ कहें ।

भैया—पहिले तो दुक्खू भाई ! यह बात गाँठे गठिया लेना चाहिए, जोंकें दया-मयामें कभी नहीं पड़तीं । उनके लिए अपना स्वारथ सबसे बढ़कर है । बिलायती जोंकें हिन्दुस्तानको स्वराज्य दे देंगी, यह अकलका अंधा ही विस्वास कर सकता है । जोंकोंके धर्मशास्त्रमें 'द' अच्छर नहीं है । हमारे हिन्दुस्तानी भाई गुस्सा होकर बड़े जोसमें आकर अँगरेज जोंकोंके वचन तोड़ने-की बातोंको कहते हैं । लेकिन जोंकें जो वचन कहती हैं वह तोड़ने हीके लिए । गुलामोंको ढाँढ़स देनेके लिए वह लम्बी-लम्बी बातें जब-तब बोल जाती हैं । अगर गुलामोंको छन भरके लिए सन्तोस हो जाता है तो अच्छी बात है, अगर वह पीछे निरास होते हैं तो जोंकोंका इसमें कोई कसूर नहीं, जोंकोंके वचनपर विश्वास करनेको उनको किसने कहा था ?

दुखराम—भैया, जोंकोंका स्वभाव जो रचके समझाया उससे सब बात साफ हुई ।

भैया—जोंकोंसे यह भी आशा रखना कि उनका दिल पसीजेगा या, बद-लेगा; तो ख्याल रखना चाहिए कि उनके दिल हई नहीं है, जो दिल होता तो बुद्ध ईसा जैसे कितने ही महात्मा हो चुके हैं, उन्होंने जोंकोंके बदलनेकी बहुत कोसिस की । जोंकोंने हथियारके बलपर दुनियाको अपने हाथमें किया, उससे

भी कोई जबर्दस्त हथियार जब हाथमें आएगा तभी उनकी मुट्ठी खुलेगी।

सोहनलाल—तो बम-पिस्तौलको क्या समझते हैं भैया!

भैया—आपका मतलब है कि जोंकोंके दस-पाँच अफसरोंपर पिस्तौल या बम चला देनेसे जोंकें दब जायँगी? इसकी बिलकुल आशा मत रखिये। बड़ी जोंकें बहुत दूर बैठती हैं उनके पास तक न आपकी गोली जा सकती है न बम। और हिन्दुस्तानमें जो काले-गोरे नौकर उनके लिए काम करते हैं वह पेटके लिए करते हैं। न काम करें तो भूखे मरना पड़े। उन्हें अच्छी तनखाह मिल रही है भूखसे निश्चिन्त हैं। जो इतने ही भर आदमी होते तो तुम कुछ को कम कर सकते थे लेकिन सौकी सौ नौकरियोंके लिए तो हजार उम्मेदवार हैं फिर जगह कहाँ खाली रह सकती है।

सोहनलाल—तो फिर जोंकोंके पास जो हथियार है उससे भी जबर्दस्त हथियार कौन-सा है?

भैया—यही लोग जो चूसे जा रहे हैं, मजूर-किसान और दूसरेमें पढ़े-लिखे जिनकी हालत मजूरोंसे बढ़कर नहीं है; लेकिन सबसे ज्यादा बिसवास, मजूरों और किसानोंपर ही किया जा सकता है।

सोहनलाल—मजूर-किसान तो हमारी बात ही नहीं समझते।

भैया—आप समझते हैं कि उनमें समझनेकी ताकत ही नहीं है। वह न समझेंगे, न सुनना ही चाहेंगे, जो आप लोग उन्हें निराकार भगवानके सामने हाथ जोड़नेके लिए कहेंगे।

सोहनलाल—हम तो निराकार भगवानके सामने हाथ जोड़नेको नहीं कहते हैं। हम तो उनसे कहते हैं सुराजकी बात, देसको गुलामीसे छुड़ाने-की बात।

भैया—तो क्या वह सिर नहीं हिलाते? क्या वह हाँ नहीं करते?

सोहनलाल—सिर हिलाते हैं, हाँ करते हैं, लेकिन देह नहीं हिलाते, हाथ नहीं हिलाते।

भैया—दुक्खू भाई, अपनी अंगुल भर जमीनके लिए किसान जान नहीं दे देते। भदयावाले कनैलाकी परती, बाँध या किसी जगह हाथ भर भी दबाना

चाहें तो सारा गाँव लाठी लेकर जायगा कि नहीं ?

दुखराम—जान दी है भैया, और कई बार सारा गाँव लड़नेके लिए गया था।

भैया—देखा सोहन भाई, किसान जान देनेसे घबराते नहीं, मजूर भी जान देने से घबराते नहीं। यह कायर नहीं हैं। बात यह है कि आप लोग भी सुराजको निराकार रूपमें उनके सामने रखते हैं। उनको यह दिखलाइये कि जीविका बिना जीव किसी कामका नहीं, और जीविकासे तुम कभी निश्चिन्त नहीं हो सकते जब तक जोंकें हैं, लेकिन इतना कह देनेसे भी काम नहीं चलेगा, उन्हें हाथसे दिखलाना होगा कि कैसे जीविकामें पग-पगपर ये जोंकोंकी सरकार बाधा देती है। फिर यह भी जबानी जमाखर्चसे न होगा। उनको दिखलाना होगा कि देखो यह इतनी बड़ी रासि तुम्हारे सामने है लेकिन दस ही दिनमें यह लोप हो जायगी और तुम्हें भूखा मरना पड़ेगा, इस वास्ते किसानोंको तैयार करना होगा कि यह रासि हमारी है, फिर जमींदार पटवारी और सारी दुनिया कहेगी कि खेत तो जमींदारका है इसलिए रासि तुम्हारी कैसे हुई। तब कहना होगा कि खेत उसका है जो उसमे अपना खून-पसीना गिराता है। इसलिए हमारे खेतको अपना कह करके जो कोई दखल करने आएगा तो दखल नहीं करने देंगे। लेकिन किसानोंको अकेले-अकेले ऐसा कहनेसे काम नहीं चलेगा।

दुखराम—अकेले-अकेले तो बहुत लोगोंने कहा भैया और कुरकी-नीलामी सब होकर उजड़ गए।

भैया—इसीलिए एक आदमीके डट जानेसे कुछ नहीं होगा। हमें गाँव-गाँवके किसान को तैयार करना होगा। जब वह साथ जियेंगे, साथ मरेंगे तभी यह हो सकेगा।

सोहनलाल—"न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी।" न गाँवका गाँव तैयार होगा न किसान लोग हिलें-डुलेंगे।

भैया—तो तुम एक बूँदमें राधाको नचवाना चाहते हो, यह वृन्दावन-वाली राधा नहीं है। यह बहुत बड़ी राधा है, इनका हाथ छः हजार मील तक

फैला हुआ है, इनके लिए नौ मन क्या अठारह मन तेल भी कम है ! हमारे कुछ भाई समझते हैं कि कौन किसानों-मजदूरोंको हाथ जोड़ता फिरे ? सबसे अच्छा है यही कि दो-चार पिस्तौल जमा करो, पाँच-सात बम बनाओ और मार दो दो-चार अफसरोंको। दुनिया बहादुर कहेगी, और क्या जाने कुछ काम भी बन जाय।

सोहनलाल—तो भैया तुम्हारे पास कोई जल्दीकी दवाई नहीं है।

भैया—यही जल्दीकी दवाई है जिसे तुम नौ मन तेल कहते हो। किसानकी औरतसे किसीने पूछा, मालिक कहाँ गए हैं, औरतने कहा कि हेंगा (उराबन, पटेला) हेंगाने गए हैं। कब तक आयेंगे, पूछनेपर औरतने कहा धीरे-धीरे हेंगायेंगे तो दो घरीमें चले आयेंगे और जल्दी-जल्दी की तो छः घरीसे पहले नहीं लौटेंगे। आदमी कोई सहरका था। उसे समझमें नहीं आया, वह औरतका मुँह देखने लगा। औरत समझ गई। उसने कहा—"बाबू! धीरे-धीरे हेंगायेंगे तो हेंगा और देहका बोझ धीरे-धीरे पड़ेगा और सब ढेले एकही हेंगाईमें फूट जायेंगे और जल्दी जल्दी करनेपर एकाध ही ढेले फूटेंगे, फिर दोबारा-तेबारा-चौबारा हेंगाना पड़ेगा।"

दुखराम—भैया ! बहुत ठीक कहा।

भैया—इतना ही नहीं सोहन भाई ! जिस रास्तेकी तुम बात बतला रहे हो उससे ६ घन्टेमें भी लौटनेकी उम्मेद नहीं, क्योंकि तुम्हारी राधा बहुत होसियार है। जब तक दो ढेले तोड़ोगे तब तक चार नये फेंक देगी। रूसमें भी तीस-पैंतीस बरस तक बम-पिस्तौल चलाकर लोग काम बनाना चाहते थे लेकिन कुछ नहीं हुआ, काम तब बना जब लेनिनने बम-पिस्तौलका रास्ता छोड़ा और किसानों-मजूरोंको तैयार किया।

सोहनलाल—तो किसान-मजूर हत्याका हथियार उठायेंगे या बेहत्याका।

भैया—किसान हत्या-बेहत्या नहीं जानते। न वे हत्यारे हैं कि जिसको नहीं उसको मारते चलें, न वह बछिया हैं कि जीभ निकाल लें। वह अपना काम करना चाहते हैं, जो दुसमन हत्या चाहता है तो वह हत्याके लिए तैयार हैं और जो दुसमन चुप रहता है, तो वह बेहत्याको तो पसन्द ही करते हैं। लेकिन

सोहन भाई, अभी हत्या-बेहत्याकी बात छोड़िये । यह देखिये कि कैसे कमेरोंकी देह हिलेगी । कहीं किसानकी जमीनको जमीदार निकालना चाहता है, तो गांव भरके किसानोंका एका कायम कीजिये । पटवारी बदमासी करता हो तो एका कीजिये । यह अनहोनी बात नहीं है । इसी हिन्दुस्तानमें मलबारमें मैंने ऐसे गाँव देखे हैं । आन्ध्रमें ऐसे गाँव देखे हैं जहाँ जमीदार बछिया हो गए हैं, पटवारी सींग-पूछ नहीं हिलाते । किसी किसानपर फौजदारी मुकदमा चलाया नहीं जा सकता क्योंकि कोई एक भी किसान खिलाफमें गवाही देने नहीं जायगा । पहले-पहल जब काम सुरू हुआ, जब किसान जमींदारके जुलुमके खिलाफ खड़े हो गये तो एक बार जमींदारके गुंडे भी आये, दरोगा जीने भी जिसका नमक खाया उसका गुन गाया । कितने किसानों और उनके नेताओं-पर मार भी पड़ी, जेहल भी जाना पड़ा, कहीं-कहीं एकाध मारे भी गये । लेकिन उससे किसानोंका एका और मजबूत हुआ । जो पहले दो-चार डर और बहकावेमें आये थे, उनको भी सारे गाँवको एक मुंह चलते देख हिम्मत हुई । सारा गाँव-का गाँव पक्का हो गया । न नौ मन तेल, न नौ बरसकी बात नहीं है । यह बातें तीन-चार बरसके भीतर हुई हैं ।

सोहनलाल—लेकिन यह तो अपने ही देसके आदमियोंसे लड़ना है ।

भैया—सुरू उन्होंने अपने ही यहाँके जोंकोंसे लड़कर किया, लेकिन जब उसमें पटवारी कूदने लगा, पुलिस कूदने लगी, सरकारी अफसर जोंकोंका पच्छ लेने लगे तब उन्हें मालूम हुआ कि यह तो सरकार भी जोंकों हीके लिए है । अब वह अच्छी तरह समझते हैं कि सुराज बिना हमारा निस्तार नहीं । पहिले बिदेसी जोंकोंको हटायें तभी एकहरी लड़ाई होगी, नहीं तो दोहरे पाटके भीतर पिसेंगे ।

दुखराम—सच ही भैया तुमने कहा कि निराकार सुराजको किसान नहीं समझते । अब यह रूप दिखा दिया न, जो अपनी जीविकाके लिए जिमींदारसे लड़ेगा वह भली-भाँति सीख जायगा कि उसके कौन-कौन दोस्त हैं और कौन दुसमन ।

भैया—इसी तरह सोहन भाई ! मजूरकी जीविकाके लिये लड़िये । कोई

उनपर जुलुम होता हो तो उसके लिये उन्हें तैयार कीजिए। बम्बईके मजूर तैयार हैं। कलकत्ताके भी तैयार हैं, कानपुरमें भी तैयार हैं लेकिन अभी भी बहुत-सी जगहें हैं जहाँ मजूरोंको अपनी ताकत नहीं मालूम है। उनपर जुलुम होता है उनका एका बनाना होगा। सहरोंमें मुनीम हैं, प्रेसके कम्पोजीहेंटर हैं, होटलके नौकर हैं, रिक्सावाले हैं, मदरसेके बेचारे मुदर्रिस (गुरु जी) मुन्सी बिचारे सताये जाते हैं, लेकिन सबका एका लेक्चर देकर नहीं होगा, उनको जो तकलीफें हैं, उन्हींके लिए एका होगा। फिर सरकार जरूर उसमें उनके खिलाफ होगी, तब वह पक्के सुराजी हो जायँगे। निराकारकी पूजा झूठ और धोखा है, इसीलिए उसमें कमेरे नहीं फँसते। साकार सुराज रखिये उनके सामने, देखिये, खून-पसीना एक करनेके लिए तैयार होते हैं कि नहीं, लेकिन हम लोग कहाँसे कहाँ चले गये। हिन्दुस्तानके बारेमें जोंकोंके मनसूबेकी बात कर रहे थे न!

सन्तोखी—हाँ भैया, बिलायतकी जोंकें सुराज देनेके लिए हिन्दुस्तानपर राज नहीं कर रही हैं।

भैया—जोंकोंका मन तो ऐसा ही है लेकिन जब चाँप (दबाव) पड़ता है और समझती है कि यह तो सोलहो आना हाथसे निकल जायगा तब उनको याद आता है "अर्ध तजें बुध सर्बस जाये।" यूरपमें देखा न! एक-एक अंगुलके लिए जोंकें डटी रही लेकिन जब चाँप पड़ा तो मुट्ठी खुलती गई। चाँप दो तरहसे पड़ता है एक भीतरसे और एक बाहरसे। तो, जब जरमनीकी लड़ाई गम्भीर हुई और काल सामने दिखलाई देने लगा तो बीस सालसे गाली देनेवाले चर्चिलने स्तालिनको सलाम किया। जब सोवियत लड़ाईमें आ गई तो दुनियाके सारे लोगों—जोंक और कमेरा दोनोंके सामने सिर्फ एक बात थी कि हिटलर और उसके गुंडोंको खतम किया जाय। उसमें हत्या-बेहत्याकी बात करके घूम-घुमौआ खेल खेलना नहीं चल सकता। हमारे नेताओंको सुरूसे ही दो टूक कहना चाहिए कि हम फँसिहा गुंडोंको एक छन भी जिन्दा नहीं देखना चाहते।

दुखराम—फँसिहा कौन है भैया!

भैया—जोंकोंका सबसे नीच औतार फसिहा हैं, जो कि फाँसी, हत्या, बिख हर तरहसे कमेरोंको मारकर दबा देना चाहते हैं, इसीलिए फसिहा कहते हैं। मुसोलिनी और हिटलर फसिहोंके अगुआ हैं। ज्यादा पढ़े-लिखे लोग तो फासिस्ट बोलते हैं लेकिन हिन्दुवी बोलीमें फसिहा ही ठीक है।

दुखराम—हाँ, भैया! हिटलरका जो गुन बतलाया न, उससे फसिहा नाम ही ठीक बैठता है।

भैया—जब दुनिया भरके लोग फसिहा राच्छसोंको खतम कर देना चाहते हैं, तो तुम जो डेढ़ चावलकी खिचड़ी अलग पकाओगे तो कहींके न रहोगे।

सोहनलाल—जवाहिरलालने तो साफ कहा, मौलाना आजादने भी फसिहोंके खिलाफ कहा।

भैया—सोहन भाई, सतनरायनकी कथा नहीं है कि पंडितजी जो कुछ बोल रहे हैं सब हाथ जोड़कर सुनेंगे। बिलायतकी जोंकोंके मुँहमें दो सौ सालसे खून लगा हुआ है तुम चिल्ला-चिल्लाकर बोलो तो ऐसे जोरसे बाजा बजाने लगेंगे कि कोई सुनने ही न पाये और जवाहिरलाल और आजाद एक बात बोले और गाँधीजी कह दें कि दोनों हमारे लिए बराबर हैं तो सब गुड़ गोबर हुआ न! बिलायतकी जोंकें गाँधीजीकी बातको तोड़-मरोड़कर दुनिया भरमें फैला देंगी।

सोहनलाल—क्रिपके आनेपर तो गाँधीजीने भी अपनी बात साफ कर दी थी और कांग्रेसको फसिहोंसे लड़नेके लिए अंगरेज सरकारसे मेल करनेकी बात कर दी थी, फिर भी तो कुछ नहीं हुआ न?

दुखराम—यह क्रिप कौन रहा भैया!

भैया—है तो खास पुस्तका जोंक लेकिन लम्बी-लम्बी बातें करके मजूरोंका नेता बनना चाहता था। लेकिन हिन्दुस्तान तो वह दूसरे कामके लिए आया था। उस समय वह चर्चिलके साथके चार-पाँच बड़े मंत्रियोंमेंसे था, अब तो बेचारा छोटा मन्त्री बना दिया गया है। बर्मा, मलाया, सिंगापुरके ऊपर जापानने दिसम्बर १९४२में अचानक हमला बोल दिया। जोंकोंके पास लिफाफा (दिखावा) बहुत होता है। मैं बतला ही चुका हूँ कि जोंकोंके जरनैल

कितने निकम्मे होते हैं। सिंगापुरमें समुन्दरी किला बनानेके लिए करोड़ों रुपया खर्च किया गया, लेकिन आधासे बेसी जरूर चेम्बरलेनके भाई-बन्दोंके ठेकेमें उड़ गया होगा। बिलायती जोंकें रबड़के बगीचोंको लेकर बैठी थीं, कोई खान लेकर बैठी थीं, किसीके जहाज और आफिस पिनाङ्ग और सिंगापुर-में थे। न पलटनोंके हथियारका अच्छा इन्तजाम था, न जरनैलोंमें लड़ानेकी बुद्धि, हजार दो-दो हजार तनख्वाह पानेवाले साहेब अफसर पहले ही गोलेमें कान फाड़कर भाग खड़े हुए। अंगरेज बनियोंने सूमकी तरह आखिरी छन तक थैली नहीं छोड़नी चाही और पिनाङ्गमें खड़े कितने ही जहाज और अंगरेजी कम्पनियोंके आफिस सही सलामत ही जापानियोंके हाथमें चले गये। यूरपमें लड़ाई होनेसे ये भरोसा नहीं था कि जापानको हरा दिया जायगा और लेकिन साथ ही यह भी कोई नहीं समझता था कि अंगरेजी जोंकोंने अपनी पूर्बी सीमा-पर सिर्फ फूसकी टट्टियां खड़ी कर रखी हैं।

सन्तोखी—फूसकी टट्टी ही मालूम होता है रही है भैया! बर्मासे भागकर आनेवाले लोग कहते थे कि अंगरेज कलक्टर लोग तो जापानी पलटनका नाम सुनते ही जिला छोड़कर नौ-दो ग्यारह हो गए।

भैया—हाँ, डेढ़ सौ मीलपर जब जापानी पलटन थी, तो इंथावादा आदि पाँच-छः जिलोंके मोटी मोटी तनखाह पानेवाले सभी साहब बहादुर लोप हो गये। अब आज दुक्खू भाई रात बेसी हो गई है और किरिपके आने और कितनी ही बातें बतलानेका समय नहीं। अच्छा तो सलाम।

सलाम भैया!

अध्याय ६

जोंकें हिन्दुस्तानको नहीं छोड़ना चाहतीं

सन्तोखी—जो भैया, बिलायती जोंकोंको हिन्दुस्तान छोड़ना नहीं है तो किरिप्सको भेजा क्यों?

भैया—मजबूरी थी, सिंगापुर, मलाया, बर्मामें जापानी आ गये, चटगाँवमें बम गिरने लगा और डर मालूम होने लगा कि हिन्दुस्तान भी चला जायगा। बिलायती जरनैलोंकी तो यह हालत थी कि दो सबसे बड़ी लड़ाईके जहाजोंको बिना एक भी जापानी चुहिया मारे समुन्दरमें डुबवा दिया। जापानियोंने एक ही झोंकमें हिन्दुस्तानसे आस्ट्रेलियाकी सरहद तक अपनेको पहुँचा दिया। इसी वजहसे उन्हें थोड़ा सुस्तानेकी जरूरत थी। दिसम्बरमें ही अमेरीकाके ऊपर भी धोखासे जापानने हमला कर दिया था। अपने जान तो उसने बड़ी होसियारीकी थी और पर्ल बन्दरगाहके बहुतसे जंगी जहाजों, हवाई जहाजों और लड़ाईकी दूसरी चीजोंको बरबाद कर दिया, लेकिन उससे अमेरिकाके एक उँगली मुरक जानेसे ज्यादा कुछ नहीं हो सकता था और अब अमेरिका पूरी तौरसे लड़ाईमें आ गया।

सोहनलाल—अमेरिका और रूस जब साथमें हो गए तो अँगरेजोंको जीतनेमें क्या सक रह गई कि किरिपको भेजा?

भैया—चर्चिलके नाकमें दम हो गया। सिंगापुर और बर्मामें बरसों लड़ने-की बात कर रहे थे लेकिन वह कुछ हफ्तों हीमें चले गए। बिलायतके लोग घबराये। अमेरिकाने भी गला दबाया कि लड़ाई हँसीठट्ठा नहीं है। सभी सरबस लगाके लड़ रहे हैं। फिर, तुम हिन्दुस्तानमें इतने आदमी हैं, इतना लड़ाईका सामान तैयार हो सकता है, उसको अपनी ओर नहीं करोगे तो यह बुरी बात है। चीनने भी इसी बातको दुहराया, रूसने भी कहा। फ्रांसके खतम होते बक्त जो हालत इंग्लैंडकी हुई थी, वही हालत इस बखत थी। इसीलिए चर्चिलने क्रिपको भेजा। लेकिन मनसे नहीं।

दुखराम—मनमें धोखा रहा होगा भैया!

भैया—मनमें तो वह हर बखत सोच रहा था कि कैसे कोई गलती हिन्दुस्तान-वाले करें, और हम निकल भागें। उसको तो विश्वास था कि अब इंग्लैंड को हारनेका कोई डर नहीं, अब चीन, रूस, अमेरिका, इंग्लैंड एक ही नावपर हैं, जब सब डूबेंगे तभी न हम डूबेंगे। फिर काहेको पहिले हीसे हिन्दुस्तान जैसी सोनेकी चिड़िया अपने हाथसे खो दें। अमेरिकाकी ओरसे करनल

जानसन हिन्दुस्तानसे समझौता कराने हीके लिए दिल्ली आया था।

दुखराम—तो समझौता क्यों नहीं हुआ भैया?

भैया—हमारी बेवकूफी और बिलायती जोंकोंकी चालाकीके कारन।

दुखराम—बिलायती जोंकोंकी चालाकी तो मालूम है, लेकिन हमने बेवकूफी क्या की?

भैया—हमारे नेताओंने हमेसा बैलगाड़ीसे रास्ता काटा, हवाई जहाज क्या रेलगाड़ीपर चढ़कर भी वह घबरा जाते हैं। हमेसा जब रेल निकल गई, तब यह अपनी गठरी-मुठरी ले स्टेसन पहुँचते। इनके दिमागमें तनिक भी ख्याल नहीं आया कि बिलायती जोंकें दिलसे जो नहीं चाहतीं, उसे भी करनेके लिए मजबूर हैं। और किसीके पुन्य-प्रतापसे नहीं, लड़ाई उसे करवा रही है। लड़ाई बड़ी कठोर चीज है। कितना संहार होता है, कितने बच्चे तड़फड़ाकर मरते हैं, सब कुछ है लेकिन लड़ाई ऐसे भी मौके देती है कि जिसमें हाथ-पैर बाँधकर पटक दिए कैदी भी अपना बन्धन छुड़ा सकते हैं।

सोहनलाल—हमारे नेता तो पहिले हीसे यह बात कहते थे।

भैया—उलटा समझते थे, उलटा कहते थे। आज जोंकोंके पास इतने जबर्दस्त हथियार हैं कि उनके हाथके गुलाम सिरिफ अपने बलपर आजाद नहीं हो सकते। इसका मतलब यह नहीं कि अपनेसे जोर नहीं लगाना चाहिए।

सोहनलाल—माने आठ आना अपने जोर लगाना चाहिए और आठ आना बाहरकी आसा लगानी चाहिए।

भैया—आठ आना नहीं, चौदह आना अपने जोर लगाना होगा और दो आनाके लिए भी बाहरकी आसा करना ठीक नहीं। किसीसे भी धरम और परोपकारकी आसा नहीं रखनी चाहिए। जो कोई हिलता-डोलता है वह अपने कामसे। गंगा तुम्हारे नहानेके लिए बनारसमें नहीं बह रही है, पानीको नीचे गढ़ेमें पहुँचना है, गंगाके लिए समुन्दरमें जानेका यही सबसे आसान रास्ता है। गंगा जब अपना काम कर रही हो, तो उससे तुम भी अपना काम निकाल सकते हो। नहाके मैल धोओ या डूबकर सरग जाओ, पाइप लगाकर बनारसमें घर-घर पानी पहुँचाओ या सहर भरका मैला उसीमें बहा दो। अमृतं ऐसे सारे

पानीको खारे पानीमें मिलने दो या अकिल हो तो बड़ी-बड़ी नहरें निकालकर ऊसर-बंजर धरतीमें सोना काटने लगो। दुनियाको अपने मतलबके लिए बहुत-सा काम करना होता है, बस तिकाए (निशाना लगाये) रहो। तुम्हारा निसाना दौड़ रहा है, तुम ऐसा तीर लगाओ कि वह उस जगहपर पहुँचे, जहाँसे निसानावाली चीज न आगे बढ़ गई हो और न पीछे रही हो।

दुखराम—तो भैया, चलते-चलते अब निसाना लगाना है, बड़े मुस्किलका काम है।

भैया—इंग्लैंड, अमेरिका, चीन, रूस सबको अपने-अपने लिए फिकर पड़ी थी, और सब फसिहोंको खतम करना चाहते थे। जो आदमी फसिहोंके खतम करनेके लिए उनसे भी ज्यादा उतावला हो, और मुँहजबानी नहीं कामसे; उसको सबका बल मिलता। गांधीजीने बेहत्यावाली बात उठाकर हमेसा बाहरवालोंको उलटा समझनेका मौका दिया। जर्मनी, जापान और इटलीके फसिहा बेहत्या का नाम भी नहीं जानते। गांधीजीने एक बार आकासबानी की, दुनियाको रास्ता बतलाया कि जो हिटलर हत्या करके दुनियाको जीतना चाहता है, तो उससे लड़नेका सबसे अच्छा हथियार है बेहत्या।

दुखराम—माने आततायी खून टपकती नंगी तलवार लिए आवे, और हम अपने हाथका हथियार फेंककर उसके नीचे गरदन झुका दें। भैया! गाँधीजीने जोंक-पुरान पढ़ा है कि नहीं?

भैया—उनको भगती और भगवानके पुरानोंके पढ़नेसे छुट्टी मिले तब न जोंक-पुरान पढ़ें। वह तो जोंक किसीको मानते ही नहीं।

दुखराम—जब सभी भगवानके बनाये हुए हैं, तो काहे किसीको जोंक कहा जाय। जब भगवान ही सब कुछ करते-धरते हैं, तो हमको हाथ-पैर हिलानेसे क्या काम? जब भगवान हीने बिलायती जोंकोंको हमारी छातीपर कोदो दलनेके लिए ला बैठाया है, तो हमें फड़फड़ानेसे क्या काम!!

भैया—लेकिन दुनियाके लोग जानते हैं कि तलवारपर गरदन रख देनेसे फसिहोंका दिल नहीं पसीज जायगा। इसीलिए वह जानपर खेलकर लड़ रहे हैं। और गांधीजीके हाथसे छूटे इन सारे तीरोंको चर्चिल-अमरीने अपने पास

रख लिया, बीच-बीचमें दुनियाको दिखाते रहे हैं कि देखो यह तो हमें भी फसिद्दोंकी तलवारके नीचे गरदन रखनेको कहता है।

दुखराम—चर्चिल तो बिलायतके महामंत्री हैं न भैया! और यह अमरी कौन है?

भैया—"रामलखन दुनौ भैया" हैं; और चाहे समझ लो रावन के भाई कुंभकरन, चर्चिलसे एक अंगुल भी कम नहीं है। आठ पीढ़ीसे मुँहमें लगे खूनका ऐसा चसका पड़ा हुआ है कि वह कभी सोच भी नहीं सकता, कि जो आज गुलाम है, वह कभी आजाद होगा। उसको जो यह विस्वास हो जाय कि दो हजार बरस आगे चलकर हिन्दुस्तान हमारे हाथमें नहीं रहेगा, तो अफसोस-के मारे आज ही छाती फाड़कर मर जायेगा। वैसे तो दो-सौ सालसे बिलायती जोंकें हिन्दुस्तानपर राज कर रही हैं और एकसे एक चतुर-सुजान हिन्दुस्तान-की नकेल पकड़नेवाले आये होंगे, लेकिन चर्चिल-अमरी जैसी जोड़ी कभी नहीं मिली होगी। अच्छा जोड़ीसे इस बखत काम नहीं, किरिपवाली बात देखनी है।

दुखराम—हाँ भैया! वही सुनाओ।

भैया—किरिपने आते ही पहिले तो ऐसी बात कही कि हिन्दुस्तान बस लड़ाईमें पूरी तौरसे मदद करे और सोलहो आना राज हम हिन्दुस्तानियोंके हाथमें देनेके लिए तैयार हैं। दो-चार आदमियोंके सामने नहीं किया बल्कि रेडियो बाजामें बोल दिया जिसमें कि इंग्लैंड, अमेरिका, चीन, रूस सारी दुनिया जान ले, कि आज बिलाइतपर जोंकोंके सबसे निठुर सरदार चर्चिल-अमरीका राज नहीं है, बल्कि देवता राज कर रहे हैं। सारी दुनियाके लोग जो हिन्दुस्तान-के साथ समझौता करानेके लिए सारी तागत लगाये हुए थे, किरिपके इस बचनसे ही वे लोग आधे ठंडे हो गये। फिर महीने भर बात चलती रही। कभी हरियाली दिखाई देती और कभी सूखा ऊसर। चर्चिल-अमरी पूरी कोसिस करते कि दुनिया समझे कि हम बिल्कुल दूधके धुले हैं और अगर काम बिगड़ेगा तो हिन्दुस्तानियोंकी वजहसे।

सोहनलाल—हाँ, यह बात तो ठीक कह रहे हो भैया!

भैया—हमारे नेता इन बिलायती जोंकोंके सामने पासंगपर भी अकल नहीं

लगाना चाहते। वह सूखा चावल, दाल, तरकारी, लकड़ी, बरतन लेकर पकाके खानेके लिए तैयार नहीं हैं। वह कहते थे कि चावलका एक-एक कंकड़ चुनो, दालकी कराई निकालो, लकड़ीको धोओ, भात, दाल, तरकारी पकाओ, छौंक-बघार लगाओ, थालीमें परोसो। परोस करके कागजपर लिखो कि यह थाली हम आपको भेंट करते हैं, तब थालीमें हम हाथ डालेंगे।

दुखराम—यह तो मड़वेमें खिचड़ी खानेवाले दुलहेको भी मात कर रहे थे।

भैया—लेकिन यहाँ समधी वैसा नहीं था। इन अकिलके पूरे लोगोंको यह खयाल नहीं आया कि हमें कैसे आदमियोंसे पाला पड़ा है। वह यह भी नहीं समझ सके कि हमें कागज लिखकर चर्चिल-अमरी नहीं देंगे, जो वह लिखकर दें भी तो उसका मोल कूड़ेके ढेरपर पड़े कागजसे ज्यादा नहीं है।

सन्तोखी—सचमुच भैया! वह दस्तावेज लिखवाना चाहते थे? दस्तावेज कोला-कोलीका लिखवाया जाता है, अँगरेजोंने हिन्दुस्तानपर राज करनेसे पहले हम लोगोंसे दस्तावेज नहीं लिखवाया था।

मोहनलाल—तो कांगरेसी नेताओंको क्या करना चाहिए था, जो कोई जूठा टुकड़ा चर्चिल-अमरी फेंक देते, उसे उठाकर चाटने लगते।

भैया—जोंकोंके यहाँ जूठा फेंका नहीं जाता है; उनके यहाँ सहरके पाखाने-की चरबी अलग करके करोड़ोंका साबुन बेचा जाता है। वह इस वखत ऐसे पेंच-में पड़े थे कि तुम्हें वही तलवार दे रहे थे, जिससे एक दिन उन्होंने हिन्दुस्तान-को जीता था।

सोहनलाल—तलवार कहाँ दे रहे थे वह तो बल्कि सर्त कर रहे थे कि पलटन सारी हमारे हाथमें रहेगी।

भैया—और हिन्दुस्तानी सिपाहियोंके हाथमें तलवार नहीं दी जायगी, वह जयकार बोलके जापानियोंको मार भगाएँगे। सोहन भाई सोचो १८५७ के गदरके बाद किसी हिन्दुस्तानीको तोपखानामें भरती नहीं किया जाता था। अपनी अभी पिछली लड़ाई तक हिन्दुस्तानी सूबेदार मेजर तक ही बन सकते थे, कोई लेफटेन और कपतान भी नहीं बनाया जाता था। अब हिन्दुस्तानी हजारों

अफसर हैं, तोप ही नहीं हवाई जहाज और टैंक चलाते हैं। लड़ाईका महकमा छोड़कर बाकी सब महकमा हिन्दुस्तानियोंके हाथमें आ रहा था। जिना-जवाहिरके हाथमें सरकार होती। पलटन किसी अँगरेज जरनैलके हाथमें होती लड़ाईमें पचीस लाख नहीं एक करोड़ हिन्दुस्तानी जवान जानेके लिए उतावले होते, सबके हाथमें हथियार देना पड़ता।

सोहनलाल–लेकिन भैया यह सब तो मनका लड्डू है। चर्चिल-अमरीके आदमीके हाथमें हिन्दुस्तानी पलटन होती, क्या वह कभी ऐसा होने देता।

भैया—रोकना उसके बसकी बात नहीं थी। फासिहोंको मार भगानेके लिए अमेरिका, रूस, चीन और खुद इंगलैंडके लोग उतावले हैं। एक-एक करोड़ हिन्दुस्तानी लड़नेके लिए तैयार हों और चर्चिल-अमरी भाँजी मारें, तो कौन इसे बरदास करेगा। पहले अमेरिका ही कहता कि तुम खाली अमेरिकन लोगोंको ही मरवाकर जीतना चाहते हो। आने दो हिन्दुस्तानियोंको लड़ाईमें, नहीं तो ठीक नहीं होगा। फिर क्या चर्चिल-अमरी ना करनेकी हिम्मत करते। यह तो सोहन भाई, तुम मानते हो न कि लड़ाईमें सिपाहियोंकी बड़ी जरूरत है और जितना ही हिन्दुस्तानी सिपाही ज्यादा होते उतना ही अमेरिकन और अंगरेज सिपाहीको कम मरना पड़ता। अकेला हिन्दुस्तान ही जापानको खदेड़कर उसके घरमें घुसा देता।

सोहनलाल—लेकिन यह एक करोड़ हिन्दुस्तानी सिपाही भी तो अँगरेज जरनैलके हाथमें रहते?

भैया—जहाँ तक जापानी फासिहोंसे लड़नेकी बात थी, वहाँ तक वह अंगरेज-जरनैलके नीचे लड़ते और दिल खोलकर लड़ते। लेकिन यह एक करोड़की पलटन वह पुरानी हिन्दुस्तानी पलटन न होती, जो तनखाहके लिए लड़ रही थी; यह हिन्दुस्तानी नवजवान अफसर, पुराने अफसर नहीं होते जो नौकरी ढूँढ़ते-ढूँढ़ते लाचार होकर पलटनमें गये थे। इनमें हजारों ऐसे नौजवान जाते, जो देसको आजाद करनेके लिए तड़फड़ा रहे हैं। तुम जाते और तुम्हारे हजारों साथी जाते जो पहलेके अफसरों और सिपाहियोंको भी समझाते कि जापानी फासिहोंको खतम करो।

जिना जवाहिर जवानोंको पल्टनमें जानेके लिए कहते, वह खुद बर्मा और इटलीके मोरचेपर जाकर अपने जवान सिपाहियोंको बढ़ावा देते। जवान समझते, कि ये हमारे महामंत्री, ये हमारे लड़ाईके मंत्री। क्या तुम विश्वास करते हो कि तब भी हमारे ये करोड़ सिपाही अपनेको गुलाम सिपाही समझते?

सोहनलाल—लेकिन लड़ाईके बाद तो इन सिपाहियोंको बन्दूक छोड़कर घर जानेका हुकुम होता न?

भैया—कौन हुकुम देता? चर्चिल-अमरी, जिसमें कि वह फिर लाख-दो लाख गोरी पलटन रखके हिन्दुस्तानको पहिलेकी तरह गुलाम बनाते? वह नहीं हो सकता था। इसके लिए न हमारे जवान तैयार होते न जिना-जवाहिरकी सरकार होती। फिर बन्दूक, मशीनगन, टंक, तोप, हवाई जहाज, जंगी जहाज सबसे लैस एक करोड़ हिन्दुस्तानी पलटनके हथियारको छीननेके लिए चर्चिल-अमरीको उससे भी बेसी पलटन भेजनी पड़ती। क्या यह उनके बूतेकी बात थी।

दुखराम—न नौ मन तेल होता, न राधा नाचती।

भैया—जिस वखत दुक्खू भाई दिल्लीमें क्रिप कांग्रेसके नेताओंसे बातचीत कर रहा था, और कांग्रेसके नेता फसिझोंके साथ लड़नेका पूरा मनसूबा दिखा रहे थे, उधर अमेरिकाका जान्सन भी हिन्दुस्तानियोंको, और अंगरेज जोंकोंके पिट्ठुओंपर भी दबाव डाल रहा था, तो उस समय चर्चिल-अमरीको रात भर नींद नहीं आती थी। बिलायती जोंकें पानीके बाहरकी मछलीकी तरह छटपटा रही थीं। वह रात-दिन भगवानको मना रही थीं कि हिन्दुस्तानियोंके बुद्धिपर परदा पड़ जाता। उसी वखत उनके गोइन्दोंने दिल्लीसे खबर दिया कि हिन्दुस्तानियोंके दिमागपर परदा पड़ रहा है। वह सूखा सीधा लेनेके लिए तैयार नहीं हैं, एक-एक चीज पकाकर, परोसकर और अपने हाथसे खिलाने-के लिए कह रहे हैं।

सोहनलाल—यह बात भैया! ठीक नहीं कह रहे हो। कांगरेसके नेताओंने तो यही कहा कि और कुल महकमा मिल जाय, तो हम लड़ाईका महकमा

अभी अँगरेजी जरनैलके हाथमें रखनेके लिए तैयार हैं। लेकिन हमारे काममें बड़ा लाट कोई बाधा न डालें।

भैया—इसीको कहते हैं हाथसे खिलाना। चर्चिल-अमरोने क्रिपको भेजा और इतना दूर तक दबे इसके लिए तुमने क्या कोई पहिलेसे दस्तावेज लिखवाया था। लड़ाई होने न उन्हें मजबूर किया? अगर तुम तन-मन-धनसे फासिस्टोंसे लड़नेके लिए तैयार थे, तो तुम्हारे काममें बड़े लाट क्या उनके बड़े अफसर भी बाधा नहीं डाल सकते थे। तुम चाहते कि हिन्दुस्तानी सिपाहीकी तनखाह तीस रुपया नहीं साठ रुपया होनी चाहिए। साठ होनेपर भी वह अंगरेज सिपाहीसे बहुत कम रहते? फ्रांसने गोरे-काले सिपाहीकी तनखाह बराबर कर दी है, यह मालूम है न?

सोहनलाल—हाँ, मालूम है, लेकिन अँगरेज जरनैल रोक देता।

भैया—सोहन भाई! मत बच्चोंकी तरह बात करो। हिन्दुस्तानीको तनखाह लेना है, हिन्दुस्तानी सरकार तनखाह बढ़ाना चाहती है, तनखाह बढ़ानेसे सिपाहियोंको पैसा ही ज्यादा नहीं मिलेगा बल्कि उनकी हिम्मत भी बढ़ेगी। जरनैल कौन मुँहसे रोकता? क्या इससे अमेरिकावाले खुश होते? इंगलैंडके लोग खुस होते? क्या यह एक काम करके जरनैल सारी हिन्दुस्तानी पलटनको अपने खिलाफ न कर लेता? चर्चिल-अमरी छाती जरूर पीटते, लेकिन चुप रह जाते। सारी दुनिया उनका साथ नहीं देती। लड़ाईके बाद जब फासियोंसे लड़ना न रह जाता तो घर लौटे हिन्दुस्तानी सिपाही और अफसर जरनैलकी बात मानते कि जिना-जवाहिरकी? और दूसरी बात लो जब जापान चटगाँवके पास आ गया था तो जोंकोंके सिरताज लार्ड लिनलिथगोकी सरकारने हुकुम निकाला था कि जापानी पड़ोसमें आ गये हैं, हमारे पास इतनी बन्दूकें तो नहीं हैं कि लोग जितना चाहें उतना हम दें। लेकिन गाँव पीछे दो-दो बन्दूक हम देंगे। लिनलिथगो जो यह कह सकता था, और यह सच है कि वह सिर्फ कहना भर था, जिससे अमेरिका और बिलायतवाले जानें कि हिन्दुस्तानकी गोरी सरकार जापानियोंसे लड़नेके लिए लोगोंको तैयार कर रही है। जिना-जवाहिरकी सरकार जो उसी बातको दोहराती, तो लिनलिथगो कैसे रोकता?

सात लाख गाँवमें चौदह लाख ही बन्दूक नहीं आती, बल्कि वह यह भी हुकुम देती कि लोहार मिस्तिरीसे लोग और भी जितनी बन्दूक बनवा सकें बनवाएँ। रेलकी सड़कवाला लोहा अच्छा फौलाद है। मुँगेर, ग्वालियर और हजारों जगहोंमें ऐसे लोहार मिस्तिरी हैं जो बन्दूक बना सकते हैं, कारतूस तैयार कर सकते हैं।

दुखराम—तो भैया! हथियार मिलनेका रास्ता ही बिलकुल मिल गया था।

भैया—लड़ाईके कारण लोग गाँवमें भूखे मर रहे थे, सहरोंमें हालत बुरी थी। जिना-जवाहिरकी सरकार कहती कि लड़ाई जीतने के लिए अनाज बेसी पैदा करना जरूरी है। इसलिए सिंचाईका पूरा इन्तजाम करो, नये बाँध-बँधवाओ, नये खाँड़ कटवाओ, नई नहरें निकलवाओ, नये तालाब-कुएँ खुदवाओ। रेलके किनारे पड़ी सारी जमीनको आबाद करा दो, ऊसर-परती सबमें अनाज उपजाओ, गाँवमें कोई आदमी बेकार नहीं रहना चाहिए। काम करनेके लिए हरेकको आठ-आठ आना मजूरी मिलनी चाहिए। कौन इस कामको रोकता है। करोड़ों बेकार बैठे आदमियोंको काम मिलता, कई करोड़ बीघा जमीन आबाद हो जाती, कई करोड़ मन अन्न बेसी पैदा होता। जवाहिर-जिनाकी सरकारमें लाख-लाख रुपया घूस-रिसवतको ले करके करोड़पति अनाज चोरोंको आँख मूँदकर लूटनेका मौका न मिलता और न बँगालके साठ लाख आदमी मरते। नये कारखाने खोलना बिलायती जोंकें बिलकुल पसन्द नहीं करतीं। वह समझती हैं कि पिछली लड़ाईके वखत जब बिलायतसे कपड़ा नहीं आ सकता था तो हिन्दुस्तानमें कपड़ोंकी मिलोंके बढ़ानेका मौका दे दिया गया; जिसका फल यह हुआ कि आज हिन्दुस्तानको बाहरसे कपड़े मँगानेकी जरूरत नहीं रह गई। वह नहीं चाहतीं कि हिन्दुस्तानमें कारखाने और बढ़ें और उनके बिलायती कारखाने बन्द हो जायँ।

सोहनलाल—आज भी तो बड़े लाटके मेम्बर तीन छोड़ सभी हिन्दुस्तानी हैं फिर वह क्यों नहीं करवाते?

भैया—वह पेट पालनेके लिए गये हैं, जिना-जवाहिर, पेट पालनेके लिए

हिन्दुस्तानकी सरकार नहीं बनाते। वह कहते कि लड़ाईमें लारी और मोटरकी बहुत जरूरत है, हिन्दुस्तानमें लोहा कोयला है, मिस्तिरी-इञ्जीनियर हैं, फिर सात समुन्दर पारसे हजारों जहाजोंको लगाकर लारी ढोकर लानेका काम नहीं है। हिन्दुस्तान हीमें मोटरका कारखाना खुलना चाहिए। बताओ इसको कौन रोकता है?

सन्तोखी—कैसे रोकता भैया! यह तो लड़ाईके कामको ही रोकना होता न?

भैया—लाखों आदमी मलेरियामें मर गये। कुनैन सोनेके भाव मिलती है, कैसे कोई खरीदे? लड़ाईसे पहले गोरी जोंकोंके फायदेके लिए हिन्दुस्तानकी गोरी सरकारने हमारे देसमें कुनैनके बगीचोंको बढ़ाने नहीं दिया। अब भी तुम्हारे मरने-जीनेकी उनको परवाह नहीं है, चौथा बरस हुआ लेकिन तब भी कुनैनका अकाल वैसा ही है। जो कुनैन मिलती भी है, वह भी दवाई बेचनेवाले घड़ियाल खा जाते हैं।

दुखराम—कुनैन तो भैया! बड़ी कड़वी होती है कैसे दवाई बेचनेवाले खा जाते हैं।

भैया—डिस्टिक बोडके अस्पतालमें नहीं देखा है दुक्खू भाई! दवाई माँगने जाओ तो डाक्टर कह देता है कि नहीं है और मुँह उदास करके लौटो तो कमपोटर या दूसरा आदमी आके कानमें कहता है—"डाक्टर साहबके पास जो दवा नहीं है, लेकिन दाम खरच करो तो हम तुम्हारे वास्ते मेहनत करें।" फिर एक रुपयाकी चीज तुम्हें पचास रुपयामें मिलती है।

दुखराम—आदमीका जीउ जाता है और यह सब लूट मचा रहे हैं।

भैया—इसी तरह सहरोंमें दवाईवाले दूकानदार हैं। बड़ी दूकान है, बड़ा लिफाफा है, चसमा लगाये बड़े साहब बैठते हैं। कुनैन माँगने जाओ तो कहते है कि अभी खतम हो गई, दो-चार दिन बाद आओ तो मिलेगी। बाहर आओ तो वहाँ भी कोई आदमी कानमें कहेगा और एक रुपयाकी कुनैन पचास रुपयामें दिलवायेगा। हाँ, दरवाजेके रास्ते नहीं खिड़कीके रास्ते थोड़ा ठहरके तमासा देखो, तो देखोगे कोई दारोगा साहब, डिप्टी साहब या इन्सपेक्टर

साहब आये हैं। दुकानके काले साहबने खड़े होकर सलाम किया और कुरसी-पर बैठाया, सिगरेट दिया। पूछा—क्या सेवा करूँ? अफसरने कहा—यहां आधी छटांक कुनैन चाहिए? तुरन्त आलमारीसे कुनैन निकल आई। और दूकानके मालिक कहेंगे—हजूर! आधी छँटाक कुनैन मत लें, क्या जानें फिर कब आये। एक छटाँक ले लीजिए दामकी परवाह मत कीजिए। मुफ्त एक छटाँक कुनैन मिल गई। तुम उनसे जाओगे कहने कि हमारे लिए न किया तो कभी मानेंगे?

दुखराम—हाँ भैया! आजकल घूस-रिसवत क्या है, दिन-दहाड़े लूट मच रही है।

भैया—जिना-जवाहिरके उस तरहअनियाँ सरकारके सामने यह दिन-दहाड़े लूट नहीं चलती। दो-चारको लाख, हजारकी घूस दी जा सकती है, यहाँ तो हजारों मुँह भंडा फोड़नेके लिए तैयार होते। उस बखत न कुनैनका चोर बजार लगता, न अनाजका, न कपड़ेका।

सोहनलाल—यह तो बीती बात हो गई न भैया?

भैया—"बीती ताहि बिसारि दे, आगेकी सुधि लेय" ठीक है, लेकिन बीतीसे जो सिच्छा नहीं लेता वह आगे भी धोखा खाता है। जब क्रिप्सको इन्होंने दस्तावेज लिखनेके लिए कहा, तो चर्चिल-अमरीने कह दिया जो ये हमपर विसवास नहीं करते तो हम कैसे इनपर विसवास करें? अभी थोड़े दिन पहले गांधीजीने हमें हिटलरके सामने तलवार डाल देनेकी बात कही थी। जो हम इनके हाथमें सब कुछ दे दें, और कल ये लड़ाईमें मदद देनेके लिए चुप्पी साध जायँ तो यह अमेरिका, चीन, रूस, इंग्लैंडकी सारी जनताका गला काटना होगा। चर्चिल-अमरीको डर है अपने जोंक भाइयोंके गला कटने-का, लेकिन वह उसको साफ नहीं कहेंगे, वह सारी दुनियाकी जनताके गला कटनेकी बात करेंगे। कांगरेसी नेताओंने कहा था लेकिन अभी फसिस्टोंसे लड़कर नहीं दिखलाया था। चर्चिल-अमरीने दुनियाकी नबज टोई, मालूम हुआ लोग ढीले हो गये हैं, दोनों ओरको कसूरवार मानने लगे। फिर क्या था क्रिप्स अँगूठा दिखलाकर चला गया।

दुखराम—बड़ा गुस्सा आता है भैया, जोंकें बड़ी चालबाज हैं।

भैया—गुस्सामें आकर खम्भा नोचनेसे काम नहीं चलेगा दुक्खू भाई ! चालबाज न होतीं तो आज चार हजार बरससे दस जोंकें हजार कमेरोंको मुट्ठीमें पकड़े रहतीं। चालबाजीका जवाब गुस्सा नहीं है, उसका जवाब है उससे भी जबरदस्त चाल, लेकिन उसके लिए दिमागको ठंडा रखना पड़ेगा। क्रिप्स तो चला गया। बिलायती जोंकोंने खुसी मनाई। लेकिन जापान तो अब भी छाती-पर बैठा था, हिटलरी गुंडे तो अब भी रूसमें आगे बढ़ रहे थे। अफरीकाकी ओरसे भी जर्मनोंके हिन्दुस्तान आनेका खतरा हटा नहीं था। फिर अमेरिकाके लोगोंने, बिलायतके लोगोंने चर्चिल-अमरीका गला दबाना सुरू किया। उन्होंने सोचा कि लोग हमारी बातका बिसवास नहीं करते। कांगरेसवालोंने जो चिल्ला-चिल्लाके कहा है कि हम फसिहोंको पीसनेके लिए तैयार हैं; यह बातें भरसक हमने तो बाहर नही जाने दी लेकिन अमरीकाकी लाखों फौज आई है, उनके अखबारवाले भी सहर-सहर घूम रहे हैं; बात तो बाहर चली ही जाती है। हिन्दुस्तानसे तार भेजना रोक देते हैं तो वह हवाई जहाजसे उड़कर चीन चले जाते हैं। चीन जानेवाले हवाई जहाजोंमें बेसी अमरीकाके ही हैं। हम इनको रोकें कैसे ? फिर उन्होंने खूब दिमाग लगाया। चर्चिल-अमरी-लिनलिथगो और सब जोंकोंके खुर्राट सरदारोंने सोचनेमें अपना सारा दिमाग खाली कर दिया।

दुखराम—डर जो होने लगा कि फिर क्रिप्सकी तरह किसीको भेजना न पड़े।

भैया—किसके दिमागमें बात आई यह तो नहीं कह सकते लेकिन जब जुगती सुनाई गई तो चर्चिल-अमरी उछल पड़े। उन्होंने कहा—ठीक कहनेसे अब गला नहीं छूटेगा अब करनीसे दिखलाना होगा कि सचमुच कांगरेसवाले हम लोगोंके नहीं फसिहा जापानके दोस्त हैं।

दुखराम—क्या जुगत सोची भैया ?

भैया—कहनेमें बहुत मामूली है दुक्खू भाई ! उन्होंने सोचा कि हिन्दुस्तान-के सभी बड़े-बड़े नेताओंको पकड़कर एक ही दिन जेलमें डाल दो। नेताओंके

पकड़े जानेपर दुनियामें सभी जगह लोगोंको जोस आ जाता है, हिन्दुस्तानमें भी जोस आयेगा। फसिहा जापानके दलाल हिन्दुस्तानमें कुछ हई हैं। जब लोग जोसमें पागल होंगे उनके दिलमें अँगरेजोंके लिए घिना धाँय-धाँय जल रही होगी उस बखत ये जापानी दलाल कहेंगे—चलो रेल उखाड़ो, चलो तार काटो, चलो थाने-डाकखानेमें आग लगाओ, चलो इसटेसन जलाओ, चलो मालगोदाम लूटो। लोग समझेंगे—यह है असली देस भगत, दस-पाँच इस-टेसन जल गये, कुछ थाने-डाकखाने बरबाद हो गये, कुछ रेल-तार कट गये; लेकिन चर्चिल-अमरी जानते थे—"तार काटूं तरकुल काटूं' से हमारा कुछ भी नहीं बिगड़ेगा। और इसकी खबर हम सारी दुनियामें फैलायेंगे। देखनेवालोंको अपने खर्चपर देखनेके लिए भेजेंगे। दुनिया अपनी आँखों देखेगी कि काँगरेसवाले हिन्दुस्तानको जापानवालोंके हाथमें सौंपना चाहते हैं फिर जो आज हमारा गला दबा रहे हैं, उन्हें चुप्पी साधना पड़ेगा।

सोहनलाल—लेकिन यह तो झूठी बात है न भैया!

भैया—तुम्हारा कहना ठीक है सोहन भाई! काँगरेसका इरादा नहीं था। ८ अगस्त (१६४२ ई०)को बम्बईमें जो मीटिंग बैठी थी, उसमें और साफ-साफकर कहा गया था कि हम इंग्लैंड, अमेरिका, चीन और रूसके साथ कन्धेसे कन्धा मिलाकर फासिहोंसे लड़ेंगे। तन-मन-धन सब हम इसके लिये नेवछावर करेंगे। बेहत्या नहीं, भयानकसे भयानक हत्या बोल हथियार लेकर हम रनमें जायेंगे। सब बात साफ कर दी आखिरमें दो अच्छर यह भी कहा कि गाँधीजी बड़े लाटसे मिलकर समझौता करनेकी कोसिस करेंगे। नहीं तो सत्याग्रह करेंगे और कहेंगे "हिन्दुस्तानको छोड़ दो"। चर्चिल-अमरीने ऐसा अवसर देनेके लिए भगवानको धन्न कहा। ९ अगस्तको सारे हिन्दुस्तानके काँगरेसी नेताओंको पकड़कर जेलमें डाल दिया गया। तार और रेडियो बाजा खन-खनाने लगा कि काँगरेसी नेता जापानको बुलाना चाहते थे, हमने उनको पकड़-कर जेलमें डाल दिया। उनके आदमी रेल-तार काट रहे हैं। अँगरेज, अमे-रिकन, हिन्दुस्तानी पलटन आसाम और चटगाँवके सरहदपर जापानियोंके साथ लड़नेके लिए जानकी बाजी लगाकर बैठी है। जिन रेलोंसे उनको गोला-

बारूद, रसद-पानी मिलता, उन्हें काँगरेसी काट रहे हैं।"

दुखराम—अफ़सोस।

भैया—लोगोंने अपनी गलतीको माना। रेल-तार तो जहाँ-तहाँ कटा ही था, इसे कौन नकार सकता है। लड़ाईके वक्तमें दुसमनके पीछेकी रेल-सड़क-पुलको तोड़नेके लिए हजारों हवाई जहाजोंकी बलि चढ़ाई जाती है। जिस कामके करनेके लिए जापानी फसिहोंको न जाने कितने हजार अपने हवाई जहाजों और उड़ाकोंसे हाथ धोना पड़ता, वह काम उनके लिए मुफ़्त हो रहा था। जापानी खूब खुस हुए। लेकिन हमारे बाहरके मुलकोंके दोस्त बहुत निरास हो गये। महीनों तक उनको असली बातका पता न लगा। बरसों तक जापानी दलाल देस-भगतका जामा पहनकर लोगोंको कह रहे थे कि अब नेता जी सुभास बाबू जापानियोंकी फौज लेकर उतरना ही चाहते हैं।

सोहनलाल—नेताओंके जेलमें डाल देनेपर जो लोग चुप रह जाते, तो इससे दुनिया क्या समझ नहीं लेती कि हिन्दुस्तानी मुरदा हैं?

भैया—मुरदा समझते तो अच्छा था, लेकिन पागल समझना उससे बुरा है और बिश्वासघाती समझना तो और भी बुरा है। इंग्लैंड, अमरीका, चीन, रूसकी जनता हमारे लिए जोर लगा रही थी, वह समझती थी कि हम भी उन्हींकी तरह फसिहोंके दुसमन हैं। लेकिन हमारे अन्धेपनने हमसे ऐसा काम कराया कि जिसके लिए उन्हें भी लजाना पड़ा।

सोहनलाल—लेकिन सरकारने हम लोगोंपर जो जुलुम किया?

भैया—जुलुम किया और सोहन भाई ऐसा जुलुम किया है जिसको देखकर खून खौल जाता है। बलियामें जो कुछ हुआ वह पंजाबकी ओडायर शाहीको भी मात करता है।

दुखराम—ओडायर साही क्या है भैया!

भैया—पिछली लड़ाईके वक्त जब हिन्दुस्तानी लोगोंमें आजाद होनेका ख्याल बढ़ने लगा और पंजाबके लोग पलटनमें ज्यादा थे, उसी पंजाबमें जोस और ज्यादा बढ़ने लगा, तो वहाँका लाट ओडायर सोचने लगा—जो यह जोस दबाया नहीं गया और लड़ाईसे लौटे सिपाही भी इसमें सामिल हो गये तो

फिर बिलायती जोंकोंके लिए खैरियत नहीं। उसने पलटन, पुलिस सबको खुली छूट दे दी, जालियाँवाला बाग (अमृतसर)के एक हातेके भीतर सभा हो रही थी जरनैल डायरने मसीन लगवा दिया और डेढ़ हजारसे ऊपर बच्चे, औरतों, मरदोंको भून डाला। इसके बाद तो पूछो मत कितनी ही औरतोंका सिन्दूर मिट गया, कितनी ही औरतोंकी इज्जत लूटी गई। पुलिसने धन लूट-कर घर भर लिया। आदमीकी जानका मोल एक गोलीसे ज्यादा नहीं था, धन उससे भी सस्ता था। इज्जत और भी सस्ती थी।

दुखराम—बस करो भैया! आदमीको जिउसे ज्यादा आजादीको प्यार करना चाहिए। कीड़ों-मकोड़ोंकी जिन्दगी धिक्कार है।

भैया—लेकिन ओडायर साही और बलियाके हैलट साहीमें फरक है। ओडायर साही लड़ाई खतम होनेके बाद हुई थी, इसलिए जालियाँवाला बाग और पंजाबके जुलुमकी खबरें दुनिया भरमें फैलीं। सब जगह थू-थू होने लगी और बिलायती जोंकोंकी साख घटने लगी। वह डर गईं, उन्होंने फिर जालियाँ-वाला बागको दुहराया नहीं। लेकिन हैलट साहीको लड़ाईके बीचमें खुले खेलनेका मौका मिला, और अच्छे बहानेके साथ। इससे अच्छा बहाना क्या होगा कि ये लोग रेल-तार काटकर जापानको बुला रहे थे। बलियामें जो जुलुम हुआ है वह दुनिया छोड़ सारे हिन्दुस्तानमें भी पूरे तौरसे नहीं आया। लेकिन वह जरूर आयेगा किसी दिन और पुलिस जो अपने भाइयोंके धन-इज्जतको लूटनेमें सबसे आगे रही, उसके एक-एक आदमीको लोग भूलेंगे नहीं।

सोहनलाल—आजादीके लिए इतनी बड़ी लड़ाई हुई लेकिन कमूनिस्त अपनेको इतना बड़ा इनकलाबी कहते हैं, मरकस बाबाके चेला बनते हैं और इस लड़ाईमें उनका पता नहीं लगा।

भैया—कमूनिस्तोंकी चली होती तो १९४२के अगस्तमें जो पागलपन देखा गया वह होता ही नहीं।

सोहनलाल—अंगरेजोंसे लड़ाई करना क्या पागलपन है?

भैया—यही तो वह समझ नहीं रहे थे कि किससे लड़ रहे हैं। चर्चिल-

अमरी जो चाहते थे वही, करना जो आजादीके लिए लड़ना है तब तो हद हो गई।

सोहनलाल—कांगरेसके हुकुमसे लोगोंने सब कुछ किया था ?

भैया—गांधीजीनें उसी अगस्तमें बड़े लाटको लिख दिया था कि इस पागलपनकी जिम्मेवारी कांगरेसके ऊपर नहीं है, गवरमेंटने लोगोंको पागल बनाके यह सब कराया है। गांधीजी जेलमें थे, तब तो उनके नामसे झूँठ-साँच सभी बातें चलायी जाती थीं। अब तो गांधीजी जेलके बाहर हैं और उन्होंने एक नहीं बीसियों बार साफ करके कह दिया है कि कांगरेसकी इसमें कोई जिम्मेवारी नहीं थी, कांगरेसने सारा भार मुझपर दिया था और मैंने कभी ऐसा हुकुम नहीं दिया।

सोहनलाल—तो यह सब कुछ किसने कराया ?

भैया—असलमें तो जाल बुना था चर्चिल-अमरीने, फिर दूसरे झोंकने-वाले थे जापानी दलाल बाकी थे पागलपनमें पड़ गये।

सोहनलाल—कम्निस्त भी यही कहते हैं और हम तो समझते हैं वह अंगरेजोंके आदमी हैं।

भैया—मैंने कहा नहीं कि कम्निस्तोंकी बात चली होती तो यह पागलपन नहीं होता। बम्बई, कानपुर, कलकत्ता जहाँ लाखों मजदूर रहते हैं वहाँ उन्होंने अपने मजदूरोंको समझाया और कोई रेल-तार तोड़ने नहीं गया। कम्निस्त अंगरेजोंके कैसे आदमी हैं यह तो इसीसे पता चल जाता है कि "तार काटूँ तरकुल काटूँ"के खिलाफ कहते रहनेपर भी एक हजार कम्निस्तोंको जेलमें डाल दिया गया। सोनपुर (छपरा जिला)में एक कम्निस्त लोगोंको रजिस्टरी दफ्तर फुँकनेसे मना कर रहा था और उसे पुलिसने फँसाकर पाँच सालकी सजा दिलवा दी। दूसरा कम्निस्त साथी कांगरेस नामसे बटती जाली नोटिसके इसलिए जेबमें रखा था कि लोगोंको समझाये कि यह गलत है। पुलिसवाले जानते थे कि वह कम्निस्त है क्योंकि आजकल पुलिसका सबसे बड़ा काम है कम्निस्तोंके पीछे-पीछे लगा रहना; लेकिन तो भी उस नौजवानको दो सालके लिए जेल भेज ही दिया गया। आज भी पहले और तबके मिलाकर एक

हजार कम्निस्त जेलोंमें हैं। मैं भी कम्निस्त हूँ, क्या कहते हो मैं अंगरेजोंका आदमी हूँ?

सोहनलाल—मै सबको नहीं कहता।

भैया—मैं सबकी जिम्मेवारी लेता हूँ, क्योंकि कोई भी देशद्रोही कम्निस्तोंके भीतर नहीं रह सकता, वहाँ तपे-तपाये ही लोग रह सकते हैं। सोहन भाई, जान पड़ता है आपने कम्निस्तोंके बारेमें दूसरोंके मुँहसे सिर्फ सुना भर है। आपको याद रखना चाहिए कि अंगरेजी सरकार जो किसीको सबसे अधिक खतरनाक समझती है तो वह यही कम्निस्त हैं।

दुखराम—सुरजपर जो थूकेगा भैया वह उसीके ऊपर आयेगा।

भैया—तो यह मालूम हुआ न सोहन भाई! जोंकोंके मनमें क्या है! जोंकें तीनों कालमें हिन्दुस्तानको आजाद नहीं होने देंगी। लेकिन तीनों काल क्या एक काल भी उनके हाथमें नहीं है। जो उनके चाल और जालमें नहीं फँसेगा और अपनी ताकतको मजबूत करेगा और दुनियामें क्या हो रहा है उसको आँख खोलकर देखता रहेगा फिर इस सबके मुताबिक अपना दाव चलायेगा, वह जोंकोंको पछाड़कर छोड़ेगा।

सन्तोखी—जोंकोंकी चाल बड़ी गहरी होती है भैया अब न मालूम हुआ कि कैसे वह लोगोंको पागल बना देती है और अपना काम सिद्ध करती हैं और तुमने भैया यह भी ठीक कहा कि हम लोगोंको अपना दिमाग गरम नहीं होने देना चाहिए, खूब ठंडे दिलसे सोचना चाहिए।

भैया—खूब ठंडे दिलसे सोचना चाहिए लेकिन हमला पूरी ताकतसे करना चाहिए, जरा भी हिचकिचाना नहीं चाहिए।

सोहनलाल—यह भी तो बीती बात है भैया, आगे हिन्दुस्तानकी कोई उम्मेद है?

भैया—नाउम्मेद वही होता है जो हाथपर हाथ रखकर मनकी खिचड़ी पकाता है। हम लोगोंको सुराजसे भी आगे जाना है। सुराजमें सुराज लेकर गोरी जोंकोंसे छीनकर काली जोंकोंके हाथमें अपना गला दे देनेसे काम नहीं चलेगा। इतनेसे यह दुनियाका नरक खतम नहीं होगा।

अध्याय १०

पूरबका युद्ध

सोहनलाल—भैया ! आपके ख्यालमें यह लड़ाई कब तक खतम होगी।

सन्तोखी—हाँ भैया ! पाँच बरस हो गया लड़ाईको, अब बड़ी तकलीफ होती है, सब चीज महँगी हो गई हैं और दिनपर दिन महँगाई बढ़ती जा रही है। तुमने ही कहा कि बंगालमें साठ लाख आदमी मर गये, बिहारमें एक लाखसे ऊपर आदमी हैजा-मलेरियासे खतम हो गये। इधर भी हैजा बढ़ने लगा है।

भैया—लड़ाई इन्हीं जोंकोंकी देन है, वे समझती हैं अपने आरामके लिए जो बीस बरसमें एक लड़ाई आवे और करोड़ों आदमी मर जायँ तो कोई परवाह नहीं। आज दुनियासे जोंकें हट जायँ तो लड़ाईका कोई काम न रह जायगा। लेकिन सन्तोखी भाई, अब लड़ाई बहुत दिनों तक नहीं जायगी। हिटलर तो अब खतम होनेवाला ही है।

सोहनलाल—चर्चिल और दूसरे लोग तो दो ही महीनेमें हिटलरके खतम होनेकी बात कहते हैं।

भैया—कहते हैं, लेकिन, वह काम नहीं करते जिससे दो महीनेमें लड़ाई बन्द हो जाय। मैं जोतिसी नहीं हूँ, कि झूठी-सच्ची बातें बनाऊँ लेकिन हिटलर जितना कमजोर हो गया है और जिस तरह उसके ऊपर मार पड़ रही है, उससे मैं समझता हूँ कि हिटलर इस जाड़ेसे बचकर आगे नहीं निकल सकता। चर्चिल और उसके जरनैलोंकी चलती तो दो-दो आदमी भेजते और जौ-जौ भर आगे बढ़ते। देखा न वे इटलीमें क्या कर रहे हैं। फ्रांसमें क्या किया। जो अमेरिकन पलटनने हिम्मत न दिखलाई होती तो फ्रांसमें उन्होंने छुटिया ही डुबा दी थीं।

सोहनलाल—चर्चिल ऐसा क्यों सोचता है भैया। हिटलर भी तो यही चाहता है।

भैया—हिटलर दूसरे मतलबसे चाहता है वह समझता है कि लड़ाई अगर दो-चार साल और ले जाये तो हमारे दुसमन थक जायँगे फिर सुलह कुछ ऐसी होगी, जिसमें हमारी जान बच जायगी। चर्चिल सोचता है कि जो एक सालमें लाख आदमी मरेंगे, तो इंग्लैंडके लोग बीच बीचमें भूलते जायँगे, लेकिन जो एक महीनेमें एक लाख आदमी मर गये तो घर-घरमें लोगोंको इसका बहुत ख्याल रहेगा और उनको मालूम होने लगेगा कि लड़ाईमें कितना बलिदान देना पड़ रहा है। उनके कानोंमें मरकस बाबाके चेले यह बात डाल ही रहे हैं कि लड़ाईका कारन यही जोंकें हैं। पिछली लड़ाई इन्हीं जोंकोंके मारे हुई, फिर २१ बरस तक चेम्बरलेन, बाल्डविन और उनके भाईबन्द खूब सोना बटोर रहे थे ठीका बेइमानी सब कुछ करके और चालिस-चालिस लाख तक मजूर बेकार भूखों मरते रहे। अब इस लड़ाईके बाद भी वह वैसा ही करना चाहेंगे लेकिन एक-एक महीनेमें लाख-लाख हमारे भाई इसलिए नहीं मर रहे हैं कि जोंकें फिर सोना बटोरें और मजूर फिर लंदनकी सड़कोंपर भूखों मरें। चर्चिल चाहता है कि घाव छोटा-छोटा हो जल्दी-जल्दी भरता जाय। लोग उसे भूलते जायँ। लेकिन सोहन भाई १९१८वाला इंगलैंड नहीं है।

दुखराम—क्या भैया इंगलैंडमें भी लोग जोंकोंके विरोधी हैं।

भैया—मैंने बतलाया नहीं दुक्खू भाई कि ६ सौ परिवार हैं जिनके पास सबसे अधिक धन है। बल्कि पूरा हिसाब लगे तो वह इस तरहसे है। गिन्नी तो अब सपना है लेकिन कागजी गिन्नी या पौण्ड १३ रुपयेका होता है। इंग्लैंड (१९४३ की सारी आमदनी ८ अरब १७ करोड़ २० लाख है, जिसमें २ अरब ६ करोड़ ६ लाख (७५·५ सैकड़ा) मजूरोंको मिलता है। जमीदार और पूँजीपति दो अरब ८१ करोड़ १० लाख पौंड (३४·४ सैकड़ा) लेते हैं। सरकारी नौकर १ अरब ३६ करोड़ ६० लाख (१६·८ सैकड़ा) चूसते हैं; पलटन आदि का खर्च १ अरब ८ करोड़ ६० लाख (१३·२ सैकड़ा)। सबसे बेसी संख्या है वहाँ मजूरोंकी और सबसे कम संख्या है जमीदारों और पूंजीपतियोंकी। लेकिन कितना फरक है दोनोंमें। इंग्लैंडके १००मेंसे ६ आदमी ८० सैकड़ा सम्पत्तिके मालिक हैं और १००मेंसे ७७ लोगोंके पास सिर्फ ५ सैकड़ा धन है।

बल्कि इस तरह समझो दुक्खू भाई ! इंग्लैंडमें ४ करोड़से कुछ बेसी आदमी बसते हैं, जिसमें १ लाख आदमियोंके हाथ हीमें सारे इंग्लैंडके धनका चार पचैयाँ (४/५) है । ८ हजार धनी तो ऐसे हैं जिनकी आमदनी २ सौ पौंड हफ़्ता या ४ सौ रुपया रोजसे अधिक है । एक तरफ तो चार-चार सौ हजार-हजार रुपया उड़ानेवाले थोड़े लोग हैं और दूसरी ओर भूखों मरनेवाले ।

दुखराम—सुनते हैं भैया, इंग्लैंडमें लड़का-लड़की सब जबर्जस्ती पढ़ाये जाते हैं कोई मूरख नहीं रहता फिर वह इन जोंकोंका टाट क्यों नहीं उलट देते ?

भैया—पढ़ना अच्छी चीज है दुक्खू भाई, पढ़नेसे आँख खुलती हैं, देस-बिदेस, आगे-पीछेकी बात मालूम होती है । लेकिन दिमागमें जो बेसी गोबर हो, या आदमी पतित स्वार्थी हो तो विद्या बिचारी कुछ नहीं कर सकती तिसपर वहाँ कमेरोंको धोखा देनेवाले बहुत हैं । अभी तक उनको ऐसे ही नेता मिलते रहे हैं जो भीतरसे जोंकोंकी दलालीका काम करते थे । कमेरोंको उन्होंने खूब फोड़ कर रखा था, जिसमें वह कुछ देखने न पावें । उनकी आँखमें खूब धूल झोंकी जाती थी ।

दुखराम—तो भैया, अब इन धोखेबाज नेताओंसे बचनेके लिए कोई काम हो रहा है ?

भैया—एक लाख कम्निस्त दिन-रात मजूरोंकी आँख खोलनेमें लगे हुए हैं । कम्निस्तोंके अखबार (डेली वर्कर)को रोज नब्बे हजार छापने हीका कागज मिलता है । और पढ़नेवाले अभी ६ लाखसे ज्यादा हैं । कागज मिले, तो उसे रोज २५ लाख छपते देर न लगेगी । लेकिन जोंकोंकी ओरसे जो अखबार निकलते हैं उनमें किसीको १५ लाख, किसीको १४ लाख, किसीको १० लाखका कागज मिलता है । जोंकोंने तो बहुत बरसों तक कम्निस्तोंके अखबारका छापना ही बन्द कर दिया, लेकिन जब मजूरोंमें गुस्सा फैलने लगा तब छापनेका हुकुम दिया ।

दुखराम—तो भैया बिलायतमें भी कमेरे हमारी तरह ही पीसे जाते हैं और जोंकोंको खतम करनेके लिए तैयार भी हो रहे हैं ?

भैया—बिलायत-बिलायत सुनते-सुनते हमारे यहाँ लोग समझने लगते हैं

कि सब टोपी-टोपी एक हैं, लेकिन वहाँ भी दुक्खू भाई दो जात हैं। मुट्ठी भर जोंकोंकी जाति, जिनके पास सारा धन है और करोड़ों-करोड़ मजदूर, जिन्हें रोज नून-तेल लकड़ीकी फिकर पड़ी रहती है। बहुत दिनोंसे कमेरोंको वहाँ धोखा दिया जाता रहा। पिछली लड़ाईसे उनकी आँख थोड़ी-थोड़ी खुली। उन्होंने समझा जोंकोंकी चालको। इसीलिए दो बार उन्होंने मजूर नेताओंको बिलायतकी बड़ी पंचायत (पारलामेन्ट) में इतने ज्यादा मेम्बर चुनकर भेजे, कि उन्होंने मजदूरोंकी सरकार बनाई। लेकिन इन मजूर नेताओंमें बहुतसे तो जोंकोंके दलाल थे। मेकडानल जैसेका कुछका तो भंडाफोड़ भी हो गया। इन नकली नेताओंने मजूरोंको बहुत नुकसान पहुँचाया।

दुखराम—लेकिन भैया "एक बार हरावै (जहँ डावै) तौ बावन बीर कहावै" धोखा बार-बार नहीं दिया जा सकता।

भैया—सो तो ठीक है दुक्खू भाई, पहिले जोंकें मीठी-मीठी बात करके धोखा देती रहीं। फिर लड़ाईके बाद जब मजूरोंकी आँख खुली तो नकली नेता आ गये जो कि थे जोंकों हीके दलाल। अबकी लड़ाईके बाद, यही समझो कि दूधका जला छाछको फूँक-फूँकके पियेगा। आज बिलायतके वही मजूर हैं जो हिन्दुस्तानके बारेमें बराबर जोर लगा रहे हैं।

सोहनलाल—हमारे लिए तो जैसी ही बिलायती जोंकें वैसे ही बिलायती मजूर, मजूर सरकार भी तो दो बार बिलायतमें आई थी, उसने ही क्या किया ?

भैया—जो सोहन भाई तुम यह समझते हो कि कोई दूसरा आके स्वराज घोलकर घुटुककर पिला देगा तो यह लड़कपन है। मैंने कहा नहीं था कि हमें अपने बल-बूतेपर भरोसा रखना चाहिए। और आपको यह भी मालूम है कि जिन मजूर नेताओंने अपनी सरकार बनाई थी वे जोंकोंके दलाल थे। उन्होंने खुद अपने ही कमेरे भाइयोंके साथ विस्वासघात किया।

सोहनलाल—तो अब भी आप कैसे कह सकते हैं कि दूसरे विस्वासघाती नेता नहीं पैदा होंगे ?

भैया—जो कमेरे गाफिल पड़े रहेंगे तो बिलायतमें भी विस्वासघाती नेता पैदा होंगे और हिन्दुस्तानमें भी पैदा होंगे, इसको कोई रोक नहीं सकता। यह तो

कमेरोंको परखना होगा । लेकिन यह तो तुम मानोगे कि बिलायतके कमेरे इनके विश्वासघातको समझने लगे हैं । बिलायती बूढ़े मजूर नेताओंपर तो हमें बिलकुल विश्वास नहीं करना चाहिए । लेकिन बिलायती मजूरोंके साथ हम वैसा नहीं कर सकते । बिलायती मजूर जानते हैं कि हिन्दुस्तानके कमेरे और बिलायतके कमेरे दोनोंको मिलकर जोंकोंको उखाड़ फेंकना होगा । रूसमें भी काले और गोरे कमेरोंने ऐसा ही किया । बिलायती कमेरे जब हमारी ओर हाथ मिलानेके लिए अपना हाथ फैलाते हैं, तो परोपकारके लिए नहीं ऐसा नहीं करते, बल्कि वह समझते हैं कि हमारा हित और स्वारथ इसीमें है । इसी तरह हिन्दुस्तानी कमेरोंको भी बिलायती कमेरोंसे हाथ मिलाना होगा । हाँ, मैं कह रहा था कि चर्चिल क्यों दो सिपाही और एक अँगुलकी चालमें लड़ाई लड़ना चाहता है । लेकिन बेचारेकी बात चलती नहीं । ऐसी आँधीमें पड़ा है जोकि आगे नहीं बढ़ता तो पैर उखड़ जाते हैं और तोंदके बल गिर जाना पड़ता है । दो महीनेसे अंगरेजी पलटन फ्लोरेन्सके पास बैठी मत्था मार रही थी, और एक ही महीनेमें लाल पलटन पाँचसौ मील बढ़कर पोलैंडकी राजधानी वारसाके पास पहुँच गई । अब वह जर्मनीके भीतर लड़ रही है । लाल पलटन एक-एक दिनमें बीस-बीस मीलसे अधिक आगे बढ़ी है । हिटलरने जब धोखेसे सोवियतपर हमला किया था तो उस वक्त भी वह कभी इतनी तेज चालसे आगे नहीं बढ़ा । चर्चिलके जरनैलोंके मनका होता तो जैसे वह दो महीना तक समुन्दरसे १० मीलपर बैठे रहे वैसे ही अब भी करते लेकिन अमेरिकन भी जान पड़ता है लाल पलटनकी ही तरह हिटलरकी जिंदगीको बढ़ाना नहीं चाहते । अमेरिकनोंकी ही बहादुरी है जो आज हिटलरी गुंडोंको पेरिस छोड़नेके लिए मजबूर होना पड़ रहा है । अभी हालमें जो हिटलरके कई जरनैलोंने भगवानके भेजे अपने नेताको मार डालना चाहा, वह यही बतलाता है कि अब पलटनके बड़े-बड़े जरनैलोंको भी हिटलरकी हारका निश्चय हो गया । हिटलरने पचीसों जरनैलोंको गोली मरवाया, लेकिन इससे क्या जरमन लोग समझ नहीं पायेंगे कि उनके भागमें क्या बदा है ?

दुखराम—तो भैया ! जब जरनैलोंने ही मत्था पर हाथ रख दिया तो दूसरोंका

क्या भरोसा होगा।

भैया—ऊपरसे जरमनीका कौन सहर है जहाँ रूस, अमेरिका या इंग्लेंडके हवाई जहाज न पहुँचते हों। फ्रांसमें पच्छिमसे भी हमला हो गया और जर्मनोंको भागते-भागते पेरिस तक पहुँचा दिया गया। दक्खिनसे भी हमला हो गया, और जर्मनोंको पीछे हटना पड़ रहा है। इटलीमें उतनी तेजीसे तो नहीं, लेकिन जर्मन पिट रहे हैं। यूगोस्लावियामें मारसल तीतोने ही जर्मनोंके नाकमें दम किये थे। अब तो वहाँ पर भी अंगरेज और अमेरिकन फौज उतर गई। उधर लाल पलटन भी रूमानियाँ होते यूगोस्लावियामें मारसल तीतोसे मिलने आ रही है। इसलिए यह तो साफ है कि हिटलरका अन्त आ गया। सोहन भाई, हिटलरके अन्तके बाद यूरपमें क्या होगा जोंकोंका राज होगा या जनताका। इसके बारेमें इस वक्त आप न पूँछे मैं इसे कह चुका हूँ। किसी दिन जब हम दोनों ही रहेंगे तब बात कर लेंगे।

सोहनलाल—मैं तो भैया! समझ रहा हूँ कि जोंकें चाहे कितना ही तिकड़म लगायें लेकिन यूरपकी जनता वही करेगी जो स्तालिन दादा सुझायेंगे। लेकिन हिटलरके खतम होने हीसे तो लड़ाई खतम नहीं हो जाती। अभी तो इधर पूरबमें जापान बैठा ही है।

भैया—ठीक है। जापानके बारेमें कुछ कहना एक तरहसे बहुत आसान है और दूसरी ओर बहुत मुस्किल भी है।

दुखराम—क्यों भैया! बहुत आसान भी है और बहुत मुस्किल भी है।

भैया—बहुत आसान इसलिए है दुक्खू भाई कि हिटलरके हार जानेपर इंग्लेंड और अमेरिकाकी सारे फौज, सारे जंगी जहाज, सारे हवाई जहाज जापान हीपर झुक पड़ेंगे। जापानकी अब पहिले जैसी ताकत नहीं है, यह तो इसीसे मालूम हो गया कि कहाँ दिल्ली पहुँचनेके लिए उसने आसामपर बड़े जोर-सोरसे हमला किया था। लेकिन रेलके किनारे तक भी न पहुँच सका। जंगल-जंगलमें ही चार महीने बीत गये और अन्तमें पचासों हजार आदमियोंको मरवा कैदी बनवा उलटे पाँव बर्मामें भाग जाना पड़ा। अब हिन्दुस्तानी, अंगरेजी और अमेरिकन फौजें बर्मामें घुस गईं हैं। उधर चीनी और अमेरिकन

फौजें मेतकिना और रेलके कितने ही इसटेसनोंको जापानसे छीन चुकी है, सैकड़ों टापू अमेरिकनोंने जापानियोंसे छीन लिए। और अब तो रोज ही जापानके अपने शहरोंपर अमेरिकन हवाई जहाजोंके बम गिर रहे हैं।

दुखराम—कलकत्तामें हमारे भाई-बहिनोंको जापानी गुंडोंने बम गिराके मारा था, उसका खूब बदला लिया जा रहा है भैया!

भैया—खूब बदला लिया जा रहा है दुक्खू भाई! मैं तो समझता हूँ कि वहाँवाले बहुत पछताते होंगे। जापानके मकान बहुत ज्यादा लकड़ीके होते हैं। ईंट-चूना, मट्टी-सीमेन्टकी दीवारें वहाँ बहुत कम होती हैं।

दुखराम—तब तो भैया महल्लेके-महल्ले होलीकी तरह धायँ-धायँ जलते होंगे!

भैया—हाँ, इसका बहुत अफसोस है, लेकिन इस सारे पापकी जिम्मेवारी जापानी जागीरदारों और पूँजीपतियोंके सिरपर है। पूँजीपतियोंको करोड़से संतोस नहीं होता वे अरबपती बनना चाहते थे। जापानी जागीरदार जरमनीकी तरह ही फौजोंके मालिक हैं, बड़े-बड़े अफसर जागीरदारोंके लड़के हैं। वह, कहते हैं, बाकी सारी दुनिया तो आदमियोंसे पैदा हुई लेकिन हम ही हैं जो सूरज-देवीसे पैदा हुए।

सन्तोखी—सूरज देवता कि सूरजदेवी?

भैया—हाँ, वह सूरजको सूरजदेवी ही कहते हैं और अपनेको बेबापसे पैदा हुआ मानते हैं। हिटलरने कहा था कि भगवानने जर्मन जातिको दुनियापर राज करनेके लिए भेजा है, और जापानी फसिहा सूरजदेवीका पुत्र कहकर सारी दुनियाको गुलाम बनाना चाहते हैं। लेकिन हिटलरकी तरह उनका भी मनसूबा मनका मन ही में रह गया।

दुखराम—मरकस बाबाकी सिच्छा वहाँ पहुँची कि नहीं भैया?

भैया—पहुँची है दुखराम भाई, लेकिन कमूनिस्तोंके खूनसे वहाँकी जोंकोंने खूब अपना हाथ रँगा है। पिछली लड़ाईके बाद तो एक-एक बार छः-छः सात-सात हजार तक मरकस बाबाके पन्थके माननेवाले जेलमें ठूसे गये हैं। लेकिन वह नफा तो जाता है बेसी पूँजीपतियोंके पेटमें, लेकिन जोर ज्यादा है तालुकदारों

और उनके लड़कोंका क्योंकि पलटनके वही मालिक हैं।

दुखराम—भैया, वहाँ बड़ी पंचायत है कि नहीं और मेम्बर वोटसे चुने जाते हैं या कैसे ?

भैया—है नामकी बड़ी पंचायत और वोट भी लिया जाता है लेकिन जापान बड़ा निर्लज्ज जोंक देश है। सहरोंमें जैसे हमारे यहाँ गुंडे रहते आये हैं न !

दुखराम—जोंक गुंडे भैया !

भैया—जोंक गुंडे नहीं भाई लाठी छुरा चलानेवाले जोंक ! वैसे गुंडे जापानमें बहुत जबरजस्त होते हैं। एक गुंडेके पास तो कई हवाई जहाज थे।

सोहनलाल—अमेरिकामें भी सुनते हैं कि ऐसे गुंडे होते हैं ?

भैया—हाँ, अमेरिकामें भी होते हैं। लेकिन जापानमें ऐसे गुंडोंकी जैसी इज्जत होती है वैसी वहाँ नहीं होती।

सोहनलाल—जापानमें राजाको, सुनते हैं, देवता मानते हैं।

भैया—कमेरोंकी आँखोंमें धूल झोंकनेके लिए जोंकें न जाने कितने नाटक खेलती हैं। किसानों-मजूरोंको तो यही कहकर बेवकूफ बनाया जाता है कि सूरज-देवाका अपना खून तेन्नोके देहमें है।

दुखराम—तेन्नो क्या है भैया !

भैया—जापानके राजा या मिकाडोको तेन्नो कहा जाता है। तेन्नोका जिधर महल है उधर पैर करके नहीं सोया जाता। जोंकोंका इसीमें फायदा है कि लोग उल्लू बनें और तेन्नोको दुनिया भरके उपर समझें। कहा जाता है कि ढाई हजार बरससे जापानमें एक ही राजवंश राज कर रहा है। किताबोंमें यही बात छपने पाती है, लेकिन बात यह झूठी है। तेन्नो धनी जरूर बहुत जबर्जस्त है। जापानका वह सबसे भारी जिमींदार है और कारखानोंमें भी उसका बहुत बड़ा हिस्सा है। आज कलके तेन्नोके दादा—मेईजी तेन्नो—के समय जब गोरोंने जापानियोंको ठोकरपर ठोकर लगाई तो वहाँके नबाबोंको होश आया कि जैसे गोरे बनियोंने एशियाके और मुलकोंको गुलाम बना लिया है वैसे हमें भी बना लेंगे।

सन्तोखी—इस वास्ते वह सजग हो गये ?

भैया—हाँ, सजग हुए। गोरोंसे हथियार चलानेकी विद्या पढ़ी। कारखाना चलानेकी विद्या पढ़ी जमीदारोंने लेकिन राज-काज अपने हाथमें रखा। इतना जरूर किया कि जहाँ पहिले कई पीढ़ियोंसे तेन्नो लोग तोपूगावा ताल्लुक़दार वंश के कैदी थे, उन्हें औरतोंकी तरह परदेमें रहना पड़ता था, अब तोपूगावा सोगुनको-के हाथमें ताक़त नहीं रही। पहिले जिमीदारोंके हाथ हीमें सब कुछ रहा; पीछे मितसूई, मितसीबीसी जैसे करोड़पति पूँजीपति आगे बढ़े, लेकिन ताल्लुकदारोंके ही हाथमें सेना होनेसे, उनका जोर घटा नहीं और मेजी तेन्नोका लड़का आज-कलके तेन्नोका बाप तो पागल था।

दुखराम—पागल कैसा भैया ?

भैया—पागल जैसे पागलखानेमें होते हैं।

दुखराम—पागलके लड़के तो पागल हुआ करते हैं।

भैया—जब माँ भी पागल हो तब, नहीं तो दो-चार पीढ़ी पागलपन नहीं भी दिखाई दे सकता।

सोहनलाल—जापानने पहिले-पहल रूस जैसी गोरी जातिको हराया था, इसके लिए सभी काले लोगोंको गरब हुआ था, कि कमसे कम एक काले (एसि-याई) देसने तो गोरोंके गालपर चपत लगायी न ?

भैया—पहिली बात तो यह कि गोरोंमें भी दो जाति हैं, एक कमेरोंकी, दूसरी जोंकोंकी। जब बिलायती जोंकें पागल बनाकर हमसे अपने मतलबका काम करा सकती हैं तो अपने यहाँ के कमेरोंकी आँखमें धूल झोंके इसमें सक ही क्या। इसलिए एकोरसे सारे गोरोंको हमें दोसी नहीं बनाना चाहिए, पाप जुलुम सब कुछ जोंकें करती हैं। रूसकी वही जोंकें थीं जिन्होंने चीनको हड़पनेके लिए जब कदम आगे बढ़ाया, तो जापानकी जोंकोंसे उनकी मुठभेड़ हो गई। रूसमें वह जोंकें खतम हो गईं। जापानमें अब भी वही जोंकें राज कर रही हैं। काले लोगोंको गरब होना ही चाहिए। लेकिन चीनियोंको कभी गरब नहीं हुआ।

सोहनलाल—पड़ोसी होनेसे चीनियोंने जापानियोंको नहीं समझ पाया ?

भैया—पड़ोसी होनेसे चीनियोंने ज्यादा समझ पाया यह कहना चाहिए

सोहन भाई; क्योंकि जापानियोंने पहिले चीनियोंपर ही हाथ साफ किया, चीनको ही तुक्का बोटी की। चीन ५० बरससे जापानियोंकी मार खा रहा है।

सोहनलाल—यह बात तुम्हारी ठीक है भैया! जापानसे काले लोग बहुत उम्मेद रखते थे, लेकिन स्वार्थी होनेमें वह गोरोंका भी कान काटने लगे। कोरियाके साथ भी उसने खूनकी होली खेली। चीनको भी बराबर टुकड़े-टुकड़े करके निगलता गया लेकिन चीन, जहाँ चौआलीस करोड़ आदमी बसते हैं, उसमें भी कोई बात होगी, तभी तो ६ करोड़की बस्तीवाले जापानी उसे नोच खा रहे हैं।

भैया—यह बात ठीक पूछी सोहन भाई! लोग जालिम अत्याचारीको दोसी बनाते हैं और उसे गाली-सराप देते हैं। लेकिन यह बिलकुल बेकार बात है, क्योंकि एक ओर जालिमको कुछ लोग गाली देते हैं और दूसरी ओर कितने ही आदमी उन्हें बीर बनाते हैं। सबसे बेसी दोसी तो उसे कहना चाहिए जिसकी कमजोरीके कारन जालिम ऐसा कर पाता है। हम अँगरेजोंको भला-बुरा कहते हैं, लेकिन अपनेको भला-बुरा नहीं कहते। हम चालीस करोड़ हैं, लेकिन चार करोड़ इंग्लैंडकी मुट्ठी भर जोंकें हमारे ऊपर राज कर रही हैं। इसका कारन यही है कि हमारे यहाँकी जोंकें अपने कमेरोंके खून चूसनेमें इतने नीचे तक गिर गई हैं और आपसमें एक दूसरेकी इतनी दुसमन और अन्धी हो गईं कि वह समयपर न चेतीं। चीनकी भी जोंकें बड़ी नीच निकली। छोटी जोंकें बड़ी जोंकको देखना नहीं चाहतीं क्योंकि उसके पेटके लिए ज्यादा खूनकी जरूरत है। लेकिन बड़ी जोंक जब हटती है तो फिर छोटी जोंकें बड़ी बनना चाहती हैं। ३२ साल पहले (१६११) चीनियोंने अपने यहाँकी सबसे बड़ी जोंकको राजाकी गद्दीसे उतार दिया और पंचायती राज कायम किया। पंचायती राज कायम हो जानेपर जमींदारों और बनियोंने—चीनमें जमींदार और बनिया एक ही आदमी होते हैं—सारे चीनके कमेरोंको चूसनेके लिए उन्हें दबा रखनेके लिए कोई कसर उठा नहीं रखी। जो किसी सूबेका लाट बनाया जाता वह अपनेको वहाँका राजा समझता। घूस-रिसवतका बाजार गरम हो जाता। उसके लिए कमेरोंको लूटनेवाले अफसर सब जगह भर दिये जाते।

एक-एक सूबेके लाट तो इस तरह लोगोंको चूसते दूसरी ओर वह एक-दूसरेसे बराबर लड़ा करते। पिछली लड़ाई जब हुई तो गोरी सरकारोंको फंसा देखकर जापानने चीनको निगल जाना चाहा। खैर, वह उतावला बन गया था और निगल नहीं सका। गोरी जोंकें भी चीनको नहीं निगल सकीं क्योंकि आपसमें लड़ाई हो जानेका डर था।

सन्तोखी—तो चीनके सूबोंका हरेक लाट बादशाह बनना चाहता था?

भैया—हाँ और पिछली लड़ाईके बाद जापान और पच्छिमी लुटेरोंने अपनी जीभ और फैलाई। उस वक्त सोवियत रूसकी मददसे चीनके बड़े नेता सुन यात-सेनने इन लाटोंको खतम करनेका बीड़ा उठाया और वह बहुत कुछ इसे कर भी सके। सुन यात-सेनका साढ़ू चाङ्-कै-सक उसी वक्त आगे बढ़ा। सुनयात-सेन मर गये। चाङ्-कै-सक चीनके बनिया जमीदारके हाथमें बिक गया। सबसे भारी बनिया जिमीदार तो उसकी स्त्रीके भाई सुङ् है।

दुखराम—तब तो वहाँ भी भैया बनिया जोंकोंका ही जोर है।

भैया—चीनी बनियोंके पास जमीदारी भी है और वह किसानोंको इतना चूसते हैं कि बेचारोंके देहमें खून नहीं रह जाता और जहाँ कोई सूखा अकाल पड़ा तो हमारे ही देसकी तरह वहाँ भी लाखों किसान मर जाते हैं और साथ ही इन जिमीदारोंने अपने रुपयोंसे बड़ी-बड़ी मिलें, कारखाने और बैंक भी खोले हैं। सुङ्के खानदानवाले चीनके सबसे बड़े करोड़पति हैं और चाङ्-कै-सक उनकी मुट्ठीमें।

दुखराम—बहनोई हैं, सालोंसे दान-दहेज तो मिलता ही है।

भैया—चीनके लोगोंको जब रूसी कमेरोंके राज्यकी बात मालूम हुई तो उन्हें भी ख्याल आया कि चीनसे भी जोंकोंको बिदा करना चाहिए। चीनमें रंग-बिरंगी जोंकें थीं। गोरे भी थे, जापानी भी थे और स्वदेसी जोंकें भी थीं। इसलिए जोंकोंकी करतूत ज्यादा साफ दिखाई पड़ती थी। चीनमें भी मरकस बाबाकी सिच्छा गई। हजारों नवजवान मर्द-मेहरारू, किसान-मजूर कमूनिस्त बने। उन्होंने लोगोंमें काम करना शुरू किया। सुन-यात-सेन उनके कामको पसंद करते रहे। लेकिन उनके मरते ही चाङ्-कै-सक नेता बन गया। पलटनका सर-

नैल था इसलिए तलवार तो थी ही उसके पास। आजसे १५ बरस पहिले कान्तन सहरमें ४० हजार कमूनिस्तोंका कतल करके उसने अपना काम सुरू किया और उसके बाद १० साल तक लगातार उसका यही काम था। कमेरें जब सजग हो जाते हैं और अपनी लड़ाई लड़ते हैं तो रकतबीजकी तरह। उन्हें कोई खतम नही कर सकता। कमेरोंने किसानोंको समझाया। जिमींदारोंके जुलुमसे तबाह किसान उनकी बात समझने लगे।

दुखराम—क्यों नहीं समझेंगे भैया! मरकस बाबाने जो सिच्छा दी है वह हमारी ही भलाईके लिए।

भैया—गाँवके गाँव, इलाकेके इलाके मरकस बाबाकी सिच्छा मानने लगे। चीनके बीचो-बीचमें कमूनिस्तोंने मजूरों-किसानोंकी सरकार कायम की, लाखसे ऊपर पलटन तैयार की।

दुखराम—हथियार कहाँसे मिला भैया!

भैया—पाँच तलवारोंने दो बन्दूकें दी, दो बंदूकोंने चार बंदूकें, चारने दस, दसने चालीस, चालीसने दो सौ, दो सौसे हजार, इस तरह हजारों बन्दूकें, तोप, मसीनगन उनके पास चली आए।

दुखराम—छापेमारोंकी तरह किया होगा भैया!

भैया—कमूनिस्त कहते ही थे कि हमारे गोला-बारूदके कारखानेका इंतजाम-चाङ्-कै-सक करता है क्योंकि उसीके सिपाहियोंको मारकर उन्हें हथियार मिलता था। कितनी ही बार तो चाङ्-कै-सककी पलटन हथियार लिये-दिये कमूनिस्तोंके साथ मिल गई।

दुखराम—वह भी तो भैया मजूरों-किसानोंके ही लड़के होंगे न?

भैया—गोरी जोंकें चीनमें भी बालसेविकोंको फैलते देख और भी घबड़ाने लगीं, जो चौवालीस करोड़ चीनी भी बोलसेविक हो गये तो जोंकोंकी नैय्या डूबी समझो। उन्होंने भी चाङ्-कै-सककी मदद की। जापानने चीनसे मंचूरिया छीन लिया और वह दबाता ही जाता। लेकिन चाङ्-कै-सक जापानको नहीं, कमूनिस्तोंको अपना दुसमन मानता था। भारी पलटन, तोप, हवाई जहाजके साथ कमूनिस्तोंपर उसने हमला किया। पाँच बार तक तो उसका मतलब पूरा नहीं

हुआ लेकिन छठीं बार वह और बड़े भारी इंतजामसे चढ़ दौड़ा, जर्मन जरनैल उसको अकल बतलाते थे और अमेरिका-इंग्लैंड हवाई जहाज और तोप देते थे। सोवियत छोड़कर कोई चीनी कमूनिस्तोंका भलाई चाहनेवाला नहीं था। लेकिन, चीनी कमूनिस्त चीनके सरहदवाले सूबोंमें नहीं थे, वह बीचमें समुन्दर-में टापूकी तरह थे।

दुखराम—उनके चारों ओर चाङ्-कै-सकका इलाका रहा होगा?

भैया—हाँ, जोंकोंका राज था। छठीं बार कृष्णने मथुरा छोड़ दी और छप्पन करोड़ यदुबंसियोंको साथ लेते हुए।

दुखराम—कमूनिस्त अपने सब आदमियोंके साथ अपनी पुरानी जगहको छोड़ गये यही न भैया?

भैया—कमूनिस्त पारटीके सबसे बड़े नेता माऊ-से-तुङ् और बड़े सेनापति चू-तेने एक लाख आदमियोंके साथ अपने पुराने इलाकेको छोड़ उत्तर-पच्छिम-का रास्ता लिया। अब वह सोवियत रूसके पड़ोसी इलाकेकी ओर चले। रास्तेमें चाङ-कै-सककी पलटन और हवाई जहाजोंका मुकाबिला करना पड़ता था। कैसे एक हजार कोस तक वह लड़ते-मरते बढ़ते गए यह बड़ी बहादुरीकी कथा है। लोगोंने हँस-हँसकर जान दीं। अन्तमें चालीस हजार आदमी रह गये थे जबकि माऊ-से-तुंङ और चू-तेने नई भूमिपर अड्डा जमाया। चूते अपने एक जर-नैलको कुछ हजार जवानोंके साथ मरकर भी चाङ्-कै-सककी पलटनको रोकनेके लिए छोड़ आया था। कई सालों तक समझा जाता था कि वह सब मर गये होंगे लेकिन जापानी लड़ाईमें कुछ समय पहिले पता लगा कि वह एक लाख सिपाहियोंकी एक नई पलटनके रूपमें अब भी जिन्दा हैं।

दुखराम—तो भैया सचमुच ही कमूनिस्त रकतबीज हैं, उनके खूनकी एक बूंद गिरनेसे दस कमूनिस्त पैदा होते हैं।

भैया—यह तागत उनमें कहाँसे आती है दुक्खू भाई, यह तागत उन्हें मजूरों-किसानोंसे मिलती है। कमेरे अमर हैं इसीलिए उनकी पलटन लाल सेना भी अमर है। एक सिपाही मरता है, तो किसानों-मजूरोंके नये दस लड़के उसकी जगह पर आ जाते हैं। और कमूनिस्तोंके छिपानेके लिए तो चीनके किसानोंका

हरेक घर, हरेक कोठा, हरेक बखार तैयार थे। नई जगह आकर भी माऊ-से तुङ्ने किसानों-मजूरोंको मरकस बाबाका मन्तर दिया। गाँवके गाँव जोंकोंसे खाली हो गये। किसानोंके देहमें खून लहराने लगा फिर लाल पलटन मजबूत हुई। चाङ्-कै सक जिस तरह जापानियोंके सामने घुटने टेक रहा था उसके कारन उसके अपने पिट्ठू जरनैल भी नाराज थे, उन्होंने चाङ्-कै-सकको पकड़कर कैद कर लिया। कमूनिस्तोंने समझा बुझाकर चाङ्की जान बचाई। चाङ्ने परतिग्या की कि मैं जापानी फसिहोंसे लड़ूँगा।

दुखराम—भैया जब कमूनिस्तोंने मथुरा छोड़ द्वारिकाका रास्ता लिया होगा, तो चीनी जोंकें बहुत खुस हुई होंगी, समझती होंगी—अच्छा हुआ मैदान छोड़ गये।

भैया—लेकिन कमूनिस्त पहिलेसे भी ज्यादा मजबूत हैं। आज उनकी पाँच लाखकी जबर्जस्त पलटन है, उसके साथ साठ लाख छापामार फौज है, और दस करोड़ किसान-मजूर उनके बताये रास्तेपर चलते हैं।

दुखराम—तो चाङ्-कै सक बहुत घबराता होगा भैया?

भैया—जोंकोंका सरदार है, क्यों नहीं घबरायेगा? अपनी पाँच लाख सधी हुई पलटनको कमूनिस्त इलाका घेरनेके लिए रख छोड़ा है। इसे अमेरिकावाले भी बुरा मान रहे हैं। अमेरिका-इंगलैंडसे जो हथियार चीनको दिया जाता है, उसमेंसे एक हथियारको भी चाङ्-कै-सक कमूनिस्तोंको नहीं देना चाहता।

दुखराम—जापानियोंके साथ लड़ते तो होंगे ज्यादा कमूनिस्त ही भैया?

भैया—चीनमें जापानियोंकी जितनी पलटन हैं, उसमेंसे आधीके साथ कमूनिस्त ही लोहा ले रहे हैं। रूस जब लड़ाईमें नहीं आया था तो वहाँसे भी कुछ हथियार मिल जाता था, लेकिन अब तो जापानी पलटनको मारकर ही हथियार पाते हैं। और, जापानियोंने बहुत कृपा की है, इसके लिए चू-ते उन्हें धन्न-धन्न कहता है। जो चाङ्-कै-सक और उसके साथी जोंकोंने कमूनिस्तोंके साथ मिलकर जापानियोंका पूरा मुकाबिला किया होता, तो जापानी इतना दूर तक भीतर न घुस पाते। चाङ्-कै-सक दुबिधामें पड़ गया है जो जापानसे मेल करता है, तो इंगलैंड-अमेरिका दुसमन बन जाते हैं और फिर तीसोंकी तरह सिर्फ

कम्यूनिस्त ही जापानियोंके साथ लड़नेवाले रह जायँगे तब चीनी लोग भी जो, जापानके साथ लड़ना चाहते हैं कम्यूनिस्तोंकी ओर हो जायँगे, और इंगलैंड-अमेरिका भी जापानसे लड़नेके लिए सारी मदद उन्हींको देंगे। जापान बार-बार लोभ देता है कि बोलसेविकोंसे चीनको बचानेके लिए हमारे भाई बन जाओ। चाङ्-कै-सकका पुराना दोस्त वाङ्-चिङ्-वेइ जापानके साथ पहले ही मिल चुका है। चाङ्-कै-सककी दसा सांप-छछूंदरकी है। उसने तो शायद कम्यूनिस्तोंपर चढ़ाई भी सुरू कर दी होती; लेकिन इंगलैंड-अमेरिकाके नराज होनेसे डरता है और यह भी जानता है कि कम्यूनिस्त मिट्टीके पुतले नहीं हैं—

सोहनलाल—तो इसका अर्थ यह हुआ भैया कि चीनकी भीतरी जो हालत है, उससे जापान हीको फायदा है।

भैया—फायदा जरूर है लेकिन मैंने कहा न कि हिटलरके खतम होते ही इंगलैंड-अमेरिकाकी सारी फौज जापानपर भिड़ जायँगी और फिर जापान बहुत दिनों तक उनके सामने नहीं टिक सकता।

दुखराम—लेकिन भैया आपने जापानके सवालको बहुत मुस्किल भी कहा था।

भैया—मुस्किल कहता हूँ, जहाँ तक तलवारका बल है, उससे तो जापान देर तक मुकाबिला नहीं कर सकता, लेकिन जापान उस वक्त राजनीतिका खेल खेल सकता है।

दुखराम—राजनीतिका क्या खेल खेलेगा भैया?

भैया—जापानसे लड़ रहे हैं अमेरिका, इंगलैंड और चीन।

दुखराम—सोवियत चीनसे नहीं लड़ रहा है भैया?

भैया—बाहरसे नहीं लड़ रहा है, लेकिन जापान भी बोलसेविकोंका अपनेको सबसे बड़ा दुस्मन कहता है और मुसोलिनी-हिटलरके फसिस्त गुट्टमें है।

दुखराम—तो अपनी गुट्टको बचानेके लिए उसने लाल फौजपर क्यों नहीं हमला कर दिया।

भैया—दो बार पन्द्रह-बीस-बीस हजार आदमियोंको मरवाकर उसने लाल-तलवार का मजा चख लिया। जापानके लकड़ीके सहर आधे घंटेके ही लाल

हवाई जहाजोंके बमके रास्तेमें हैं। वह समझता है कि जो रूससे छेड़खानी शुरू की, तो जापान लङ्का बन जायेगा और जलकर खाक हो जायगा। मंचूरिया और कोरियामें जापान और सोवियतकी फौजें आमने-सामने खड़ी रहती हैं। लेकिन बेचारा चुपचाप बैठा है।

दुखराम—तो भैया! चुपचाप बैठके जापानने बुद्धिमानी ही की है।

भैया—हाँ, जापानी फसिहा हिटलरके हारनेपर दूसरी चाल चलेंगे। वह चीनसे कहेंगे कि लो हम तुम्हारी अंगुल-अंगुल धरती छोड़ देते हैं और अपनी सारी फौज लौटा लेते हैं।

दुखराम—फिर चीन तो इसे पसंद ही करेगा।

भैया—पसंद करनेका एक और भी कारन है, बिलायतकी जोंकोंने चीनके कई बन्दरगाहोंको अपने कब्जेमें कर लिया था, हांगकांग इसी तरहका एक बड़ा बन्दर है। चर्चिल-अमरी इस लड़ाईके बाद भी हांग-कांगको अपने हाथमें रखना चाहते हैं। चीनी इसको बिलकुल नहीं पसंद करते। फिर जापान कहेगा कि हम फिलिपाइन, बोर्नियो, जावा, सुमात्रा, सिङ्गापुर, मलाया, बर्मा सबको खाली कर देंगे लेकिन इन देसोंके लोगोंको यह देस मिलने चाहिएँ।

सोहनलाल—लेकिन अमेरिका, हालैंड और इंगलैंड क्या इस बातको मान लेंगे, और क्या जापान भी अपने जीते राजको इस तरह छोड़ देगा।

भैया—जापान ऐसा क्यों करेगा, इसीलिए कि उसका सरबस जा रहा है। जापानकी अपनी भूमिपर भी अँगरेज, अमेरिकन फौजें चली आयँगी; फिर वहाँ-की जोंकों—जागीरदारों-पूँजीपतियों—का तो सरबनास हो जायगा। जापानी जाति सारीकी सारी नहीं मर जायगी, यह बात पक्की है। इसीलिए जापानी जोंकें अपना घर बर बचा लेनेके लिए सब कुछ करनेके लिए तैयार होंगे। और दूसरे सवालका जवाब यह है—फिलिपाइनको अमरीका खुद ही आजाद करना चाहता है। अमेरिकाके पास अपनी ही धरती बहुत है, वह दूसरेकी धरती नहीं लेना चाहता। इसके साथ ही अमेरिकाका एक बहुत बड़ा स्वारथ है कि दुनिया भर-में उसका ब्योपार बढ़े और वह ब्योपारसे नफा कमाये।

सोहनलाल—अंगरेज भी तो वही चाहते हैं!

भैया—अंगरेज व्यापार ही नहीं चाहते बल्कि वह अपने गुलाम देसोंको भी हाथमें रखना चाहते हैं। वह समझते हैं कि जो देसोंको छोड़ दिया तो अमेरिका और दूसरे मुलुक भी अपना माल वहाँ बेचने लगेंगे, और मुकाबिलेमें हम ठट नहीं सकेंगे।

सन्तोखी—क्यों नहीं ठट सकेंगे भैया?

भैया—अंगरेज पचीस-तीस साल पहिलेकी मसीनोंको अपने कारखानोंमें रखते हैं। मसीनोंमें हर साल नया-नया सुधार होता जाता है। जिस मशीनमें पहिले दस आदमी लगते थे अब दो ही आदमीसे उसपर काम कर सकते हैं।

सन्तोखी—तो मजूरी कम देनी पड़ेगी, माल सस्तेमें बनेगा और नफा ज्यादा होगा।

भैया—यह सब तो होगा लेकिन लाखोंकी मसीनें जो कारखानेमें बैठाई गई हैं उन्हें भी उखाड़ फेंकना होगा। फिर लाख और खर्च करके नई मसीनें बैठानी पड़ेंगी। इसीलिए बिलायतके पूँजीपतियोंके कारखाने उतने नये नहीं होते। उनकी चीजें उतनी सस्ती तैयार नहीं होतीं। जो हिन्दुस्तान और दूसरे मुलकों-को बिलायती जोंकें छोड़ दें तो लोग उनके महँगे मालको लेंगे या अमेरिकाके सस्ते मालको?

सन्तोखी—फिर तो अमेरिका भी नहीं चाहेगा कि अंगरेज दुनियाके चौथाई हिस्सेको गुलाम बनाकर रखें।

भैया—यह तो है। और जोंकोंके स्वारथका आपसमें बहुत भारी झगड़ा है। इससे यह भी मालूम हो गया न कि इंगलैंड, अमेरिका और चीन जापानसे लड़ रहे हैं, लेकिन उनमें तीनोंका तीन स्वारथ है। चीन अपनी सारी भूमिको आजाद करना चाहता है, और यह भी चाहता है कि जापानसे उसको डर न रह जाय। अमेरिका चाहता है कि जापान इतना कमजोर हो जाय कि फिर प्रसांत महासागरमें वह ऊधम न मचा सके; साथ ही यह भी चाहता है कि वह बेरोक-टोक दुनियामें अपना माल बेचे। जो जापानको खदेड़ कर उसकी माँदमें घुसा दिया जाता है और पच्छिममें चीन, उत्तरमें सोवियत और पूरबमें अमेरिका की मजबूत सेना तैयार रहती है, साथ ही जापानके ताल्लुकदारों और पूँजी-पतियोंकी कमर तोड़ दी जाती है, तो पचीसों बरसके लिए जापान खड़ा नहीं

हो सकता। अंगरेज ही हैं जो चाहते हैं कि बेरोक-टोक रोजगार भी करें; हिन्दुस्तान, बर्मा, हांगकांगको गुलाम बनाकर भी रखें। अकेले अंगरेज जापानसे लड़कर पार नहीं पा सकते। अमरीका और चीन अंगरेजोंकी गुलामीको मजबूत करनेके लिए क्या तब भी अपने लाखों आदमियोंको मरवायेंगे जब जापान बिना लड़े ही इन मुल्कोंको छोड़ देना चाहेगा। सिरिफ इस सूरतपर कि सब मुल्क आजाद मान लिए जायँ और व्यापार करनेमें किसीको कोई बाधा न रहे।

सोहनलाल—अंगरेजी जोंकें बड़ी काइयाँ हैं भैया! यह जरूर दूसरोंको फँसा लेंगी।

भैया—काइयाँ हैं, लेकिन उसीको फंसा सकती हैं जिसका स्वारथ इनके स्वारथसे मेल खाता है और जापान अपनी रक्षाके लिए इतनी दूर जायगा जरूर लेकिन जो बात नहीं मानी गई तो मरते दम तक लड़ेगा। जापानी जोंकोंके लिए अपने चालीस पचास लाख लोगोंको मरवा देना कोई बात नहीं, यह अमेरिकन मन्त्री[1] भी जानते हैं।

सोहनलाल—तो भैया जरूर मामला उतना आसान नहीं है।

भैया—अमेरिका, इंग्लैंड और चीनके साथ अकेला लड़नेकी तागत जापानमें नहीं है, यह बात साफ है, लड़नेका मतलब है दस-बीस लाख आदमी अपने मरवाना और दस-बीस लाख दूसरेकी। फिर तीनोंकी फौजें जो जापानमें पहुँच गईं तो सूर्यदेवीके बेटे हिरोहितो तेन्नोंका न कहीं पता लगेगा, न जमीदार जरनैल और उनकी जमीदारी बचेगी, न मोटी तोंदें जीने पायेंगी। दूसरे रास्तेमें सबसे ज्यादा इनकार अंगरेज करेंगे, और जापानी जोंकें यह भी विस्वास करेंगी कि सायद उनकी पूछ बच जाय।

---

1. Mr. James V. Forrestal, Secretary of the United States Navy today (22nd August, 1944) said, "we are apt to assume that the Japanese will crumble when the Germans are beaten and say 'we have lost the war.' With the Japanese we are dealing with a religion and not with rational man. They will fight with greater savagery as we get closer in."

—Reuter, London, August 22, 1944

दुखराम—क्या सचमुच जोंकें बच जायेंगी भैया ?

भैया—जब बिल्ली कबूतरके पास पहुँच जाती है दुक्खू भाई ! तब वह आँख मूद लेता है। समझता है, "मूदहुँ आख कतहुँ कोउ नाहीं" लेकिन जिन जोंकोंने बीस बरससे न जाने कितने हजार जापानियोंको सड़ा-सड़ा कर मारा। कमूनिस्त और कमेरा राज चाहनेवाले कहकर हजारोंको गोलीसे मारा; उसके बाद पचासों हजार आदमियोंको लड़ाईपर ले जाकर मरवाया। उन्हें-जापानी मजूर-किसान फिर अपना सिरताज बनायेंगी इसमें बहुत सक है। अभी ही अपनी जोंकोंके पंजेसे भागकर आये सैकड़ों कमकर नेता और हजारों सिपाही चीनी कमूनिस्तोंके साथ मिलकर जापानमें क्या करना होगा, इसे पक्का कर रही हैं।

सोहनलाल—अच्छा यह तो समझमें आया कि हिटलरके हारनेके बाद जापानकी हार निहचय है, लेकिन वह कैसे होगी इसके बारेमें अभी कोई बात पक्की तौरसे नहीं कही जा सकती। ..

भैया—लेकिन मुमकिन ज्यादा यही है कि चर्चिलकी चौकड़ी भूल जाय और दुनियाको गुलाम रखनेके उसके जितने मनसूबे हैं वह धूलमें मिल जायँ।

सोहनलाल—अच्छा इस लड़ाईके बाद चीन और जापानमें जोंकोंकी क्या हालत होगी ? क्या वहाँ कमेरोंका राज कायम होगा ?

भैया—यह बात किसी झूठे जोतिसीसे पूछो, सोहन भाई ! मैं इतना ही कह सकता हूँ कि जापानमें बड़ी-बड़ी जोंकों, बड़े-बड़े जिमिदारोंका फिर दिन नही लौटेगा। चीनके कमूनिस्त और ज्यादा मजबूत होंगे और हिटलरके हारते ही उन्हें सोवियतसे बहुत ज्यादा हथियार मिलेगा।

सोहनलाल—लेकिन सोवियत और जापानकी तो आपसमें कोई लड़ाई नहीं है।

भैया—दोनों एक दूसरेके ऊपर हथियार नहीं चला रहे हैं, यह बात ठीक है। लेकिन जापान बोलिसेविकोंके खिलाफ फसिहा-गुट्टमें उसी तरह मुस्तैदीसे काम करनेकी बात करता है। सोवियतने भी इसका अच्छा जवाब दिया। जब जरमनीसे उसकी लड़ाई नहीं थी तो चीनको सबसे ज्यादा हथियार सोवियत

सरकार ही देती थी।

सोहनलाल—तो मुझे मालूम होता है, सारे चीनपर भी एक दिन लाल झंडा ही फहरायेगा।

भैया—जिन दस करोड़ चीनियोंने कमूनिस्तोंको अपना अगुआ बना लिया वह तो लाल झंडेको छोड़नेवाले नहीं बाकी चौंतीस करोड़में किसानों और मजूरोंकी नजर सदा उसी लाल झंडेकी ओर रहेगी। चाङ्-कै-सक उन दस करोड़ोंको कुचल डालनेकी अब कभी आसा नहीं रख सकता, और चीनकी सारी जोंकें मिलकर बहुत सालों तक उन चौंतीस करोड़ चीनियोंका खून नहीं चूस सकतीं।

सोहनलाल—और हिन्दुस्तानका क्या बनेगा भैया! हिन्दुस्तानके बारेमें तो सोवियतवाले कुछ भी नहीं बोलते।

भैया—न बोलनेके वक्त सोवियतवाले नहीं बोला करते, लेकिन बोलनेके वक्त वह इतना जोरसे बोलने लगते हैं कि कानका परदा फटने लगता है।

सोहनलाल—अब तो कुछ-कुछ मुँह खोलने लगे भैया! सोवियतके अखबार अब हिन्दुस्तानके लोगोंकी आजादीकी माँगके बारेमें लिखने लगे हैं, जोर भी देने लगे हैं।

भैया—और बिलायती जोंकें घबराने भी लगी हैं सोहन भाई! चर्चिल हिटलरके बलको बढ़ते देखकर सोवियतपर फेंके थूकको चाटने नहीं तो रुमाल-से पोंछने जरूर लगा था। और अब तो वह साफ कहता ही है कि लाल फौज न होती तो इंग्लैंड न बचता। लेकिन बिलायतकी बड़ी-बड़ी जोंकोंमें चर्चिल-की उतनी नहीं चलती जितनी कि हेलीफेक्स साइमन, होरकी चलती है। यही लोग थे जिन्होंने हिटलरको आगे बढ़ाया। चेकोस्लावाकियाका हाथ-पैर बाँध कर उसे सौंप दिया। ये हमेशासे और आज भी सोवियतके जबर्दस्त दुसमन रहे हैं। उनको कोई मौका मिलना चाहिए और फिर सोवियतके खिलाफ जहर उगलनेके लिए तैयार। जब सोवियतको जर्मनीके हमलोंके मारे पीछे हटना पड़ रहा था, जब उसके ऊपर भारी संकट आया; उस बखत हिन्दुस्तानके बारेमें जो वह कुछ बोलते तो हेलीफॉक्स-होरकी बन आती। वह हल्ला करने

लगते कि देखो फिर बोलसेविकोंने हमारे राजको नुकसान पहुँचानेका काम सुरू किया न। अब लाल सेना जर्मनीके भीतर लड़ रही है, हिटलरके पिट्ठू रुमानियामें भी फसिहा गुन्डोंको भगा रही है, यही कारन है जो अब सोवियत-वाले हिन्दुस्तानके बारेमें कुछ बोलने लगे हैं, आगे वे और बोलेंगे।

मोहनलाल—लेकिन स्तालिनने तो चर्चिलसे बीस सालके लिए सुलहनामा कर लिया है कि वह अंगरेजी राजके भीतर कोई दखल नहीं देंगे।

भैया—बीस साल क्या स्तालिन तो सौ सालके लिए भी सुलहनामा कर सकते हैं, क्योंकि उनका यह बिस्वास नहीं है कि कमूनिस्त पन्थको तलवारके बलसे किसी मुल्कपर लादा जा सकता है। यह लादनेकी चीज ही नहीं इसे तो किसान मजूर खुद समझकर अपने देसमें फैला सकते हैं, अपना राज कायम कर सकते हैं। लेकिन उस बीस सालके सुलहनामेका खास मतलब क्या है? संसारमें सान्ति रहे फिर लड़ाई न होवे। और, बिलायती जोंकें जो संसारमें फिर लड़ाईका बीज बोने लगीं तो आप जानते हैं कि स्तालिनने अपने हाथ-पैरको बाँधकर उनके हाथमें दे नहीं दिया है।

सोहनलाल—यह तो बात कुछ-कुछ अब झलकने लगी है भैया! अभी बाइस अगस्त (१९४४)को ही न अमेरिका गये। सोवियत राजदूतोंने दुनियाकी सान्ति सभामें बोलते हुए कहा—(दुनियाकी) आजादी और मुक्ति तभी हो सकती है जब कि आगे संसारमें सान्ति कायम करनेवाली सभाके सभी मेम्बर (देस) अपनी सारी सक्ति इसके लिए लगा दें। इस सभाको आजादी चाहनेवाले सभी देसोंको बिलकुल स्वतन्त्र और बराबर मानके कायम करना होगा।[1]

1. "Addressing the delegates to the world security conference at Dumbarton Oaks M. Gromykt the Soviet Ambassador in Washington said that freedom and independence could only be preserved if the future international security organisation used all the resources of its members and primarily of the great powers. The organisation would be based on the sovereign equality of all freedom-loving nations.

—Reuter, Washington, August 22, 1944.

भैया—स्तालिनको बीस सालके सुलहनामेके तोड़नेकी जरूरत नहीं पड़ेगी लेकिन क्या बिलायती जोंकें दुनियाकी सान्तिके लिए लिखे गये इस सुलह-नामेको माननेके लिए तैयार होंगी ? क्या वह हिन्दुस्तान ऐसे आजादी चाहने-वाले देसको बिलकुल आजाद माननेके लिए तैयार होंगी ?

सोहनलाल—वह कितनी तैयार हैं यह तो चर्चिल-अमरीके कामसे ही पता चल जाता है और जो कुछ कोर-कसर रही है बेवल साहबने गांधीजीके पत्रमें कर दिया है।

भैया—दुनियामें अगर फिर तीसरी लड़ाई होगी तो उसकी सबसे ज्यादा जिम्मेवारी बिलायती जोंकोंके ऊपर होगी। जो बिलायती मजूरोंने अपनी जोंकोंको नहीं उखाड़ फेंका तो इसके लिए उन्हें बहुत पछताना पड़ेगा। आज तकके दो महाभारतोंकी तरह उस तीसरे महाभारतमें उन्हीके लड़के सबसे ज्यादा मरेंगे, ये अब वह भी समझने लगे हैं। और इस बातको बिलायती जोंकें स्तालिनसे नहीं छिपा सकतीं।

दुखराम—दाई से देह (गर्भ) नहीं छिपता।

भैया—और इसका पता लगते ही सोवियत-सरकार चौकन्नी हो जायेगी। उसके चौकन्ने होनेका मतलब है कि यूरपके वे सारे ही देस चौकन्ने हो जायँगे जो अभी-अभी खूनकी नदी तैरकर पार हुए हैं और जिन्होंने अपने यहाँकी बड़ी जोंकोंको निकाल फेंकनेका निहचय किया है। सोवियत और बड़ी जोंकोंके बिना जो देस रहेंगे, वह एक राय हो जायंगे, और उनके देसमें तीसरे महाभारतकी छींट नहीं पड़ने पायेगी। बाकी जोंकोंको ही आपसमें कटना-मरना होगा।

सोहनलाल—यह तो हुआ भैया कि पूरबमें भी, पच्छिममें भी सब जगह बड़ी उथल-पुथल होगी, लेकिन हिन्दुस्तानके बारेमें तो तुमने कहा ही नहीं !

भैया—उसे कहेंगे कल।

अध्याय ११

हिन्दुस्तानकी आजादी

सन्तोखी—सोहनलाल ! तुम्हारे आनेसे हम लोगोंका कुछ नुकसान भी हुआ कुछ फायदा भी। नुकसान तो यह हुआ कि भैया जो कुछ कहते हैं वह पहिलेकी तरह सोलहो आना मेरी समझमें नहीं आता। कौन-कौनसे नाम ! जिनके कहने--में जीभ छुटपुटाती है लेकिन कई बातें तुमने ऐसी खोदके कहवाई हैं कि हम उन्हें न सुन पाते।

दुखराम—हाँ सन्तोखी भाई ! थोड़ासा नुकसान तो जरूर होता है।

भैया—देसोंका नाम तो नकसा देखनेसे ही साफ-साफ समझमें आता है। हमारे लिए बनारस-प्रयाग बिल्कुल परगट है, लेकिन फ्रांस-अमेरिकावालोंके लिए वह उसी तरहके बेकार नाम हैं, जैसे हमारे लिए उनके सहरोंके नाम। अच्छा अब चलो हिन्दुस्तानकी आजादीके बारेमें कुछ बात करें। रूस छोड़कर सारी दुनिया नरकमें है और हिन्दुस्तान सबसे बड़े नरकमें है क्योंकि इसके ऊपर बिलायती जोंकोंकी भी गुलामी है और अपनी भी। लेकिन दुक्खू भाई प्याजका पहले ऊपरका छिलका निकाला जाता है या भीतरका।

दुखराम—पहिले भैया ऊपरका छिलका छुड़ाया जाता है तब नीचेका न छुड़ाया जायगा।

भैया—लेकिन चाकू चलानेमें कुछ नीचेका भी छिलका कट जाता है तो भी हमें पहिले ऊपरके ही छिलकेके हटानेमें सबसे ज्यादा जोर लगाना पड़ेगा। भीतरके छिलकोंपर भी चोट इसलिए लगानी पड़ती है कि बिना जमीदारों और पूँजीपतियोंसे टक्कर लिए किसान-मजूर मजबूत भी नहीं होंगे और न यही समझ पायेंगे कि हम नरकमें इन्हीं जोंकोंके कारन पड़े हैं। हिन्दुस्तानवालोंने आजसे ८७ बरस पहिले अपने देसको आजाद करनेकी कोशिश की।

सन्तोखी—१८५७के गदरके बखतमें न भैया ?

भैया—और उसीके चार बरस पहिले मरकस बाबाने लिखा था कि अंगरेज सार्जेन जिन हिन्दुस्तानी सिपाहियोंको अपने कामके लिए कवायद-परेड सिखा

रहे हैं, वही सिपाही अपनी आजादीके भी सिपाही बन सकते हैं।

दुखराम—तो बाबाके कहनेके ४ ही साल बाद तो उन्होंने कोसिस की लेकिन आजादी क्यों नहीं मिली भैया?

भैया—सिपाहियोंको यह पूरी तौरसे ग्यान न था, कि वह क्या चाहते हैं।

सोहनलाल—पता क्यों नहीं था, वह जानते थे कि हिन्दुस्तानसे अंगरेजी राजको खतम करना है।

भैया—तुम्हारे पास एक पुराना घड़ा है तुम उसको फोड़ रहे हो तो क्या तुम्हारा यह जानना काफी है कि मैं घड़ेको फोड़ रहा हूँ या यह भी जानना चाहिए कि इसे फोड़कर मैं किससे पानी पियूँगा।

दुखराम—हाँ भैया, सिर्फ घड़ा फोड़नेसे काम नहीं चलेगा, पानी पीनेका भी इंतजाम होना चाहिए।

भैया—सिपाही घड़ा फोड़ना चाहते थे, नये घड़ेका उन्हें खयाल भी नहीं। उनके नेता थे बड़े-बड़े जमीदार, राजा और नवाब, जिनको लड़ाईकी विद्याका, उस समयके हथियारोंका ग्यान नहीं था। कम्पनीने किसीकी पेन्सन जपत कर ली थी, किसीका राज छीन लिया था, कोई समझता था कि हम भी छोटे-बड़े राजा-नवाब हो जायेंगे। बस सब इकट्ठा हो गये थे। सिपाहियोंने बहादुरी की, हिन्दू-मुसलमान दोनों जी-जानसे लड़े लेकिन उनके पास आँखें नहीं थीं!

दुखराम—आँख नहीं थी! क्या वह सब अन्धे थे?

भैया—पलटनकी आँखें अफसर होते हैं दुक्खू भाई! सौ-सौ पचास-पचास सिपाही अपने मनसे जिधरसे चाहें लड़ने लगें तो दुस्मन उन्हें जल्दी तबाह कर देगा। पाँचों उंगलियाँ बाहरकी ओर खुली हैं लेकिन हथेलीसे जुड़ी हैं। इसी तरह अलग बिखरे हुए सिपाही तभी मजबूत होते हैं जब हजारों-लाखोंको एकसे एक नत्थी कर दिया जाता। अफसर यह काम करते हैं। दूसरा दोस यह था कि जो राजा-नवाब उनके अगुआ बने थे वह लड़ाईके अगुआ होने लायक नहीं थे। और सब सिर्फ अपना-अपना स्वारथ देखते थे। तीसरा दोस यह था कि आम जनता इन विदेसियोंसे लड़नेवाले अपने सिपाहियोंको अपना नहीं समझते थे।

दुखराम—क्यों भैया वह हमारे भाई-बंद तो थे ही ?

भैया—भाई-बन्द कह देनेसे नहीं काम चलेगा दुक्खू भाई, जब वह गावों और सहरोंको लूटते चलते थे, लोग उनके आनेकी खबर सुनते ही घर-दुआरकी सुध छोड़ भाग निकलते थे तो कैसे कह सकते हो कि वह भाई-बन्द हैं।

सोहनलाल—लेकिन लोगोंसे पैसा न लें तो उनका खर्च कैसे चले ?

भैया—लेकिन वह डकैत तो नहीं थे, वह अंगरेजोंको इसलिए निकालना चाहते थे कि लोग ज्यादा सुखी रहें। लोगोंको यह बात अच्छी तरहसे मालूम होती तो लोग तन-मन-धनसे उनकी मदद करते। इस सबसे यही मालूम होता है कि जो लड़के जान देनेवाले थे, उनको मालूम नही था कि वे अंगरेजोंको निकालकर क्या करेंगे, इसीलिए वह जनताको भी नहीं समझा सकते थे—क्यों तुम्हें हमारी मदद करनी चाहिए। हो सकता है जो और कुछ दिन लड़नेका मौका मिला होता तो खुद गलती करके सीखते। लेकिन कुछ बागी राजाओं-नवाबोंको छोड़कर बाकी सारी जोंकें, राजा-महाराजा-नवाब अपने भाइयोंके खिलाफ अंगरेजोंकी मदद कर रही थीं। बेचारोंको सीखनेका मौका नहीं मिला। कैसे खूनकी नदी बहाकर जुल्म करके उस लड़ाईको दबा दिया गया, कहनेकी जरूरत नहीं, और दबा भी बीस सालके लिए।

सन्तोखी—बीस सालके बाद फिर आजादीका खयाल क्यों आने लगा ?

भैया—हिन्दू समझते थे कि समुन्दर पार जानेसे धरम चला जाता है और दूसरेके हाथका खाना खा लेनेसे आदमी किरिस्तान हो जाता है, इसीलिए हिन्दुस्तानी कूएँके मेंढक रहे। अब एक-एक करके कुछ लोग बिलायत जाने लगे थे, कितने ही लोग हिन्दुस्तान हीमें अंगरेजी पढ़कर किताबोंसे दुनियाके बारेमें जानने लगे। उन्होंने देखा कि आदमी भेड़ नहीं हैं। राजा भगवानकी ओरसे भेजा नहीं आता है। बिलायतमें राजा हैं, लेकिन राजका काम देखती है पंचायत—पार्लामेंट। अमेरिकामें तो राजा भी नहीं है, वहाँ पंचायती राज है। अंगरेजोंको अपना राज चलानेके लिए सस्ते क्लर्कों और नौकरोंकी जरूरत है इसलिए अंगरेजी पढ़ाना जरूरी था, अंगरेजीकी किताबोंके पढ़नेपर साहब बहादुर नंगे दिखाई देने लगते थे और दुनियाके और देसोंकी बातें

पढ़कर उनके दिलमें भी आजादीका ख्याल आने लगता था। कुछ होसियार बिलायती युवकोंने सोचा कि कही यह हिन्दुस्तान। हाथ से बेहाथ न हो जायँ इसलिए उनकी मददसे कांगरेसकी अस्थापना की।

दुखराम—क्या भाई बिलायती जोंकोंने कांगरेसको अस्थापित किया?

भैया—हाँ बिलायती युवकोंने, गोरे साहबोंने काले साहबों को पढ़ावा दिया। पचीस साल तक तो कांगरेसमें इन्ही काले साहबोंका जोर रहा इनका काम था सालमें एक बार किसी बड़े सहरमें इकट्ठा होना और हाथ जोड़कर अंगरेजी सरकारसे प्रार्थना करना। भगवान हमें यह नौकरी दो, हमे वह नौकरी दो। सिच्छा और बढ़ने लगी। नौकरियाँ कम पड़ने लगीं। लोगों की तकलीफ बढ़ गई, धीरे-धीरे गोरे भगवानोंसे प्रार्थना करनेको बहुतसे लोग बेकार समझने लगे। उनमेंसे कुछ लोगोंने बम-पिस्तौलसे एकाध अंगरेजों या काले अफसरों-को मारा। कुछको फाँसी हुई। लोगोंने उनको सहीद कराके सम्मान किया।

दुखराम—उससे फायदा हुआ कि नही भैया?

भैया—सबसे बड़ा फायदा यह हुआ कि हिन्दुस्तानके नौजवान निरभय होने लगे। मौत उनके लिए घबराहट नही प्रेमकी चीज बन गई। बाकी तो मै कही चुका हूँ कि इक्के-दुक्के अफसरोंके मारनेसे जगह खाली नही हो सकती। फिर पिछला (१९१४-१८) महाभारत आया। लड़ाईने सारी बाकी दुनियामें उथल पुथल मचाई। रूसमें कमेरोंका राज कायम हो गया इसका भी असर पड़ा। दच्छिनी अफ्रीकामें गाँधीजी गोरी सरकारसे लड़ चुके थे। लड़ाई-के बीचमे वह हिन्दुस्तान आ गये।

सोहनलाल—गांधीजी जब हिन्दुस्तान आये तो देसकी आजादीके लिए यहाँ कौन-कौन लोग काम कर रहे थे?

भैया—तीन तरहके लोग थे एक तो पुराने ढर्रेके कांगरेसी नेता जिनका काम था सरकारसे प्रार्थना करना भिच्छा माँगना। वह आजादीके लिए किसी तरहका जोखिम उठानेको तैयार नहीं थे। यह खूब अंगरेजी पढ़े-लिखे होते थे। इनमेंसे बहुत चमड़े के रंगसे मजबूत थे, नहीं तो जहाँ तक मन पड़ता था साहब बहादुरका ठाट-बाट रखते थे। इनमेंसे ज्यादा चलते पुरजेके लोगोंको सरकार कोई नौकरी

या पदवी देकर अपनी ओर खींच लेती थी। इनको अंगरेजोंकी बात पर विश्वास था, कि अंगरेजोंको न्यायसे बड़ा प्रेम है। उन्हें जोंकोंके स्वभावका पता नहीं था, इसलिए समझते थे कि बिलायती जोंकें किसी दिन अवढरदानी संकरकी तरह हिन्दुस्तानीको निहाल कर देंगी। दूसरी ओर कुछ नौजवान थे जो समझते थे कि बम-पिस्तौलसे दो-चार सरकारी नौकरोंको मार देनेसे बिलायती जोंकें हिन्दुस्तान छोड़कर चली जायँगी। तीसरी तरहके लोग थे जो कभी-कभी गरम गरम लेक्चर दे देते थे और अंगरेजोंको बुरा-भला कहकर कभी-कभी जेल चले जाया करते थे। इन तीनों तरहके लोगोंमेंसे किसीको आम जनतासे कोई वास्ता नहीं था। वह समझते थे कि जनता न किसी राजनीतिको समझ सकती है, न निर्भय होकर बलिदान कर सकती है, हम नेता ही हिन्दुस्तानका बेड़ा पार कर रहे हैं। गांधीजी जनताकी ताकतको दक्खिनी अफरीकामें कुछ-कुछ समझने लगे थे। उन्होंने हिन्दुस्तानी कुलियोंको वहाँ देखा था कि वह कैसे लड़ाके हैं। पिछला युद्ध खतम हो रहा था। युद्धके लिए तो सरकारने भारत-रच्छा कानून बना लिया था, लेकिन युद्धके बाद वह कानून नहीं चल सकता था और वह जानती थी कि लड़ाईके बाद दुनिया भरमें जबर्दस्त उथल-पुथल होगा। रूसमें उन्होंने देख ही लिया था कि कैसे कमेरोंने जोंकोंको मसल डाला। इसलिए अंगरेजी सरकारने हिन्दुस्तानमें एक ऐसा कानून बनाया जिससे उथल-पुथल मचानेवालोंको मनमानी सजा दी जाय। बोलक्कड़ लोगोंने इस कानूनका बहुत विरोध किया। लेकिन सरकार क्यों सुने? गांधीजीने इस वखत आगे कदम बढ़ाया और जनताकी तागत को इस काममें लगाया।

सोहनलाल—गांधीजीका यह बहुत बड़ा काम है न भैया?

भैया—बहुत बड़ा काम है। इतना बड़ा काम है कि जिसके लिए हिन्दुस्तान उन्हें कभी नहीं भूलेगा। जनताकी तागतके सामने अंगरेजी सरकार घबराई। हजारों आदमियोंको जेलमें डाला। लोगोंके दिलसे जेलका डर बिल्कुल जाता रहा। सरकारने जो कानून बनाया था वह रद्दीकी टोकरीमें डाल दिया गया। अब चिन्ता जेल जानेवालोंको नहीं बल्कि चिन्ता थी सरकारको कि इतने लोगोंके रखनेके लिए जेल कहाँसे आयेंगे। गांधीजीने साल भरमें सुराज पाने-

की बात कही, जोंकोंके दिलको बदल देनेकी बात कही। लेकिन कोई जादू मन्तर थोड़े ही है कि सालमें सुराज चला आवे।

दुखराम—और जोंकोंका दिल तब न बदले जबकि उनके पास दिल हो।

भैया—गांधीजीकी लड़ाई बन्द हो गई थी, लेकिन पहिले हीसे कितने ही नौजवानोंने रूसके कमेरोंकी बात सुनी। मरकस बाबाकी सिच्छाको भी वह पढ़ने लगे। हिन्दुस्तानमें भी उस सिच्छाका बीज पड़ा। अंगरेजी सरकार घबराने लगी कि यह बोलसेविक हिन्दुस्तानमें कैसे पहुँच गए? उन्होंने डांगे और दूसरे कमूनिस्तोंपर १९२४में कानपुरमें मुकदमा चलाया और उन्हें चार चार सालकी सजा दी। कमूनिस्त मजूरोंमें काम कर रहे थे। अपने हकके लिए मजूर लड़ने लगे और मजूरी बढ़ाने या किसी मजूरके निकालने पर बड़ी-बड़ी हड़तालें होने लगी। १९२९में ४ लाख मजूरोंने कलकत्ताकी गलियोंमें घूमते हुए बिलायतसे भेजे साइमन कमीसनका विरोध किया।

दुखराम—साइमन कमीसन क्या है भैया!

भैया—बिलायती जोंकें बहुत चलाक हैं भाई। जब लोगोंमें ज्यादा असंतोष देखती हैं तो पाँच-सात आदमियोंकी गुट्टको यह कहकर भेज देती हैं कि वह लोग जाकर जाँच-पड़ताल करेंगे। फिर हम तुम्हारे लिए जरूर कुछ करेंगे। इसीको कमीसन कहते हैं। उस वक्त जो कमीसन आया था उसका मुखिया था साइमन। जोंकोंका एक छँटा सरदार। इसीलिए उस कमीसनको साइमन कमीसन कहा जाता है। कमूनिस्तोंकी इस तागतको देखकर सरकार और घबराई और देस भरके कोने-कोनेसे गिरफ्तार करके, जोसी, अधिकारी, डांगे, आदि उनतिस कमूनिस्तोंपर मेरठमें मुकदमा चलाया।

दुखराम—तो भैया मरकस बाबाकी सिच्छा फैलनेसे बिलायती जोंकें बहुत घबराईं?

भैया—उतनेसे भी सन्तोस नहीं हुआ दुक्खू भाई। १९३४में तो सरकारने कानून निकाल दिया कि कमूनिस्त पार्टीमें जो भी जायेगा उसे जेलमें भेज दिया जायगा। लेकिन मरकस बाबाकी सिच्छा न फूल-सजापर सोनेवालोंके लिए है और न गोबर गनेसोंके लिए ही है। वह हवामें सिच्छा नहीं देते। नरक-सरग-

का लोभ भी वहाँ नहीं। जो गरीब हैं, मजूर हैं, रोज तकलीफोंको भुगत रहे हैं उनको यह सिच्छा बहुत जल्दी समझमें आने लगती है। जनताको इस तरह मैदानमें आते देखकर बिलायती जोंकोंके पेटमें पानी कैसे पचता। गांधीजीने कई और सत्याग्रह कराये लेकिन अब वह पुराने गांधी नहीं थे।

दुखराम—पुराने गांधी और नये गांधी क्या हैं भैया?

भैया— पुराने गांधीकी परछाईंसे भी जोंकें घबराती थीं, बिलायती ही नहीं हिन्दुस्तानी भी। इसलिए नहीं कि गांधीजी बोलसेविक थे और वह धनिकोंका धन छीनकर पंचायती बना देते। गांधीजीके साथ करनेका मतलब जेहलखाना-जुरमाना था। इसीलिए वह घबराती थी। लेकिन गांधीजीके "बिलायती माल न छुओ" कहनेसे हिन्दुस्तानी मिलोंका माल खूब बिकने लगा। खूब नफा होने लगी, तो सेठ लोग भी गांधीजीकी आरती उतारने लगे, जमींदार भी दंडवत् करने लगे। और अब गांधीजीने भी बार-बार कहना सुरू किया, मैं सेठों-जमींदारोंका धन छीनना नहीं चाहता, मैं तो इतना ही चाहता हूँ कि सेठ-जमींदार-किसान, मजूरोंके माँ-बाप बन जायँ।

दुखराम—इसीको कहते हैं भैया, "नँदिया (दूधके बरतन)की साखी बिलाई।"

भैया—यह तो सब कथा पुरानी हो गई दुक्खू भाई! बिलायती जोंकोंने देखा कि कमेरोंका राज रूसमें कमजोर होनेकी जगह और बढ़ता ही जा रहा है, मरकस बाबाकी सिच्छा भी दुनियामें फैलती जा रही है, हिन्दुस्तानमें भी उसे दबाया नहीं जा सकता। उधर हिन्दुस्तानी भी सुराज-सुराज कह रहे हैं अगर कुछ नहीं करेंगे तो सब हमारे खिलाफ हो जायंगे।

सन्तोखी—बंधक (रेहन) से बूड़ा (बे) हो जायगा।

भैया—इसीलिए उन्होंने कांगरेसको हिन्दुस्तानके कितने ही सूबोंमें सरकार चलानेका काम सौंपा। लेकिन जब यह लड़ाई सुरू हुई और गोरी जोंकोंकी लड़ाईमें बिना पूछे ही हिन्दुस्तानको भी सामिल कर दिया गया तो कांगरेसवाले सरकार छोड़कर चले आये। तबसे हिन्दुस्तान चाहता है कि वह भी अपने घरका मालिक बने। वह इस लड़ाईमें फसिस्टोंसे लड़नेके लिए पूरी तौरसे

तैयार है लेकिन चर्चिल-अमरीने क्या-क्या चाल चली यह हम बतला आये हैं। हम यह भी कह आये हैं कि दुनियामें जो कुछ होने जा रहा है उसके विधाता चर्चिल-अमरी नहीं हैं। दुनियाका नकसा ऐसे बदलनेवाला है कि उससे हमारे देसको बहुत मदद मिलेगी। लेकिन मैंने बतलाया था कि अपनी आजादीके लिए सोलह आनेमें चौदह आना काम हमें खुद करना होगा। और इस वक्त सबसे पहला काम है हिन्दू-मुसल्मानोंका समझौता। कांगरेस और मुसलिम लीगमें मेल।

सोहनलाल—तो क्या आप भी कांगरेसको हिन्दुओंकी जमात समझते हैं?

भैया—कांगरेस हिन्दुओंकी जमात है या मुसलमानोंकी जमात इसके बारेमें बालकी खाल निकालनेमें कोई लाभ नहीं। इतना तो तुम भी मानोगे कि जितना मुसल्मान जनताका विस्वास मुसलिम लीगपर है, उतना कांगरेस-पर नहीं। उतना क्या उसका दसवाँ हिस्सा भी नहीं है। डिस्टिक बोट, मनुस-पलटी और कौंसिलके वोटमें देख लिया है, कि मुसलिम लीगके आदमियोंको ही मुसल्मानोंके सबसे ज्यादा वोट मिलते हैं। मुसलिम लीग और कांगरेसका समझौता हुए बिना हिन्दू-मुसलिम एकता नहीं हो सकती और जब तक एकता नहीं होती, तब तक हम बिदेसी जोंकोंसे एक होकर लड़ नहीं सकते। एकताकी हर हालतमें जरूरत है। चाहे उसे आज करो या लड़ाईके बाद करो। चर्चिल-अमरीको यह कहनेकी हिम्मत नहीं है कि हम हिन्दुस्तानको गुलाम रखना चाहते हैं, मनसा उनकी यही है कि हिन्दुस्तान सदा गुलाम रहे।

सोहनलाल—तो क्या आप समझते हैं कि कांगरेस-लीग समझौता हो जायगा तो चर्चिल-अमरी हमें स्वराज दे देंगे?

भैया—मैं कितनी ही बार दोहरा चुका हूँ कि बिलायती जोंकोंके यहाँ "द" अच्छर नहीं है, इसलिए देनेका तो सवाल ही नहीं उठना चाहिए। कांगरेस-लीग एकता हो जानेसे हमारे बाहरके दोस्तोंका हाथ मजबूत हो जायगा। अमेरिकन अपने ब्योपार अपने स्वार्थके लिए चाहते हैं कि हिन्दुस्तान अँगरेजोंका गुलाम न बना रहे। हिन्दुस्तान अंगरेजोंका गुलाम नहीं रहेगा तो अमेरिकन माल भी हिन्दुस्तानमें खुलकर बिकेगा। टाटा, बिड़ला जैसे पूँजी-

पतियोंनेजो पन्द्रह सालमें हिन्दुस्तानमें कारखाना, खेती, पढ़ाई-लिखाई इत्यादि कितनी बढ़ानी चाहिए, इसके लिए एक खर्रा बनाया। अंगरेज जोंकें कहती हैं कि इतने कारखानोंको हिन्दुस्तानमें खोलनेके लिए पैसा कहाँसे आयेगा। अमेरिकन जोंकें कहती हैं कि हमें भी कुछ नफा कमाने दो, फिर जितना चाहिए उतना रुपया हम देंगे। वे आजकल खूब लिख रहे हैं कि हिन्दुस्तानके साथ समझौता होना चाहिए। अमेरिकाका प्रेसीडेन्ट भी यही बात चर्चिलको सुनाता है, लेकिन चर्चिल-अमरी कहते हैं कि तीस करोड़ हिन्दू और दस करोड़ मुसल्मान दोनों आपसमें झगड़ रहे हैं, जबतक उनमें कोई समझौता नहीं होता, तब तक हम किसको आजादी दें। कांगरेस-लीग समझौता होनेसे उन अमेरिकनोंको बहुत बल मिलेगा, जो हमारा पच्छ कर रहे हैं। रूस और स्तालिन वीरका भी हाथ आगेके लिए मजबूत होगा। इंग्लैंडके मजूरोंकी भी हमारे लिए काम करनेकी हिम्मत बढ़ेगी।

सोहनलाल—तो इसका मतलब यही हुआ न कि दो आना आपका काम हो जायगा ?

भैया—और चौदह आनेकी बात सुनो। हिन्दू-मुसल्मान दोनों तब एक होकर लड़ सकेंगे, उनके एक होनेसे तुम्हारी लड़ाई मजबूत होगी या अकेले-अकेले।

सोहनलाल—लेकिन लीगवाले अंगरेजोंसे लड़ेंगे थोड़े ही ?

भैया—तो आप समझते हैं मुसल्मान कायर हैं। वह जेहल और गोलीसे डर जायँगे। आपको पेसावरकी बात मालूम है कि सरकारी पलटन गोली चलाती रही और चार सौ पठानोंने पीठपर नहीं छातीपर गोली खाई, सिपाही पीछे हटे, लेकिन वह नहीं हटे। वह पठान मुसल्मान ही हैं न ?

सोहनलाल—लेकिन वह तो लीगवाले मुसल्मान नहीं वह तो कांगरेसके पीछे चलते हैं।

भैया—कांगरेसके पीछे चलते हैं ठीक है, लेकिन वह भी लीगके महान-नेता जिनाकी सर्तोंको मानते हैं और चिल्ला-चिल्लाकर कह रहे हैं कि लीगसे समझौता कर लेना चाहिए।

सोहनलाल—लेकिन मुसलिम लीगके जो राजा-नवाब जैसे लोग भरे हुए हैं, वह क्या अंगरेजोंसे लड़ेंगे भैया !

भैया — कांगरेसमें भी राजा-नवाबोंकी कमी नहीं है और न करोड़पतियोंकी लेकिन देखते हो न कि राजाओंके लड़के और करोड़पतियोंकी लड़कियाँ जेलमें जा रही हैं उसी तरह मुसलिम लीगके राजा-नवाब भी करेंगे। हाँ, उनसे यह उम्मेद न करो कि वह जोंकोंका राज उठानेके लिए बलि चढ़ेंगे।

दुखराम—वह तो हिन्दू जोंकोंसे भी उम्मेद नहीं रख सकते।

भैया—जिन मुसल्मानोंने अपने धरमके लिए अंधे हो जानेकी परवाह नहीं की और कम रहते भी हिन्दुओंके सामने न लाठीमें दबे, न छुरेमें दबे, न जेल जानेमें दबे, उन्हे सोहन भाई, तुम कायर नहीं कह सकते। कायर ज्यादा मिलते हैं बड़ी-बड़ी थैलीवालोंमें, उनको हमेसा अपनी मोटी तोंदकी फिकर बनी रहती है। हिन्दुओंमें मुसल्मानोंसे ज्यादा थैलीवाले मोटी तोंदवाले हैं। इसलिए मुसल्मानोंके बारेमें तुम्हारा ख्याल गलत है, वह देसकी आजादीके लिए लड़ाईमें कभी कायर नहीं दिखाई पड़ेंगे, आज जो वह खुलकर पूरे जोरसे एक होकर लड़ाईके मैदानमें नहीं आते तो उसके कारन हिन्दू हैं।

सोहनलाल—हिन्दू क्यों हैं भैया ! हिन्दू तो खुद आजादीके लिए लड़ते हैं और दूसरोंको भी लड़नेके लिए कहते हैं।

भैया—लेकिन मुसल्मानोंको जो यह सक हो गया है कि अंगरेजोंके राजको हटाकर हिन्दू अपना राज कायम करेंगे, और हम उन इलाकोंमें भी हिन्दुओंके गुलाम रहेंगे, जहाँ हम ६५ सैकड़ा, ८० सैकड़ा, ७० सैकड़ा हैं। अटक जिलेमें जाइये, सौमें नौ आदमी हिन्दू मिलेंगे बाकी मुसल्मान। रावलपिंडीमें २० हिन्दू हैं और ८० मुसल्मान। ढाकामें १००में ६६से ज्यादा, बोगरामें ८४से ज्यादा मुसल्मान हैं। मुसल्मानोंको सक है, कि अँगरेजी राज हटते ही हमें सब जगह हिन्दुओंका मुँह देखना पड़ेगा।

सोहनलाल—तो इसका मतलब यह है कि मुसल्मान हिन्दुओंका राज माननेकी जगह अंगरेजोंका ही गुलाम रहना पसंद करेंगे।

भैया—यही सवाल तो सावरकरसे भी हो सकता है कि वह मुसल्मानोंका

हक देनेके लिए तैयार नहीं हैं। इसके लिए चाहे अंगरेजोंकी ही गुलामीमें रहना पड़े।

सोहनलाल—वह लड़कर आजादी लेना चाहते हैं!

भैया—रहने दो लड़नेकी बात।

सोहनलाल—सावरकर क्या लड़े नहीं, क्या उन्होंने अपनी जवानीको अंगरेजोंके साथ लड़नेमें नहीं बिताई!

भैया—क्या वह अपने बुढ़ापेको अंगरेजोंके राजको मजबूत करनेके लिये नहीं बिता रहे हैं। भाई परमानंदको भी किसी वक्त फांसीकी सजा मिली थी, लेकिन उसका यह मतलब नहीं है कि वह पुरानी आग अब भी उनके भीतर है। सोहन भाई अंडमनके काले पानीमें उनकी सारी आग ठंडी हो चुकी है। फांसी खानेवाला बहादुर नहीं होता! गांधीजी उपवासके कारण मरने जा रहे थे। बड़े लाटके कौंसिलके तीन मेम्बर इस्तीफा देकर चले आये। कानपुरके पूँजीपतियोंके सरदार सर जे० पी० श्रीवास्तव टससे मस नहीं होना चाहते थे। चारों ओरसे, खूब झाड़ पड़ी और वीर सावरकर सर जे० पी० से कह रहे थे कि वहीं डटे रहो और जिस हिन्दू-सभाके सावरकर नेता हैं, जानते हो उसमें कौन कौन लोग हैं! अंगरेजोंके एक नम्बरके खुसामदी फलाने राजा फलाने महाराजा। दुक्खू भाई तुम भी तो फलाने राजाको जानते हो तुम्हारे समधीके गाँवके वही जमींदार हैं।

दुखराम—वह भी हिन्दू सभाका नेता है जो गरीबोंका खून कच्चा पी जाता है। उसने तो सिपाही सवार छाँट-छाँट कर गुंडे रखे हैं और माल-गुजारी दे देनेसे पिंड नही छूटता! कभी मोटरका चंदा लगता है तो कभी हाथी-का। ब्याह बरातके लिए हजारों रुपया वसूल करता है।

भैया—बस हिन्दू सभामें या तो इसी तरहके गरीबोंके खूनको चूसकर मोटे हुए राजा-महाराजा जिमीदार हैं या उनके टुकड़ेसे जीनेवाले, क्या जाने दो-चार पागल भी निकल आये।

दुखराम—तो अब बुढ़ापेमें सावरकर जोंकोंके सरदार बनकर अपनी वीरता दिखलाना चाहते हैं!

भैया—देखो तो दुक्खू भाई ! जोंकें अभी कितने-कितने तरहके नाटक खेलती हैं। धरमके नामसे उन्होंने हजारों बरसोंसे पागल कर रखा है, अब "हिन्दू धर्म डूबा" कहकर वह गांधीजीको गाली देने चले हैं।

सोहनलाल—तो भैया ! तुम चाहते हो कि जिन्नाने जो पाकिस्तान माँगा है, उसे दे दिया जाय और अखंड हिन्दुस्तानको टुकड़े-टुकड़े कर दिया जाय।

भैया—"भारत माताको जब्बह किया जाय, उनका हाथ काटकर कोई, पैर काटकर कोई ले जाय, सिर काटकर कोई ले जाय, माताको अपने हाथोंसे कतल किया जाय" यही सब कहना चाहते हो न सोहन भाई ! और इसीलिए कितने हिन्दू-सभावाले नेता कह रहे हैं कि चाहे सौ बरस और हमें गुलामीमें रहना पड़े लेकिन जिन्नासे समझौता नहीं होना चाहिए। जिनको गुलामीसे कितना प्रेम है, वह भारत माताकी कितनी इज्जत करते हैं, यह तुम खुद समझ सकते हो। भारत मातासे प्रेम हिन्दू ज्यादा करते हैं या मुसल्मान ? इसके बारेमें एक बार एक मुसल्मानने अच्छा कहा था।

दुखराम—क्या कहा था भैया रजबली ?

भैया—कहा था कि हिन्दू तो एक बारके लिए भारत माताकी गोदमें आये हैं। मरनेके बाद उनका कोई ठिकाना नही है कि फिर भारत भूमिमें आयें लेकिन मुसल्मान तो यहीं भारत माताकी गोदमें पैदा होता है मरकर, यहीं गाड़ा जायगा और परलय तक भारत माताकी गोदको नहीं छोड़ेगा।

दुखराम—हाँ भैया ! साढ़े तीन हाथकी कबर तो इसी धरतीमें न बनेगी ? तो क्या मुसल्मान दूसरा जन्म नहीं मानते हैं ?

भैया—नहीं, वह एक जनमिया हैं दुक्खू भाई ! मरकर कबरमें पड़े रहेंगे। जब परलय होगी तो भगवानके सामने जायेंगे। परलयमें तो धरती भी नहीं रह जाती।

दुखराम—तो भारत माता भी नहीं रह जायेंगी। जो बच्चा माँकी जिन्दगी भर साथ नहीं छोड़ना चाहता, वही माँसे ज्यादा प्रेम करता है भैया, जो अपनेको सरायका मुसाफिर समझता है, वह क्या प्यार करना जानेगा।

भैया—तो दुक्खू भाई, मुसल्मानोंकी भी बाप-दादोंकी कितनी ही पीढ़ी

इसी धरतीमें गली है। जो हिन्दुओंके कासी पराग यहाँ हैं तो मुसल्मानोंके भी अजमेर शरीफ और दूसरे हजारों तीरथ अस्थान हैं, जिनको वह उतना ही सम्मान करते हैं, मेला होता है तो हजारों-लाखों आदमी उस (परब)पर आते हैं।

सोहनलाल—तो वह अलग होना क्यों चाहते हैं ?

भैया—अलग होना चाहते हैं हिन्दुओंके बरतावसे। हिन्दुओंने दस करोड़ आदमियोंको चमार, मुसहर, डोम बनाकर उन्हें जानवरसे भी बदतर कर दिया है। कोई जब उनमेंसे मन्दिरमें जाता है तो कह देते हैं कि पोथीमें इसके खिलाफ लिखा है। पोथियाँ किसने बनाईं ? उन्हींने जो कहते हैं कि जोंकें भगवानकी ओरसे भेजी गई हैं, जमीदार और सेठ किसानों-मजूरोंको चूसते हैं तो यह भी वह धरम करते हैं। पहिले जनमका पुन है, इसीलिए उनको धन मिला है, लेकिन दुक्खू भाई ! तुम्हें मालूम है न कि जोंकोंके घरमें भगवान सोनेकी बरसा नहीं करते। एक आदमीको धनी बननेके लिये ही निन्नानवे आदमियोंको भूखा मरना पड़ता है।

दुखराम—हाँ भैया ! सब पोथी-पत्रा जोंकोंके फायदेके लिए बना है।

भैया—अभी १६ बरस पहिले (१६२५ ई०) तक नेपालके हिन्दू राजमें आदमी खरीदे-बेचे जाते थे और पोथी-पत्रेवाले कहते फिरते थे कि यह सब भगवानकी पोथीमें लिखा हुआ है।

दुखराम—तो भैया ! नेपालमें आदमियोंका बेचना-खरीदना कैसे बंद हुआ ?

भैया—दुनियामें थू-थू होने लगी, इसीलिये। और उसी नेपाल राजकी सावरकर और भाई परमानन्द तारीफ करते नहीं थकते। सोहन भाई, अंगरेजोंसे तुम कहते हो कि हिन्दुस्तानमें हम बसते हैं, इसलिये इसके कर्त्ता-धर्त्ता हम हैं, इसी तरह अटक, रावलपिन्डी, मैमनसिंगमें जहाँ पचीसों कोस तक गाँवके गाँव सारे मुसल्मान ही हैं और जब वह कहते हैं कि इस जगहके कर्त्ता-धर्त्ता हम हैं तो तुमको क्यों बुरा लगता है ? जहाँ सैकड़ों बरसोंसे मुसल्मान ही मुसल्मान बस गये उस धरतीके कर्त्ता-धर्त्ता तुम क्यों बनना चाहते हो। सावरकर ऐसे लोग सोचते होंगे कि हिन्दुस्तानकी चालिस करोड़की आबादीमेंसे दस करोड़

मुसल्मानोंको हम खतम कर देंगे, क्या उनमें इतना तागत है, तागत थी तो अँगरेजोंके आते बखत क्यों न कर लिया। असल बात है कि जो हिन्दू हिन्दूके नामपर चिल्लाते हैं उनमें बहुत ज्यादा अँगरेजोंके खुसामदी हैं और "करन चहत निज प्रभु कर काजा"। रूसमें भी जब बोंकोंका राज था तो इस तरहके लोग वहाँ भी बराबर झगड़े उठाया करत थे।

दुखराम—रूसमें भी तो भैया १८२ जाति हैं। वहाँ कैसे रास्ता निकाला गया?

भैया—वहाँ पहिले ही मान लिया गया कि कोई जाति दूसरी जातिकी गुलाम नहीं है, जिस जातिकी जो भूमि है, उसका कर्त्ता-धर्ता वही है। इसी-लिए एक-एक जातिका एक-एक पंचायती राज बनाया गया है, जहाँके राज-काजको उसी जातिके लोग चलाते हैं। अपनी भूमिमें अपने कर्त्ता-धर्ता होनेसे उनको डर नहीं है कि दूसरी जाति दबायेगी। इसीलिए एक सौ बयासी जातियोंने मिलकर बीस करोड़ आदमियोंका एक बड़ा पंचायती राज बनाया है। यहाँ भी उसी बातको मान लो तो सारा झगड़ा मिट जाये। मुसल्मान जहाँ अधिक हैं वहाँके वही कर्त्ता-धर्ता हों। हिन्दू जहाँ अधिक हैं वहाँके कर्त्ता-धर्ता वही हों। जो यह बात पक्की हो जाय तो मुसल्मानोंको हिन्दुस्तानके बड़े पंचायती राज रहनेसे उजुर नहीं होगा। लेकिन सीमा प्रान्तमें ९२ सैकड़ा, बिलोचिस्तानमें ८७·५ सैकड़ा, सिन्धमें ७१ सैकड़ा, पंजाबके मुसल्मान जिलोंमें ६०से ९० सैकड़ा, बंगालके मुसल्मान जिलोंमें ५१से ८३ सैकड़ा तक मुसल्मान हैं लेकिन हिन्दुस्तानकी दूसरी जगहोंमें हिन्दू ज्यादा हैं वह सब मिलकर यदि इन मुस्लिम इलाकोंके भी कर्त्ता-धर्ता बनना चाहें तो मुसल्मानोंको क्यों सक नहीं होगा।

दुखराम—तो मुसल्मान इलाकोंके कर्त्ता-धर्ता होनेकी बात है न भैया!

भैया—हाँ दुक्खू भाई! हिन्दू इलाकोंके कर्त्ता-धर्ता बननेकी जो वह इच्छा करें तो यह अनुचित होगा, लेकिन मुसल्मान इलाकोंके कर्त्ता-धर्ता बननेकी इच्छा हिन्दू जो करना चाहें तो यह न्याय नहीं धींगा-धींगी होगा। किसी भी तीसरे मुल्कको पंच मानो, वह यही कहेगा कि जो जहाँ बेसी रहते हैं उसके

कर्त्ता-धर्ता वही है। अखंड हिन्दुस्तान रटते हैं अखंड हिन्दुस्तान रटते हैं।

दुखराम—अखंड हिन्दुस्तान क्या है भैया !

भैया—यही कि हिन्दुस्तान एक है उसे खंड-खंड न करो लेकिन खंड खंड करनेका रास्ता तो वही पकड़ रहे हैं जो मुसल्मानोंको गिनना ही नहीं चाहते। दो भाई हैं उनकी धरतीको किसी दुसमनने दखल कर लिया। किसी तरहसे छोटे भाईको सन्देह हो गया है कि बड़ा भाई समूची धरतीका मालिक अपने बनना चाहता है। बड़ा भाई छोटे भाईसे कहता है कि चलो दुसमनसे लड़ें। छोटा भाई कहता है कि मैं लड़नेको तैयार हूं लेकिन मुझे अपना हिस्सा मिलना चाहिए। बड़ा भाई कहे कि नहीं यह तो सारी धरती अखंड रहेगी तो बोलो क्या हालत होगी ?

दुखराम—दोनों भाई कमजोर होंगे और दुसमन मजबूत होगा।

भैया—और जो बड़ा भाई कहे कि तुम्हारा हिस्सा हर बखत हाजिर है चलो बाप-दादाकी धरतीको दुसमनके हाथसे निकालें। जब बाँटनेका समय आये उस वक्त बड़ा भाई कहे कि इस धरतीमें तुम्हारा हिस्सा सदा बना हुआ है जब चाहो अलग कर लो; लेकिन हम दोनों इकट्ठा रहेंगे तो फिर किसी दुसमनके आनेका डर नहीं रहेगा अब बहुत मजबूत रहेंगे, इसलिए तुम इसे सोचकर जैसा चाहो वैसा करो। इस धरतीमें जो पैदा होता है उसको भोगनेमें कोई बेईमानी न हो, इसकेलिए हमें पक्का इन्तजाम कर लेना चाहिए। ऐसा कहनेपर बहुत मुमकिन है कि छोटा भाई अलग होनेका हठ छोड़ दे।

दुखराम—यह ठीक है भैया ! ऐसे ही होता है।

भैया—और यह भी सोचो सोहन भाई, १० करोड़ मुसल्मानोंमें ४ करोड़ हिन्दू इलाकेमें रहते हैं। बिहार, युक्त प्रान्त, मध्य प्रान्त, मद्रास, बम्बई इन इलाकोंके मुसलमान अपना घर-बार, अपनी बोली-बानी छोड़कर पाकिस्तानमें नहीं जायेंगे। तुम्हें मालूम नहीं है कि पिछली लड़ाईके बाद खिलाफतका जोर हुआ था। कितनेही मौलवी लोगोंने खरी निकाल दिया था कि अँगरेज जैसे काफिरोंके राजमें मुसल्मानोंका रहना अच्छा नहीं है। उन्हें हिन्दुस्तान छोड़कर दूसरे मुसल्मानी देसोंमें चला जाना चाहिए। हजारों मुसल्मान घर द्वार बेच-

बाँधकर काबुल और कहाँ-कहाँ चले गये और उनकी जो दुर्गति हुई इसके बारेमें कुछ न पूछो। काबुलवाले उन्हें देखकर कहते—'दालखोर हिन्दी! दर-हिन्दोस्तान नान् न-दारी, गुर्सना ईंजा आमदी!" (दाल खोर हिन्दुस्तानी, हिन्दुस्तानमें रोटी नहीं मिलती, भूखा यहाँ आया है)। बिहारी और गुजराती गाँवके मोमिनों (जुलाहों) से इतनी बेवकूफीकी उम्मेद मत करो कि वह घर-बार छोड़कर पंजाब या बंगालके पाकिस्तानमें भाग जायँगे।

सोहनलाल—सब तो रोज-रोजका झगड़ा बना ही रहा, पाकिस्तानको तो उन्होंने ले ही लिया और हिन्दुस्तानमें भी ४ करोड़ बैठे रहेंगे।

भैया—और पाकिस्तानमें भी तो हिन्दू जमे रहेंगे। उनको वहाँसे कौन निकालेगा। ४ करोड़ मुसल्मानका रहना रोज रोजके झगड़ेके लिए नहीं बल्कि यही ४ करोड़ मुसल्मान बाकीको समझायेंगे कि अपने इलाकेके कर्त्ता-धर्ता तो मान ही लिये गये अब हिन्दुस्तानसे अलग मत होओ। अलग हो जानेसे तुम भी तुर्की-अफगानिस्तान-ईरानकी तरह हो जाओगे जैसे वहाँके मुसल्मानोंसे हिन्दुस्तानके मुसल्मानोंको कोई फायदा नहीं वैसे हम ४ करोड़ मुसल्मानोंको तुम्हारे पाकिस्तानसे कोई फायदा नहीं होगा।

सोहनलाल—लेकिन पाकिस्तान बन जाय और वहाँके मुसल्मान ईरान, तुर्की, अफगानिस्तानसे मेल करके हिन्दुस्तानपर हल्ला बोल दें तो फिर क्या होगा?

भैया—सोहन भाई! दुनियामें जितने मुसल्मान देस हैं, सब पाकिस्तानसे चौथाई ही तिहाई होंगे। पंजाबकी ओरके पाकिस्तानके मुसल्मानोंकी आबादी ३ करोड़ होगी जब कि ईरानकी १ करोड़ ८० लाख है। अफगानिस्तान १ करोड़, तुर्कीकी १ करोड़ ७८ लाख, मिश्रकी १ करोड़ ६० लाख, बताओ दूसरे मुस्लिम देस पाकिस्तानकी पूँछ बन जायेंगे या पाकिस्तान दूसरे देसोंका। यह सब थोथी दलीलें हैं और कमेरोंके ख्यालसे तो दुक्खू भाई! इसे मानना ही अच्छा है क्योंकि जब कर्त्ता-धर्ता होनेके बारेमें तय हो गया, तो जोंकों और कमेरोंकी लड़ाई और साफ हो जायगी। पाकिस्तानी इलाकेमें मुसल्मान कमेरे, मुसल्मान मजूर, मुसल्मान जोंकोंसे सीधे लड़ेंगे उसी तरह जैसे हिन्दू इलाकेमें

हिन्दू। मरकस बाबाने तो ऐसा रस्ता बतलाया है कि उसमें देस जाति-धरमका अड़ंगा ही नहीं लगा सकता। हम रोटी कपड़ाके लिए लड़ते हैं कोई धरम हमारे रास्तेमें बाधा न डाले, जो बाधा डालेगा उसे ही नुकसान उठाना पड़ेगा। हिन्दूके नामपर इस्लामके नामपर जोंकोंको छिपाया नहीं जा सकता।

दुखराम—भैया! बरसातके मेंढकोंकी तरहसे जान पड़ता है जोंकें न जाने कितने धरम निकालेंगी और कौन-कौन-सी खुराफात जोड़ेंगी। लेकिन मरकस, बाबाने जो कसौटी दे दी है उससे खरे-खोटेका पहचानना बहुत आसान है। मै देख चुका हूँ, कितने राजा-महाराजा लोग कौंसिलमें वोटके लिए खड़े हुए थे और कितने पंडित और पुरोहित बड़ा-बड़ा टीका लगाकर लोगोंको समझाते फिरते थे कि कांग्रेसवाले जो गये तो हिन्दू धरम नहीं बचेगा, वह हिन्दू-मुसल्मान सबको एक करना चाहते हैं।

भैया—लेकिन दुक्खू भाई, कांगरेसवालोंने जो किसीने मुसल्मानके साथ खाया होगा तो रोटी-दाल लेकिन इन राजा-महाराजाओंकी लीला अपरम्पार है। यह साहब बहादुरके साथ बैठ न जाने क्या खाते हैं।

दुखराम—इसीको कहते हैं "छप्पन चूहा खाइके बिलारी भई भक्तिन"। मैं तो कहता हूँ कि गांधीजी हिचकिचाएं मत, इन बन्दरोंकी घुड़कीसे मत डरें। जिन्नासे मिलकर कांगरेस मुसलिम लीगका समझौता कर लें। जिस इलाकेमें मुसल्मान भाई बेसी हैं, वहाँके कर्त्ता-धर्ता मुसल्मान रहें, जिस इलाकेमें हिन्दू ज्यादा हैं उसके कर्त्ता-धर्ता हिन्दू रहें लेकिन कर्त्ता-धर्ता बननेके लिए बिलायती जोंकोंसे अपने देसको छीनना होगा न। और हिन्दू-मुसल्मान एक होकर लड़ेंगे, बाहरवाले भी चर्चिल-अमरीपर जोर डालेंगे तो उनको मानना ही पड़ेगा।

सोहनलाल—लेकिन जिन्ना अंगरेजोंसे भी तो लड़ना नहीं चाहते हैं।

दुखराम—मैं कहूँ भैने! जो लड़ेंगे नहीं तो अंगरेजोंकी गुलामीमें पाकिस्तान बनेगा!

सोहनलाल—दुक्खू भाई, तुम समझते नहीं जिन्नाका मतलब है कि हिन्दू पाकिस्तान मान लें तो हम अंगरेजोंकी खुसामद करके अपना हिस्सा अलग करवा लेंगे।

दुखराम—उहुँक, नहीं हो सकता, जो अंगरेजकी खुशामदसे पाकिस्तान मिलनेवाला होता तो अभी अंगरेजोंका हाथ किसने रोका है। बर्माको अलग कर दिया, तो अंगरेज किसीसे पूछने गये थे।

भैया—दुक्खू भाई, पहिले यही विलायती जोंकें मुसल्मानोंकी पीठ ठोका करती थीं कि माँगो अपना हक, लड़ो हिन्दुओंसे लेकिन अब जानते हो क्या राग अलाप रही है।

दुखराम—क्या अलाप रही है भैया?

भैया—लिनलिथगो अभी हाल हीमें छः साल लाटगीरी करके विलायत गये हैं। जाते जाते उन्होंने बड़ा लेक्चर दिया था कि हिन्दुस्तानका दो टुकड़ा नहीं होना चाहिए। अमरी भी हुँआ-हुँआ कर रहा है कि अंगरेजी राजने बड़ी मेहनत करके हिन्दुस्तानको एक बनाया है, इसको टुकड़े-टुकड़े करना हम कभी पसन्द नहीं करेंगे।

दुखराम—और उन्हींकी बातें ये हिन्दू भगत भी दुहरा रहे हैं न भैया! बस पता लग गया।

भैया—चर्चिल, अमरी और विलायती जोंकें यही चाहती हैं कि हिन्दू-मुसल्मान दिल साफ करके, दिल खोलकर एक न होने पाएँ तभी हमारी पाँचों उँगलियाँ घीमें रहेंगी। हिन्दू-मुसल्मानका मेल हुए बिना हमारी गाड़ी एक कदम भी आगे नहीं बढ़ेगी। एका न करके भगवान और अंगरेजोंका मुँह देखना देसकी गुलामीको चुपचाप बरदास करना है।

दुखराम—हाँ भैया! अंगरेज कब चाहेंगे कि हिन्दुस्तानी एक हों। वह तो चाहते हैं कि हिन्दुस्तान फूटका मेवा खाता रहे।

सोहनलाल—लेकिन भैया! सिरी निवास सासतरी, राजा नरेन्द्रनाथ, एन० एन० सरकार, मालवीजी जैसे बड़े-बड़े दिग्गज लोग कह रहे हैं कि पाकिस्तानको मानना बहुत बुरा होगा।

भैया—और अंगरेजोंकी गुलामीको मानना बहुत अच्छा होगा। तुम बूढ़े-बूढ़े नामोंको देकर डराना चाहते हो। मैंने कहा नहीं कि बूढ़ोंका दिमाग मरने-से पहिले ही मुरदा हो जाता है। ऐसे बहुत कम बूढ़े देखनेमें आते हैं जिनका

दिमाग मरते दम तक गंगाकी धाराकी भाँति बहता रहे नहीं तो बेसी सठिया जाते हैं। फिर तुम ऐसे नामोंको भी ले रहे हो जिनके केस अंगरेजोंकी गुलामी-में पक गये हैं। जिन्होंने अपने पेटके लिए अंगरेजोंके हाथको मजबूत किया। पाँच रुपयेकी नौकरी करनेवाले सरकारी चपरासीसे कुछ आप आसा भी रख सकते हैं सोहन बाबू क्योंकि उसको पाँच रुपयेकी नौकरी दूसरी जगह भी मिल सकती है, आधा पेटको तो आधी खानेको कहीं न कहीं मिलता है। लेकिन, जिसने दो हजार पाँच हजारके लिए अंगरेजोंकी ताबेदारी कबूल की है, उसके भीतर उतनी हिम्मत कभी नहीं हो सकती। नौकरी छूट जानेपर कौन इतनी मोटी तनखाह देगा? फिर घरमें जो इतना बड़ा-बड़ा लिफाफा है वह कैसे रहेगा। कहाँ नवाबी ठाट और नवाबी मिजाज और कहाँ अब दर-दरके भिखारी! क्या तुम कभी ऐसे लोगोंसे उम्मेद रख सकते हो कि वह सरकारके खिलाफ जायँगे?

दुखराम—पिनसिनियाँ, भैया, और लीचड़ (डरपोक) होते हैं। पिन-सिनहाका क्या कबुरमें पैर लटकाये सभी बूढ़े लीचड़ होते हैं। जवानोंको तो जल्दबाज कह देते हैं लेकिन जल्दबाज होनेपर भी वह अपनी इज्जत बातपर जान दे देते हैं; लेकिन बूढ़ोंकी चले तो बेसरमीकी विद्दा जवानोंको भी सिखा दें।

भैया—और सोहन भाई! तुम मालवीजीका नाम ले रहे हो। मालवीजीने एक बड़ा विस्सविद्दाला खोलवा दिया हजारों विद्दारथी पढ़ते हैं, यह अच्छी बात की। लेकिन हिन्दू विस्सविद्दाला नालन्दा विस्सविद्दालाकी बराबरी नहीं कर सकता। दुनिया बदली, उसीके मुताबिक नालन्दा विस्सविद्दाला भी बदला, इसलिए लोगोंको उसका नाम तक भूल गया। हिन्दू विस्सविद्दालाके जनमदाता पुराने हिन्दू धरमको अचल बनानेकी फिकिरमें रहते हैं। जब चमार, डोम इत्यादि जातियाँ अपने ऊपर हजारों बरससे होते आते जुलुमको बरदास करनेसे इनकार करने लगेंगी, तब भी मालवीजी, उन्हें राममन्तर देकर उनका उद्धार करना चाहेंगे। राममन्तरसे उद्धार करनेका जमाना गया।

दुखराम—राममन्तर देनेसे उद्धार होता भैया! तो गुरुबाबा गली-गली

भीख माँगते नहीं फिरते।

भैया—और मालवीजीसे कब उमेद कर सकते हो सोहन भाई! कि वह किसी बातको दो टूक कह सकते हैं, दो टूक कर सकते हैं वह सदासे अंगरेजोंसे भिच्छा माँगके स्वराज पानेकी उमेद रखते आये हैं। लेकिन गांधीजीके आँधीको जब देखा, तो समझ गये कि इसके खिलाफ जाना अच्छा नहीं। फिर कभी वह अंगरेज भगवानका मुँह देखते, कभी गांधी भगवानका। उनका हिन्दू-धरम तो और भी छुवाछूत और कूड़े-करकटसे भरा हुआ है। अपनी बिरादरीमें पहले आदमीने हिम्मत की, और उसने मालवी बाम्हनसे बाहर दूसरे बाम्हनके यहाँ ब्याह कर दिया। बर्हमर्मडल डोल गया, मालवीजीने उसे जातिसे निकलवाया, तरह-तरहसे बेइज्जत करवाया। जो आदमी इतना भी नहीं देख सकता कि हिन्दुस्तानकी यह जात-पाँत, छुआछूत ज्यादा दिन तक नहीं चल सकती। नरकमें ही यह सब कुछ चल सकता है, मालवीजीके सरगमें भी ऐसी जात-पाँत, छुआछूतका पता नहीं।

दुखराम—सरग तो हमें अब झूठा ही मालूम होता है भैया! सरग बनेगा तो इसी धरतीपर बनेगा; लेकिन जो यह सच है कि हिन्दुओंके सरगमें बाम्हन-चमार नहीं है, छुआछूत नहीं, तो इस दुनियामें क्यों यह सब जाल फैलाया।

सोहनलाल—लेकिन अब तो मैं जानता हूँ कि मालवीजीकी पोतियोंका ब्याह सरजूपारी, सारस्वत ओगैरह बाम्हनोंमें हुआ है।

भैया—पोते-पोतियोंकी करनेसे दादा-दादीको सुर्खरू नहीं बनना चाहिए। सोहन भाई! दादा-दादी, बेटे-बहूका गला दबाने भरकी ही ताकत रखते हैं, उसके बाद उनकी कोई नहीं चल सकती। बड़े-बड़े पंडित-पुजारियोंके पोतोंको देखा है, दादाके चौकामें लकड़ी धोके जाती थी। जाड़ा-पालामें भी नंगे बदन खाना खाते थे, दूसरेसे छू जानेपर नहाते थे—संसारकी जितनी बेवकूफी हैं सबको करते थे लेकिन अपने बेटे तकको नहीं रोक सके। वह होटलमें अंडा खाता है, और सब जाति सब धरमवालोंके साथ।

सोहनलाल—लेकिन हिन्दू बिस्सविद्दालामें नई-नई विद्दा सिखलाई जाती है, बिलाइतमें जो विद्दा पढ़ाई जाती है वह सब यहाँ भी पढ़ाई जाती है।

भैया—अब यह सवाल किसी दूसरे दिन करना सोहन भाई ! आज तो मुझे इतना ही बतलाना था कि यह जानते हुए भी कि अंगरेजी जोंकें सारी तागत लगाके हिन्दुस्तानको गुलाम बनाये रखनेकी कोसिस करेंगी और हिन्दू-मुसल्मानका मनमुटाव पाकर तो वह अपनेको अहोभाग्य समझतीं, तब भी जो कोई कहता है कि गांधी-जिन्ना मिलकर कांगरेस-लीग समझौता न करायें, तो वह या तो अंगरेजोंका गुलाम टुकड़खोर है या पागल, या उसकी सोचनेकी तागत खतम हो गई।

अध्याय १२

जमींदारी और रियासत

सोहनलाल—रजबली भैया ! मेरी बातोंका कुछ और न खयाल कीजियेगा जोंकोंके पुजारियों, दलालों और खैरखाहोंके जालमें मैं भी बहुत फँसा रहा हूँ। मरकस बाबाकी सिच्छा जब थोड़ी मिली, तो कुछ आँख खुलने लगी, लेकिन इसी वखत "तार काटूँ तरकुल काटूँ" का हल्ला हो गया। मेरी आँखें फिर बन्द हो गईं। मैं जापानी फसिहोंको बहुत बुरा समझ रहा था लेकिन अंगरेजों-के लिए दिलमें जो घिन थी उसने मुझे देखने नहीं दिया कि रेल-तार काटना, टेसनोंको जलाना, जापानकी बहुत भारी मदद करना है। जापान जो हिन्दुस्तान-में आ जाता, तो मरकस बाबाका नाम भी किसीके घरसे मिल जाता तो उसे गोली और जेलखाना छोड़कर दूसरी सजा न मिलती। मजूरों-किसानोंके हकके लिए लड़नेकी तो कोई बात ही नहीं कर सकता। मैंने किताबोंमें पढ़ा था कि जापानने कैसे कोरियामें अपना खूनी राज कायम किया। १९२३में जब भूकम्प हुआ, तो टोकियो राजधानीके बहुतसे घर गिर गये, लेकिन आदमी कुछ हजार ही मरे थे, लोग भाग-भागकर सहरके भीतर ही एक जगह जमा हो गये थे। लकड़ीके घरोंमें आग लग गई थी, जिसने लोगोंको चारों ओर घेर लिया। एक लाख आदमी जल मरे। जापानी जोंकोंने लोगोंके कानमें कह दिया कि

आग कोरियन लोगोंने लगाई है। यह बिलकुल झूठी बात थी। लेकिन उन्होंने लोगोंको पागल बना दिया और दस हजार कोरियन औरत-मरदोंको पकड़ पकड़कर उन्होंने मार डाला। बेचारे कोरियन टोकियोमें मेहनत-मजूरी करते थे। और भंगी मेहतर जैसे सबसे छोटे कामको करके पेट पालते थे। यह सब मुझे मालूम था। तो भी मैं अंधा हो गया था। डेढ़ बरस तक मैं जेलमें रहा, वहाँ जब इन बातोंको सोचा, तो अपने अंधेपनपर अफ़सोस हुआ। इसलिए मैंने जो कुछ सवाल तुमसे पूछा है, उनको इसी ख्यालसे पूछा है कि हमारे और भाई जो गलत-गलत सोचते हैं उसका साफ़ जवाब हो जाय।

भैया—नहीं सोहन भाई! कोई बात नहीं तुम जितने चाहो उतने सवाल करो। लेकिन यह खयाल करके कि संतोखी भाई और दुक्खू भाई भी हमारे सुनवैया हैं।

सोहनलाल—अच्छा भैया, जमींदारोंके बारेमें तुम क्या सोचते हो? अभी २० अगस्त (१९४४)को कलकत्तामें हिन्दुस्तानके बड़े-बड़े जिमींदारोंकी सभा हुई थी और हिन्दुस्तानके सबसे बड़े जिमींदार महाराज दरभंगा सभापति थे। उन्होंने कहा कि जमींदारी प्रथा हमारे देसके आत्मामें इतनी परवेस कर गई है कि जो उसको खतम कर दिया गया तो देसके ढाँचेका बखिया-बखिया उड़ जायगा और सारे देसमें परलै मच जायगी। उन्होंने परस्ताव पास किया कि जमींदारोंके खिलाफ देसमें बहुत जोरसे परचार किया जा रहा है और उसमें बहुत झूठी-सच्ची बातें कही जाती हैं। सोवियत रूसके मरकस पन्थकी बातें कह-कहके आगमें घी डाला जा रहा है। जमींदार सरकारपर जोर देकर कहते हैं कि सरकारको हमारी रच्छा करना चाहिए और एक नजरसे देखना चाहिए। उनको विसवास है कि सरकार जमींदार प्रथा जैसे लोकोपकारी रवाजको कायम रखनेमें मदद करेगी और जो सरकार यह नहीं चाहती है तो उसे अपनी बातको खोलके कह देना चाहिए और फिर जमींदारोंको पूरा दाम देकर उनसे जमींदारी खरीद लेना चाहिए।

दुखराम—भैया! यह सुनके देहमें आग लग गई लेकिन आँख भी खुल रही है कि जमींदार न रहेंगे तो हिन्दुस्तानके ढाँचेका बखिया-बखिया उड़ जायगा। हिन्दुस्तानका बखिया-बखिया तो नहीं उड़ जायगा लेकिन जो इन

जोंकोंने हिन्दुस्तानको नरक बना दिया है, उसकी बखिया जरूर उड़ने लगेगी।

सन्तोखी—"आप डूबा तो जग डूबा" वाला किस्सा नहीं सुना है दुक्खू भाई !

भैया—जमींदार ताल्लुकदार दुनियाका क्या उपकार करते हैं ? क्या दूध देते हैं कि बुढ़ापेमें भी उनके लिए गऊशाला बनाई जाय। कोई ७० लाख किसानोंकी हड्डी पीस कर लेता है, कोई ५० लाख, कोई २५ लाख, कोई लाख हजार। यह जमींदारके घरमें भगवान नहीं बरसाते हैं, इसके लिए किसानोंको अपना और अपने बच्चोंका पेट काटकर अगहन और चैतमें ही अपना अनाज मट्टीके मोल बेच देना पड़ता है। जाड़े भर भूखे तड़पते बाल-बच्चे खलिहान-में बड़ी रासिको देखकर बहुत खुस होते हैं कि अब पेट भर खानेको मिलेगा लेकिन महीनें बाद फिर उन्हें वही भूख सताने लगती है। जमींदारोंके पास जो करोड़ों रुपये किसानोंके घरोंसे सिमिट-सिमिट कर चले जाते हैं वह न जाने पाये तो इन जोंकोंका सत्यानास जरूर हो जायेगा। कुछ जोंकोंके कम हो जानेसे हिन्दुस्तानका बखिया-उखिया कैसे उड़ जायगा ?

सोहनलाल—और भैया इनके रहनेसे कितनी गन्दगी फैलती है !

भैया—यह तो सब जानते हैं कि राजा-महाराज, नवाब, बड़ा जमींदार जिस गाँवमें रहता है उस गाँवकी इज्जत नहीं बचने पाती। बेटी बहुओंको यह पकड़ मँगवाते हैं।

दुखराम—कोई मुँह नहीं खोल सकता है भैया ! मेरा छोटा भाई एक ऐसे ही गाँवमें ब्याहा है, जिसमें लाखोंकी तहसीलवाले एक जमींदार रहते हैं। एक दिन मेरी बहूकी बहिनपर जमींदारके लड़केकी नजर पड़ी। बेचारी सावनका झूला देखने गई थी। इन्होंने बड़े-बड़े मन्दिर भी खड़े कर लिये हैं। मैं तो सोचता हूँ कि इन मन्दिरोंको धरमका अस्थान काहेको समझा जाता है। जहाँ के गाँवकी बहू-बेटियोंकी इज्जत लूटनेका काम होता है, उसे धरम अस्थान नहीं कहना चाहिए। गाँवकी आधी औरतोंको जमींदार और उसके अमलोंने किसी न किसी समय बरबाद किया था। बूढ़ी होनेपर वही कुटनीका काम करती हैं।

उनको इनाम बखशीस मिलती है। नकटी दूसरीको भी नकटी बनाना चाहती है। इस कुटनीने बहूकी बहिनको फँसाना चाहा। जमींदारके लड़केने लड़कीको देखकर कुटनीको भेजा था। लड़की बातमें नहीं आई। लेकिन जमींदारका लड़का कैसे चुप रहता। जब दूसरी तरहसे काम नहीं बना तो उसने १० लठ-धर गुंडे भेजे, और एक दिन वह लड़कीको जबर्जस्ती उठा ले गये। घरवाले विरोध करने लगे, तो लाठीसे पीट दिया और लड़कीका एक भाई वहीं मर गया। खून हो गया। थानामें खबर गई। थानेदारको चार-पाँच हजार मिल गये, फिर कौन पूछता है? न कहीं हाकिम न अदालत! लड़की अब भी जमींदारके लड़केके घरमें है। अभी जवानी है इसलिए अभी कुछ दिन और चल जायगा नहीं तो रंडी या कुटनी बनना छोड़ उसके लिए कौन रस्ता है?

भैया—हर जगह बड़े-बड़े जमींदारोंकी यही हालत है दुक्खू भाई! लेकिन दूसरेकी इज्जत बिगाड़ते हैं तो इनकी भी इज्जतका कोई ठिकाना नहीं। इनकी औरतें अपनी आँखोंसे देखा करती हैं—किस तरह तालुकदार साहब रंडियोंपर पचास-पचास हजार खर्च करते हैं, ले आकर घरमें रखते हैं। दो-दो चार-चार औरतोंसे ब्याह करनेपर भी इनकी तिरसना नहीं जाती। जी तिरपित नहीं होता। खुद अपनी बीबियोंसे कुटनीका काम लेते हैं। बेचारी डरती हैं कि जो वह काम नहीं किया तो उनकी जिनगी नरक बन जायगी। बिहारमें लाखोंकी आमदनीवाले एक जमींदार हैं। बाप आधी उमर हीमें मर गये, माँ ऐसे घरमें बरहमचारिन कैसे रहती उसने अपने एक हट्टे-कट्टे नौकरको अपना खसम बना लिया। उसके साथ महलमें ही नहीं रहती थी बल्कि सामको बग्गीपर चढ़कर हवा खाने भी निकलती थी। लड़के चाहते थे कि कमसे कम बग्गीपर बाहर तो न निकला करे। सारा गाँव थू-थू करता है। माँने साफ कह दिया कि तुम जैसे रह रहे हो वैसे रहो, जो मेरे काममें बाधा डालोगे तो मैं इस आदमीको लेकर खुल्लम-खुल्ला बाहर चली जाऊँगी, फिर तुम्हारी नाक जो थोड़ी-बहुत बची है वह भी कट जायगी।

दुखराम—ऐसा होनेपर तो भैया तालुकदार उसको मरवाकर लासको भी लापता कर देते।

भैया—लड़कोंमें इतनी हिम्मत नहीं थी दुक्खू भाई यही कहो और एक दूसरे २५ लाखकी तहसीलवाले जमींदारके घरकी बात सुनो। पति जवानी हीमें मर गया।

दुखराम—बेमेहनतके लाखों रुपया हाथमें आते हैं और यह लोग बेदरदी-से खरच करते हैं। दूधका दाँत भी नहीं टूटने पाता कि रंडी और शराब दो ही चीज उनके सामने रहती हैं तो फिर जवानीमें न मरें तो क्या हो!

भैया—रानी साहब जवान थीं, राजा साहब पहिलेसे भी नपुंसक थे, रानी दिवानसे फँसी हुई थी। लेकिन जब राजाओंका एकसे काम नहीं चलता तो रानी क्यों एक आदमीपर सती होगी। महलमें जो भी हट्टा-कट्टा मरद आता, रानी उसपर जरूर दया दिखलाती। और उमर ढलनेके साथ तो बुढ़िया इतनी पागल हो गई कि वह जवानों और औरतोंको अपने सामने बेभिचार कराती और आँखोंसे उसका आनन्द लेती। सारा गाँव और आस-पासके हजारों लोग इस बातको जानते थे। इस तरह कि एक-दो नहीं लाखों बातें मिलेंगी। गन्दगी फैलानेमें तो इन निठल्ली जोंकोंने हद कर दिया।

दुखराम—और कलकत्तासे आकासबानी की जा रही है कि जो जमींदार न रहें तो हिन्दुस्तानका बखिया-बखिया उड़ जाय!

भैया—लाखों रुपया तो मालगुजारी लेते ही हैं, तिसपर भी पचासों तरहकी नाजायज वसूली करते हैं। जहाँ यह अपने भी कुछ खेती करवाते हैं वहाँ किसानों-को अपना हल-बैल ले जाकर बेगारमें खेत जोत देना पड़ता है। दूध, बकरा, तरकारी मुफत लेते हैं। नाराज हुए तो खेतसे बेदखल कर देते हैं। मालगुजारी देनेपर भी बहुतसे ऐसे जमींदार हैं कि रसीद नहीं देते। मोटर खरीदना होता है तो किसानोंपर चंदा बाँध देते हैं, हाथी-घोड़ा खरीदना होता है तो हथियाना-घुड़हाना लगा देते हैं। एक जगहके जमींदारके लड़केको फोनोग्राफका बाजा खरीदना था, तो उसके लिए भी किसानोंपर कर लग गया। जमींदारके कारिन्दे कहते थे, रुपया-आठ आनेमें क्या होता है दे दो नहीं तो जमींदार साहब बिगड़ जाएँगे।

दुखराम—और जमींदारके नौकर-चाकर कारिन्दे कितना लूटते हैं भैया!

भैया—लूटेंगे क्यों नहीं दुक्खू भाई। आठ आनामें आदमी एक साँझ खा भी नहीं सकता और इनके आठ आने महीनेपर नौकर रखे जाते हैं क्या यह नहीं जानते और सरकार नहीं जानती कि ये आठ आनेवाले नौकर परजाको लूटेंगे ? २४) और ३०) सालपर बिहारके जमींदार पटवारी रखते हैं। वह पढ़े-लिखे होते हैं उनको अपने लड़के-बच्चोंको पढ़ाना होता है। किसानोंसे अच्छा खाना-कपड़ा उन्हें चाहिए। बताओ पटवारी २४) या ३०)में कैसे अपना गुजारा कर सकता है ?

दुखराम—भैया ! इस सारी लूटको वह जानते हैं लेकिन जागते हुए भी जो आँख मूँद लेगा उसे कौन जगायेगा।

भैया—इन्हीं जमींदारोंके लड़के सरकारी अफसर कलक्टर, मजिस्टर, डिप्टी, मुंसिफ, सुपरिनटेनडेन्ट, इंसपेक्टर सभी तो जमींदारोंके बेटे हैं। मुट्ठी भर अंगरेजोंके बाद तो यही जमींदारके लड़के सारा काम करते हैं। परजाका खून चूसनेसे पेट नहीं भरता तो यह सरकारी अफसर बन जाते हैं और हमारी गाढ़ी कमाईका करोड़ों रुपया तनखाह और भत्तामें उड़ाते हैं। जमींदार और किसान मजूर और कारखानेदारका यह झगड़ा होता है, और झगड़ा होता है जोंकोंके जुलुमको रोकनेके लिए तब यही जमींदारोंके लड़के न्यायसिंहासनपर बैठेंगे। जिन्होंने बचपनसे कमेरोंपर जुलुम करके ही अपना पेट पाला, भला वह न्याय करेंगे या न्यायका गला घोटेंगे। जो अपने कारिन्दोंको घूस-रिसवत लेनेपर नौकर रखते हैं वह अदालतके मुहर्रिरोंको घूस-रिसवतसे रोकेंगे ? यह सब धोखा है। भीतर झाँकते ही दुर्गन्धसे नाक फटने लगती है और तब कोई कहे कि जमींदारोंकी जमींदारी हट जानेसे हिन्दुस्तानका बखिया-बखिया टूट जायगा तब हम यही कहेंगे कि उसे हिन्दुस्तानके नरकको बखियाको बनाये रखना चाहिए।

दुखराम—भैया ऐसा बखिया उड़ जाय तब ही अच्छा है। और मुझे तो अब महाबीरजी और सैय्यद बाबापर बिसवास नहीं रह गया। नहीं तो जिस दिन यह बखिया टूटता उस दिन लड्डू और सिरनी बाँट देता।

सन्तोखी—अरे मरदे महाबीर बाबा और सैयद बाबा नहीं रहे तो लड्डू,

सिरनी किसीको कड़वी थोड़े ही लगेगी। मैं भी दो सेर दूँगा और गाँव भरके लड़कोंको बाँटना। जुम्मन दादाको दो लड्डू ज्यादा देना वह बहुत पुराने कोढ़ोंके लिए झंखा करते हैं।

भैया—और सोहन भाई, जो जमींदार जोंकोंने कलकत्तामें जमा होकर सराप दिया है कि रूसकी बात लेकर मरकस बाबाके चेले जमींदारोंके खिलाफ बोलते और झूठी-झूठी बातें फैलाते हैं, इस सरापसे कुछ होगा-ओगा नहीं!

दुखराम—कुत्ते भूँकते रहते हैं, हाथी चला जाता है भैया!

भैया—जोंकोंका यही कोढ़ है जिसमेंसे दुर्गन्ध निकल रही है। किसानों और मजूरोंको झूठ बोलनेकी क्या जरूरत। जमींदारोंका अत्याचार क्या किसीसे छिपा है? निठल्ले क्या भलाई करते हैं जो उसका गीत गावें! पुरोहितों, मौलवियोंने बहुत दिन गीत गाया। आँखमें बहुत धूल झोंकी लेकिन अब वह बात नहीं होगी। कौन उपकारमें ६६ किसान एक जमींदारके लिए घिउ-मलीदा जुटाने, अपनी छातीपर कोदौ दलनेके लिए उसे बैठाये रखेंगे? बाकी रही सरकारसे न्याय करनेकी बात। सो हम जानते हैं, कई हजार बरससे सरकार खूब न्याय कर रही है। आज भी न्याय करनेके लिए बिलायत-की जोंकोंको कुछ छोड़कर देसी जमींदार हीके लड़के हैं। इन लोगोंके न्यायपर जमींदारोंके बिसवास न करनेका कोई कारन नहीं है। लेकिन हम उनसे न्यायकी उम्मेद नहीं रखते। हाँ, जमींदार-ताल्लुकदार लोग सायद ख्याल करते होंगे कि पन्द्रह-पन्द्रह रुपल्लीवाले नौकर ही तो सभी जोंकोंके हाथ-पैर हैं कहीं उनकी भी आँख न खुले और सारा गुड़ गोबर हो जाय। देखा न सोहन भाई! बिलायती जोंकें भी कहती रही हैं कि रूसकी ओर मत देखो, जमींदार, ताल्लुक-दार, राजा लोग भी कह रहे हैं कि रूसकी तरफ मत देखो।

सोहनलाल—और कितने ही किसान-मजूरके नेता कहलानेवाले सोसलिस्ट भी कहते हैं कि रूसकी ओर मत देखो।

दुखराम—सोसलिस्ट क्या है भैया!

भैया—सोसलिस्ट तो कहते हैं दुक्खू भाई! जो जोंकोंका राज हटाकर मजूरों-का राज चाहते हैं। लेकिन यह हिन्दुस्तानमें जो सोसलिस्ट पैदा हुये हैं, उनमें-

से कितनेही जापानको हिन्दुस्तानमें बुलाकर कमेरा राज स्थापित करना चाहते हैं। कोई-कोई कहते हैं कि मरकसने गलत-सलत बातें कही है, इसलिए उनकी सिच्छामें सुधार करना चाहिए।

दुखराम—मरकस बाबाकी सिच्छामें कौन सुधार करेगा वह मरकस बाबासे ज्यादा बुद्धिमान होगा। उनसे भी ज्यादा तपस्या करनेवाला होगा।

भैया—तपस्याकी बात छोड़ो दुक्खू भाई! हजार-पन्द्रह सौ रुपयापर जो फिसल जायगा वह तपस्या क्या करेगा! और बुद्धिमानीकी बात जो पूछते हो, तो काठका उल्लू चार अच्छर अंगरेजी पढ़कर बुद्धिमान नहीं हो जाता।

दुखराम—हाँ भैया! जिनको चलनेका भी सहूर नहीं वह गिटपिट-गिटपिट बोलकर समझते हैं कि हमारे ऐसा कोई नहीं। मैं तो सुनता हूँ तब मनमें आता है, कह दूँ—न तुम्हारे बाप बिलायती, न माँ बिलायती, किस घुट्टीके साथ तुमने अंगरेजी सीखी, फिर बाबू! काहे नहीं अपनी बोली बोलते।

भैया—बोल देना चाहिए दुक्खू भाई! नहीं तो इनका दिमाग और बिगड़ा रहता है। और यह गिटपिट भी उनकी दुक्खू भाई और सन्तोखी भाईके सामने चलती है, किसी साहबके सामने बोलना हो, तो सिटपिटा जाएँगे।

दुखराम—डर जाते हैं क्या भैया!

भैया—डर ही नहीं जाते दुक्खू भाई! यह जो पन्द्रह-पन्द्रह बरस तक अंगरेजी पढ़ते हैं, उनमेंसे एकाधही कोई निकलेगा जो सुद्ध अंगरेजी लिख-बोल सकता है।

दुखराम—तो भैया! क्या यह पन्द्रह-पन्द्रह बरस घास छीलते हैं?

भैया—बोली जो माँके दूधके साथ सीखी जाती है, वही सुद्ध होती है। लेकिन छोड़ो यह बात अब तालुकदार-जमींदारकी बात खतम हो जाने दो। इनको डर काहेका। अंगरेजी जोंकोंका राज जब यहाँ कायम हुआ तो १५० बरस पहिले लार्ड कार्नवालिस हिन्दुस्तानमें बड़ा लाट बनकर आया, उस वक्त जमींदारों-तालुकदारोंका पता नहीं था। बादसाहके नीचे पिन्सिन पानेवालों नौकरोंके लिए कुछ गाँवोंकी जागीर जरूर थी। लेकिन वह सरकारकी माल-

गुजारी वसूल करनेके लिए ठेकेदारी नहीं थी। कार्नवालिसने अंगरेजोंके खैरख्वाहोंको ऐसेही दस-पचास सौ गाँव लिखकर दे दिये, बस जमींदारी बन गई।

दुखराम—काहे जमींदार बनाये भैया!

भैया—कार्नवालिसने अपने मालिकोंको बिलायत लिख दिया था कि जो हमें हिन्दुस्तानमें राजकी जड़ मजबूत करनी है तो कुछ ऐसे लोगोंको तैयार करना पड़ेगा जिनकी जड़ अपनी जड़से बँधी हो। करोड़ों किसानोंका कोई ठिकाना नहीं कि किस बखत हमारे खिलाफ हो जायँ, लेकिन आज जिन लोगोंको हमने जमींदारीका पट्टा दिया है वह हमारे खिलाफ कभी न जायँगे। कौन कह सकता है कि कार्नवालिसकी बात झूठ हुई।

दुखराम—भैया ये जमींदारी बेचनेकी बात क्यों कर रहे हैं? क्या यह समझने लगे हैं कि जमींदारी नहीं रहेगी?

भैया—यह बात तो दुक्खू भाई दिन-दुपहरकी तरह साफ झलकती है। एक कथा सुनाता हूँ; रूस मुलुकमें कोई जिमीदार बाबू चार घोड़ोंकी बग्गी जोतकर जा रहे थे। जंगलमें भेड़ियोंने छेंका—देखा, अब तो मारे जाते हैं तब एक घोड़ा छोड़ दिया भेड़ियोंने खदेड़कर घोड़ेको पछाड़ा, लेकिन एक घोड़ेके माँस से उनका पेट नहीं भरा, फिर बग्गीके पीछे दौड़े दूसरा घोड़ा छोड़ा गया। फिर दौड़े तीसरा छोड़ा गया। इसी तरह बिलायती जोंकें अब ऐसे संकटमें पड़ी हैं कि उनको बग्गीका एक घोड़ा छोड़ना ही पड़ेगा और यह घोड़ा कार्नवालिस-का जोता जमींदार है। बिलायती जोंकें समझती हैं कि हिन्दुस्तानी सेठोंका घोड़ा हमें अच्छा मिल गया है, अब इस बूढ़े घोड़ेकी जरूरत नहीं। क्या जाने इस बूढ़े घोड़ेको पाकर कमेरे चुप हो जायँ।

दुखराम—तो जमींदारीका दाम सरकारसे माँग रहे हैं। सरकारके बापके घरमें क्या सोनेका पेड़ है?

भैया—सरकारसे माँगनेका मतलब है कि इनको मालगुजारी का बीस-पचीस गुना दाम चुकानेके लिए हम लोग और पचीस साल तक पीसे जायँ और यह रुपया लेकर अपनी जिन्दगी भर ऐस-जैस कर सकते हैं न?

दुखराम—और उनके बेटे-पोते ?

भैया—लखनऊमें जाकर देखो, नवाबोंके पोते एक्के हाँक रहे हैं। जोंकोंको अपने ही देहका सबसे बेसी ख्याल होता है, जो वह अपनी सात पुहुतका ख्याल करतीं तो दुक्खू भाई ! यह दुनिया इतनी नरक न बनती ? हो सकता है कुछ जमींदार ऐसा भी सोचते हों कि रुपया इकट्ठा मिल जायेगा, तो हम भी चीनीके मिल, कपड़ेकी मिल, नहीं तो तेलहीके मिल खाड़ी कर लेंगे। वह यह भी समझते हैं कि अभी किसान दबे-दबाये हैं, जो वह उठ खड़े हुए तो कुछ भी नहीं मिलेगा, और मिलेगा भी तो बहुत कम।

दुखराम—नहीं भैया ! इनको एक पैसा भी नहीं देना चाहिए। कार्नवालिसने जब कागज लिखकर जमींदारीका पट्टा दिया था, तो हमारे बाप-दादोंसे पूछा था ? दाम लेना है तो जायँ कार्नवालिसके पास। रुपया तो हमें माँगना चाहिए उनसे, क्योंकि डेढ़ सौ बरससे इन्होंने हमारी कमाई खाई। इसीको कहते हैं भैया "पैड़ा में हगै और गुरेरे"।

सोहनलाल—हिन्दुस्तानमें ६ सौके करीब राजा-नवाब लोगोंकी रियासत है।

दुखराम—यह भी जमींदार हैं क्या भैने ?

सोहनलाल—जमींदार नहीं दुक्खू मामा ! इनकी अपनी पुलिस-कचहरी, जेहलखाना है।

दुखराम—हैदराबाद, जयपुर, जोधपुर, न भैने ?

सोहनलाल—सब हैदराबाद, जयपुर-जोधपुर नहीं हैं, सिमलामें तो एक-एक गाँवके राजा हैं।

दुखराम—और उनको भी पुलिस कचहरी है ?

सोहनलाल—उनकी भी पुलिस-कचहरी है। छोटे-छोटे राजाओंको फाँसी देनेका अधिकार नहीं है। उन्हें भी सरकारी कागजमें हिज हाइनेस लिखा जाता है।

दुखराम—हिज हाइनेसका क्या मतलब है भैने ?

सोहनलाल—हिज हाइनेसका मतलब है "उनकी बड़ाई"। बिलायतके

राजाके लड़कोंको हिज-हाइनेस कहा जाता था। वही पदवी इनको भी मिली है। यह राजा-नवाब लोग भी कह रहे हैं कि हमारे साथ भी डेढ़ सौ बरस पहिले लिखा-पढ़ी की गई है और अंगरेजोंने कबूल किया है कि हम तुम्हारी रच्छा करेंगे, इसलिए हिन्दुस्तानको कोई स्वराज देना हो तो उस सुलहनामेकी कोई सर्त तोड़नी नहीं चाहिए।

दुखराम—और अंगरेज क्या जवाब देते हैं भैया!

सोहनलाल—अंगरेज जवाब देते हैं कि हम सुलहनामेकी एक-एक बातको मानेंगे और ६०० मुकुटधारियोंको हिन्दुस्तानकी छातीपर परलय तक बैठाये रखेंगे।

सन्तोखी—युधिष्ठिरके खानदानका मुकुट न जाने कहाँ गया, विकरमाजीत-के खानदानवाले न जाने कहाँ भीख माँग रहे हैं, अकबरके खानदानका कोई ठिकाना नहीं है। और यह चले हैं ६०० मुकुटधारियोंसे हिन्दुस्तानकी छातीपर कोदो दलाने।

भैया—बिलायतके जोंकोंका अपना तो ठिकाना ही नहीं है। इस लड़ाईके बाद जो बिलायतके कमेरोंको भूखे नहीं मरना है फिर तीसरे महाभारतमें नहीं पड़ना है तो बिलायती जोंकोंको खतम करना ही पड़ेगा। फिर यह बिलायती जोंकें चली हैं, हिन्दुस्तानी ६०० मुकुटधारियोंकी रच्छा करने। और यह ६०० मुकुटधारी कैसे हैं दुक्खू भाई, यह कैसे राज करते हैं, इनकी बात सुनोगे तो तुम्हारा खून खौलने लगेगा। ताल्लुकदारों और जमींदारोंका जुलुम भी इनके सामने झूठा है, बिलायतके राजाको बँधी रकम पानेके लिये पार्लमेण्ट पंचा-यतके सामने हाथ पसारना पड़ता है, और इन राजा-नवाबोंको पूरी छूट है। परजाको पीसकर जितना रुपया खजानेमें आता है, उसे खरच करनेमें इनका कोई हाथ नहीं रोक सकता। एक-एक रातके सोनेके लिए बाईस-बाईस लाखका यह चेक काट सकते हैं।

दुखराम—नहीं समझा भैया! क्या कहा।

भैया—एक राजा फ्रांस गये थे। किसी सुन्दरी गोरीसे उनकी आँख लग गई। गोरी तैयार नहीं होती थी। अन्तमें बाइस लाखपर सौदा पटा। राजाने

अपने अंगरेज नौकरको बाइस लाख रुपया देनेके लिए बंकको चिट्ठी लिख दी। आजकल रुपया जहाँ जमा होता है उसीको बंक कहते हैं। पहिले लोग महाजनोंकी कोठीमें रुपया जमा करते थे। राजाके नौकरने सोचा कि बाइस लाख रुपया अपने पास रख लेना अच्छा है। राजा गोरीके साथ रात भर सोये। रुपया न मिलनेपर झगड़ा हुआ। मामला अदालतमें गया। राजाके अंगरेज नौकरको धोखा देनेके कसूरमें साल-दो सालकी सजा हुई। नौकर बाइस लाख-का धनी हो गया, राजा भी घाटेमें नहीं रहे, गोरीकी सेज मुफतमें लूटी।

दुखराम—और राजाको भैया! अंगरेजी सरकारने कुछ नहीं किया।

भैया—किया क्यों नहीं, अंगरेज सरकार इज्जत बढ़ाती है तो उसको दो-चार अच्छरकी पदवी दे देते हैं। राजा साहबको बड़ीसे बड़ी पदवी मिली हुई है। और दूसरे राजाकी बात सुनो। लाख सुन्दरियोंके साथ सोनेकी साध अगर किसीकी बुती होगी तो इन्हीं राजा साहबकी। इनको मरे बहुत दिन नहीं हुआ। सरकारके यह बड़े खैरखाह थे और छः सौ राजाओंके तो मुकुट-मनि समझे जाते थे। अंगरेजी सरकारने इनको भी जितने बड़े-बड़े अच्छरोंकी पदवी हो सकती है, सब दे डाली थी। करोड़ों रुपया परजाको भूखे मारकर वसूल किया जाता था तब भी इनका खरच नहीं चलता था। अपने किसी दरबारीकी सुन्दरी लड़की या औरतको इसने नहीं छोड़ा, एकाध आदमियोंने विरोध किया, तो उन्हें मौतके घाट उतार दिया गया। बिलायतके जोंकों तक खबर गई लेकिन उन्होंने कानमें तेल डाल लिया। इस राजाके गोइन्दे रियासतके बाहर सहरों और पहाड़ोंमें सुन्दर लड़कियोंको ढूढ़ते फिरते थे। कुल्लू और सिमलाके सीधे-सादे पहाड़ी लोगोंमें तो घबराहट हो जाती थी जब उन्हें मालूम हो जाता था कि फलाने राजाके सिकारी पहाड़में पहुँच गये हैं। परजाको तो मुँह खोलनेकी भी इजाजत नहीं थी। बुढ़ापे तक यह राजा अपने पापसे धरतीके भारको बढ़ाता रहा। बिलायती जोंकें ऐसे मुकुटधारियोंको हिन्दुस्तानी परजाके गलेमें परलय तक बाँधनेके लिए तैयार हैं, लेकिन क्या परजा इसके लिए तैयार है।

दुखराम—नहीं भैया! यह तो रावन और कंससे भी बढ़ गया, मालूम होता है।

भैया—एक और राजाकी सुनो। बहुत बिसय करनेसे वह नपुंसक हो गये थे फिर उनकी ऐसी कुलत पड़ गई थी कि अपने पास जवानोंको रखते थे फिर भी ब्याह करते रहते थे।

सन्तोखी—कौन अपनी लड़कीको देता था दुक्खू भैया!

भैया—राजाके घरमें राजा हीकी लड़की जाती है, कई ब्याह करनेपर भी उनके लड़का नहीं हुआ था। समझते थे कि गद्दी सूनी हो जायगी और दूसरे घरका लड़का लेना पड़ेगा।

दुखराम—हिजड़ेको लड़का कहाँसे होगा भैया!

भैया—रानियाँ तो हिजड़ी नहीं थीं। उसने महलमें बहुत-सी कोठरियाँ बनवाई थीं जिनमें रानियाँको रख देता था। रातके बखत अपने दरबारी जवानोंको एक एक कोठरीमें जानेका हुकुम देता। अनजाने वह कोठरीमें चले जाते फिर बाहरसे बटन दबा देता और हर कोठरीमें बिजली बलने लगती फिर वह निलज्ज एक-एक कोठरीमें जाकर देखता। एक दिन बत्ती जली तो जवानने देखा कि वह अपनी ही बहिनके साथ लेटा है। बहिनने रनिवासके रंग ढंगको देखकर सब कुछ मान लिया था लेकिन वह इतना दूर तक जानेके लिए तैयार न थी। दूसरे दिन उसने जहर खाके परान दे दिया।

दुखराम—एकदम जनावर है भैया!

भैया—और खून कितने किये, इसको तो पूछो ही नहीं उनके लिए सात क्या सात सौ खून माफ हैं।

सोहनलाल—लेकिन राजकी देख-भालके लिए अंगरेजोंका एक रेजीडेन्ट भी रहता है न भैया!

भैया—रेजीडेन्ट यह देखनेके लिए रहता है कि इनके राजमें लोग बन्दूक रखते हैं, छोटी-मोटी पलटन रहती है, अपनी पुलिस-कचहरी रहती है इसलिए अंगरेजी राजके खिलाफ भीतर ही भीतर कोई बात तो नहीं हो रही है। वह सिर्फ इतना ही देखता है कि बिलायती जोंकोंको हिन्दुस्तानसे खून मिलनेमें कोई भाँजी तो नहीं मारता। किसका-किसका जुलुम गिनायें। छः सौ मुकुटधारी हैं जिनको परजाके धन, परान, इज्जत सबके साथ खेलवार करनेकी पूरी छुट्टी

है। और फिर यह डेढ़-सौ बरससे अंगरेजोंके छतर-छायामें अपनी कुचाल-दुराचारको कर रहे हैं। इतने दिनोंमें पाँच हजार मुकुटधारी हुए होंगे इनमें दस-बीस अच्छी चाल-चलनके मिलेंगे, बाकी तो रावन, कंस, वाजिद अलीसाह-के अवतार थे।

दुखराम—वाजिदअलीसाह कौन थे भैया!

भैया—लखनऊके नवाब। आजसे सौ बरस पहले अवधपुर राज करते थे। उन्होंने अपने महलको इन्दर सभा बना दी थी। संगमरमर पत्थरकी सीढ़ियोंपर गोरियाँ नंगी खड़ी होती थीं और वह उनका अस्तन पकड़े सीढ़ीपर चढ़ते थे। पाखाना अतरसे धोया जाता था और क्या-क्या होता था उसको कहनेकी जरूरत नहीं।

दुखराम—और इस सारे ऐस-ऐसका खरच परजा ही खून-पसीना एक करके चलाती होगी न?

भैया—और क्या, दूसरी कौन जगह थी जहाँसे पैसा आता। अंगरेजी इलाकेमें तो अखबारमें भी जुलुमके खिलाफ कुछ लिख सकते हैं, सभामें भी बोल सकते हैं। यहाँपर भी लाट बड़े लाटने नहीं पूरा जोर लगाया कि लोग ऐसा न लिखें-कहें, और इसके लिए पचासों बरस तक सरकार लोगोंको जेलमें डालती रही, बड़ा-बड़ा जुरमाना करती रही, अखबार-किताब जपत कर लेती थी, लेकिन जब लोगोंने नहीं माना और इस बातका हल्ला विलाइत-उलाइत-के लोगों तक पहुँचा तो थोड़ा लजाकर कुछ भयकर अपना हाथ ढीला कर दिया। अब भी सच्ची बात लिखनेमें सरकारके कोपका डर रहता है लेकिन लिखनेवाले इसकी परवाह नहीं करते। जिसको दुनियाके नरकको ढहाना है वह जोखिमकी परवाह क्यों करेगा। लेकिन इन छः सौ मुकुटधारियोंके राजमें न तो कोई खुलकर अखबारमें लिख सकता है, न किताबमें छाप सकता है। भागी रंडीको पकड़ लानेके लिए जिनके गुन्डे बम्बई तक पहुँचकर खून करते हैं, रियासतके भीतर रहनेपर अपनी बैरीकी क्या गति करेंगे इसे तुम खुद समझ सकते हो।

सोहनलाल—चर्चिल और उसके साथी दूसरी जोंकें गला फाड़-फाड़कर

कह रही हैं कि यह बड़ी लड़ाई है, जनताकी भलाई, जनताके राजकी रच्छाके लिए हम लड़ रहे हैं।

भैया—जरमन और जापानी फसिहोंको मारकर खतम कर देना यह बात तो जरूर जनताकी भलाई और जनताके राजके लिए बहुत जरूरी है लेकिन बिलायती जोंकें जनताका राज चाहती हैं यह बिलकुल झूठी बात है।

दुखराम—जनतासे जोंकोंका क्या वास्ता भैया !

भैया—और देखते नहीं, दुक्खू भाई ! चर्चिल-अमरीको कहते सरम भी नहीं आती। एक ओर कहते हैं कि हम दुनियामें जनताके राजके लिए लड़ रहे हैं और दूसरी ओर कहते हैं कि हम हिन्दुस्तानके छवो सौ मुकुटधारियोंकी परलय तक रच्छा करेंगे। क्योंकि डेढ़ सौ बरस पहिले हमारे पुरखों और मुकुटधारियोंके पुरखोंने एक सुलहनामा लिखा था।

दुखराम—जोंकों और राजाओंके पुरखोंने भले ही सुलहनामा लिखा हो पर परजाके पुरखोंने भी कोई सुलहनामा लिखा था !

भैया—हिन्दुस्तानके दो पन्चैयाँ ($\frac{2}{5}$) हिस्सेमें दस करोड़के करीब आदमी बसते हैं, जिनके ऊपर यह छः सौ मुकुटधारी राज कर रहे हैं, चर्चिल-अमरी इन छः सौ मुकुटधारियोंके राजको अचल रखना चाहते हैं लेकिन दस करोड़ जनता कहाँ जायगी। काठ पत्थरके खिलौने हैं क्या ? हम जानते हैं कि जोंकों-का धरम ही है झूठ बोलना। वह परजा-राज-परजा-राज इसलिए चिल्लाती हैं कि बिलायतकी परजाके बलपर फसिहोंको खतम करना है और कहाँके कमेरे हैं जो फसिहोंको फूटी आँखसे भी न देखना चाहेंगे। चर्चिल-अमरी यह कहकर दुनियाकी आँखमें धूल झोंकना चाहते हैं लेकिन दस करोड़ परजाके खिलाफ छः सौ मुकुटधारियोंका राज कहाँ तक जनताका राज कहा जा सकता है। लेकिन जोंकोंके सामने तर्क-बितर्क करनेसे कोई फायदा नहीं। न वह तर्कसे मानेंगे न हाथ-पैर जोड़कर भिच्छा माँगनेसे दया दिखायेंगे।

दुखराम—हाँ भैया, "जैसा देवता वैसा अच्छत"।

भैया—हम कब चर्चिल-अमरीसे उम्मेद करते हैं कि वह खानदानकी तोंद काटकर हमारा पेट भरेंगे। लेकिन एक बात साफ है, जैसे ५० बरससे लड़ते-

झगड़ते हिन्दुस्तानके तीन-पचैयाँ (३/५) धरतीके ३० करोड़ आदमी, अब अपनेको आदमी समझने लगे हैं। वह खुलके सोचते हैं, खुलके बोलते हैं, खुलके लिखते हैं और खुलके कर भी रहे हैं, उसी तरह मुकुटधारियोंके पैरके नीचे पिसी जाती १० करोड़ जनता भी करेगी। अभी ही कितनी रियासतोंमें जनताने गोलियों और जेलोंकी परवाह नहीं की है और अपनी कितनी ही बातोंको मान-नेके लिए मुकुटधारियों और उनके मालिकोंको मजबूर किया। चर्चिल-अमरी मुकुटधारियोंके प्रेमके लिए डेढ़ सौ बरस पुराने रद्दीके सुलह-नामेकी दुहाई नहीं दे रहे हैं। वह समझते हैं कि अंगरेजी हिन्दुस्तानमें जलियाँवाला बाग होता है तो उसके लिए हमारे ऊपर बौछार होने लगती है; रियासतोंमें कोई लाख औरतोंकी इज्जत बरबाद करता रहे, सात सौ खून करता रहे, परजापर जुलुम करता है, लेकिन उसके लिए सवाल करनेपर, हम कह सकते हैं कि ६०० मुकुटधारियोंके राजके भीतर हम कोई दखल नहीं दे सकते। सब जानते हैं कि अपने मतलबके लिए खूब दखल दिया जाता है। पिनिसिनिहा बूढ़े अंगरेजोंको रियासतोंका वजीर बनाया जाता है, बड़े-बड़े अफसर बनाया जाता है। राजा साहबने कुछ भी उनके मनका छोड़ अपने मनका काम करना चाहा कि कान पकड़कर उनको रियासतसे बाहर निकाल दिया जायगा।

सोहनलाल—पहिले तो रियासतोंके वजीर अंगरेज नहीं होते थे लेकिन अब तो दर्जनों अंगरेज रियासती वजीर हैं, फिर यह कहना क्या झूठ नहीं है कि हम रियासतके भीतर दखल नहीं देते?

भैया—वह कह देंगे कि उन्हें तो राजा साहबने अपने मनसे वजीर रखा। और यह अंगरेज़ वजीर काहे रखे जाने लगे हैं? इसीलिए कि अब परजा सो नहीं गई है, वह जागने लगी है। बिलायतकी परजाने तीन पाँच करनेपर राजा चार्लसकी गरदन उतार ली थी, हिन्दुस्तानकी परजा भी राजाओंको मनमानी नहीं करने देगी।

सोहनलाल—जैसे भैया जमींदार अपनी जमींदारीका दाम लेकर बेच देना चाहते हैं उसी तरह ये राजा लोग भी क्यों नहीं कुछ पेन्सन लेकर कासी बास करते?

भैया—अभी ये ६०० मुकुट बिलायती जोंकोंके बलपर कूद रहे हैं, समझ रहे हैं कि अंगरेजी हिन्दुस्तान तो सुराज ले ही लेगा क्योंकि बिलायती जोंकोंमें भी हिम्मत नहीं है कि साफ इन्कार कर दें। लेकिन वह दो-पचैयाँ हिस्सेको सुराजियोंके हाथमें नहीं जाने देंगी, इसमें उनका भी स्वारथ है।

दुखराम—क्या स्वारथ है भैया!

भैया—६०० मुकुटोंके रच्छा करनेका भार हमने अपने ऊपर ले लिया है इसलिए यहाँ हम अपनी पलटन रखेंगे और इन मुकुटोंको मजबूत करेंगे। इसी बलपर ये ६०० बछिया कूद रही हैं। इन्हें यह नहीं मालूम है कि जो रूसमें कमेरा राज होनेसे हिन्दुस्तानके कमेरोंका मन बढ़ा और उनकी मददसे कांगरेस और लीगने अंगरेजी जोंकोंको इस हालतमें पहुँचा दिया कि वह तीन-पचैयाँ हिन्दुस्तानकी बहुत उम्मेद नहीं रखते; तो पास-परोसके ३० करोड़ हिन्दुस्तानियोंको आजाद देखकर १० करोड़ हिन्दुस्तानी ६०० गुड़ियोंके सामने मत्था टेकते रहेंगे!

सोहनलाल—तो भैया रियासतोंका क्या होगा?

भैया—जो भाखा जिस रियासतमें बोली जाती है उस भाखाके बोलनेवाली पड़ोसी जातिमें वह मिल जायगी। ग्वालियरमें बुन्देलखण्डी और मालवी दो बोली बोली जाती है। बुन्देलखण्डीवाला भाग बुन्देलखण्ड प्रजा तंत्रमें चला जायगा और मालवीयवाला भाग मालव प्रजा-तंत्रमें, हैदराबादमें मरहठी, करनाटकी, तेलगू, तीन भाखाओंवाले इलाके हैं। तेलगूवाला इलाका आन्ध्र सूबासे मिलकर आन्ध्र प्रजा-तंत्र बन जायगा। करनाटकी भाखावाला इलाका बम्बई और मदरास सूबोंमें बँटे करनाटक प्रान्तसे मिलकर एक करनाटक प्रजा-तंत्र बन जायगा। मराठीवाली इलाका बम्बई और मध्य प्रान्तमें बँटे मरहठी इलाकोंसे मिलकर एक मरहठा प्रजा-तंत्र बन जायगा।

सोहनलाल—तब तो भैया! हिन्दुस्तानके सूबे भी नये बन जायँगे।

भैया—सूबों और भाखाके बारेमें फिर कभी कहूँगा। आज इतना ही कह देना चाहता हूँ कि ये सूबे जोंकोंकी बन्दर-बाँट हैं, ये जोंकोंके फायदेके ख्यालसे बने हैं, आगे हमारे सूबे प्रजाके खयालसे बनेंगे, और जहाँ जो भाखा चलती

हों उसी भाखाके मुताबिक वह परजा अपना पंचायती (प्रजा-तंत्र) राज बनायेगी।

सोहनलाल—और भैया ६०० मुकुटधारियों और उनके बीसियों हजार रानियों, राजकुमारों, राजकुमारियोंका क्या होगा ?

भैया—होनहारके सामने खुसीसे सिर झुकायेंगे, तो वह भी आदमीकी तरह रहेंगे, जैसे और लोग खायें-पहिनेंगे उसी तरह उनको भी खाना-कपड़ा मिलेगा। जैसे और लोग अपने लायक काम करेंगे वैसे ही उन्हें भी मिलेगा। लेकिन जो सिरपर काल मँड़रायेगा, तो जैसा एक समय फ्रांसमें हुआ जैसे रूसमें हुआ, वही गति इनकी भी होगी।

अध्याय १३

दरबारी, पुरोहित और सेठ

सन्तोखी—राजा और रियासतकी कोई जरूरत नहीं, यह तो समझ लिया भैया ! यह खाली जोंक हैं, इनसे दुनियाका कोई उपकार नहीं, किसी बखत राजा लड़ते रहे हों, देसके दुसमनोंका मुकाबिला करते रहे हों, लेकिन अब तो उनका काम बिदेसी बनियोंके सामने घुटना टेकना रह गया लेकिन राज-दरबारके साथ जो दरबारियोंकी भारी पलटन होती है उनके बारेमें तुम्हारी क्या राय है।

भैया—उन दरबारियोंमें कितने ही ऐसे हैं कि जो जनताके लाभका कोई न काम कर सकते हैं, लेकिन उसको जुहार करनेमें ही अपनी सारी जिन्दगी बिता देनी पड़ती है। रेल-हवाईजहाजकी बिद्या जिसे साइन्स कहते हैं, उसका एक गजबका बिदवान है, जो हमारे लिए और अच्छे इंजन तैयार कर सकता है, हवाई जहाज बना सकता है और उसको काम मिला है राजा साहबके मेह-मानोंकी खातिरदारी करना। इसी तरहसे और दूसरे बिदवान जो हमारे बड़े-बड़े काम कर सकते थे उनको दरबारी बनकर निकम्मी जिन्दगी बितानी पड़ती

है। राजा सराब पीता है, और अपने सारे दरबारियोंको पीनेको कहता है, कोई टीकाधारी पंडित, कोई दाढ़ीवाला मौलवी 'ना' नहीं कर सकता, सबको सराब पीना होगा। फिर राजा साहबका हुकुम हो रहा है और पियो और मुसाहिब धरती छूकर हाथसे सलाम करते हुए प्यालेपर प्याले उड़ेल रहे हैं। फिर गन्दे-गन्दे मजाक सुरू होते हैं तो बूढ़ेसे जवान तकको चाहे किसी धरमके माननेवाले हों सबको अन्नदाताके सामने आदमीसे जानवर बन जाना पड़ता है। मैंने कहा था कि रियासतोंमें तो सहर और गाँवकी औरतोंकी इज्जत भी बचनी मुसकिल है। महाराज या नवाब साहबकी जिस अभागिनीके ऊपर नजर पड़ी वह अपनेको बचा नहीं सकती।

दुखराम—इसीलिए तो भैया! औरतोंका मुँह ढाँककर रखनेका रिवाज नहीं हुआ?

भैया—हाँ, यही कारन है दुक्खू भाई! मुँह ढाँके रहनेसे रास्ते चलते तो राजा साहब नहीं देख सकेंगे। लेकिन जो दरबारी हैं उनके लिए तो परदा भी कोई चीज नहीं है। जो किसी दरबारीके घरकी सुन्दरी राजासे बच निकली तो इसको भाग समझो। दरबारियोंका हमेसासे यही पेसा रहा है कि राजा दिनको रात कहे तो उसमें तारे उगा दे। भाटोंकी भटैती सुनो तो दुक्खू भाई! तुम्हें अचरज होगा कि इतना झूठ वह क्यों बोलते हैं। जो खुद जानता है कि मुझमें तलवार क्या एक छूरी उठानेकी भी ताकत नहीं है उसको जो कोई भाँट या कवि, भीम या अरजुन बनाता है, तो उसे गुस्सा क्यों नहीं आता?

दुखराम—तारीफ करता है तो गुस्सा क्यों आयेगा भैया!

भैया—कुब्जको पहलवान कहने लगे तो वह तारीफ समझेगा या दिल्लगी और अगर तारीफ समझने लगा तब उसे क्या कहोगे दुक्खू भाई?

दुखराम—काठका उल्लू, गोबरगनेस, पक्का बेकूफ कहेंगे भैया!

भैया—और इन छः सौ मुकुटधारियोंमें ऐसे काठके उल्लू बहुत हैं, और कुछ तो अकल रखते काठके उल्लू हैं।

दुखराम—अकल रखते कैसे काठके उल्लू हैं भैया?

भैया—दरबारका ऐसा ही कायदा है, हमेसासे वैसा ही होता आया है। तो

दुक्खू भाई दरबारी लोग जोंकोंके न रहनेपर क्या बनेंगे, इसके बारेमें हमें ज्यादा सोचनेकी जरूरत नहीं है। लेकिन कमेरोंके वह उतने ही दुसमन हैं, जितने कि खुद बड़ी-बड़ी जोंकें।

सोहनलाल—पुरोहितों और मौलवियोंको किसमें समझें भैया?

भैया—वे खुद जोंक हैं और जोंकोंके दलाल भी। देखते नहीं जब कोई राजा कौन्सिलके लिए खड़े होते हैं तो पुरोहित लोग चारों ओर चक्कर काटने लगते हैं, भगवान और धरमकी दुहाई देते-देते कान बहरा कर देते हैं। पुरोहितों और मौलवियोंने कभी गरीबोंका पच्छ नहीं लिया।

सोहनलाल—भैया तुम भी कबीर साहबकी तरह मौलवियों और पंडितोंके पीछे पड़ गये।

भैया—पंडित सरगका एक रास्ता बताते थे, मोलवी दूसरा रास्ता, मोलवी-के मतसे गायका मांस खाकर सरग जाता है, पंडितके मतसे गायका गोबर खाकर पंडित सिरपर चुटिया बाँधकर सरग पहुँचता है, मोलवी दाढ़ीमें चुटिया बाँधनेको कहता है। फिर यह भी नहीं कि कह दें कि "मारग सोइ जाकहँ जो भावा," वह एक-दूसरेका सिर भी फोड़नेको तैयार थे। कबीर साहबको यह बुरा लगता था, वह इस खून-खराबीको पसन्द नहीं करते थे, चाहते थे हिन्दू-मुसल्मान एक होकर रहें। इसलिए उन्होंने कहा—"सोई राम सोई रहीम" बेचारे समझते थे कि है कोई अलख निरंजन इस दुनियाकी सुध लेनेवाला, इसलिए नहीं चाहते थे कि दुनियाकी सुध लेनेवाले (राम-रहीम)पर बिसवास करनेवाले एक-दूसरेका गला काटें। उन्होंने सोचा था कि राम-रहीमको एक मान लेनेसे काम बन जायगा लेकिन झगड़ेका दोसी राम-रहीम नहीं था।

दुखराम—राम-रहीम दोसी नहीं था तो कौन दोसी था भैया!

भैया—जो राम-रहीम होता और उसमें उतनी तागत होती जितनी पंडितों-की पोथियों और मुल्लोंकी किताबमें लिखी हुई है तो हजारों बरसोंसे अपने नामपर करोड़ों आदमियोंको कटते-मरते देखकर वह चुपचाप बैठा न रहता। असलमें मजहबके पैदा करनेवाले भी जोंकें हैं। भगवानको भी पैदा करने-वाली जोंकें हैं। मैंने पहले कहा था न कि एक निठल्ले आदमीको कोई क्यों

अपना सरबस देकर भूखे मरनेके लिए तैयार होता है ? इसीलिए उन्होंने राम-रहीमको पैदा किया, जिसने उन्हें राजा बनाया। राम-रहीम हैं, कबीर साहब यह विस्वास रखते थे, फिर पंडित-मुल्लाके झगड़ेको मिटाना चाहते थे। उनको पता ही नहीं था कि जब तक दुनियाको नरक बनानेवाली जोंकें हैं तब तक राम-रहीम एक कह देनेसे झगड़ा नहीं मिटेगा।

दुखराम—मैं भी एक बात कहूँ भैया!

भैया—कहो दुक्खू भाई।

दुखराम—तुमने भैया जो उस दिन कहा था न कि मजहब और भगवान-को गाली देनेमें हम लोगोंको अपनी तागत नहीं लगानी चाहिए, हमें देखना है कि कैसे कमेरोंको रोटी-कपड़ा मिलेगा? मैंने अपने मुँहमें जाबा लगा लिया लेकिन जानते हो न भैया, मरकस बाबाकी बातने दिलमें ऐसी आग लगा दी है कि जोंकोंके जाल-फरेबको कहना ही पड़ता है। उसमें जब कोई भाई बीचमें भगवानकी बात कहता है तो नहीं कहना ही पड़ता है। नहीं कहना खराब तो नहीं है भैया!

भैया—नहीं दुक्खू भाई, साँच कहना खराब नहीं है। मैंने इतना ही कहा था कि रोटी-कपड़ेकी बात छोड़कर जो तुम देवी-देवता और ओझा-सोखाके खिलाफ कहनेमें अपनी सारी ताकत लगा दोगे, तो असली काम पड़ा रह जायगा।

दुखराम—मैं इसे अच्छी तरह समझ गया हूँ भैया! एक दिन मैं बलीद-पुरमें था। रमजान भइयवा मेरा यार है। रमजान, मैं औ सोबरन राउत तीनों बगीचामें बैठकर बात कर रहे थे उसी वक्त हरखू पंडित उधरसे जा रहे थे। सोबरनने बाबा पालागी किया, हरखू पंडित पासमें आकर मेरे बारेमें पूछा तो सोबरनने कह दिया कि दुखराम राउत हैं। हरखू-पंडितका मुँह उतर गया और आँख बड़ी-बड़ीकर मेरी ओर देखने लगे। मैंने भी पालागी कहकर उनको बैठने-के लिए कहा। उन्होंने कड़ककर कहा—"जा तेरी पैलगी नहीं लेंगे। भगवान-को नहीं मानता, देवी-देवताको गाली देता है।" मैंने बहुत नरमीसे कहा—"देवता! दुरबासा रिखी! गरीबपर काहे नराज होते हैं, मैं किसी देवी-देवताको गाली नहीं देता।" हरखू पंडितने कहा—"तो तुम भगवानको मानते हो?"

मैंने कहा—"मैं तो बाबा ! भगवानको नहीं मानता लेकिन भगवानके पूजने-वालोंसे मेरा बहुत प्रेम है। इसीलिए भगवानको मैं गाली नहीं देता।" हरखू पंडितने मुँह फाड़कर कहा—"जो तू खुद नहीं मानता, तो जरूर गाली देता होगा।" मैंने कहा—"बाबा ! हमारा बच्चा है, वह हाथी-घोड़ा लेकर खेलता है, हम सयाने जानते हैं कि यह असली हाथी-घोड़ा नहीं हैं, लकड़ी-मट्टीका है लड़केको जो यही बात हम कहने लगें तो लड़का रोने लगेगा। बच्चेसे हमको प्रेम है और बच्चेको काठ-मट्टीके घोड़ेसे, इसीलिए बच्चेके प्रेमका ख्याल करके हम उस खिलौनेको भी भला-बुरा नहीं कहते।" मैंने ठीक कहा न भैया !

भैया—हाँ, ठीक कहा दुक्खू भाई !

दुखराम—हरखू पंडितने कहा,—तू भगवानको नहीं मानता, तो तेरी गति नहीं होगी, लेकिन तू भगवानको गाली नहीं देता तो यह अच्छा है। हरखू पंडितकी टेढ़ी भौंहें कुछ सीधी हुईं, लेकिन जब वह चलने लगे, तो उनका मुँह उसी तरह उतरा हुआ था। दूसरे दिनकी बात है मैं और रमजान खटियापर बैठे थे, उनके यहाँ गाँवके जुलाहोंको नमाज पढ़ानेके लिए एक मोलवी आते हैं। रमजानने किसी दिन कह दिया था। मोलवीको देखकर हम दोनों खड़े हो गये और उन्हें चारपाईपर बैठाया। मोलवीको किसीने कह दिया था कि दुख-राम रमजानके दरवाजेपर बैठा हुआ है, वह राम-रहीमको नहीं मानता। मोलवी साहबने कहा—"सुना है दुखराम राउत तुम करतारको नहीं मानते। हिन्दू-मुसल-मान बहुत-सी बातें अलग-अलग मानते हैं। लेकिन दुनियाके बनानेवालेको सभी मानते हैं, तुम क्यों नहीं मानते ? मैंने कहा—"दुनिया बड़ी खराब बनी है मोलवी साहब, हजारों आदमी जी लड़ाकर काम करते, उनका पेट नहीं भरता और एक आदमी निठल्ला बैठा रहता है, वह ऐश-जैश करता है, जिस करतारने ऐसी नरक दुनिया बनाई है उसे माननेसे क्या फायदा ?" मोलवीने कहा—"करतारसे दुआ माँगोगे, उसके सामने गिड़गिड़ाओगे तो वह तुम्हारी बिगड़ी बना देगा।" मैंने कहा—मैंने कसूर किया था कि हमें बिगाड़ा, और जो बिना कसूर ही इतना बिगाड़ सकता है उससे मैं किसी चीजकी उम्मेद नहीं करता।" मोलवीने कहा—"तो तुम करतार, सरग-दोजख कुछ नहीं मानते।"

मैंने कहा—"मैं नहीं मानता मोलवी साहब, लेकिन आप या दूसरा जो कोई करतारको मानता है, उसको मैं बुरा नहीं कहता। मैं इतना ही चाहता हूँ कि रोटी-कपड़ेकी दुनियामें किसीको चिन्ता नहीं रहे, बस इस काममें हम लोग सब एक रहें, क्योंकि भूख सबको एक तरह सताती है, जाड़ा-गरमी एक तरह लगती है।" मोलवी हरखू पंडितके इतना उजड्ड नहीं थे। उन्होंने मुस्कराते हुए कहा —"तो रोटी-कपड़ेके लिए काम करनेको कौन रोकता है?" मैंने कहा—"न रोके तो इससे मुझे बड़ी खुसी होगी मोलवी साहब, फिर तो मैं कहूँगा कि रोटी-कपड़ेका काम हम लोगोंको सौंप दें जो कि जोंकोंका राज हटा हम कमेरोंका राज कायम करना चाहते हैं।" मोलवीने कहा—"और हम क्या करें।" मैंने कहा—"आपको बहुत बड़ा काम है, जिनगी तो चार दिनकी है न, सरगमें आदमी बे अन्त समय तक रहता है, बस सरगका काम आप सँभालो।" मोलवीने कहा—"जो हम खाली सरग हीकी बात करें, तो हमें कौन पूछेगा। हमें गंडा देना पड़ता है, तबीज देनी पड़ती है।" मैंने कहा "गंडा भी आप दीजिये, तबीज भी आप दीजिये, लेकिन सरग जानेके लिए।" मोलवी ने कहा—"और जो किसीको लड़का-लड़की चाहिये तो।" मैंने कहा—'गंडा-तबीजको मैं नहीं पसन्द करता लेकिन मैं जानता हूँ कि जब तक यह नरककी दुनिया रहेगी तब तक गंडा-तबीजवाले देने-लेनेवालोंको कोई नहीं रोक सकता।" क्यों भैया मैंने ठीक कहा न?

भैया—ठीक कहा तुमने दुक्खू भाई! बेठीक होनेका तुम्हें कैसे सक हुआ।

दुखराम—सक इसीलिए हुआ भैया! कि इसके बारेमें बात नहीं की थी। खाली मरकस बाबाने जो आँख खोल दी है उसीके बलपर मैं बोल गया।

भैया—और तुम्हारा बोलना ठीक रहा दुक्खू भाई!

दुखराम—और जोतिसके बारेमें तुम्हारी क्या राय है?

भैया—जोतिस दो तरहका है दुक्खू भाई, एक तो वह जोतिस है जो गिनती करके बतला देता है कि सूरज गरहन कब होगा चाँदर गरहन कब होगा। अकासमें मंगल, बुद्ध आदि-आदि गरह और हमारी धरती भी सुरुजके किनारे घूमती है। जितने आकासमें तारे छिटके देखते हो उनमें आँखसे दिखाई

देनेवाले पाँच ही छः तारे हैं जो सुरजके किनारे घूमते हैं, नहीं तो बाकी सभी तारे सुरुज हैं।

दुखराम—तो सब तारे सुरुज हैं भैया! फिर वह इतने छोटे क्यों मालूम होते हैं?

भैया—हमसे बहुत दूर हैं, दो आदमी बराबर-बराबरके हों एक हमसे पाँच हाथपर खड़ा हो और दूसरा पाँच सौ हाथपर तो पाँच सौ हाथवाला छोटा मालूम होगा कि नहीं?

दुखराम—हाँ, छोटा मालूम होगा भैया!

भैया—यह तारे क्या चीज हैं, यह हमसे कितनी दूर हैं, वगैरह बातें पचास-पचहत्तर सालसे ही हमें मालूम हुई हैं।

दुखराम—सुरज गरहन, चंदर गरहनकी बात लोग बहुत पहलेसे जानते थे तो तारोंके बारेमें क्यों नहीं जान सके!

भैया—दूरकी चीज देखनेके लिए आँखके मदद करनेवाली दूरबीन उस वक्त नहीं थी, और बहुत दूर रहनेवाली चीजोंको आँख देख नहीं सकती। अँधेरेमें रोशनी होनेसे कुछ तारे जरूर दिखाई पड़ते थे, लेकिन तारे आसमानमें बहुत कम दिखाई पड़ते थे। मामूली दूरबीन लगाकर देखनेसे भी पचास हजार तारे दिखाई पड़ने लगते हैं। अढ़ाई इञ्ची दूरबीनसे तीन लाख तारे दिखाई पड़ते हैं। आजकल सबसे बड़ी दूरबीन (सौ इञ्ची , विल्सनगिरी अमेरिकामें है, उससे डेढ़ अरब तारे देखे जाते हैं।

दुखराम—तो दूरबीनसे आँखकी तागत बहुत बढ़ जाती है?

भैया—हाँ, उसी तरह जैसे रेडियो बाजासे कानकी तागत बढ़ जाती है। तीन सौ बत्तीस बरस (१६१२ ई०)से पहिले दुनियामें कोई दूरबीन नहीं जानता था। अकबरके मरनेके सात बरस बाद गलेलियोंने पहिली दूरबीन बनाई।

दुखराम—तो जो यह जोतिसी सबका आगा-पीछा बतला देते हैं, किसीको क्या होनेवाला है, सब कह देते हैं, ऐसी बातें तो वह न जाने कै हजार बरससे जान गये थे, लेकिन मामूली दूरबीन भी तीन सौ बरससे पहले नहीं बना सकते थे। मुझे तो भैया! यह भाग बतलानेवाला जोतिस भी जोंकों हीका फरेब

मालूम होता है। पचास बरस बाद मुझे क्या होनेवाला है, यह पहले हीसे पक्की हो गई, तभी तो जोतिसी मेख-बिरिख कहके बता देता है। फिर जब एक-एक दिन क्या बितनेवाला है, सभीको पहलेसे ही लिख दिया है तो हाथ-पैर हिलाना बेकार है।

भैया—तुम्हारी जिन्दगी भरकी बात पहलेसे नहीं लिख दी गई, तुम्हारा लड़का कब किस नच्छत्तरमें पैदा होगा यह भी जोतिसमें लिख दिया है। और जब नच्छत्तर मालूम हो गई तो उसकी भी कुंडली जोतिसी तैयार कर देगा और उसे एक-एक दिन क्या बीतेगा, यह भी जोतिसी बतला देगा।

दुखराम—माने हमारी कुंडली तो बनी है। लड़केकी कुंडली भी आपकी कुंडलीसे तैयार हो सकती है, क्योंकि पुत्र जनम जोतिससे मालूम ही हो जायगा, फिर तो पोते-पर-पोते और साठ पीढ़ी आगे तककी कुंडली और एक-एक दिन क्या बीतेगा सब बतलाया जा सकता है, जोतिसमें सब लिखा ही हुआ है। यह तो भारी चाल है भैया जोंकोंकी। बारह सौ बरस आगे तककी जब सब बातें पहलेसे ही पक्की हैं तो आदमी हाथ-पैर हिलावे या न हिलावे, बात होकर रहे होगी। तब तो आदमी अपने भाग्यका बनानेवाला नहीं रहा। नहीं, नहीं भैया! यह हम कमेरोंके हाथ-पाँवको बाँधकर जोंकोंके सामने पटक देनेका जाल-फरेब है। जोतिस और कुछ नहीं।

भैया—लेकिन जोंकोंने कैसा ढंग निकाला दुक्खू भाई! तुमको भी पछाड़ दिया, अपना काम भी बनाया और जोतिसीकी भी पाँचों घीमें है।

दुखराम—मुझे तो भैया! आदमीकी बुद्धिपर अफसोस होता है। अच्छे-अच्छे पढ़े-लिखे लोग भी जो कुंडली और हाथ दिखानेके लिए दौड़ पड़ते हैं, जान पड़ता है, काबुलमें भी गधे होते हैं।

भैया—यह कहनेसे कोई फायदा नहीं दुक्खू भाई! जब तक आदमीकी जिन्दगी निचिन्त नहीं है, आज भी उसको खाने-कपड़ेकी चिन्ता है, लड़के-लड़की के व्याहकी भी चिन्ता है कल उससे भी अधिक चिन्ता है तब तक आदमीको जोतिसियोंके पास जानेसे कोई नहीं रोक सकता। इसलिए भाग बतानेवाले जोतिसीके पीछे लाठी लेकर पड़नेकी जरूरत नहीं। सबकी जड़ जोंकें

हैं उनको काट दो बस सारा काम हो जायगा।

सन्तोखी—भैया महात्मा लोग भी तिरकालकी बात बताते हैं और उनके जालमें भी लोग फँस जाते हैं।

भैया—एक जाल नहीं, यहाँ पग-पगपर जाल है दुक्खू भाई ! एक भाईने मुझे चिट्ठी लिखी है—इधर कुछ दिनोंसे मुझे यहाँ एक प्रधान मत "जैन श्वेताम्बर तेरा पंथी" के आचार्यका सत्संग होनेके पश्चात्...। आधुनिक समयमें जब कि मनुष्यने सुखकी प्राप्ति भौतिक साधनों-द्वारा सम्भव मान ली है, जब कि विलासिता और ऐश्वर्यका बोल-बाला, जब कि सभ्यताके नामपर हमने मनुष्यत्वको, देवत्वको तिलांजलि दे दी है, इन साधुओंकी तत्परता, इनका त्याग, इनका वैराग्य, इनका संयम इत्यादि देखकर मनुष्यको चकित रह जाना पड़ता है। मैं दावेके साथ कह सकता हूँ जितनी सचाई और दृढ़ताके साथ इनका पालन ये करते हैं, वह अद्वितीय है, संसारमें रहते हुए जो विरक्ति ये लोग सांसारिकोंसे रखते हैं वह अभिनन्दनीय है। श्री भूलाभाई देसाई और हिन्दू-महासभाके सहायक-मन्त्री चकित रह गये। उन्होंने यहाँ तक कहा कि इनकी अहिंसाके सामने तो गीताकी अहिंसा भी फीकी पड़ जाती है।...... हिन्दू-महासभाके सहायक मन्त्री तो यहाँ तक मुग्ध हो गये कि उन्होंने स्पष्ट शब्दोंमें कह दिया कि अगर मैंने कभी धर्म ग्रहण किया तो इसको छोड़कर दूसरा कदापि न करूँगा। इनका त्याग इतना जबर्दस्त है कि गृहस्थ लोगोंके साथ सम्पर्क तो दूर इनको अगर यह पता चल जाय कि कोई वस्तु हमारे लिए खरीदी या तैयार की गई है तो भिक्षामें भी उसे कदापि ग्रहण न करेंगे। संयम इतना कि साध्वियाँ पुरुषमात्र और साधू स्त्रीमात्रके स्पर्शको पाप मानते हैं। पचासों आजन्म बरमचारी आपको मिलेंगे। जिन-जिन लोगोंने इनकी जाँच की है, उनकी एक मतसे यही राय रही है कि यह an ideal institution of the East (पूर्वकी एक आदर्श संस्था) है ! मेरा भी झुकाव इस तरफ होनेके बावजूद मैं इसको उस वक्त तक नहीं मानना चाहता जब तक आप इसकी जाँच न कर लें।" (२६ जुलाई १९४४ ई०)।

दुखराम—भैया संसकिरतमें किसीने लिखा है क्या, मुझे तो कुछ समझमें

नहीं आया।

भैया—नहीं आया वही अच्छा है दुक्खू भाई, समझमें आया होता तो न जाने क्या कह डालते।

दुखराम—आप कहेंगे तो मैं जीभको बाँधकर रखूँगा भैया! लेकिन सुनायें तो क्या बात है।

भैया—एक बात यह है कि खाते-पीते आदमी हैं, उनके पास पक्का मकान है, नौकर-चाकर हैं, देखा तो नहीं सायद उनकी बीबी भी हों, बच्चे भी हों; उनके बदनपर सोनेका गहना और रेशमी नहीं तो अच्छी बारीक सूतकी साड़ी रहती हो, खानेके लिए दूध-घी और फल-मेवा भी मिल जाता हो। कलकी चिन्ता उनको उतनी ही है जितनी किसी करोड़पति सेठको दूसरे दिन दिवालिया हो जानेकी।

दुखराम—भैया! जोंकें कलकी परवाह नहीं करतीं वह नगद धरम मानती हैं, "आज नगद कल उधार"।

भैया—तो भी दुक्खू भाई, जिसने यह खत लिखा है, वह चाहे जोंकोंका ही अंडा-बच्चा हो, लेकिन उसका दिल उतना कठोर नहीं है। बेचारा बड़ी कोसिस करता रहा है कि जोंकोंके जालसे निकलें, लेकिन जोंकोंका जाल कहाँ-कहाँ फैला है इसको जानना बहुत मुस्किल है। चिड़िया हवामें उड़ना चाहती थी, उसने समझा कि निरमल आसमानमें कोई डर नहीं लेकिन बहेलियाने वहाँ भी जाल टाँग रखा था और उसी जालमें पड़कर फड़फड़ा रही है। बेचारा भाई एक साधूको देखता है जो दुनियाके लोगोंसे बिलकुल बैराग रखते हैं जिनके बैरागको देखकर हिन्दुस्तानके आरामसे जिन्दगी काटनेवाले कुछ बड़े बड़े लोग।......

दुखराम—बड़ी-बड़ी जोंकें।

भैया—बड़े-बड़े लोग अचरज करते हैं और एक बड़े आदमी तो ऐसे हैं कि हिन्दू-धरमका बेड़ा-पार करते हैं लेकिन अभी तक वह कोई धरम नहीं मानते, इन महात्माको देखकर उन्हें भी धरम माननेकी साध लगी।

दुखराम—वही सावरकरवाली हिन्दूसभा न भैया, जो बड़ी-बड़ी जोंकोंकी

मुट्ठीमें है।

भैया—अच्छा, ये महात्मा इतने त्यागी हैं कि जो इनके लिए कोई चीज खरीदकर भी दे तो वह भिच्छामें भी नहीं लेते।

दुखराम—तब तो वह महात्मा खाली हवा पीते होंगे। क्योंकि दुनियामें लोकोंकी कोई ऐसी चीज ही नहीं है जिसे खरीदा-बेचा न जाय।

भैया—और मैं यह भी समझता हूँ दुक्खू भाई कि वह महात्मा ऐसे गरीबोंके घरोंमें नहीं रहते होंगे जो खून-पसीना एक करके धरतीसे अनाज पैदा करते हैं, कपास पैदाकर अपने हाथसे कपड़ा बनाते हैं। क्यों कि महात्माके पचासों चेलों और चेलियोंको बैठे-बैठे खाना कपड़ा देना गरीबके बसकी बात नहीं है।

दुखराम—पचासों चेले-चेलियाँ और वह करते क्या हैं भैया?

भैया—वह तमाम जिनगी भर बरमचारी रहते हैं न औरत मर्दको छूती है, न मर्द औरतको छूता है।

दुखराम—हिंजड़ा-हिंजड़ी होंगे भैया, इसमें कौन बात है।

भैया—हिंजड़ा-हिंजड़ी न भी हों तो भी दुक्खू भाई! मैं साधू-साधुनियों-की लीला जानता हूँ। बरहमचारी तो क्या होंगे, लोगोंकी आँखमें धूल झोंकते हैं। बस यही ध्यान रखते हैं कि बात खुलने न पाये। एक-दो आदमीकी बात कहते, तो मैं समझता कि पागल होंगे या जैसा तुम कह रहे हो उसी तरहके हिंजड़े होंगे लेकिन जब पचास-पचास चेले-चेलियोंके तमाम जिनगी बरहमचारी रहनेकी बात कहते हैं, तो मुझे इसमें जरा भी सक नहीं कि वह खूब जबर्जस्त ढोंग है। ऐसे बरहमचारी-बरहमचारिनियाँ रिखीकेसमें हजारों हैं, उत्तर कासीमें भी हैं। कितने तो गंगोत्तरीके हाड़ चीरनेवाले जाड़ेमें बिल्कुल नंगे दिगम्बर रहते हैं। उनमें एक है महात्मा किसन आसरम। आज बीसों बरससे वह हिमालयमें नंगे रहते हैं उनके तपस्याके बारेमें क्या पूछते हो, हिन्दूधरमके सबसे बड़े नेता मालवीजीको अपने बीस लाखवाले मन्दिरके नींव रखनेके लिए हिन्दुस्तान भरके बड़े-बड़े महात्माओंकी खोज होने लगी। उस वक्त मालवीजी-को महात्मा किसन आसरम ही ऐसे दिखाई पड़े जो कासीमें आकर दूसरे विश्व-

नाथ बाबाके नेंव डालने लायक हैं। उन्होंने ही विस्वनाथकी नींव डाली। और महात्मा किसन आसरम बड़े बरहमचारी हैं उन्होंने सिरिफ राजाराम बरहमचारी-के गूंगे लड़केकी बहू भानदेको गीता पढ़ाया और बेचारे पहाड़ी गीत गाते फिरते हैं—

"चवन्नीको पेरा, तैं क्या बुरा मानो राजरामको डेरा।
झाका बुनी खाट रे। तैं भलो सीक्यो गीताको पाठ रे।
चीणे तू बँगला भान दे! चीणे तू बँगला तैंने कानों छोडो इरसिलको जँगला।"
गूँगानीकी गोली तैं ना भालो भान दे! अबोलाके बोली।"

दुखराम—किसन आरारम और भानदे न जाने कितने पड़े हुये हैं भैया!

भैया—एक आदमी और एक औरत साथमें रहें, यह कोई बुरा नहीं है, लेकिन यह बरहमचारी बरहमचारीका ढिंढोरा क्यों पीटा जाता है। मान लो दुक्खू भाई कोई मरद रहते भी हिजड़ा बन जाता है तो दुनियाको इससे क्या फायदा?

दुखराम—दुनियाको न फायदा हो, जोंकोंको तो फायदा है, वह कहती फिरेंगी कि छोड़ो दुनियाके सुख-दुखको इसी तरह तुम भी महात्मा बन जाओ।

भैया—दुनियामें हजारों बरसोंसे ऐसे बरहमचारी होते आये हैं, इनसे भी बढ़कर त्यागी हुये हैं, लेकिन उससे दुनियाका नरक जौ भर भी कम नहीं हुआ।

दुखराम—और इन हजार बरसोंमें जबसे कि जोंकोंका राज कायम हुआ लोग बराबर इस तरहके जालमें फँसते रहे!

भैया—मैं तो समझता हूँ दुक्खू भाई! ऐसे साधुओंमें कुछ ईमानदार भी रहे होंगे, वह दिलसे धनियोंको पसन्द नहीं करते थे, हाँ, बेसी धोखेबाज और पागल ही रहे हैं। लेकिन ईमानदारोंकी ईमानदारी और सच्चाई किस कामकी जो कि गरीबोंके गलेके फन्देको और मजबूत करती हैं। जो इन महात्माओंमें ईमानदारी है, और इनमें सोचने-समझनेकी ताकत है, तो क्यों नहीं समझ लेते कि वे हजारों बरससे नरककी जिन्दगी बिताते हैं, ६६ सैकड़ा लोगोंके दुखको दूर करना है। वह ब्रह्मचर्य किस कामका, जो आदमीको खुदगरजी सिखाये, वह दुनियाको चूल्हे-भाड़में पड़ने दे और अपने निरवानके पीछे दौड़ता फिरे। मैं तो महात्मा उसे कहूँगा, जो प्रतिज्ञा कर ले कि जब तक करोड़ों आदमी

पीढ़ीके बाद पीढ़ी नरककी जिनगी बिता रहे हैं, तब तक मेरे लिए निरवान नहीं चाहिए, मुकती नहीं चाहिए, सरग नहीं चाहिए। वैसे तो कितने ही घोड़े-घोड़ियाँ थानपर बँधे जिनगी भर बरहमचारी रह जाती हैं। लेकिन जिस दिन वह महात्मा यह बात तय कर लेंगे, उस दिन उन्हें आँटे-चावलका भाव मालूम हो जायगा, फिर सेठ-सेठानियाँ उनकी आरती नहीं उतारेंगी, फिर राजा-नवाब उनका चरना-मिर्त नहीं लेंगे।

सोहनलाल—तो भैया तुमने क्या जवाब दिया चिट्ठीका, क्या महात्माका दरसन करने जाओगे?

भैया—मैंने अपने एक दोससे कहा कि आप चलें तो मैं भी चलूँ। उन्होंने जवाब दिया—"मैं ३५ साल तक जंगल-जंगलकी धूल फाँकता फिरा, न जाने कितने महात्माओंको देखा है और उनमें दो ही तरहके आदमी मिले हैं या तो छटे बदमास जादूगर, या पागल। मैं एक दिन भी अब जिन्दगीका ऐसी दौड़-धूपमें नहीं लगाना चाहता।

सोहनलाल—लेकिन भैया, तुम्हें जो उन्होंने महात्माकी जाँचके लिए बुलाया है, जो जाँचकरके बतला नहीं दोगे तो वह महात्माके चेले बन जायेंगे?

भैया—सोहन भाई, मनमें बुरा मत मानना। मैं जोंकों और जोंकोंके लड़कोंपर तनिक भी बिसवास नहीं करता और यह भी बतला दूँ कि पढ़े-लिखे बाबुओंपर भी मेरा बिसवास नहीं है।

सोहनलाल—तो पढ़ना-लिखना बुरा है भैया?

भैया—जो मैं पढ़ने-लिखनेको बुरा मानता तो कहता मोटर-हवाई जहाजको छोड़कर पत्थरके हथियारोंके जुगमें चले चलो। मैं चाहता हूँ इससे भी अच्छी हवाई जहाज बने, इससे भी बढ़िया रेडियो बाजा और रेडियो दरपन निकले। लेकिन जानते हो न आज हवाई जहाज जोंकें दुनियाको गुलाम बनानेके लिए रखती हैं। रेडियो बाजाके बलसे बिना आदमीका हवाई जहाज चलाकर हिटलर बिलायतके सहरों और गाँवोंको मार रहा है। अंगरेज जिन जवानोंको अपना कलक्टर और डिप्टी बनाते हैं वह बहुत पढ़े-लिखे हैं गजबकी जेहनवाले हैं।

हजार-हजार पढ़ाकू जवान मेंसे छाँट-छाँटकर २५को लेते हैं और जानते हो न, वह क्या करते हैं ? इसीलिए मेरा इनपर विसवास नहीं है। विसवास ही नहीं कभी तो मैं इनके आचरणको देखकर जल-भुन जाता हूँ। मुझे वह आदमी भी नहीं मालूम होते।

सोहनलाल—और जो वह भाई कुछ-कुछ रास्ता देखने लगे थे वह फिर भूल जायँगे।

भैया—ऐसे एक नहीं हजारों भूलते-भटकते रहें, मुझे उनकी कोई परवाह नहीं। यह लूले-लंगड़े अपाहिज लोग क्या काम कर सकते हैं जिनको अपनी मुक्ति, अपना भवन और अपना पेट सबसे पहिले सामने आता है।

दुखराम—जोंकोंके लड़कोंमें कोई अच्छा भी निकल सकता है भैया, लेकिन लाख करोड़में बिरला ही कोई लाल निकलेगा। "जाके पैर न फटी बेवाई; सोका जानै पीर पराई।"

भैया—जोंकोंके खानदानने, दुक्खू भाई, हमेशा धोखा दिया। रूसमें हजारों जोंकोंके लड़के थे जो पहिले बहुत मजूरों-किसानोंके राजकी बात करते थे, लेकिन जब मजूरों-किसानोंका राज कायम हो गया, तो वह दुसमनोंसे मिल गये। जो वह दुसमनोंसे न मिले होते तो पाँच बरस तक लेनिन महात्मा और उनके साथियोंको लड़ना न पड़ता और न लाखों युद्ध और करोड़ों भूख-अकालकी भेंट चढ़ते।

सोहनलाल—तो क्या हिन्दुस्तानमें हमें जोंकोंके लड़कोंको पासमें भी नहीं आने देना चाहिये ?

भैया—बापके कसूरके लिए बेटेको सजा जोंक ही दे सकती हैं। हिटलरने अपने किसी सहरमें अपने एक आदमीके मारे जानेपर सौ-सौ आदमियोंको पकड़कर जहाँ-तहाँसे फाँसीपर लटका दिया, यह उन्हींका न्याय है। हम मरकस बाबाके चेले, जोंकों और फसिद्दोंके आदमी नहीं हैं, इसीलिए जोंकोंके कसूरके लिए उनके बेटे-पोतोंको सजा नहीं देते और कहेंगे कि तुम हमारे पास न आओ। लेकिन उनसे यह जरूर कहेंगे कि बाबू ! तुम हैजा-पिलेगवाले गाँवसे आ रहे हो, अभी बीमारी नहीं दिखाई पड़ती, लेकिन मालूम नहीं किस अँतरा-

कोठरीमें बीमारीका कीड़ा चला आया, इसलिये हमको भी इसका ख्याल करना पड़ेगा और तुमको भी करना पड़ेगा।

दुखराम—भैया ! यह बात भी मरकस बाबाने बतलाई है क्या ?

भैया—हाँ, मरकस बाबाने बतलाई है, लेनिन महात्माने बतलाया है, स्तालिन बीरने बार-बार सजग कराया।

सोहनलाल—जोंकोंके लड़कोंके लिए तो भैया ! तुमने साफ बतला दिया, लेकिन हिन्दुस्तानके बहुतसे सेठ लोग हैं जो गांधीजीका वचन मानते हैं, लाखोंका दान देते हैं और मौका पड़नेपर जेहल जानेसे भी नहीं हिचकिचाते, उनके साथ कैसे बरताव करना चाहिए ?

भैया—सोहन भाई ! मैंने कहा था, कि पहले पियाजका बाहरका छिलका तोड़ना पड़ता है, तब भीतरका। सबसे पहिले हमें बिलायती जोंकोंसे लोहा लेना है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं, कि हम देसी जोंकोंके जुलुमको आँख मूँदकर सहते जायँ।

सोहनलाल—लेकिन भैया, जो देसी जोंकोंसे भी लड़ते रहेंगे तो वह बिलायती जोंकोंसे लड़नेमें हमारा साथ क्यों देंगी ?

भैया—अपने स्वार्थके लिए मदद देंगी दुक्खू भाई, बिना हमारी मददके वह बिलायती जोंकोंको पछाड़ नहीं सकतीं और बिना बिलायती जोंकोंके पछाड़े उनका रोजगार नहीं बढ़ता। बिड़ला, डालमिया, सिंहानियाँ, ताताके पास आज करोड़ों रुपया पड़ा हुआ है जिससे वह मोटरका कारखाना खोलना चाहते हैं, हवाई जहाज और जहाज बनाना चाहते हैं, नये-नये कागज, मसीन, वगैरह-की मिलें खोलना चाहते हैं। वह अमेरिकासे इनके लिए कल-पुर्जा मँगाना चाहते हैं लेकिन बिलायती जोंकोंने हुकुम दे दिया है, कि तुम लड़ाई भर, कोई ऐसा काम नहीं कर सकते। बिलायतने हिन्दुस्तानका अन्न, कपड़ा, जूट, चाय इतना खरीदा है कि दस खरबसे ऊपर रुपया हमारा उनके ऊपर चढ़ गया है, लेकिन वह सोच रहे हैं कि कैसे इस रुपयेको पूरा नहीं तो आधा तोहा हड़प कर लिया जाय। कभी सोचते हैं कि रुपयेके भावको डेढ़ सिलिंगसे एक सिलिंग कर दिया जाय और तिहाई-पावना (करज) हवा हो जाय। जानते हो न, इससे

हिन्दुस्तानकी जोंकोंको कितना नुकसान उठाना होगा। हिन्दुस्तानी जोंकें भली भाँति जानती हैं कि जब तक बिलायती जोंकोंके हाथमें हमारी चुटिया है, तब तक हमें फूलने-फलनेका मौका नहीं मिलेगा।

सोहनलाल—क्या बिलायती जोंकें नहीं जानतीं कि जो हिन्दुस्तानी जोंकोंको ज्यादा दबाया जायगा तो वह हिन्दुस्तानी किसान-मजूरोंके साथ मिलकर सामना करेंगी।

भैया—जानती हैं, लेकिन तुम भी जानते हो न कि जोंकें एक बार अपनी तोंदको खाली नहीं कर देंगी, जोंकें जौ-जौ कटकर मुआ करती हैं। उनके दिमागमें यह बात है कि किसी तरह हिन्दुस्तानी जोंकोंको फसाया जाय। वह जादू पढ़-पढ़कर अच्छत फेंक रही हैं। हिन्दुस्तानकी जोंकोंके बड़े-बड़े नेता अबकी (१९४४) जाड़ोंमें बिलायत जा रहे हैं। बिलायती जोंकें अभीसे उनकी खातिर बातके लिए तैयारी कर रही हैं। कुछ दे दिवाके वह उनसे सुलह करना चाहेंगी, जिसमें कि लड़ाईके बाद इंग्लैंड और हिन्दुस्तानके कमेरे जोंकोंको खाने दौड़ें तो दोनों देसोंकी जोंकें एक होकर लड़ें।

सोहनलाल—लेकिन भैया! जो बिलायती जोंकें हिन्दुस्तानी जोंकोंसे समझौता करना चाहतीं, तो पन्द्रह बरसमें हिन्दुस्तानके धन-धान्यको दुगुना बनानेके खर्रेको ताकमें न रख देतीं। इस खर्रेको ताता-बिड़ला वगैरह हीने न बनाया है।

भैया—बहुतसे लोग समझते हैं कि बिलायती दूकानोंमें चीजोंका एक मोल बोला जाता है लेकिन बिलायती जोंकें हर जगह इस बातको नहीं मानती। बड़ी-बड़ी बातोंके लिए उनके यहाँ भी मोल भाव होता है। बिलायती जोंकें कहेंगी तुम भी कुछ नीचे उतरो और हम भी कुछ आगे बढ़ें फिर हमारा समझौता हो। बिलायती जोंकोंकी नेत नहीं है कि हिन्दुस्तानी जोंकें बेरोक-टोक कारखाने खोलती जायँ क्योंकि लड़ाईके वक्त जो कारखाने खुल गये, तो बाजारमें कोई दूसरा मुकाबिला करनेवाला ही नहीं रहेगा, इसलिए उनकी जड़ जम जायगी। और एक बार जड़ जम जानेपर फिर उखाड़ना मुसकिल होगा।

सोहनलाल—इसीलिए तो नहीं भैया ! ताता-बिड़लाके १५ बरसवाले खर्रेमें हिन्दुस्तानको गोरी सरकारने खेतीके कारबारको बढ़ानेके लिए अपना दस अरब-का खर्रा तैयार किया है। सरकार अब किसानोंकी सुधि लेनेवाली है क्या ?

दुखराम—गाढ़ पड़ेपर गधेको भी दादा कहा जाता है भैया, कोई ऐसी ही बात तो नहीं है ?

भैया—अंगरेजी सरकार चाहती है कि सुराजकी बातको कोई और बात करके भुलवा दें। वह समझती है कि हिन्दुस्तानमें किसान बहुत रहते हैं, अब थोड़ा उनकी ओर ध्यान दें और उनके पेटमें दो रोटी बेसी जाय, तो क्या जानें हमारी जयजयकार मनाने लगें। और फिर साहब लोग जिस गाँवमें जायँ लोग चरन पखारनेके लिए थालोमें पानी लेकर दौड़ें।

दुखराम—तो क्या भैया ! सचमुच किसानोंको दो रोटी बेसी मिलेगी ?

भैया—छः रोटीकी भूखमें दो रोटी।

दुखराम—लेकिन वह तो तावापर 'छन' होगा, और लौर (ज्वाला) बढ़ेगी।

भैया—और वह यह भी समझती है कि हिन्दुस्तानी किसानोंके पास जो चार पैसा बेसी होगा, तो वह बेसी चीजें खरीदेंगे और हमारा माल बिकेगा।

दुखराम—बनियेका दाँव, बिलाईको चारों ओर छीछड़ा ही दिखाई देता है। लेकिन भैया हमारे पास चार पैसा बेसी कहाँसे आयेगा ?

भैया—खेतीको अच्छी तरहसे करोगे तो चार पैसा बेसी आयेगा लेकिन तुम अच्छी तरह खेती तब तक नहीं कर सकते, जब तक खाद और पानीका अच्छा इन्तजाम नहीं हो।

दुखराम—तो क्या वह खाद और पानीका अच्छा इन्तजाम करना चाहते हैं ?

भैया—बिलायतकी एक बहुत बड़ी कम्पनी है जिसका मालिक है मकगावन। उसकी आमदनी रोजकी दो हजार रुपयासे बेसी है, यह लड़ाईके वक्तकी आमदनी है।

सन्तोखी—लड़ाई न होती तो कितनी आमदनी होती भैया ?

भैया—तो बीस हजार होती।

दुखराम—यह मजूरोंका खून चूस-चूस कर ही न भैया?

भैया—हाँ, उसकी एक कम्पनीका नाम है 'इसी' जिसके पास दो अरब रुपयेकी पूँजी है।

दुखराम—दो अरब तो बहुत धन होगा भैया?

भैया—बहुत धन होता है दुक्खू भाई! कोई बड़ा इमलीका पेड़ होता है उसमें एक लाख पत्ती होती है। वैसे-वैसे दस हजार इमलीके पेड़ हों, उनकी जितनी पत्ती होगी उतना रुपया इस कम्पनीके पास है। उसके कारखाने इंग्लैंड, अमेरिका, फ्रांस, अफरीका, कनाडा, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड और हिन्दुस्तान तक ही नहीं फैले हुए बल्कि जर्मनी, जापान, इटली तक फैले रहे हैं। आजकल इस कम्पनीके बड़े-बड़े आदमी हिन्दुस्तानमें चक्कर काट रहे हैं। यह कम्पनी माटी और पानीसे सैकड़ों तरहका सोडा, तेजाब, सोरा, और दूसरी चीजें बनाती है। चर्चिलका दोस्त मकगावन सोच रहा है कि हिन्दुस्तानमें अपनी कम्पनीका जाल फैला दें और करोड़ों मन खाद हर साल किसानोंको दें।

सन्तोखी—करोड़ों मन खाद बेचनेका मतलब है करोड़ों मन रुपया कमाना।

भैया—और क्या मकगावन हिन्दुस्तानमें पुन्न कमाने आयेगा, फिर बिलायतमें पाइप, इंजन और बिजली पैदा करनेवाले करोड़पतियोंकी कम्पनियाँ हैं, वह गाँव-गाँवमें बड़े-बड़े पाइम लगायेंगे और बिजलीके जोरसे पानी खींचकर किसानोंको रुपया-आठ आना बीघेपर सींचनेके लिए पानी देंगे। जहाँ नदीसे नहर निकलने लायक रहेगी वहाँ नहर निकालेंगे, जहाँ बाँधकी जरूरत होगी वहाँ बाँध बाँधेंगे।

दुखराम—और हम लोगोंका जो दो-दो बिस्वा (कट्ठा)का कोला कोई एक जगह नहीं है?

भैया—सरकार सब कोलोंको इकट्ठी कर देगी। किसान अच्छे कोलेके बदले कमजोर खेत नहीं लेना चाहेंगे, लेकिन खाद डालनेसे ऊसर भी उपजाऊ हो जाती है भाई! वह समझा देंगे कि खेत इकट्ठा करने हीमें फायदा है। फिर

एक काम और करेंगे, बिलायती कम्पनियाँ किसानोंको किरायेपर मोटरका हल देंगी।

सोहनलाल—सब इन्तजाम बिलायती कम्पनियाँ अपने हाथमें लेंगी ?

भैया—मोटर-लारी बिलायती कम्पनियाँ ही न बनाती हैं सोहन भाई, लेकिन हर जिलेमें जो सड़क-सड़कपर लारियाँ दौड़ रही हैं उनके चलानेवाले बहुतसे हिन्दुस्तानी हैं। वह कम्पनीसे लारी खरीदते हैं। कम्पनी पहिले ही अपना नफा खींच लेती है। उसी तरह मोटर-हल वह उन लोगोंको भी दे देगी जो अपनी तरफसे चलाना चाहेंगे। बिलायती जोंकें समझ रही हैं कि इस तरह जो खेत दो मन गेहूँ पैदा करता है वह सोलह मन पैदा करेगा। किसानोंके पास बेसी अनाज पैदा होगा, बेसी सरसों, रेंड़ी होंगी तो वह ज्यादा हमारा माल खरीदेंगे।

दुखराम—तो वह हम लोगोंको साझेकी खेती भी करने देंगे भैया ?

भैया—जोंकें ऐसा खतरा नहीं होने देंगी। जो साझेकी खेती होने लगी तो गाँव भरके किसानोंका मरना-जीना एक हो जायगा। एक हो जानेपर वह बहुत मजबूत बन जायेंगे।

दुखराम—तो जमींदारों-तालुकदारोंकी जान तो नहीं बचने पायेगी ?

भैया—जमींदारों-तालुकदारोंकी परवाह करे उनकी बलाय। जब तक उनके रखनेसे काम बनेगा रक्खेंगे, जब भूखे भेड़ियोंको एक घोड़ेकी बलि दिये बिना जिउ (जी) नहीं बचेगा तो वह भी करेंगे। जमींदार-तालुकदार जो कुछ घबरा रहे हैं उसका कारन यही है।

सोहनलाल—तब तो भैया गाँवोंका रंग-रूप बिल्कुल बदल जायगा ?

भैया—चीनीकी मिलें तो बहुत थोड़ी-सी खुली हैं लेकिन देख रहे हो न उन्होंने खेतीको कितना बदल दिया। लोग बिलायती ऊख ज्यादा बोना चाहते हैं। किसानोंको हजारों बरस पहलेकी ही मालूम थी, उसी ढंगसे वह अब भी खेती करते आये हैं। गोबरको खेतमें डालनेसे अनाज ज्यादा पैदा होता है, फिर रोटी कैसे पकायें, इसलिए किसान गोबरका गोंयठा पाथ डाला करते हैं। पत्थरका कोयला सस्ता गाँव-गाँवमें पहुँच जाय और लोगोंकी जेबमें पैसा भी हो

तो लोग पत्थरका कोयला भी जलाने लगें ।

दुखराम—लेकिन पत्थरके कोयलेकी रोटी उतनी मीठी नहीं होती भैया !

भैया—रोटी मीठी नहीं होती तो यह भी बिलायती जोंकोंके फायदेकी बात है । तुम अपना गोबर जितना खेतमें डालते, उतनी ही बिलायती खाद कम न खरीदते ? अब वह तुम्हारे सारे खेतोंके लिए खाद देंगे ।

दुखराम—लेकिन भैया, वह तो सब चीजका पैसा माँगेंगे न ?

भैया—पैसाकी परवाह मत करो दुक्खू भाई ! मकगावनका दलाल कहेगा—"आओ दुखराम राउत, लो पहले एक सिगरेट तो पियो । पैसेकी परवाह मत करो हमारा सब साहब बड़ा दयालु है । वह कहता है किसानोंको जो जरूरत हो वह सब चीजें दो । पानी लो, खाद लो, मोटरका हल लो, बढ़िया-बढ़िया बीज लो, जब तुम्हारे खेतमें पचीसकी जगह दो सौका अन्न उपजे तो पचास रुपया हमारे साहबको दे देना, तुम्हें भी पचीसकी जगह डेढ़ सौ मिलेगा ।

दुखराम—है तो भैया बड़ी फँसान फसानेकी बात । क्या सचमुच ऐसा होगा ?

भैया—इसमें कोई जादू-मन्तरकी बात देखो तुमने ? मिलिटरी लोरी गाँव-गाँवमें चक्कर काट रही है, जो कारखाने मिलिटरी लोरियाँ तैयार कर रहे हैं वही अब मोटर-हल तैयार करेंगे, उसी तरह दूसरे कारखाने भी तुम्हारे कामकी चीजें बनाएँगे । तुम्हारे पास पैसा नहीं है, इसलिए चीज नहीं खरीद सकते । वह तुम्हें पैसा पैदा करनेका ढंग दिखायेंगे ।

सोहनलाल—तब तो किसानोंके देहपर खून भी चढ़ेगा, कपड़ा-लत्ता भी होगा, उनके बच्चे अच्छर भी पढ़ेंगे, और जो लोग इसकूलोंसे पढ़कर निकलते हैं, गली-गली धूल फाँकते हैं उनके लिए भी काम मिलेगा ।

भैया—और उनके लिए भी काम मिलेगा जो लड़ाईके बाद पलटनोंके टूट जानेसे अपने-अपने घरोंमें लौटे ।

सन्तोखी—तो अंगरेज पलटनके सिपाहियोंका भी ख्याल कर रहे हैं ?

भैया—ख्याल नहीं करेंगे । २५-२५ लाख जवानोंको सब तरहका हथियार चलाना सिखाया । पचीसों लाख हिन्दुस्तानियोंको हर तरहका हथियार बनाना सिखाया ।

दुखराम—तो अपने लिये बहुत बुरा किया है भैया !

भैया—जापान खा जानेवाला था, जर्मनी निगल जानेवाला था, क्या करते ! सत्तर बरस तक तो हिन्दुस्तानियोंको खाली बन्दूक माँजना सिखाया था। लेकिन आजकलकी लड़ाईमें बन्दूक बन गई है लाठा। अब जरूरत है टामी-गनकी, मसीनगनकी, टंककी। सब सिखलाना पड़ा। और सिखाया इतना है कि एक अँगरेज अफसर बोल रहा था—खबरदार, इन सिपाहियोंको गाँवमें भूखे मरनेके लिए मत भेजना; नहीं तो जबर्दस्त डाकू बनेंगे। ऐसे डाकू, जिनसे उस वक्तको सरकारी पलटन भी पनाह माँगेगी।

दुखराम—क्या ऐसी बात है ?

भैया—बन्दरको देखा है न दुक्खू भाई, एक पेड़से दूसरे पेड़पर कूदते ! आजकलके सिपाहियोंको सिखलाया गया है कि कैसे एक रस्सासे एक रस्सेको बाँधकर पेंग मारते, एक पेड़से दूसरे पेड़पर कूदते आगे बढ़ा जा सकता है। कैसे नदीपर एक रस्सा तानकर हाथ-पैरसे लटकते इस पारसे उस पार पहुँचा जा सकता है। कैसे बाँसके टुकड़ोंको बाँधके उसपर बरसाती बाँधकर नाव बनाई जा सकती है। कैसे जंगलमें घास-पत्ती खोंसकर ऐसे छिपा जा सकता है कि कोई पता भी न लगा सके, कैसे सूखी धरतीमें वैसा कपड़ा पहना जाय, कि लेटनेपर किसीको पता न चले। कैसे छापा मारके बन्दूक और मसीनगन छीनी जा सकती है और बिना हथियारके ही; एक छोटेसे झटकेसे बिना हथियार होके आदमीको पलक मारते-मारते मार दिया जा सकता है।

दुखराम—यह सब बातें सिपाहियोंने सीखी है भैया, तब तो सचमुच सिपाहियोंको गाँवमें भूखे मरने देना बुरा होगा !

भैया—जाबिर दुसमन था सिखाते नहीं तो क्या करते। सरकार समझती है कि जो किसानोंके इन लड़कोंको भूखे मरनेके लिए गाँवोंमें भेज दिया गया, तो खैरियत नहीं। जो हिन्दुस्तानियोंमेंसे ही किसीका लूटने-पाटते, तो साहब बहादुर चसमा लगाकर इजलासपर फैसला सुनाते। लेकिन दुक्खू भाई ! हर वक्त भस्मासुरके भूतनाथपर चढ़ दौड़नेका डर है। सिपाही सीखी विद्याको पल-टन हीके साथ छोड़ नहीं आयेंगे। देसमें किसानों-मजूरोंके राजकी बात करने-

वाले आदमी भी अब बहुत हैं। सिपाहियोंने रूसके बहादुर सिपाहियोंकी बहुत-सी बातें सुनी हैं, सिनेमामें लाल पलटनकी लड़ाई भी देख चुके हैं। और कोई-कोई लाल पलटनके सिपाहीसे हाथ भी मिला चुके हैं। इतना तो हर सिपाही जानता है कि लाल पलटनके सिपाही सब किसानों-मजूरोंके लड़के हैं। कितनोंने अभी सुन लिया होगा और कितने आगे सुन लेंगे कि रूसमें जोंकोंको बिदा-कर किसानों-मजूरोंने अपना राज कायम किया है। फिर बेकार भूखे मरते सिपाही चोरी-डकैती नहीं करेंगे, वह जोंकोंको मार भगानेके लिए तैयार हो जायँगे।

सन्तोखी—तो भैया! जोंकोने अपने लिए बड़ा जोखिम पैदा कर लिया?

भैया—इसीलिए सन्तोखी भाई, किसानोंकी ओर सरकारकी नजर घूमी है। बिलायती जोंकोंको घाटा नहीं है बल्कि दुगुना-चौगुना नफा होगा। हिन्दुस्तानी जोंकोंको बिलायतमें बुलाके वह अपना चरम भाई बनाना चाहती हैं। अगर हमारे सेठ लोग साहब बहादुर होते तो साहब बहादुर सेठकी सेठानीके साथ नाचते और सेठ जी साहब बहादुरकी बीबीके साथ नाचते। खूब दुन-दुन करते, सराबके प्याले चलते।

सोहनलाल—तो भैया! तुम समझ रहे हो कि बिलायती जोंकें हिन्दुस्तानी सेठोंसे मेल करना चाहती हैं?

भैया—जरूर सोहन भाई! वह उनसे कहेंगी, कि लोहा, फौलाद, मोटर, जहाज, हवाई जहाजके बड़े-बड़े कारखानोंको जो सब अपना ही कर लेना चाहोगे तो हमारा-तुम्हारा झगड़ा होगा। हमारे पीछे भी बिलायती मजूर पड़े हैं और तुम्हारे पीछे भी हिन्दुस्तानी मजूर। जो बिलायतमें मजूरोंका राज कायम हो गया तो बाबू! तुम्हें भी कोई नहीं बचा सकेगा। कलकत्ता, बम्बई, कानपुर, दिल्ली, जिधनामली सब जगहके मजूरोंको कमूनिस्तोंने अपने हाथमें ले लिया। किसान भी सबसे ज्यादा उन्हींकी बात मानते हैं। काँगरेस नेता जमींदारोंका पच्छ करना चाहते हैं, इसीलिए जहाँ-जहाँ किसानों-जमींदारोंका झगड़ा हुआ वहाँ कमूनिस्त लाल झंडा गाड़ देंगे। सोच लो हम दोनोंकी भलाई किसमें है।

सोहनलाल—सेठोंको तो सोचना भी मुस्किल हो जायगा। एक ओर

देखेंगे कि बिलायती सेठ उनके साथ ऐस-जैस कर रहे हैं, दूसरी ओर देखेंगे कि जो खतरा उनको बतलाया जा रहा है, वह झूठा नहीं है। लाल पलटनकी जीतसे मजूरोंका और मन बढ़ गया है। रूमानियाने उस दिन लाल पलटनके सामने हथियार रख दिया तो करोड़पति सेठ सर पकौड़ीमलको मालूम हुआ कि उनका बेटा मर गया।

सोहनलाल—शामको उनके कारखानोंके मजूरोंने लाल झंडा लिए जब लाल पलटन जिन्दाबाद बोले होंगे, तब सर पकौड़ीमलकी क्या गति हुई होगी भैया ?

भैया—गत पूछते हो ? गति पूछकर क्या करोगे सोहन भाई ! छः महीने पहिले बिलायती सेठ जो अपने धरम-भाई हिन्दुस्तानी सेठोंकी खातिर अगुवानीकी तैयारी कर चुके हैं तो उसका भारी मतलब है। वह उनके साथ गठबन्धन करना चाहते हैं, लेकिन हिन्दुस्तानको अपने हाथसे बाहर नहीं जाने देना चाहते।

सोहनलाल—तो गांधी महात्माके चेले हमारे सेठ लोग कैसे उनसे मेल करेंगे ?

भैया—सुराजका दो-एक आना भी न दें यह बात नहीं है सोहन भाई ! वह साझेका व्यौपार खोलना चाहते हैं और हमारे सेठोंसे कहेंगे कि लो, बारह आना पत्ती हमारी रही और चार तुम्हारी। जो सर पकौड़ीमल कुछ नाहीं-नूँहीं करेंगे, तो उनसे कहेंगे—"सर पकौड़ीमल ! चार आना कम नहीं होता, इतना ही मिलनेपर आप सब अरबपती हो जायेंगे।" मकगावन बोलेगा—"सर पकौड़ी हमारा दो सौ बरसोंका कल-कारखानेका तजुरबा है, हम दोनों एक साथ मिलकर 'इसी'के बीस कारखाने खोलेंगे। सर पकौड़ी ! तुम रहोगे उसके बड़े डाइरेक्टर। मैं सत्तर बरसका बूढ़ा हिन्दुस्तानमें लू खाने नहीं आऊँगा। इतने रुपये आयेंगे कि धरनेकी जगह नहीं रहेगी।"

सन्तोखी—औ जो महात्माजीकी उस ओर कभी-कभी ध्यान जाय ता ?

भैया—ध्यान जायगा तो गो-सेवा मंडलके लिए एक करोड़ चंदा दे देंगे, एक करोड़ खादी फंडमें भी दे देंगे; महात्माजी इससे बेशी सेठोंसे क्या उम्मेद

रख सकते ?" सेठ भली भाँति जानते हैं कि महात्माजी उन्हें लाल झंडेवाले मजूरोंसे नहीं बचा सकते। उधर बिलायती सेठ कहेंगे, "देखो जो बहुत तीन-पाँच करोगे तो कलमभर चलानेकी देर है, पाकिस्तान अभी अलग हो जायगा, उसी तरह जैसे बर्माको हमने अलग कर दिया। फिर यह पाकिस्तान ऐसा-वैसा नहीं होगा। चाहें तो पठानोंसे मिलकर वह फिर दिल्लीमें अपनी राजधानी बना लेंगे, और निखट्टू डरपोक हिन्दू धरती छू-छूकर सलाम करते फिरेंगे। जो इस बातको अनहोनी समझो, तो जानते हो न, मुसल्मानोंमें गरीबी बेसी है, छूत-छातका झगड़ा भी नहीं है। पिछले बारह सौ सालोंमें मुसल्मान अमीरोंने गरीब मुसल्मानोंको कभी अपना भाई नहीं समझा लेकिन कानमें सुनते आये हैं कि सभी मुसल्मान बराबर हैं। पाकिस्तानी मुसल्मानोंको बोल-सेविक बनते देर नहीं लगेगी। रूसके तीन करोड़ मुसल्मान पहिले हीसे बोल-सेविक बने हुए हैं। और देख नहीं रहे हो मुसल्मान लड़के लड़कियाँ कमूनिस्त बन रही हैं। बस यही समझो कि दोनों पाकिस्तानोंमें जहीर, डाक्टर अशरफ, डाक्टर अहमद, बस ऐसे ही दिखलाई पड़ेंगे।"

दुखराम—क्यों भैया ! यह कहना झूठ ही है न !

भैया—जोंकोंका काम जहाँ झूठसे चलता है वहाँ झूठ कहती हैं, जहाँ साँचसे चलता है वहाँ साँच, लेकिन भरसक पैसा-दो पैसा भर साँच भी रखती हैं, खाली ऊपरसे कागज साटने भरके लिए। और सुनो, बिलायती सेठ हमारे सेठोंको कैसे धमकायेंगे-पुचकारेंगे। हमारे सेठ कहेंगे—"नहीं साहेब ! जिन्ना कभी मुसल्मानोंको बोलसेविक नहीं बनने देगा।" मकगावन या उसका भाई कहेगा—"अभी इस बातमें तुम नाबालिग हो सर पकौड़ी ! जिन्नाकी नेताागरी बनी रहे, वह फिर कोई परवाह नहीं करेगा। तुम जानते ही हो कि बोलसेविक बड़े चालाक हैं। फोड़ने-फाँसनेमें हमारी आँखमें धूल झोंकनेके लिए रूमानियाँ हो चाहे बलगेरिया, यूगोस्लाविया हो चाहे पोलैंड, यह सब तरहके लोगोंको वजीरोंकी जमातमें मिलाते हैं, लेकिन हमें मालूम है कि सभी वजीर उन्हींके हाथकी कठपुतली हैं। बोलसेविकोंके हाथमें दुनियाको न जानेसे बचानेका भार हमारे ऊपर है। बिलायती भाई बोझ उठानेके लिए

तैयार हैं, लेकिन हिन्दुस्तानी भाइयोंको भी मदद करनी चाहिए जो दोनों पाकिस्तानमें बोलसेविकोंने लाल झंडा गाड़ दिया—और सर पकौड़ी ! मैं तो तुमारी सौगंध खाता हूँ, कि पाकिस्तानके अलग होते ही वह बोलसेविकिस्तान हो जायगा—तो फिर चार करोड़ मुसल्मान तुम्हारे गाँव-गाँव सहर-सहरमें फैले हुए हैं, कौन फिर हिन्दुस्तान को बोलसेविक होनेसे रोकेगा। गांधी बूढ़ा है उसको लोग बहका देते हैं। लेकिन पाकिस्तान बनने देना, न बनने देना हमारे हाथमें है। हम अपने हितके लिये, तुम्हारे हितके लिये, गीता और बाईबिल भाईके लिये किसन और ईसामसीह भगवानके लिये यह जरूरी समझते हैं, कि भारत माताके देहके तीन टुकड़े काटकर अलग न किये जायँ। आओ हम दोनों हाथ मिलायें और मिलकर हिन्दुस्तानमें राज करें। अभी दस बरस तक बोलसेविकों-का बड़ा जोर रहेगा, क्योंकि तुम जानते ही हो, चाहे हम कितना ही छिपाना चाहते रहे पर दुनियावाले जानते हैं कि, रूसकी तलवारने ही हिटलरको मारा। दस बरस बाद बोलसेविकोंका खतरा कम हो जायगा, इस बीचमें हम हिन्दुस्तान और बिलायत दोनोंके कमेरोंका मिलके मुकाबिला करेंगे और अपने हिन्दुस्तानी सेठ भाइयोंको दिखला देंगे कि अब हमारा दिल बदल गया, हम दोनों धरम-भाई हैं।

दुखराम—भैया जोंकोंकी माया अपरम्पार है। उनके तरकसमें कितने तीर हैं, गिनती ही नहीं मालूम होती !

भैया—लेकिन मरकस बाबाने सारे तीर गिन लिये दुक्खू भाई ! जोंकोंका जमाना खतम हो रहा है। आजके चर्चिल-अमरी और कलके उनके दोस्त-ताता-बिड़ला चाहे सर पटकके रह जायँ लेकिन अब दुनियाके कमेरे फिर सो नहीं सकते। तुमने ठीक कहा कि ये सब कुछ हिन्दुस्तानी कमेरोंके लिये तावापर छन्न जैसा होगा।

सोहनलाल—मुझे कम बिसवास है भैया कि बिलायती जोंकें हिन्दुस्तानी सेठोंकी भूखको पूरा कर सकेंगी, उनके डरको दूर कर सकेंगी।

भैया—हाँ, जोंकें कभी-कभी पागल भी हो जाती हैं, और अपने तुरंतके स्वारथके सामने आगेका ख्याल नहीं करतीं। हिटलरको पाल पोसके बड़ा करके

उन्होंने ऐसा ही किया। हो सकता है इस वखत भी वह पागल हो जायँ लेकिन दुसमन पागल हो जायगा, इस आसरापर बैठा रहे, वह आदमी बेकूफ ही कहा जायगा।

सोहनलाल—पागल होगी, इसका मुझे भी बिसवास नहीं है भैया, देखा नहीं, हिन्दुस्तानी सेठोंका एक आदमी सर जे० पी० श्रीवास्तव तो पहिले हीसे सरकारका मेम्बर था और जैसे ही ताता-बिड़ला खर्रा लिखके तैयार हुआ, तैसे ही ताताके आदमी सर अरदसीर दलालको भी बड़े लाटने सरकारका मेम्बर बना दिया। जान पड़ता है बिलायती सेठोंको पूरा बिसवास है कि अपने महुवर बाजासे हिन्दुस्तानी सेठोंकी सारी फुफुकारको बंद कर देंगे।

दुखराम—तो सभी मौज करना चाहते हैं हम कमेरोंके ही मत्थे न ?

भैया—और कौन है दुनियामें धन कमानेवाला, लेकिन १३) रोज मजूरी पानेपर भी बिलायती मजूर अपने यहाँकी जोंकोंको कुचल देना चाहते हैं तो रुपया रोजकी मजूरीपर हिन्दुस्तान कमेरे कैसे चुप लगा जायँगे।

अध्याय १४

औरतें

दुखराम—सन्तोखी भाई ! रजबली भइयवा हम लोगोंकी आँख खोल रहा है, आँख। मैं तो मुँह बंद करके भी रखना चाहता हूँ तो पेट फूलने लगता है। जहाँ भी कोई भाई मिल जाता है तो जोंकोंका जंजाल उनके सामने कहने लगता हूँ। किसी जाति, किसी धरमका कमेरा हो, बात सुनकर सबका मन हरा हो जाता है। बंधू चमार पूछता था भैया दुक्खू ! हम लोगोंकी झोपड़ी सुअरकी खोभारसे भी खराब है। कब हम लोगोंका दिन लौटेगा ? अबदुल मेहतर कहने लगा—हमने समझा था कि हिन्दूसे मुसलमान हो जाने पर कुछ आदमी बन जायेंगे, लेकिन यहाँ भी वही बात। सबसे गंदा काम करते हैं, और जूठी रोटी भी भैया ! महमदाबादमें कोई देनेके लिये तैयार नहीं ?"

सन्तोखी—तुमने क्या कहा दुक्खू भाई !

दुखराम—मुझे जो समझमें आया वह उनसे कहा। लेकिन मैं एक दिन रजबली भैयाको ही उनके यहाँ ले जाऊँगा, तभी ठीकसे समझाते बनेगा।

सन्तोखी—आज कौन बात सुनाना चाहिये दुक्खू भाई !

दुखराम—सबके कहने लायक बात तो अब कुछ-कुछ मालूम हो गई है सन्तोखी भाई ! लेकिन औरतोंको कैसे समझाया जाय, यही बात समझमें नहीं आती।

सन्तोखी—तो आज रजबली भैयासे यह पूछा जाय कि मरकस बाबाने औरतोंके लिये क्या रास्ता बताया और यह देखो सोहनलालके साथ रजबली भैया आ गये।

भैया—क्या बात हो रही है सन्तोखी भाई ?

सन्तोखी—आज भैया यही बताओ कि औरतोंके उद्धारके लिये मरकस बाबाने क्या कहा।

भैया—औरतोंका उद्धार बहुत जरूरी है, काहेसे कि आधी तो वही हैं। और उनको सबसे बेसी तकलीफ है।

दुखराम—बोकोंकी औरतोंको खाने-पीनेकी क्या तकलीफ है भैया ?

भैया—खाना-कपड़ा जब नहीं मिलता, तब आदमीको भूख-जाड़ा तकलीफ देती है। खाना-कपड़ा तो मिलता है, लेकिन दूसरा आदमी हाथ उठा कर देता है तब आदमी समझता है कि हमें दूसरेके सामने हाथ पसारना पड़ता है। और औरतको जिन्दगी भर हाथ पसारना पड़ता है।

सोहनलाल—मेहरी तो घरकी रानी होती है भैया !

भैया—रानीके साथ महिला कहो सोहन भाई ! महिला सबदसे ही (महिली, महिरी) मेहरी सबद भी बना है, लेकिन देखते हैं न किसी सहरकी पढ़ी-लिखी औरतको मेहरी कह दिया जाय तो जल-भुन जायेंगी, और महिला कह दिया जाय, तो फूलके कुप्पा हो जायेंगी। लेकिन औरत आज दुनियामें हाथकी खरीदी दासी-लौंडी है। मरद जब तक राजी है, तब तक तो दासी भी जो चाहे कर सकती है लेकिन जैसे ही मरदकी तेउरी बदली, वैसे ही रानी सिंहा-

सनसे धूलमें पटक दी जाती है। देखा न, सीताके साथ रामने क्या किया, मनमें आया, घरसे निकालकर बाघके मुँह में ढकेल दिया। सीता कभी रामके लिए वैसा कर सकती थी? या रामकी इच्छा बिना सीता उनके पाखानेमें भी एक रात बिता सकती थी? साहेब लोगोंको साथ-साथ गेम घुमाते देखकर दुक्खू भाई! तुम समझते होगे कि साहेबकी मेमको बहुत अख्तियार है।

दुखराम—भैया! पहिले सच ही मैं ऐसा समझता था, लेकिन एक दिन देखा हमारे चटकलका इंजीनियर कोड़ा लेकर अपनी मेमको पीट रहा था; बेचारी चिल्लाती थी, लेकिन पास-पड़ोसमें कोई साहेब रहता राब न जाता? हम लोग कुली-मजूर थे, सोचा छुड़ाने जायँगे तो हम भी चार बेंत खायँगे।

भैया—औरत किसी समय परिवार भरकी मुखिया थी, महामाया थी, उस वक्त कोई उसे कोड़े मार सकता था?

दुखराम—नहीं भैया! वह तो जब मरद पसु पालने लगा, खेती करने लगा और कमाऊ बनकर धन जमा करने लगा, तब मेहरीका मान हेठा हो गया; आदमियोंमें धनी-गरीब होने लगे, जोंकें पैदा हो गईं।

भैया—जितना ही जोंकोंका जोर बढ़ता गया दुक्खू भाई! उतना ही मेहरियोंका गला फँसता गया। बेचारियोंको देह बेंचके खानेके सिवा कोई अवलम्ब है?

सन्तोखी—देह बेंचना! क्या कहा भैया?

भैया—सन्तोखी भाई! तुम समझते हो कि देह बेंचना वेस्याका काम है। इसलिए मैंने कैसे इस बातको मुँहसे निकाला। मेरी बात कुछ कड़वी लगी होगी, और मेहरिया सुने तो और बुरा मानेगी, लेकिन बताओ बेस्या किसे कहते हैं।

सन्तोखी—जिसकी देह उस आदमीके लिए है जो पैसा दे।

भैया—रोज-रोज पैसा दे या एक दो बार।

सन्तोखी—कितने लोग भैया पैसा देके एक-दो बार वेस्याके देहके मालिक बनते हैं और हमारे राजाने तो बसंतियाको अपने घर हीमें बैठा लिया था।

भैया—वेस्या पैसा काहेको लेती है सन्तोखी भाई !

सन्तोखी—न ले तो खायेगी क्या, पहिनेगी क्या।

भैया—और वह कुछ बेसी पैसा लेती है सन्तोखी भाई! काहेसे चालीस-ब्यालीस बरसमें उसकी दूकान उठ जाती है।

सन्तोखी—उसका भी कुछ ठिकाना नहीं है भैया! दुकान है, किसी गाहकको नकार तो सकती नहीं बीमार हो जाती है, गरमी-सुजाक बढ़ गई, तो नाक कटकर गिरने लगती है, हाथ-पैरकी अँगुलियाँ झड़ जाती हैं।

भैया—जो अँगुलियाँ नहीं झड़ी, नाक नहीं कटी, तो भी आधी जिनगी रहते ही वह रोजगारसे बेरोजगार हो जाती है। जो उसने पहिलेसे कुछ पैसा नहीं बचाया तो बाकी आधी जिनगीमें क्या खायेगी, क्या पहनेगी?

दुखराम—ठीक कहा भैया, जो वे न पैदा हुई होतीं तो औरतको क्यों देह बेचना पड़ता?

भैया—दुक्खू भाई! वेस्या कैसे बनती है इसके लिए मैं थोड़े ही दिनकी बीती एक बात सुनाता हूँ। यह खिस्सा नहीं है, सच्ची-सच्ची बात है। एक बड़ी जातिके आदमी थे, हिन्दू थे और बाम्हन छत्रीके बीचकी जाति। उनके घरमें पूरा धन था, जमींदारी थी, खेत थे और दस-बीस हजारका सूद-बेवहार भी करते थे। गाँवमें भी अच्छा घर था और सहरमें एक पक्का घर था। कुछ किताब पढ़ी, कुछ लेक्चर सुना, आरिया समाजकी बात उन्हें अच्छी मालूम हुई। उनके एक लड़की हुई, पहिली स्त्री मर गई, दूसरा ब्याह किया, उससे लड़का पैदा हुआ। भाई-बहिनोंमें बचपन हीसे बहुत प्रेम था, वह जानते ही नहीं थे कि उनकी माँ एक नहीं है। बापने आरिया समाजके लेक्चरमें लड़कियोंके पढ़ानेकी बात सुनी थी, उन्होंने भी अपनी लड़कीको सहरकी कन्या पाठसालामें पढ़ने बैठा दिया। अब वह ज्यादा सहरमें ही रहते थे, पीछे लड़का भी इसकूल जाने लगा। लड़की पढ़नेमें बड़ी तेज थी, अपने दरजेमें हमेसा अव्वल आया करती थी। बाप भी लड़कीकी पढ़ाईसे बहुत खुस था। मैभा (सौतेली) माँ भी अच्छी औरत थी, लड़कीका सुभाव भी मीठा था। लड़की अब अँगरेजी प[illegible] रही थी। उसकी उमर बारह-तेरहकी हो गई थी।

मैभा माँ ब्याह करनेके लिए रोज कहती, लेकिन बहुत गरीब घरकी तो लड़की थी नहीं कि बेंच-बाँच देते। अपनी बराबरी या बड़े घरमें लड़का ढूँढ़ना था, और सो भी अपनी जाति-बिरादरीके भीतर। कहीं लड़का उमरमें छोटा मिलता, कहीं बूढ़ा, कहीं अपढ़ मिलता, कहीं गरीब। बाप कभी-कभी इधर-उधर नजर दौड़ा लेते थे, जब ठीक जगह नजर न पड़ती, तो घबरानेकी जगह सोचने लगते कि चलो लड़की अभी पढ़ रही है बहुत सयानी नहीं है फिर वर ढूँढ़ लेंगे।

सन्तोखी—ऐसा ही होता है मैया! लड़कीवाले ही वर ढुँढाईका दुख जानते हैं!

मैया—लड़कीके दरजेकी और लड़कियोंमें एकसे उसका बहुत प्रेम था। उसके घरवाले भी आर्य-समाजी थे। लड़की कभी-कभी अपनी बनिया सहेलीके साथ उसके घर जाया करती थी। लड़की सोलह सालकी हो रही थी, इन्ट्रेन्स-में पढ़ रही थी। तेज लड़की देखकर इस्कूलकी अध्यापिका बहुत मानती थी। बापको भी अपनी बेटीपर बहुत गर्व था। सहेलीका भाई तभीसे लड़कीको जानता था; जब वह आठ-नौ बरसकी थी और वह खुद तेरह-चौदहका। अब वह डाक्टरी पढ़ रहा था और डाक्टर बनकर निकलनेमें दो ही एक साल रह गये थे। बचपनमें जो अबोध बालक-बालिकाका प्रेम था, अब वह जवानी-का प्रेम बन चुका था। लड़की सहेलीके घर जाती और जब सहेलीका भाई भी घर आया रहता, तो वह अबेर तक वहीं रह जाती। कभी-कभी वह एक-दूसरेको चिट्ठी भी लिखते। मैभा माँको कुछ सक होने लगा, उसने पतिपर दबाव डालना सुरू किया। एकाध बार मैभा माँने लड़कीको मार पीटके घरमें भी बन्द कर दिया। इस्कूल जाना छूट गया, लेकिन बापका दिल बहुत नरम था। होनहार लड़की है फिर इस्कूल भेज देते। इसी बीचमें ढूँढ़ ढाँढ़कर उन्होंने एक वर ढूँढ़ा, वह गाँवके रहनेवाले जमींदारका घर था। लड़केकी बुद्धि मन्द थी, इसलिए बी० ए०में आकर पढ़ाई छोड़ बैठा। लेकिन था वह गँवारका गँवार।

दुखराम—पढ़े-लिखे भी गदहे देखे जाते हैं मैया!

भैया—लड़कीके मनमें क्या है, इसे कौन पूछता है ? लड़की चाहती थी, उसी डाकटर जवानसे ब्याह करना, लड़का भी उसपर जान देता था। दोनों घर अरिया समाजी थे, स्वामी दयानन्दके चेले।

सोहनलाल—स्वामी दयानन्द तो जात-पाँत नहीं मानते थे भैया ?

भैया—नहीं मानते थे, जात-पाँत हटाना चाहते थे, लेकिन उनको मालूम नहीं था, कि जातकी जड़ कहाँ तक भीतर घुसी हुई है, वह समझते थे कि दो-चार लेक्चर दे देनेसे शास्त्र-वेदके दो-चार बचनोंके गलत-सही अर्थ कर देनेसे काम बन जायेगा। आर्य-समाजी मूर्त्ति-पूजाके बारेमें दो-चार जली-कटी सुनाके अब चुप थे। लड़कीके बापके मनमें यह ख्याल भी न आया होगा कि डाक्टरके साथ ही ब्याह कर दें जो उनको यह मालूम होता कि आज जो वह करने जा रहे हैं वह बंसको डुबा देगा तो कभी ऐसा न करते। लड़कीका ब्याह हो गया। वह अपने पतिके घर गई। पढ़ी-लिखी सुन्दर होसियार मेहरी पाकर पतिका बहुत खुसी हुई। लड़की अपने पुराने प्रेमको भूल गई और अपने पतिको देवता मानने लगी। कुछ महीनों बाद डाक्टर जवानको ब्याह-का पता लगा, उसके दिलको बहुत धक्का लगा, उसने लड़कीके नाम एक चिट्ठी लिखी—तुम्हारा ब्याह हो गया, तुम्हारे लिए मैं दिलसे चाहता हूँ कि तुम दोनों खुस रहो। लेकिन मैंने तुमसे प्रेम किया था, और वह प्रेम मेरे दिलसे कह रहा है कि अब यहाँ किसी दूसरेके लिए जगह नहीं है, जिनगी भर कुँआरा रहूँगा।

दुखराम—बड़ी कड़ी परतिग्या ली भैया ! क्या उसने उसे निबाहा ?

भैया—सो नहीं कह सकता दुक्खू भाई ! लड़कीने सोचा मेरा पति मुझ-पर अटूट प्रेम रखता है, वह मेरी ईमानदारीपर पूरा विसवास रखता है। क्यों न यह चिट्ठी उसे भी दिखा दूँ। लड़कीने तो चिट्ठी इसलिए दिखलाई कि पतिका विस्वास और बढ़ेगा लेकिन उलटा असर पड़ा—उसका मन बिगड़ गया। पहिले रुखाईसे बात करने लगा और, एकाध महीने बाद हाथ छोड़ने लगा। लड़कीने बापको चिट्ठी लिखी। बाप आकर लिवा गया। भैभा माँ ताना देने लगी। कुछ दिनों बाद लड़कीने फिर पति हीके पास

जानेके लिए कहा। वह पतिके यहाँ गई। पाँच-दस दिन बाद फिर वही बात हुई, बल्कि मारपीट और ज्यादा बढ़ी। लड़कीकी अब जीनेकी साध नहीं रह गई। उसने हाथ जोड़के कहा—मैं अब पिताके घर नहीं जाऊँगी, हम दोनोंका बच्चोंका-सा प्रेम था, ऐसे प्रेमसे कोई लड़का-लड़की बाकी नहीं है लेकिन जो आप क्षमा नहीं कर सकते, तो एक बात कीजिये कि मेरा गला दबाके या तलवारसे काटकर मुझे मार दीजिये, लेकिन ऐसा करनेसे आप भी फसेंगे। आप मुझे कोई जहर ला दीजिये, मैं चुपकेसे पी लूँगी और मर जाऊँगी। यह भी न हो सके तो कहीं ले जाकर मुझे छोड़ दें, मैं न फिर आपके गाँवका मुँह देखूँगी, न पिता हीके घर जाऊँगी।

दुखराम—ऐसी बातपर तो भैया पत्थरका दिल भी पसीज जाता ?

भैया—पतिका दिल पत्थरका था और कहीं-कहीं कुछ नरम भी था। उसको हजारों बरससे सिखाया-सुनाया गया था, कि मरद-बच्चा कुछ भी करे, उसके लिए सात खून माफ हैं, लेकिन मेहरीको झाँकनेके लिए भी फाँसीकी सजा। आखिर उसने छोड़ आनेका निश्चय किया। मैं सहरका नाम नहीं ले रहा हूँ क्योंकि लड़कीका भाई अभी जिन्दा है, क्या जाने उसको दुख हो, पुरानी घाव फिर हरियाने लगे। लड़कीको सहरमें छोड़ते वक्त उसने एक भलमनसाहतकी, लड़कीके देहपर जो दो-तीन हजारका गहना था, उसे छीना नहीं। लड़की एक कोनेमें दो-दिन तक भूखी प्यासी पड़ी रही, फिर बगलके एक दुकानवाले जवानको पता लगा, वह उसे खाना पहुँचाने लगा फिर उसकी सुन्दरता, उसकी जवानी और उसकी बेबसी देखकर जवानने हाथ बढ़ाया, लड़कीके लिए कहाँ दूसरी सरण थी, वह दुनियाके सामने अपनी इज्जत खो चुकी थी। उसने सोचा आखिर बँवर (लताको एक पेड़का) आसरा चाहिए, चलो यही आसरा रहे। एकाध महीने रहनेके बाद उसने जवानसे कहा कि मेरे पास दो-तीन हजारके गहने हैं, यहाँ रहनेपर क्या जाने किसीको पता लग जाये; चलो हम बनारस चले चलें। दोनों बनारस चले आये। वहाँ एक छोटी-सी कोयलेकी दूकान खोली। लड़कीकी सारी उमगें धूलमें मिल चुकी थी, अब वह रोटी बनाती, चौका-बरतन करती, जवानकी

ख़रीदी दासीकी तरह सेवा करती। तीन हजारके जेवर उसीके थे, लेकिन उनका मालिक मरद था। बाप अब मर गया था।

दुखराम—उसे कुछ मालूम हुआ था कि नहीं भैया ?

भैया—सो नहीं जानता दुक्खू भाई! लेकिन छोटा भाई अब सयाना हो गया था, कालिजमें पढ़ता था, वह छुट्टियोंमें बराबर इधर-उधर जाकर ढूँढ़ा करता किसी तरह उसे बनारसका पता लगा। वह उस कोयलेकी दूकान तक पहुँचा। और बिना कोई संकोच किये बहिनके चरनोंको छुआ। उसकी आँखोंसे आँसूकी धारा बह रही थी। बहनने अपनेको बहुत रोका तो भी दो-चार आँसू गिरे बिना नहीं रहे। भाईने कहा—"बहिन! चलो", "कहाँ चलूँ भैया? किस घरमें मुझे ठाँव मिलेगा?"

भाई—"तू मेरी बहन है, हम दोनों साथ रहेंगे।"

बहिन—"माँको कैसे रोकोगे, वह कभी ताना दे बैठेगी?"

भाई—"माँसे कह दूँगा कि मुझे भी हाथसे खाना चाहती हो, तो बहनको कुछ कहना।"

बहिन—"लेकिन गाँववालोंको कौन रोकेगा? हमारे पिताका बंस निरबंस हो जायेगा, कोई न तुम्हारा पानी पियेगा, न व्याह करेगा।"

भाई—"हम दोनों सहरवाले घरमें रहेंगे, मुझे न अपने व्याहकी परवाह है न किसीके पानी पीनेकी, लेकिन तुम चलो।"

दुखराम—भाई क्या हीरा था भैया!

भैया—इसमें कोई सक नहीं भाईको उसके आगेकी तपस्याको सुनकर तुम और पहचान सकोगे। बहनने समझा-बुझाके उसे फिर आनेके लिए कहकर लौटा दिया। दूसरे साल जब भाई बनारस पहुँचा, तो वह कोयलेकी दूकान नहीं थी, आस-पासके पूछनेपर मालूम हुआ कि बनिया उसे बहुत पीटा करता था, एक दिन जो कुछ गहना बचा था, उसे लेकर चलता बना। फिर ढूढ़नेपर वह मिली और मालूम हुआ कि लड़कीको गरम था। सिगरा-के ईसाई मिसनमें उसे बच्चा पैदा हुआ। बच्चेको ईसाइयोंको देकर वह किसी धनी घरकी लड़कीको पढ़ा रही है। भाई फिर चलनेके लिए कहने लगा।

बहिनने बहुत मना किया कि यहाँसे जल्दी चले जाओ, नहीं तो घरवालोंको पता लगा तो यह अवलंब भी चला जायगा लेकिन भाई छोड़नेके लिए तैयार नहीं था। वह घर चलनेके लिए जोर दे रहा था। सहरमें रहेंगे। दुनियाकी कोई परवाह नहीं करेंगे। बहिनने कहा—मैं पिताके वंशका निरवंस करना नहीं चाहती। तुम्हारा ब्याह हो जाय तो मुझे ले चलना, मैं तुम्हें बचन देती हूँ।" भाई फिर लौट आया। उसने कालेजकी पढ़ाई खतमकी। दूसरे साल जब बनारस गया तो लड़कीका कोई पता नहीं चला।

दुखराम—लड़कीका क्या हुआ भैया ?

भैया—घरवालोंको जब मालूम हुआ, कि मास्टरनीके यहाँ कोई जवान आकर दो एक दिन रहा है, तो उन्होंने समझा कि ऐसी औरतसे लड़कीको पढ़वाना अच्छा नहीं। बेचारीकी नौकरी छूट गई। इधर-उधर कोई अवलम्ब ढूढ़ने लगी, मगर कोई नहीं मिला। औरतके कामका कोई मोल नहीं। मोल है सिर्फ उसकी देहका जो अभी बुढ़ापा न आया हो, जो उसमें कुछ रूप हो। अभागी लड़की देह बेंचनेके लिए मजबूर हुई। उसकी सारी पढ़ी पढ़ाई, विद्या बेकार थी। कई बरसों बाद उसके भाईको बहिनकी एक चिट्ठी मिली। भाई अब हाकिम, डिप्टी कलक्टर, डिप्टी मजिस्टर था। उसने ब्याह नहीं किया था। बहिनने बापके वंसको निरवंस करना नहीं चाहा था, लेकिन भाईने उसका निहचय कर लिया था। चिट्ठी पाते ही भाईने छुट्टी ली। और वह एक शहरकी छोटी-छोटी खपरैलोंवाले घरोंके महल्लेमें गया। गलीकी मोरीमें मक्खियाँ भिनभिनाती थीं। यह ऐसी गली थी कि जिसमें उसकी बहिनकी तरह और भी कितनी स्त्रियाँ देह बेंचकर खाती थीं। बहिन चारपाईपर पड़ी हुई थी। कभी-कभी पास-पड़ोसकी अभागिनें उसे पानी दे जाया करती थीं। अब उसके पास कोई गाहक नहीं आता था, और न वह दुस दिनके लिए कुछ पैसा ही जमा कर पाई थी। बहनको देखकर भाईका कलेजा फटने लगा। उसने कहा—मैंने तुम्हारे लिए सब कुछ खतम कर दिया। बापके वंसकी तुमको परवाह थी, वह मेरे बाद नहीं चलेगा। लेकिन तुमने ऐसा क्यों किया। अगर मुझे पहिले खबर दी होती तो यहाँ तक नौबत न आती।" बहनने

कहा—"भाई ! मैं तुम्हें पहचान न सकी, लेकिन मरनेसे पहले देख लेना चाहती थी, अब वह साध बुत गई।"

दुखरामने आँखोंमें आँसू भर कहा—भैया ! किसको इसके लिए दोस दें ?

भैया—दोस देनेकी बात पीछे कहता हूँ दुक्खू भाई ! भाईने बहिनकी दवाईके लिए डाक्टर रखे जितनी सेवा हो सकी, की. लेकिन वह तपेदिकके मुँहमें पूरी तौरसे पहुँच गई थी, वह मर गई। भाईने अपने हाथसे उस देहको जलाया, इसके बाद अपनी नौकरीसे इस्तीफा दे दिया। आज भी वह आदमी जिन्दा है और उमर भी बहुत ढल चुकी है। वह क्यों जीता है, इसका उसे पता नहीं। क्या जाने अपने हाथसे अपना प्रान लेना उसे पसंद नहीं है। उसके दिलमें अपनी बहिनकी प्यारी-प्यारी याद अब भी वैसी ही है। उसके बाद उसके दिलमें सबसे ज्यादा घृणाकी आग जल रही है, उन आदमियोंके लिए, जिनके कारन ऐसा हुआ।

दुखराम—याने अभागिनका बाप और पति, सचमुच ही उन्होंने बहुत बुरा किया।

भैया—वह दोनों भी अभागे थे दुक्खू भाई ! उनको दोसी ठहराकर हम असली दोसीको छोड़ देंगे। बापको यह जरूर पता था कि जात-पात बुरी चीज है। उसने इसके खिलाफ आर्य समाजमें लेक्चर सुना होगा। ऐसे भी किस्से सुने होंगे, जिससे मालूम हुआ होगा कि टूटे प्रेमका फल बुरा होता है। फिर क्यों उसने डाक्टरसे नहीं ब्याह करवाया ? ब्याह करते ही उसको अपनी जातिमें कोई जगह नहीं रह जाती। कोई उसके साथ हुक्का-पानी नहीं करता, मरनेपर कोई कन्धा देने नहीं आता। लड़केका ब्याह नहीं होता, लोग जिनगी भर सुनाते रहते कि इसने अपनी लड़की छोटी जातके यहाँ ब्याह दी। पढ़े भी थूकते, अपढ़ भी थूकते। मरद भी निन्दते, मेहरिया भी निन्दती। और दो-चार नहीं, सारे जिले और बाहर भी बदनामी होती। इसकी जगह जो उसे दो साल जेहलखानेकी सजा हो जाती, तो उसे वह बरदास्त कर लेता।

सन्तोखी—दो नहीं दस साल भी भैया बरदास हो जाता।

भैया—इसीलिए बेचारा डर गया। क्या करे आदमीका बच्चा है, जमातसे अलग कैसे रहेगा। सरकारी कानूनसे आदमी किसी तरह बच भी जाय, लेकिन बिरादरीके कानूनसे कौन बच सकता है। हाँ बच भी जाता है जो लोगोंसे पकड़ाई न दे। कितने ही टीका धारी हैं, जो छिपकर सराब पीते हैं, कितने ही लोग जानते भी हैं, लेकिन उनके पास पैसा है। न उनका हुक्का-पानी बन्द होता है न ब्याह-सादी। विधवा-ब्याह बाम्हन, छत्री; बनियाँ कायथमें वर्जित है। जब साठ बरस बूढ़ेसे हम उम्मेद नहीं कर सकते, तो बारह बरसकी विधवासे कैसे आशा करेंगे कि वह जिनगी भर बरहमचारिन रहेगी। जानते हो न, दुक्खू भाई क्या-क्या होता है?

दुखराम—गुपुत संबंध हुए बिना नहीं रहेगा भैया! जो गर्भ नहीं हुआ तो मामला ऐसे ही चलता रहता है। गरभ हुआ तो गिराकर हांडीमें कसकर फेंक दिया जाता है और जो बस नहीं चला, तो ले जाकर बनारसमें छोड़ आते हैं। कहीं-कहीं खून भी कर डालते हैं लेकिन यह बहुत कम होता है। जाति-वाले बस इतना ही चाहते हैं कि जरा-सा हलका-सा परदा रखो, सब बात नंगी न हो जाय।

भैया—इसीलिए दुक्खू भाई, हम उस अभागिनके बापको ही सारा दोस नहीं दे सकते। वह हिम्मत करता, उसको तकलीफ होती लेकिन वह दूसरोंको रास्ता दिखाता। अब जात-पात ज्यादा दिन तक नहीं रह सकती दुक्खू भाई! भात और पानी अपनी जातमें होना चाहिए, यही जातिका कानून है न, लेकिन आज देख रहे हो न कि भात-रोटीको कोई नहीं मानता। सहरोंमें होटल खुले हुए हैं। जाकर लोग खा लेते हैं। जातिमें जो धनी हैं, सरकारी दरजा पा गये हैं, तो उनकी तो कुछ पूछो ही नहीं; वह हिन्दूके होटलमें खा सकते हैं, मुसलमानके भी होटलमें खा सकते हैं। बिलायत जा सकते हैं। राजपूतोंके सिरताज जो राजा लोग हैं, उनको अंगरेजोंके साथ खानेमें कोई रोक-टोक नहीं है, न इसके लिए वह जातिसे निकाले जाते हैं, न उनकी ब्याह-सादी रुकती है, जातिका बड़ा आदमी खानेकी छुआछूत

छोड़ दे तो कोई नहीं पूछता, हाँ गरीबको सब लोग दबाते हैं, लेकिन आज के समाजमें बड़े आदमी रास्ता निकालते हैं। होटल पिछली लड़ाईसे पहिले कहीं था? आटा-चावल बेंचनेवाले दूकानदारोंकी ही उस वक्त बहुत चलती थी। यह बीस बरसके भीतर ही भीतरकी बात है जो सब जगह होटल ही होटल दिखाई पड़ते हैं।

सन्तोखी—खानेकी छुआछूतको तो भैया आदमियोंने उठा दिया, बिरादरी-नें कान-पूँछ नहीं हिलाया। और दूसरे भी अब वही बात करने लगे हैं।

भैया—बाँधमें सूई भर जानेका छेद होना चाहिए, फिर तो पानी अपने ही रास्ता निकाल लेता है।

दुखराम—सूई जाने भरको नहीं, अब तो कोल्हू जाने भरके एक नहीं हजारों छेद हो गये हैं। खानेकी छुआछूतका तो अब सवाल ही नहीं है।

भैया—ब्याहके बारेमें अभी कड़ाई है दुक्खू भाई! लेकिन रोटीकी छुआ-छूतकी तरह यह भी टिक न सकेगी। देसके सिरताज लोगोंने रास्ता सुरू किया है। बाम्हन राजगोपालाचारीकी बेटी गांधी बनियेकी लड़कीसे ब्याही गई। जवाहरलाल नेहरूकी बड़ी बहनका ब्याह दूसरी जातिवाले पंडितके साथ हुआ। छोटी बहिनने तो बाम्हन नहीं, बनियेके लड़केसे सादी की, और जवाहर-लालकी एकलौती बेटी इन्दिराने हिन्दू नहीं, पारसी लड़केसे सादी की। मुन्सी ईश्वरसरन कायस्थोंकी नाक हैं, यू० पी० बिहार दोनोंमें। वह उनके चौधरी माने जाते हैं, उन्हींके छोटे लड़के सेखरने मुसल्मान लड़कीसे सादी की।

सन्तोखी—हिन्दू बनाके किया होगा न भैया? जैसे आर्य-समाजी करते हैं?

भैया—हिन्दू बनाके नहीं किया है, सन्तोखी भाई! हिन्दू लड़कीको मुसल्मान बनाके तो ब्याह बहुत समयसे होता चला आया है, लेकिन ऐसे ब्याहसे हिन्दू-मुसल्मान एक सम्बन्धमें नहीं आये बल्कि और विरोध बढ़ा। मुसल्मानोंकी देखा-देखी मुसल्मान लड़कीको सुद्ध करके आरियोंने ब्याह करना सुरू किया, इससे भी झगड़ा ही बढ़ा। ब्याह सम्बन्धसे पीढ़ियोंके झगड़े मिटाये जाते हैं, लेकिन यहाँ पीढ़ियोंके लिए झगड़े उठाये गये।

दुखराम—तो भैया! जिसको हिन्दू-मुसल्मानमें ब्याह करना हो, उसे नाम

या धरम नहीं बदलना चाहिए यही न ?

भैया—नाम-धरम बदलनेसे फिर वह सम्बन्ध नहीं हुआ, वह तो अँगुली-को सड़ी समझकर काट देना हुआ। अब देसमें पचीसों मुसल्मान लड़कियोंने हिन्दूके साथ और हिन्दू लड़कियोंने मुसल्मानके साथ ब्याह किया। मैं उन्हें जानता हूँ। आगा-पीछा करनेवाले नक्कू होते हैं, लेकिन वही रास्ता दिखलाते हैं। पचास बरस बीतते-बीतते देखोगे कि ब्याहके मामलेको न जात-बिरादरी रोक सकेगी, न धरम। यहाँ कहनेका मौका नहीं है, मैंने सुना है कि हिन्दुओं-की पोथियोंमें जाति-धरम तोड़के हुए ब्याहोंकी बहुत-सी बातें लिखी हैं।

सन्तोखी—मलाहिनकी लड़कीके गरभसे ब्यास पैदा हुए, वेस्याके गरभसे वसिष्ठ ऋषि पैदा हुए, चंडाल कन्यासे परासर पैदा हुए, यह असलोक तो मैं भी जानता हूँ[1] भैया !

भैया—यह सब बन्धन टूटेगा सन्तोखी भाई ! दादा-दादीके सामने होटल-का भात खानेपर भी वह कुँआ-तालाब देखने लगते, लेकिन यह काम नाती-पोताके जमानेमें सुरू हुआ जब कि दादा-दादी आँख मूँद चुके। हर पीढ़ी एक-एक कदम आगे बढ़ रही है कौन रास्तेको रोक सकता है। लेकिन देखा न, वह लड़की जो दरअसल जैसी बातकी पक्की थी, वैसी ही आचरनकी भी पक्की होती, लेकिन उसे बिरादरीने कहाँसे कहाँ तक पहुँचाया, उसे वेस्या बनाके छोड़ा। उसका पति उतना बुरा नहीं था, नहीं तो हजारोंका गहना न छोड़ता। भाईके लिए तो तुम्हीं सोचो, क्या कहोगे ?

सन्तोखी—वह देवता है भैया देवता। यह तो आप कह रहे हैं कि वह अभी जिन्दा है, तभी विस्वास होता है, नहीं तो मालूम होता था, कि कोई कथा-पुरानकी बात है।

भैया—देवता है, ठीक ! बहिन जिन्दा रही तब उसने हिम्मत भी की थी, बिरादरीकी परवाह न करके साथ रखनेकी। बहिनने बात मान ली होती, तो

---

[1] जातो व्यासस्तु कैवर्त्यां, श्वपाक्यां तु पराशरः।
वेश्याया गर्भ संभूतो, वशिष्ठस्तु महामुनिः॥

वह वैसा ही करता भी। उसके बादकी उसकी जिन्दगी, तपस्या, गजबकी है। लेकिन उसके दिलमें जो आग जल रही थी, उसको जात-पातके सत्यानासमें लगाना चाहिए था। उसने अपनी अभागिन बहिनका बदला नहीं लिया, इसीलिए मैं समझता हूँ कि उसने भाईके धरमका पूरी तरह पालन नहीं किया। और लड़कीके बारेमें क्या कहते हो दुक्खू भाई!

दुखराम—औरतोंका तो मैं हाथ-पैर इतना बंधा देखता हूँ कि उनके बारेमें कुछ कहते ही नहीं बनता।

भैया—ठीक कहा दुक्खू भाई! औरतोंको सबसे ज्यादा पीसा गया है। पन्द्रह सौ बरसों तक उन्हें आगमें जलाया जाता रहा और एक-दो नहीं, सालमें दस-दस, पन्द्रह-पन्द्रह लाख।

दुखराम—सचमुच भैया! औरतें होलीकी तरह जलाई जाती थीं।

भैया—हाँ, दुक्खू भाई! इसीको कहते थे सती होना, पति मर जाता, तो विधवाको भी उसकी लासके साथ फूँक दिया जाता था।

सन्तोखी—लेकिन भैया! लोग तो कहते हैं कि सती अपने मनसे होती हैं।

भैया—झूठ बोलते हैं सन्तोखी भाई! कोई एकाध पागलपन भले ही करे लेकिन पन्द्रह सौ बरसके भीतर जो डेढ़ अरब औरतें फूँकी गईं हैं वह सब अपने मनसे जलने गई थीं यह कहना झूठा है। आदमीको अपने परानसे बहुत प्रेम होता है। जो मरनेके लिए तैयार भी हुई होंगी, वह सोकके पागलपनसे ही! जवान औरतके लिए रंडापा एक-दो दिनका सोक नहीं है, उसके लिए दुनियामें सभी जगह काँटे ही काँटे बिछ जाते हैं। उसकी जिन्दगी-को और भी भारी नरक बना दिया जाता है, उसका मुँह देखनेमें असगुन होता है, ब्याह-सादी या मंगल काममें कोई उसको देखना नहीं चाहता। सब उसपर सक करते रहते हैं। हिन्दू, हवा, पानी, पत्ता, खाकर रहनेवाले बिसवामित्र, परासर ऋषिसे जिस बातकी आसा नहीं कर सकते उसकी आसा यह जवान विधवासे करते हैं, तो सचमुच ही वह पानीमें बिन्ध्याचलको तैराना चाहते हैं।

दुखराम—सो कैसे हो सकता है भैया ?

भैया—यह सब बातें विधवा समझती हैं, इसलिए जिन्दगी भर जलते रहनेकी जगह कोई उसी वक्त मर जाना चाहती हो, तो अचरज नहीं। लेकिन डेढ़ अरबमें ऐसी कितनी रही होंगी। और जानते हो दुक्खू भाई, राजपूतोंमें छः-सात सौ बरससे लड़कियाँ जनमते ही मार डाली जाती थीं।

दुखराम—हमारे सामने ही भैया, बेलहामें लड़कीके पैदा होते ही उसके नाक-मुँहपर नाला रख दिया जाता, और कुछ छन हीमें बेचारी मर जाती थी।

भैया—अभी ऐसी जगहें हैं जहाँ लड़कियोंको मार दिया जाता है। जो माँ-बाप अपने हाथसे अपनी बच्चीको मारते हैं, उनका दिल कैसा होगा ?

दुखराम—पत्थर और लोहेसे भी कड़ा भैया ! यह तो अपने ही बच्चेको चबा जाना है।

भैया—काहे ऐसा होता है ? औरतका दुनियामें कितना मोल है। लड़की पैदा होते ही घर भरपर सोक छा जाता है, जान पड़ता है घरका कोई मर गया।

दुखराम—और भैया लड़का होनेपर सोहर गाया जाता है, खुसी और उछाह मनाया जाता है; लेकिन लड़की होनेपर सोहरका भला कोई नाम ले सकता है। लेकिन एक बात देखकर मुझे हैरानी होती है भैया !

भैया—कौन बात है दुक्खू भाई ?

दुखराम—सोहर तो औरत ही गाती हैं, तो औरत जातिके पैदा होनेपर उनका मुँह क्यों बन्द हो जाता है और मरद जातिके पैदा होनेपर बहुत खुस हो जाती हैं ?

भैया—औरतका मोल मरदने लगाया है, औरत मरदके हाथकी कठपुतली है। हजारों बरससे औरत मरदकी गुलाम है। मालिक जो सिखाता है, गुलाम उसीको अच्छा मानता है। मरद ठीकसे बोलना नहीं जानता, तभीसे उसके मनमें ठोंक-ठोंककर बैठाया जाता है कि वह मरद बच्चा है। उसी वक्तसे वह अपने बहिनोंपर रोब जमाने लगता है, औरतको जिनगी भर गुलाम

रखनेकी सिच्छा यहींसे दी जाती है। पाँच बरसके लड़केको गुड़िया खेलनेको दो तो वह क्या लेगा दुक्खू भाई?

दुखराम—नहीं भैया! वह उसे फेंक देगा, कहेगा कि क्या मैं लड़की हूँ।

भैया—लड़केको हाथी-घोड़ा खेलनेको मिलता है, वह गुल्ली-डंडा खेलता है, पेड़पर चढ़ता है, तैरता है, कंधेपर लाठी लेकर चलता है, तीर-धनुही चलाता है। लेकिन लड़कीको वही गुड़िया, वही चूल्हा-चक्की।

दुखराम—याने बचपन हीसे लड़कींको बतला दिया जाता है कि तुम्हारी जगह कहाँ है?

भैया—मरद अकेला-दुकेला जाता हो, तो क्या कोई छेड़नेकी हिम्मत कर सकता है? लेकिन जवान औरत चले तो किसी सड़कपर, देखो फिर सभी घूर-घूरकर ताकने लगते हैं। इतना ही होता, तब भी खैरियत थी; लेकिन वह तो मजाक करने लगते हैं और गन्दे-गन्दे। औरतको सिर्फ सिर नवाकर चले जानेके सिवा दूसरा कोई उपाय नहीं है। अकेले-दुकेले मिले तो जबरदस्ती करनेसे भी बाज नहीं आते। औरतकी देहमें मरदके इतना बल नहीं होता, लेकिन जो कोई बलवान भी औरत हो, तो अपनी इज्जत बचानेके लिए बदमाससे लड़नेकी जगह भागना ही अच्छा समझेगी। औरत कायर होती हैं, यह बात नहीं है। बदमाससे लड़कर जीतनेपर भी वह बदनाम तो हो ही जायगी, उसके मुखपर कालिख पुत ही जायगी। औरत अपनी रच्छाके लिए खुलकर जोर नहीं लगा सकती। चुप रहनेके कारन उसे अपनेको बचाना मुश्किल होता है। औरतकी यह अवस्था किसने की?

दुखराम—मरदने भैया!

भैया—मरदने ही, लेकिन मरदोंमें भी जोंकें हैं मूलकारन, काहेसे कि उन्हीं हीने धनपर मरदका हक कायम किया है। औरतको पतिकी जायदादमें सिर्फ रोटी-कपड़ा पाने भरका अधिकार है। एक ही पेटसे भाई-बहिन दोनों पैदा होते हैं, लड़का चाहे कितना ही नालायक हो उसको जायदाद मिलती है, और लड़कीको पतिके घरमें दासी बनकर रहनेके लिए भेज दिया जाता है। औरतको आज निरवलम्ब बना दिया गया है। वह अपने पैरपर खड़ी नहीं

हो सकती। हजारों बरससे वह यह जुलुम सहती आई है। लेकिन यह जुलुम तभीसे सुरू हुआ जबसे जोंकें पैदा हुईं। जोंकोंकी औरतें और भी बेबस हैं। यह इसीलिए कि वह अपने हाथसे कुछ कमाती नहीं।

दुखराम—उनके मरद भी तो जोंक ही हैं, वह भी नहीं कुछ कमाते ?

भैया—वह दूसरोंको लूटते हैं दूसरोंका खून चूसते हैं, उसीको यह कमाना कहते हैं। कोई बाबू दफतर में जाकर ६ घण्टे काम करता है, महीनेमें ४०) ले आता है इसे कमाई करना कहेंगे। उसकी औरत दो घड़ी रात रहे उठेगी, चक्की पीसेगी, चावल कूटेगी, चौका-बासन करेगी, खाना पकाके परोस देगी फिर बैठकर पंखा करेगी। बाबू दफ्तर चले जाएंगे। औरत बचा-खुचा जूठ खायेगी। फिर चौका बासन करेगी, फिर चक्की-ओखल पकड़ेगी। लड़कोंको खिलाना, पोसना-पालना सब औरतके ऊपर है, मरद के ऊपर इसका कोई भार नहीं है। साभको खुद जलपान बनायेगी, फिर रसोई पकायेगी, फिर बेनिया डोलायेगी। मरदको दफ्तरसे लौटकर फिर कोई काम नहीं। औरत ६ घरी रात तक बराबर खटती रहेगी। फिर उसे पतिका पैर दबाना पड़ेगा। दो घड़ी रातसे आधी रात तक औरत खटती रहती है, लेकिन उसके कामकी कोई गिनती नहीं और मरद ६ घण्टे काम कर लेता है, तो समझता है कि वही कमाकर घर भरको खिला रहा है। देखो दोनोंमें कितना फरक है क्या इसको न्याव कहेंगे।

दुखराम— है तो भैया यह पूरा अन्याय।

भैया—मरद औरतको गुलाम बनाके अपने घरमें लाता है और इसको कहते हैं, ब्याह। बाप लड़कीके लिए बर ढूँढ़ता है किस लिए ? इसीलिए कि लड़कीको रोटी-कपड़ेका कोई अवलंब मिलना चाहिए। मरदको अवलंबकी जरूरत नहीं, क्योंकि बापकी सब जायदाद उसको मिलती है, वह दूकान खोल सकता है, दफ्तरमें काम कर सकता है, उसके कमानेके सारे रास्ते खुले हुए हैं, लेकिन औरतके लिए सारे रास्ते बन्द हैं, इसलिए उसे खाना-कपड़ा देनेवाला कोई चाहिए। खाना-कपड़ा हीको पैसा कहते हैं न दुक्खू भाई !

दुखराम—हाँ भैया ! पैसे हीसे न खाना-कपड़ा मिलता है ?

भैया—तो इसका मतलब हुआ ब्याह भी पैसेके लिए औरतका देह बेंचना है। दूसरे देह बेंचनेमें और इसमें यही अन्तर हुआ न कि यह बेच-खरीद जिन्दगी भरके लिए है। इसे प्रेमका सौदा नहीं कह सकते दुक्खू भाई! यह साफ पैसेका सौदा है।

दुखराम—तो क्या भैया! ब्याह करना ही बुरा है?

भैया—मैं ब्याह करनेको नहीं बुरा कहता दुक्खू भाई! लेकिन ब्याहके नामपर पैसेका सौदा होना औरतकी बेइज्जती समझता हूँ। ब्याहकी नींव प्रेम-पर होनी चाहिए, और प्रेम दो बराबर आदमियोंमें होता है। खरीदी दासी और मालिकमें प्रेम नहीं होता। औरत तब तक बराबर नहीं हो सकती जब तक-की कमानेमें माँ-बापकी जायदादमें उसका बराबरका हक नहीं होता।

संतोखी—सुनते हैं भैया! बड़े लाटके यहाँ कानून बननेवाला है जिसमें कि औरतको जायदादमें हक मिले।

दुखराम—तुमने कहाँ सुना संतोखी भाई!

संतोखी—परसों हाटमें सभाकी नोटिस बँट रही थी।

दुखराम—नोटिसमें क्या लिखा था संतोखी भाई?

संतोखी—लिखा क्या था, लो न नोटिस देख लो—

हिन्दू अप्रदत्त उत्तराधिकार बिल विरोध सभा

धार्मिक हिन्दू जनताकी ता०........१९४४ वार........को स्थान.........में हिन्दू समाज नाशक उत्तराधिकार बिल एवं विवाह विषयक बिलके विरोधमें सभा होगी, जिसमें बाहरके आये हुए विद्वानों एवं स्थानिक सज्जनोंके भाषण होंगे। उक्त बिलोंसे हिन्दू समाजपर कितनी बड़ी कठिनाई तथा सामाजिक दुर्व्यवस्था होनेवाली है, इसका पूर्ण परिचय देंगे। अतः धार्मिक सज्जनोंसे निवेदन है कि सभामें अपने इष्ट-मित्रोंके साथ अवश्य पधारें।

निवेदक—"

प्रबोध प्रेस, बनारस

दुखराम—यह तो भैया ! संसकिरतमें कुछ लिखा हुआ है कुछ समझमें नहीं आता ।

भैया—यही लिखा है कि सरकार औरतको जायदातमें हक देनेका कानून पास कर रही है, इसके खिलाफ सभी हिन्दुओंको विरोध करना चाहिए, नहीं तो हिन्दू धरम रसातलको चला जायगा ।

दुखराम—देहमें आग लग गई भैया, यह हिन्दू धरम है कि निसाचर धरम है, जो अपने माँ-बहिनको हक देनेमें धरमके रसातल जानेकी बात करता है । संतोखी भाई ! चाहे तुम नाराज हो जाओ, मैं तो कहूँगा कि ऐसा हिन्दू धरम चार दिनके बाद नहीं इसी छन रसातलमें चला जाय तो मुझे बड़ी खुसी होगी ।

भैया—हिन्दुस्तानमें ३० करोड़ हिन्दू हैं, उसमें आधी १५ करोड़ औरतें हैं, कभी उन औरतोंसे भी इन धरमवालोंने पूछा, कि तुम्हे जायदात मिलनी चाहिए कि नहीं ।

दुखराम—उन बेचारियोंको तो मालूम भी नहीं है, यह पीठमें छुरी भोंकना है । जो वह समझ पायें, तो मरदकी सब जायदाद और कमाई ताकपर रखी रह जायगी । एक ही दिन १५ करोड़ने चूल्हा जलाना छोड़ दिया, तो सभा करनेवालोंको आटा-चावलका भाव मालूम हो जायेगा ।

भैया—लेकिन दुक्खू भाई ! औरतें हमेशा भेड़-बकरी नहीं बनी रहेंगी । पढ़ी लिखी औरतें जगह-जगह सभा कर रही हैं और कह रही हैं कि लड़के आदमीके पेटसे निकलते हैं और लड़की क्या इमलीके खोढ़रसे निकलती हैं ।

संतोखी—जहाँ-तहाँ भैया ! कसाई सब औरतोंसे अँगूठेका निसान लगवा रहे हैं ।

भैया—काहे वास्ते संतोखी भाई !

संतोखी—समझा रहे हैं कि जो कानून पास हो गया तो सब जायदाद लड़कियाँ ले जायेंगी और लड़के भीख माँगते फिरेंगे ।

भैया—सब जायदात तो देनेकी बात नहीं संतोखी भाई ! हजारों बरसोंसे हिन्दू मरदोंने जो उनका हक छीन लिया है, बस उतने हीके देनेकी बात है । मुसलमानोंके यहाँ लड़कीके लिए हक मिलता है, ईसाईके यहाँ भी लड़कीको

हक मिलता है, उनका धरम तो रसातल नहीं गया तो हिन्दू मरद इतना क्यों छटपटा रहे हैं।

दुखराम—यह हिन्दू धरम क्या है भैया! यह तो जान पड़ता है कि आदमीके देहका कोढ़ है। लेकिन यह कितने दिनों तक रोकेंगे?

भैया—तो मालूम हुआ न, औरतोंपर कितना जुलुम हो रहा है। मरकस बाबाकी शिक्षा है कि मरद और औरत गाड़ीके दो पहिए हैं, जब तक दोनों बराबर नहीं होंगे तब तक गाड़ी चल नहीं सकती। दुक्खू भाई! हम जोंकोंको खतम करनेके लिए तैयार हैं, इसीलिए न कि आदमी-आदमी बराबर हों। आदमी-आदमीके बराबर होनेपर औरतोंको गुलाम नहीं रखा जा सकता। औरतको आगमें जलाना भी हिन्दू धरम कहलाता था। औरतकी देहको रोटी-कपड़ेके लिए बेंचना भी हिन्दू धरम कहला रहा है। बराबरका हक होगा, तब औरतको देह बेंचना नहीं होगा, तभी दुनियाका नरक मिटेगा।

अध्याय १५

"हरिजन" या सबसे अधिक सताये आदमी

दुखराम—भैया तुमने उस दिन जो औरतोंकी गुलामीके बारेमें कहा था, उसपर मैं बहुत सोचता रहा, लेकिन उसी तरहकी और कुछ बातोंमें उनसे भी सताई जमात है उन लोगोंकी जिनको बड़ी जाति अछोप, अछूत, कहते हैं।

भैया—और उन्हींको गांधीजीने नया नाम दिया—"हरिजन।"

दुखराम—मैंने सोचा अब्दुल और सुखारीको साथ लेकर बात करो तो और अच्छा होगा। मैं उनसे मरकस बाबाकी बातें करता रहा हूँ, और अभी तो वह दुनिया कहाँ है, इसका कहीं पता नहीं है, तो भी बात सुनके ही दोनों तुमसे भेंट करनेके लिए आना चाहते थे। मैंने उनसे कहा कि रजबली भैयाको मैं तुम्हारे ही घरपर लाता हूँ, वही सामने है अब्दुल भाईकी झोंपड़ी, देखते हैं न, क्या यह आदमीका घर है? हिन्दू भंगी होता, तो बगलमें एक सुअरकी खोभार भी होती और दोनोंमें कोई फरक नहीं दिखाई पड़ता। अच्छा

अब हम आ गये, अब्दुल भाईने आमके नीचे पुआल बिछा दिया। सलाम अब्दुल भाई !

अब्दुल—सलाम दुक्खू भाई ! और यह रजबली भैया तो नहीं हैं ?

दुखराम—हाँ, यही हमारे रजबली भैया हैं। सलाम सुखारी भाई !

सुखारी—सलाम दुक्खू भैया, सलाम रजबली भैया ! आओ इसी पुआल-पर बैठें।

अब्दुल—हाँ, भैया ! बैठो। जोंकोने हमें और किस कामके लायक छोड़ा है। यह तो थोड़ा-सा कोदोंका पुआल कहींसे माँग-जाँचकर ले आये हैं। जाड़ेमें लड़के-वाले इसीमें घुसकर दिन काटेंगे।

सुखारी—पुआल भी मिल जाय भैया ! तो जनुक हम लोगोंको साल-दुसाला मिल गया।

दुखराम—हमारे ही हाथ साल-दुसाला बनाते हैं लेकिन मकुया बनकर दूसरे उसे पहिनते हैं। हमने अपने रूपको नहीं पहचाना सुक्खू भाई ! कोई बाघका बच्चा था। बचपन हीमें किसी गड़रियेने पकड़ लिया और भेड़-बकरीका दूध पिलाकर पोसा। जब वह बढ़कर पूरा बाघ हो गया, तब भी कोई उसका कान पकड़ता, कोई मारता, जैसे अब भी कुत्ते हीका पिल्ला है। फिर किसी दूसरे बाघने देखा उसको बड़ा अचरज हुआ और अफसोस भी हुआ। जब वह समझानेके लिए उसके पास गया तो सब भेड़-बकरियाँ भाग गईं, और उन्हींके साथ वह बाघका बच्चा भी भाग निकला। कई दिनके बाद बाघने जवान बाघको पकड़ पाया। बाघ समझाने लगा कि तुम भी हमारी तरह बाघके बच्चे हो, काहे मार खाते हो, काहे बेइज्जत होते हो ! बाघ बच्चेने कहा—कि नहीं हमको छोड़ दो नहीं तो गड़रिया मार-मारकर बेदम कर देगा। बाघ उसे पानीके पास ले गया, परछाईं देखाके कहा कि देखो तुम्हारा भी रूप मेरे ही ऐसा है। बाघ बच्चेने देखा तो बात उसे सच्ची मालूम हुई लेकिन तब भी उसका डर नहीं जा रहा था। बाघने कहा कि गड़ेरियेके सामने मेरी तरह जरा गुर्राना और जब गड़रिया जान लेके भाग जाय तब तो मेरी बात मानोगे न ? बाघ बच्चेने वैसे ही किया, गड़रिया भाग गया। बाघ अच्छा

जंगलका राजा बन गया। वही बात तो है सुक्खू भाई! हम लोगोंकी। हजार आदमी मर-मरकर कमाते हैं और पाँच जोंकें सब खा जाती हैं, कमानेवालों-को उन्होंने छत्तीस खोममें बाँट दिया है उसपरसे हम लोगोंको भेड़ बना दिया। लेकिन जिस दिन हम लोग अपना रूप पहचान लेंगे, उसी दिन जोंकों-का अन्त समझो।

सुखारी—दुक्खू भाई, जो तुम कहते हो, वह सब हमारे घटके भीतर उतर जाती है। छोटा भइयवा सुआरथ काल्ही तो यहाँसे गया है। पलटनमें सिपाही है भैया! वहाँ अच्छा-अच्छा खाना-पहनना मिलता है दुक्खू भाई! तुमने जो दो अच्छर बताया है उसे सुआरथसे भी कहा। उसने कहा कि रूसके पलटन इतनी बीर दुनियामें कहीं नहीं है लेकिन उसको यह नहीं मालूम था कि रूसमें जोंकें नहीं हैं, वहाँ कमेरोंका राज है।

दुखराम—तो तुमने कुछ बताया कि नहीं सुक्खू भाई?

सुखारी—जो कुछ समझमें आता है, वह बतलाया दुक्खू भाई! कह रहा था कि मैं पलटनमें जाकर और पता लगाऊँगा। अच्छा यह बात तो हुई अब रजबली भैया कुछ बतावें!

भैया—दुनिया भरमें सुक्खू भाई जोंकोंका राज है, जोंकें कारखाना खोलती हैं, सौदा बेंचती हैं, जिसमें कोई गड़बड़ न करें इसलिए राज भी अपने हाथमें रखा है। गरीब सब जातिमें हैं सुक्खू भाई! बाँभनमें भी गरीब हैं, रजपूतमें भी गरीब हैं, भुँइहारमें भी गरीब हैं, जो गरीब हैं, उसकी जिन्दगी नरक है, धरतीपर हमारा देस सबसे बड़ा नरक है काहेसे कि इतनी गरीबी चारों खूँटमें कहीं भी नहीं है। और बड़ी जातियोंमें तो दो-चार खुसहाल भी होते हैं, लेकिन अछूत जातिमें तो एक ओरसे सभी गरीब ही गरीब हैं। मदरसामें पढ़ने जायँ तो सबकी तिउरी चढ़ जाती मेहतरका लड़का हमारे लड़केके साथ बैठा करे। चमारका लड़का हमारे लड़केके साथ पढ़े। रोजगारसे लोग पैसा पैदा करते हैं, लेकिन अब्दुल भाई! तुम मिठाईकी दूकान खोलो तो कोई आयेगा?

अब्दुल—देह तो छुआते ही नहीं हैं भैया! हमारे हाथकी मिठाई कौन खायेगा? कपड़ाकी दूकान खोलो तो वही बात। नौकरीमें तो और मुस्किल।

सब बड़ी बड़ी जातियोंके हाथमें है ।

भैया—जोंकोंने वैसे तो सारी दुनियामें सब कुछ अपने हाथमें रखा लेकिन हिन्दुस्तानमें तो उन्होंने और गजब ढाया है। तीस करोड़ हिन्दुओंको ही ले लो। दस करोड़ अछूत हैं, बड़ी जातिवाले जो उन्हें आदमी कहते तो जनुक बड़ी दया करते हैं ना ऽी बीस करोड़में दस करोड़ औरतें हैं जिनको कहनेके लिए तो अरधांगिनि नाम दिया जाता है लेकिन कहावत है—"बहुरियाका बहुत मान लेकिन हाड़ी-बरतन छूने न पाये।" दुक्खू भाई! उस दिन बात हो रही थी न जायदातमें औरतोंका भी हक होना चाहिए ?

दुखराम—हाँ भैया ! सन्तोखी भाईने जो सभाकी नोटिस दिखाई थी।

सुखारी—किस बातकी नोटिस थी भैया ?

भैया—आजकल बड़े लाटके यहाँ एक कानून बनानेकी बात हो रही है। औरतोंको न बापकी जायदातमें हक मिलता है न पतिकी। इसीलिए कानून बना देना चाहते हैं कि औरतोंको भी हक मिले लेकिन हिन्दू कहते हैं कि औरतोंको हक मिलनेसे हिन्दू धरम खतम हो जायगा। हिन्दू धरम बढ़ेगा कैसे ? दस करोड़ आदमियोंको अछूत रखो उनको न साथमें पढ़ने दो न उन्हें कुयेंकी जगतपर चढ़ने दो, न मन्दिरके भीतर घुसने दो, एक है यह रास्ता। दस करोड़ औरतोंको कोई हक मत दो जिससे वह मरदोंकी दासी बनी रहें हिन्दू धरमकी बढ़ोतरीका यह दूसरा रास्ता है; बीस करोड़को तो इस तरह जानवर बना फिर दस करोड़ हिन्दू आदमी रह जाते हैं। लेकिन उस दस करोड़में कितने ही बाम्हन हैं, जिनका दिमाग आसमानपर रहता है वह अपनेको बम्हा-का बेटा कहते हैं, कुछ हैं राजपूत, फिर हैं खत्री, अगरवाल, बरनवाल, रस्तोगी, कायथ, और भी पचासों जातियाँ हैं, सबकी अलग-अलग दुनिया है, मरना-जीना, सादी-ब्याह सबका अपनी-अपनी जातिमें। हिन्दू सिरिफ एक नाम है, नहीं तो यह सैकड़ों जातियोंका अपना अलग संसार। तो देख रहे हो न दुक्खू भाई, २० करोड़ औरत और अछूत कहकर जानवर बना दिया। फिर १० करोड़को सैकड़ों जातियोंमें तोड़-फोड़कर बिल्कुल कमजोर कर दिया। इससे फायदा किसको हुआ ? बाहरवालोंको। घर फूटै गँवार लुटै, आज बिलायती

जोंकें हिन्दुस्तानपर राज कर रही हैं क्यों ? इसीलिये कि हिन्दुस्तान फूटके कारन दुरबल है और दुरबलकी मेहरी गाँव भरकी भौजाई है। और दूसरा नफा उटानेवाला है हमारे देसके निकम्मे लोग, जोंकें जो हाथ-पैर हिलाना नहीं जानतीं, जो दूसरोंका खून चूसती हैं, किसान उनके लिये अनाज पैदा करता है, मजूर उनके लिये कपड़ा बुनता है।

दुखराम—इन्हीं जोंकोंने क्या भैया जात-पात बनाई है क्या ?

भैया—एक कहावत है दुक्खू भाई—जब गंगा हहाके समुन्दरके पास पहुँची तो समुन्दरको बड़ा डर लगा उसने सोचा जो गंगा इतने जोरसे चलेगी तो मुझे भी लाँघ जायेगी। उसने हाथ जोड़के कहा—"गंगा महारानी। एक बातका बरदान माँगता हूँ एक धारासे आनेपर मुझे बहुत तकलीफ होगी आप हजार धारा बनकर आयें तो मुझपर बड़ी दया होगी। गंगा हजार धारा बन गई, उसका जोर हजार टुकड़ोंमें बँट गया और कहते हैं इसीलिये समुन्दर गंगाको खा गया। हमारा देस भी वैसे ही है। हजारों जातियोंमें बँटा है इसीलिये हमारे यहाँकी जोंकें हजारों बरससे हमें खा रही हैं, हमारे लिये ये जोंकें मजबूत हैं लेकिन यह भी हजारों टुकड़ोंमें बँटी हैं, इसलिये बिलायती जोंकें हिन्दुस्तानमें पहुँच गई। तुमसे दुक्खू भाई पूछा जाय कि तुम तो इतना काम करते हो। बड़े भोर ही हल नाधते हो, बरखा हो या जाड़ा हो या गरमी हो कुछ नहीं गिनते। अढ़ाई पहर तक खेतमें हर जोतते हो, जमीन खोदते हो, खेत काटते हो, और मिलता तुम्हें क्या है ?

सुखारी—चार पैसा, और पाव भर पन पियाव, नकुल। चार पैसाके साँवामें भी आज-कल पेट नहीं भरता, क्या अपने खायँ और क्या बाल-बच्चेको खिलायें, सबकी हड्डी-हड्डी निकली हुई है। परसाल १२ बरसका लड़का झुक (मर) गया।

भैया—१२ बरसका लड़का मरनेके लिये नहीं पैदा हुआ था दुक्खू भाई ! जिसको आध पेट भी भोजन नहीं मिलेगा, उसको तो बीमारी हूँढ़ती ही रहती है। खानेका ठिकाना नहीं है तो दवाई कहाँसे लाके पिलाओगे ?

भैया—आज-कल भी भैया आठ सालका गदेला (लड़का) महीना भरसे

जड़ैयामें पड़ा है। बस भगवानपर छोड़ दिया और क्या करें। पहिले चार पैसेकी कुनैनकी पुड़िया मिलती थी तो कहींसे माँग-जाँचकर खरीद लाते थे। लेकिन अब तो उसका कहीं पता ही नहीं है।

भैया—यह आदमीकी जिन्दगी नहीं है सुक्खू भाई, दो सौ पीढ़ीसे तो भगवानपर छोड़ा, लेकिन भगवानने आज तक तुम्हारी ओर झाँका भी नहीं।

सुखारी—सो तो जानता हूँ भैया! लेकिन जब आदमीका कुछ भी नहीं चलता तो क्या करे? सुनते हैं गांधी महातमा हम लोगकी सुध ले रहे हैं।

भैया—अपनी सुध न लोगे सुक्खू भाई तो कोई तुम्हारी सुध न लेगा; हिन्दू और गांधीजी भी जो हरिजन-हरिजन कहने लगे तो इसमें भी दूसरा ही मतलब है।

दुखराम—दूसरा मतलब क्या है भैया और हरिजन क्या?

भैया—हरि भगवानको कहते हैं और जनका माने है आदमी, भगवानका आदमी, नाम तो अच्छा है, लेकिन नामसे कुछ नहीं होता।

दुखराम—एक खिस्सा सुना दें किसी लड़केका नाम ठठपाल था, अच्छा नाम रखनेसे जम उठा ले जाता था इसलिये मतारीने खराब नाँव रख दिया। लड़का पढ़के हुसियार हुआ। दूसरे लड़के ठठपाल कहके मजाक करते। उसने अपने गुरुसे कहा कि मेरा नाम बदल दें। गुरुने कहा—'नाममें कुछ नहीं है' ठठपालने फिर-फिर जोर देकर कहा तो गुरुने कहा जाओ तुम्हीं कोई अच्छा-सा नाम ढूँढ़ लाओ। ठठपाल नाम ढूँढ़ने चला। किसी खेतमें फटे चीथड़े लपेटे कोई औरत पिछुआ (छूटा दाना) बीन रही थी, ठठपालके पूछनेपर उसने अपना नाम लछमिनिया बताया। ठठपाल सोचने लगा कि लछमिनिया ऐसा अच्छा नाम है, लेकिन इससे उसे क्या नफा है? ठठपाल और आगे बढ़ा, चैत-बैसाखकी दुपहरियामें कोई आदमी नंगे बदन हल जोत रहा था, पूछनेपर नाम बताया धनपाल। ठठपाल फिर सोचने लगा; लेकिन, फिर आगे बढ़ा। कुछ आदमी कन्धेपर मुर्दा उठाये "राम नाम सत्त है" कहते गाँवसे बाहर निकल रहे थे। ठठपालने नाम पूछा तो मालूम हुआ अमर! ठठपाल वहाँसे गुरु-जीके पास लौट आया। गुरुने पूछा—कोई नाम ढूँढ लाये? ठठपालने

कहा—"बिनियाँ करत लछमिनिया देखा, हल जोतत धनपाल। खटिया चढ़े हम अम्मर देखा, सबसे भला ठठपाल॥"

दुखराम—हाँ, नाम बदलनेसे क्या होता है भैया?

भैया—और नाम भी कैसा बदला है हरिजन, भगवानका आदमी। भगवानने अछूतोंकी ओर फूटी आँख भी कभी देखी? जोंकें अपने सारे चूसनेको भगवान हीकी कृपा बतलाती हैं। सुखारी क्यों भूखे मरते हैं? भगवानकी कृपा, सुखारीका १२ सालका लड़का पथ और दवाईके बिना क्यों मर गया? भगवानकी मर्जी। सालमें १० महीना सुखारीको क्यों भूखा और आधा पेट रहना पड़ता है?—भगवानकी इच्छा। इनके दो करोड़ चमार भाई काहे नंगे-भूखे मरनेके लिये पैदा हुये हैं? भगवानकी खुसी! राजा सुरेमनपुर काहे २० लाख रुपया हर साल आतिसबाजी, रंडी और मोटरपर फूकते?—भगवानकी दया। सेठ तिनकौड़ीमल मोटाईके मारे चारपाई परसे उठ भी नहीं सकते। उन्होंने चोर बाजारमें अनाज बेचकर एक करोड़ रुपया काहे मार लिया?—भगवानकी दया। सेठ तिनकौड़ीमलके भाई-बन्धोंने अनाज छिपाके उसे महँगाकर बंगालमें २० लाख आदमियोंको भूखा क्यों मार डाला?—भगवानकी दया। कोई काम करते-करते मर जाता, लेकिन उसे एक साँझ भी पेट भर अन्न न मिलता, यह भी भगवानकी दया। किसीके कुत्ते हलुवा-मलीदा खाते हैं और कोई भूखके मारे कुत्तोंका जूठ छीनके खाता है यह भी भगवानकी दया।

दुखराम—जिनके कुत्ते घी-मलीदा खायँ वह भले ही भगवानकी दयाकी तारीफ करते फिरें, लेकिन जिनके ऊपर भगवानके नामने हमेसा ही बज्र गिराया है, वह काहेको भगवानके आदमी बनने जायँ?

भैया—गांधीजीने अछूतोंको हरिजन—भगवानका आदमी बनाया और एक काम और किया।

सुखारी—सो क्या है भैया?

भैया—हरिजनोंके लिए मन्दिरका दरवाजा खोल देना चाहिए। जब हरिजन हैं तो इनको हरिका दरसन जरूर मिलना चाहिए। लेकिन बाम्हन पोथी खोल-खोलके दिखाते फिरते हैं कि चमारके मन्दिरके भीतर जानेसे मन्दिर

असुद्ध हो जाता है, भगवान असुद्ध हो जाते हैं। मैं तो उनसे कहता हूँ दुक्खू भाई कि क्या हिन्दुस्तानमें गायका गोबर और मूत नहीं है, क्यों नहीं खिला-पिलाके भगवानको शुद्ध कर लेते।

दुखराम—चमारके लिए मन्दिरका दरवाजा खोल देनेसे उसका पेट भर जायगा ?

भैया—डाक्टर अम्बेडकर भी यही कहते हैं दुक्खू भाई !

दुखराम—डाक्टर अम्बेडकर कौन हैं भैया ?

भैया—बम्बईकी ओरके चमार। पढ़नेमें बहुत तेज थे, किसी तरहसे तकलीफ सह-सहके दो अच्छर पढ़ा फिर किसीने रुपयेकी थोड़ी मददकी, बिलायत गये बलिस्टर हुए, डाक्टर बने—दवाईवाले डाक्टर नहीं, विद्यावाले डाक्टर। हिन्दुस्तान आये। वकालत करने जायँ तो धन तो है बड़ी जातिवालोंके पास और चमारको कौन बलिस्टर रखेगा। कचेहरीके हाकिम बने, तो सब बड़ी जातिवाले सरकारका सिर खाने लगे कि हम चमारके इजलास में नहीं आयेंगे। अम्बेडकरके भाई-बन्दोंको हजारों बरससे जानवरकी तरह रखा गया, वे बड़ी जातिवालोंके सामने न छाता लगाके निकल सकते हैं, न जूता पहिन करके। लेकिन उनको कभी भी इसका दिलमें ख्याल नहीं आया, वह समझते हैं भगवानने हमें इसीलिए पैदा किया है। लेकिन अम्बेडकरने विद्या पढ़ी थी, दुनियाके देस देखे थे, वह ऐसे अपमानको चुपचाप बरदास नहीं कर सकते थे। उन्होंने अपने चमार भाइयोंको समझाया और सभी अछूतोंको समझाया कि हम आदमी हैं कुत्ता-बिल्ली नहीं हैं जो हिन्दुओंके धरममें हमें कुत्ता-बिल्ली बनाके रखनेकी बात लिखी है तो हम ऐसा धरम नहीं चाहते। भगवानको हमने देख लिया जो वह २०० पीढ़ीसे हमारे नहीं हुए तो अब वह कभी हमारे नहीं होंगे।

सुखारी—तो भैया ! अम्बेडकर हमारी ही जातिके आदमी हैं, वह भी इस दिहातमें चले आवें, तो भिटौराके राजा साहब जूता-छाता पहनकर नहीं न चलने देंगे ?

भैया—अम्बेडकर बड़े लाटके मन्त्री हैं। झूठी खबर भी उड़ जाय कि

अम्बेडकरकी मोटर मिटौरासे होकर जायगी, तो वहाँ सड़कके' किनारे फाटक बनेंगे और लाल-पीली झंडियों, अशोकके पल्लवोंसे सजाया जायगा, राजा साहब हाथ जोड़कर अगवानी करेंगे और चाय-पानी कर लेनेपर अपना धन्निभाग समझेंगे।

सुखारी—तो भैया! अम्बेडकर बड़े लाटके मंत्री हो गये, तो उनकी जाति ढँक गई न?

भैया—जोंकोंका कायदा है सुक्खू भाई कि जब किसीको बड़ा देखते हैं तो अपनी ओर खींचना चाहते हैं जिसमें कि वह आदमी भी जोंकोंका पच्छ करे नहीं तो खून चूसनेमें मुसकिल होगी न!

सुखारी—क्या अम्बेडकर हम गरीबोंको भूल जायँगे!

भैया—भूले तो नहीं हैं सुक्खू भाई, वह तो दसो करोड़ अछूत भाइयोंको जानवरसे आदमी बनाना चाहते हैं। लेकिन दसो करोड़ आदमी अपने मनसे जानवर नहीं बने, जोंकोंने उन्हें जानवर बनाया।

सुखारी—किस तरह हम लोगोंको आदमी बनाना चाहते हैं भैया!

भैया—कहते हैं हिन्दुओंमें एक तिहाई अछूत हैं, उनको भी बड़ी-बड़ी नौकरी मिलनी चाहिए। काहे जज, कलट्टर, मजिट्टर सब बड़ी-बड़ी जातिके ही लोग बने हैं। हम एक-तिहाई हैं इसलिए नौकरीमें एक-तिहाई हमारा हिस्सा होता है।

सुखारी—तो भैया, क्या हमारी जातिमें भी अब कलट्टर-मजिट्टर बन रहे हैं!

भैया—हाँ, दस-बीस काहे नहीं बने हैं। लेकिन सुक्खू भाई जो तिहाई नौकरी मिल जाय तो यह भी ऊँटके मुँहमें जीरा होगा। दस करोड़में एक हजार नौकरी मिल जानेसे दसो करोड़की भूख भाग जायगी!

सुखारी—कहाँ भागेगी भैया! रजपूत-बाभनमें हजारों नोकरिहा हैं लेकिन हर गाँवमें तो पेटमें पत्थर बाँधके ढेला पीटनेवाले भरे पड़े हैं।

भैया—मैं यह नहीं कहता, अछूतोंको नौकरी नहीं लेना चाहिए लेकिन ओसके चाटनेसे प्यास नहीं बुझेगी सुखारी भाई!

सुखारी—और भी कोई रस्ता बतलाते हैं भैया ?

भैया—राज-काज चलानेके लिए जो छोटे लाट बड़े लाटकी पंचायत (एसेम्बली, कौंसिल) है, उसमें भी एक-तिहाई हमारे भाइयोंको जाना चाहिए।

सुखारी—तो इससे भैया हम लोगोंको रोटी-कपड़ा मिलने लगेगा ?

भैया—बड़ी जातिके लोग तो पंचायतमें गये हैं। देख रहे हो न उनकी जातिके ढेला फोड़नेवालोंको कितना खाना-कपड़ा मयस्सर हो रहा है।

सुखारी—तो यह भी बेकार ही हुआ न भैया ?

भैया—बेकार नहीं है सुक्खू भाई, अछूतोंको उस पंचायतमें जाना चाहिए, तभी न बड़े लोगोंको मुँहतोड़ जवाब मिलेगा और फिर छाता-जूता उतरवाने-का नाम नहीं लेंगे। लेकिन सीक बोरके पानी देनेसे कंठ नहीं भीगेगा सुक्खू भाई !

सुखारी—तो भैया, कौन उपाय है, जिससे हम लोगोंका दुख-दलिद्दर जाय ?

भैया—इस रोगोंकी एक ही दवा है सुक्खू भाई और वह दवा मरकस बाबा बतला गये हैं।

सुखारी—मरकस बाबाकी बात दुक्खू भाईने बतलाई है।

भैया—ताल-तलैया, डबरा-गड्ढा, चाहे गड़हा-गड़ही, चाहे गाय-भैंसके खुरका दाग; एक-एक चीजको लोटाके पानीसे भरनेमें जिनगी बीत जायगी लेकिन वह नहीं भरेंगे और एक बेर बाढ़ आ जाय, तो सब भर जायँगे। मरकस बाबा कहते हैं कि खून चूसनेवाली सभी जोंकोंको निकाल बाहर करो और खेती-बारी, बाग-बगीचा, खान-कारखाना सब साझेमें कर लो, बस सबका दुख-दलिद्दर दूर हो जायगा।

सुखारी—अम्बेडकर यह नहीं मानते भैया !

भैया—अम्बेडकरको बाढ़के आनेपर विस्वास नहीं।

सुखारी—बाढ़के आनेपर विस्वास नहीं है तो क्या लोटा-लोटा पानीसे भर देनेका विस्वास है, यह तो और अनहोनी बात है।

भैया—वह सोचते हैं, कि अबकी साल सौ नौकरी मिलेगी अगले साल दो सौ आदमी हाकिम हो जायेंगे। इसी तरह कुछ दिनमें हमारी जातिके दस-बीस हजार आदमीको नौकरी मिल जायगी। कोई दो हजार महीना पायेगा, कोई हजार, कोई पाँच सौ, कोई सौ।

सुखारी—दो हजार या सौ महीना लेके अपने ही अंडे-बच्चेको पालेगा न भैया! बहुत हुआ तो दो लाख आदमियोंका इससे काम चल जायगा, लेकिन दस करोड़में दो लाख क्या है?

दुखराम—बड़ी जातिवालोंके पास तो भैया जमीन-जमींदारी भी है, कल-कारखाना भी है, हमारे पास तो मँड़ई डालनेकी भी जमीन नहीं, तो दस-पन्द्रह हजार नौकरियोंके मिल जानेसे हमारा क्या बनेगा?

भैया—नौकरीवाले जिमींदारी खरीदेंगे, कारखानोंमें भी हिस्सेदार बनेंगे, हो सकता है, पचास बरसमें अछूतोंमें भी कुछ हजार जमींदार और कारखानेदार बन जायँ।

दुखराम—लेकिन इससे तो भैया! जोंक ही बढ़ेगी न? जोंकोंके बढ़ानेसे हमारा दुख जायगा या खतम करनेसे?

भैया—यही तो अम्बेडकर नहीं समझते। उन्होंने खुद सब तकलीफ और अपमान भोगा है। उनके दिलमें अपने भाइयोंके लिए बड़ा दर्द है। वह अछूतोंको उठाकर खड़ा कर रहे हैं, यह सब अच्छा है। वह गांधीजीके हरिजन-उद्धार या अछूत-उद्धारको बेकार समझते हैं, यह भी ठीक है। और गांधीजी जो मन्दिरमें अछूतोंको भेजना चाहते हैं तो यह मायाजाल है। मन्दिर और भगवान सब धोखेकी टट्टी है। चारा देकर बहेलिया मारता है। अछूतोंको भगवानको दूर हीसे सलाम करना चाहिए और कह देना चाहिए बाबा! जाओ, बहुत दिनों छातीपर मूँग दला।

सुखारी—मरकस बाबाके रस्तासे चलनेसे हम लोगोंका कैसे उद्धार होगा भैया?

भैया—सुक्खू भाई! यही अपना दाउदपुर गाँवकी बात लै लो। बाभन-चमार सब मिलाकर १०० घर हैं। तुम्हारे यहाँ ५०० सौ बीघा खेत है और

सब रब्बीका । अभी तो १०० घरमें २० घर चमारोंके पास कुल मिलाकर ३, ४ बीघासे ज्यादा जमीन नहीं, और उसकेलिए भी मालिककी गाली-मार सहनी पड़ती है, और भी कितने ही बाभनों, अहीरों, और दूसरी जातिके घर हैं, जिनमें किसी-किसीके पास थोड़ी-सी, नामके लिए जमीन है। ८, ६ घर हैं, जिनके पास जमीन भी बेसी है और मुँहमें गाली भी। मरकस बाबाके रस्तेका मतलब है कि पाँचौ सौ बीघा इकट्ठा कर दिया जाय, कोले-कोलियोंकी मेड़ें तोड़ दी जायँ, और पाँचौ सौ बिगहाकी खेती सबों घरकी साझी हो। जितने देहसे काम करने लायक आदमी मर्द-औरत हैं सब काम करें।

सुखारी—लेकिन भैया, सुखलाल तेवारीके घरकी बुढ़िया भी चौखटसे बाहर नहीं निकलती, उनके घरकी औरतें कैसे निकाई-रोपाई करने आयेंगी?

भैया—सात परदेके भीतर रहना, चौखट नहीं लाँघना, हाथमें मेंहदी लगाके बैठना, यह सब जोंकोंका धरम है भाई, कमेरोंका धरम है, काम करना। सुखलाल तेवारी और उनके घरकी औरतोंको दोमेंसे एक बात चुननी पड़ेगी जो वह जोंक धरम पालन करना चाहते हैं, तो "काम नहीं तो रोटी नहीं"वाली बात होगी, और एक हफ़्तामें सब पटपटाके दाउदपुरको छोड़ जायेंगी। जोंकोंके मरनेसे धरतीका भार उतरता है सुक्खू भाइ? और जो कमेरा-धरमपर चलना चाहेंगे तो सबके भाई हैं, सबके साथ मिलके काम करें। खूब धन पैदा करें, और सबों घर बाँट-चोटकर खायें-पियें।

सुखारी—तो मरकस बाबाके रस्तामें भैया काम पियारा होता है, चाम नहीं यही न भैया!

भैया—जो दाउदपुरमें सबों घर चाउसे पियार करने लगे तो धरती माता एकहू अच्छुत अनाज देंगी!

सुखराम—धरती माताका दिल तब तक नहीं पसीजता भैया, जब तक चोटीका पसीना एड़ी तक नहीं पहुँचता।

भैया—दाउदपुरमें सबों घर काम करेगा। खेतोंमें मोटरका हल चलैगा, सिंचाईके लिए पाइप और बिजली लगेगी। खेत-खेतमें विलायती खाद पड़ेगी। २०० बीघा गेहूँ बोनेमें लोगोंका साल भरका खाना हो जायगा। १००

बीघा जो सिगरेटवाला तमाकू औ दो तो खाली तमाकू बेंच देनेसे सालमें ३ लाख रुपया आ जाय। लेकिन तमाखू काहेको बेचोगे सुक्खू भाई! दाउदपुरमें सिगरेटका कारखाना खुल जायगा। खेतीका समय छोड़कर मरद-औरत अपने कारखानामें रोज ६ घंटा काम करेंगे और बीस लाखका सिगरेट सालमें बिक जायगा और गाँववाले जितना सिगरेट पियेंगे उतना मुफुत रहेगा।

सुखारी— तो भैया इसी दाउदपुरकी मिट्टीसे २० लाख २५ लाख सालाना निकलेगा न?

भैया—और यह २०, २५ लाख सुक्खू भाई सबों घरका धन होगा। फिर दाउदपुरमें कोई सुअरकी खोभार नहीं दिखाई पड़ेगी, कोई छान और खपड़ैल भी नहीं बच रहेगा उसकी जगह दाउदपुरमें होगी—एक चौड़ी सड़क जिसके दोनों ओर ईंट, सीमन्ट और लोहेसे बने पक्के मकान होंगे। हर मकानमें नलसे पानी जायगा और बिजली दीया बारेगी। हर घरके पीछे पक्का पाखाना होगा, लेकिन अबदुल भाईको उठाना नहीं पड़ेगा; नलसे पानी छोड़ा जायगा और वह धरतीके भीतर ही भीतर वहाँ ले जायगा। फिर आजके नंगे-भूखे आदमी दाउदपुरमें नहीं दिखाई पड़ेंगे। सब साफ़ कपड़ा पहिनेंगे। लड़के-लड़की सब पढ़ेंगे। सुखलाल तेवारीके पोते और सुखारी चमारके पोते एक-दूसरेको भाई समझेंगे और एक परिवारके बेकति (आदमी)।

अबदुल—लेकिन भैया, यह सपना जैसी बात मालूम होती है।

भैया—सपना वह होता है अबदुल भाई, जिसे धरतीपर कहीं न देखा जाय, लेकिन जो बात धरतीके किसी कोनेमें देखी जाय, उसे भी क्या सपना कहेंगे?

अबदुल—धरतीपर ऐसी बात कहीं हुई है भैया?

भैया—हाँ अबदुल भाई! और बहुत दूर नहीं। दो दिन रेल और ३ दिन मोटरसे चलनेपर तुम उस देसमें पहुँच जाओगे जहाँ सब कारबार साझेके परिवारका है, जहाँ कोई अछूत और बड़ी जातिका नहीं है, जहाँ कोई जोंक नहीं है, उस देसका नाम है सोवियत देस, किसानों-मजूरोंका पंचायती राज, और उसीको पहले रूस भी कहा करते थे।

अबदुल—तब भैया ! सपनाकी बात नहीं, लेकिन अपनी जिनगीमें हम सब यह देख लेंगे ?

भैया—तमासा देखना चाहोगे तो कभी नहीं, लेकिन वैसा बनानेमें लग जाओगे, और खूब जिउजानसे लग जाओगे तो जरूर देख लोगे। सत्ताईस बरस पहिले रूसको भी जोंकोंने नरक बनाके रखा था लेकिन किसान मजूर भिड़ गए और अब उन्हें मरके सरगमें जानेकी जरूरत नहीं, अब सरग उनके घरपर उतर आया।

सुखारी—लेकिन भैया अम्बेडकर इतना पढ़-गुनकर काहे मरकस बाबाके रस्तेको नहीं मानते ? जो वह भी दस-बीस लाखके जोंक बनना चाहते हैं तो हम लोगोंका क्या उपकार करेंगे ?

भैया—समझका फेर है सुक्खू भाई ! अम्बेडकर मरद बच्चा है, ईमान-दारीमें १००में १ है, और मैं समझता हूँ कि वह जोंक नहीं बनना चाहता।

सुखारी—तब तो भैया ! अंबेडकरसे भेट हो, तो मैं उनके गोड़पर पड़कर कहूँ—दादा ! तुम भी मरकस ही बाबाका रस्ता पकड़ो, इसी रस्तेसे हम लोगोंकी २०० पीढ़ीकी गुलामी दूर होगी।

भैया—गोड़ पड़नेसे तो काम नहीं चलेगा सुक्खू भाई ! लेकिन हिन्दुस्तान भरके कमेरे जब जोंकोंको उखाड़ फेंकनेके लिए उठ खड़े होंगे तब उनके मनमें भी आसा बँधेगी अभी तो वह इसे अनहोनी बात समझते हैं इसीलिए जड़में पानी न देकर पत्तोंको सींचते हैं।

दुखराम—लेकिन सुनते हैं भैया ! गांधीजी भी अछूतोंके उद्धारके लिए लाखों रुपया जमा कर चुके हैं। और उन्होंने जगह-जगह हरिजन आसरम खोला है, वह क्या करना चाहते हैं ?

भैया—करना तो चाहते हैं हरिजनोंका उद्धार, लेकिन हो रहा है कंडे-से आँख पोंछना। बस इतना ही हो रहा है कि कुछ सौ हरिजन लड़कोंको चरखा कातना सिखाया जाता है जिससे बहुत मेहनत करनेपर भी आदमी दो आना रोजसे बेसी नहीं कमा सकता, जिससे एक आदमीका भी पेट नहीं भर सकता, दूसरी बात यह हो रही है कि बड़ी जातिके सौ-दो सौ आदमियोंको

नौकरी मिल जाती है।

सुखारी—तो भैया इससे तो हमारी जातिका उतना भी उपकार नहीं हो सकता, जितना अंबेडकरके रस्तेसे।

भैया—हाँ ठीक कह रहे हो सुक्खू भाई और अंबेडकरका रस्ता धोखेका नहीं है, इतना ही है कि उनके रस्तेसे चलनेपर दो-चार पीढ़ीमें दसो करोड़ अछूतोंका दुख-दलिद्दर दूर होगा।

अध्याय १६

मरकसका रस्ता विदेसी है ?

सोहनलाल—लोग कहते हैं भैया कि मरकस बाबाने जो कुछ कहा है वह ठीक हो सकता है; लेकिन एक देसके लिए जो बात ठीक है वही दूसरी जगहके लिए बेठीक भी हो सकती है।

दुखराम—"ठाँव-गुने काजर, ठाँव-गुने कारिख," वही चीज आँखमें लगकर काजर बन जाती है, और सोभा देती है। वही चीज गालमें लग कालिख कही जाती है और लोगोंको धोना-पोछना पड़ता है। यही बात है सोहन भैने !

सोहनलाल—हाँ दुक्खू मामा ! रूसमें जो बात ठीक उतरी, वही बात हिन्दुस्तानमें भी ठीक उतरेगी, इसपर कैसे बिस्वास किया जाय भैया ?

भैया—"ठाँव गुने काजर, ठाँव गुने कारिख"को मैं मानता हूँ, सोहन-भाई ! रूसमें इतनी सरदी पड़ती है कि नदी-नाले सब जम जाते हैं वहाँ जाड़ेके मौसिममें हर घरको गरम पानीके मोटे नलोंसे गरम किया जाता है। हिन्दुस्तानमें भी मरकस बाबाका कोई चेला मकान गरम करनेके लिए गरम पानीका नल लगवाने लगे तो उसे मैं पागल कहूँगा, उसकी जगह यहाँपर गर्मियोंके दिनों बिजलीके पंखेकी जरूरत पड़ेगी। मासको और लेनिनग्रादमें रूसी भाखा बोली जाती है, जो हिन्दुस्तानके ४० करोड़ आदमियोंको भी अपनी

भाखा छुड़वाकर रूसी भाखा सिखलानेकी कोसिस करे तो उसे भी मैं पागल कहूँगा। रूसके कवि वोल्गा माई और दोन बाबा (नदियों) के गीत गाते, हिन्दुस्तानमें जो कोई कवि गंगा माई सिन्ध और कावेरी माताओंको छोड़कर वोल्गा माई और दोन बाबाका गीत गाये तो उसे भी मैं पागल कहूँगा, और मरकस बाबा भी उसे अपना चेला नहीं मानेंगे। ऐसी सैकड़ों चीजें हैं, जो रूसकी अपनी और हिन्दुस्तानमें नहीं हैं। जो कोई आदमी अंधाधुंध नकल करना चाहेगा, तो उसे मैं बेकूफ कहूँगा लेकिन मरकस बाबाने जो बातें जोंकोंके हटानेके लिए बताईं, कमेरोंके राज कायम करनेके लिए बताईं, सबको एक परिवारका भाई बनानेके लिए कहा है उसमें तो कोई ऐसी बात नहीं दिखाई देती है।

सोहनलाल—सबसे बड़ी बात यह है कि वह विदेसी चीज है।

भैया—तो हिन्दुस्तानमें कोई विदेशी चीज नहीं चलनी चाहिए यह कौन कहता है?

सोहनलाल—गांधीजी कहते हैं, गांधीजीके चेले लोग कहते हैं।

भैया—गांधीजी नहीं कह सकते सोहन भाई! गांधीजी रूसके तालस्तायको अपना गुरू मानते हैं, बिलायतके रस्किनका अपनेको रिनिया मानते हैं। उन्होंने कभी नहीं कहा कि छापाखाना बिलायतसे आया है, इसलिए उसमें छपी गीताको नहीं पढ़ना चाहिए। घड़ी भी बिलायतसे आई है और गांधीजी उसको बाँधे-बाँधे फिरते रहते हैं, चसमा बिलायतसे आया है लेकिन उसे लगाते हैं। ईसामसीका धरम बिदेससे आया है, लेकिन गांधीजी उसका बहुत आदर करते हैं। हिन्दुस्तानके चार आदमीमें एक आदमी मुसल्मान धरमको मानता है और वह भी दूसरे देससे आया लेकिन उन्होंने कभी नहीं कहा कि अरबके पैगम्बरको हिन्दुस्तानसे निकाल बाहर करना चाहिए।

सोहनलाल—लेकिन वह कहते हैं कि मरकस बाबाके रस्तेमें हत्याकी बात आती है और हिन्दुस्तानके रिसि-मुनि बेहत्याका रस्ता बताते हैं।

भैया—यह दोनों बात गलत है। मरकस बाबा हत्याका रस्ता नहीं बताते वह ऐसा रस्ता बताते हैं कि दुनियामें फिर आदमीको आदमीकी हत्या करनेकी

कभी जरूरत ही न पड़े। अकाल, महामारीमें करोड़ों आदमी मर जाते हैं वह चाहते हैं दुनिया में अकाल-महामारीका नाम ही न रहे। जोंकें अपने स्वारथके लिए बराबर लड़ाई करवाती हैं। हमारे सामने ही दो बड़ी-बड़ी लड़ाइयाँ हुईं, जिनमें करोड़ों आदमीकी हत्या हुई, जोंक गुन्डोंने लाखों बेकसूर बच्चों और औरतोंको तड़पा-तड़पाकर मार डाला। मरकस बाबाने ऐसा रस्ता बतलाया है कि जोंक ही न रह जायँ और दुनिया भरके सारे आदमियोंका एक परिवार बन जाय। गांधीजी जोंकोंको भी रखना चाहते हैं और यही जोंकें हत्याकी जड़ हैं। दुक्खू भाई, बताओ कौन हत्याका रस्ता बताता है, कौन बेहत्याका ?

दुखराम—इससे तो मरकस बाबाका ही रस्ता बेहत्या (अहिंसा)का हुआ और गांधीजीका रस्ता दुनियासे कभी हत्याको नहीं हटा सकेगा।

सोहनलाल—लेकिन यह तो तब होगा न जब सारी दुनिया मरकस बाबाके रस्तेपर चलने लगेगी। लेकिन यह तो अनहोनी बात मालूम होती है।

भैया—जो दुनियामें जोंकें रह जायगीं, तो हत्या भी रह जायगी, सोहन भाई ! लेकिन इसका दोस तो जोंकोंको रहेगा, मरकस बाबाके रस्तेको नहीं। फिर सोहन भाई आप मरकस बाबाके रस्तेके ऊपर सारी दुनिया आ जायगी इसे तो अनहोनी समझते हैं, और तब जब कि अपने सामनें देख रहे हैं कि २७ बरस पहले दुनियाका छठवाँ हिस्सा मरकस बाबाके रस्तेको अपना चुका। आज जो लड़ाई हो रही है और उसके कारण जो उथल-पुथल हो रही है, उसके देखनेसे आप अन्दाज लगा सकते हैं कि जल्दी ही एक-चौथाई दुनिया अपनायेगी। इसको तो तुम अनहोनी कहते हो। और जोंकें बनी रहेंगी, जिनका जीना ही दूसरेके खूनपर होता है, लेकिन वे भगत बन जायँगी और सेर-बकरी एक जगह पानी पियेंगे। है यह होनेवाली बात।

सोहनलाल—जोंकोंके हटानेकी बात तो गांधीजी भी कहते हैं, लेकिन हत्याके रस्तेसे नहीं, बेहत्याके रस्तेसे।

भैया—बुद्ध गांधीसे बहुत बड़े आदमी थे। उन्होंने भी बेहत्याके रस्ते जोंकोंको भगत बनाना चाहा, लेकिन नहीं हो सका। ईसामसीने भी बेहत्याके

रस्तेसे सबको ले जाना चाहा, लेकिन देख रहे हो न, उनके चेले क्या कर रहे हैं ? गांधीजीके चेलों हीकी ओर नहीं देखते ? मिलवाले सेठ क्या कर रहे हैं ? उनके चेलोंने बम्बईमें मजदूरोंपर गोलियाँ चलवाईं । उनके चेलोंने किसानोंपर घोड़े दौड़वाये । बेहत्याकी बात तो उसी दिन खतम हो गई जिस दिन गांधीजीने कह दिया कि कांगरेस सरकारमें जायेगी तो पलटन, गोला-बारूद, सभी तरहसे फसिहोंका संहार करेगी । जरमन-जापान फसिहोंके सामने निहत्था बन बेहत्याके रस्ते काम नहीं चलेगा इसीलिए कहा न गांधीजीने भी हथियारके साथ फसिहोंका मुकाबिला करनेके लिए कहा । मरकस बाबा भी हथियार लेकर जोंकोंका मुकाबला करनेके लिए कहते हैं । बताओ दुक्खू भाई ! हे दोनोंमें कोई फरक ?

दुखराम—कोई फरक नहीं मालूम होता भैया ?

भैया—और मरकस बाबा हथियार लेके मुकाबिला करनेके लिए क्यों कहते, इसीलिए कि जोंकें सिरसे पैर तक हथियारोंसे लैस हैं, तुम्हें निहत्था देखकर वह भून देंगी । उनमें दया-मया है, इसे वही बिस्वास कर सकता है जिसको जोंकोंकी करनी मालूम नहीं, उनका स्वभाव नहीं मालूम । फिर हिन्दुस्तानके रिसि-मुनि बेहत्याका रस्ता बताते हैं यह बिलकुल गलत है । अठारहवाँ अध्याय गीता हत्या करनेके लिए कही गई । अर्जुन बेचारा तो तीर-धनुस छोड़कर बैठ गया था, उसने लड़ाई करनेसे इनकार कर दिया था लेकिन किसनने उसे तरह-तरहसे समझाया और लड़नेको तैयार किया । वह लड़ाई भी गरीबों-कमेरोंकी भलाईके लिए नहीं हुई थी, कुरुक्षेत्रमें दोनों ओर जोंकें ही आमने-सामने खड़ी थीं । जिरजोधन (दुरजोधन) राजमें हिस्सा नहीं देता था, इसीलिए पांडव लड़ रहे थे । जिरजोधन सारे राजके किसानों कारीगरों, मजूरोंकी कमाईको छीनके ऐस-जैस करना चाहता था । पांडवोंने उसी ऐस जैसके लिए कौरवोंको मारा, लाखोंका संहार किया । गीताको गांधीजी बहुत मानते हैं । गीताको जो कहे कि वह बेहत्या (अहिंसा)का रस्ता बताती है इसके लिए हम यही कहेंगे कि वह दिन दोपहरका अंधा है । और दूसरे कौन रिसि-मुनि हैं जो बेहत्याका रस्ता

बतलाते हो ?

सोहनलाल—बुद्ध और महावीर।

भैया—बुद्धको तो हिन्दुस्तानने निकाल बाहर किया, इसलिए उनकी सिच्छाको स्वदेसी कौन मुँह लेकर कहेंगे। रहा महावीर, लेकिन उन्होंने किसी राजाको युद्धमें हथियार डाल देनेके लिए कहा, इसका तो हमें कोई पता नहीं। हाँ, आदमी अपना मुकती और निरवान चाहे तो उसे सब जीव-जन्तपर दया करनी चाहिए। वहाँ एक देसको दूसरे देसकी गुलामीसे छूटने या एक जमातका दूसरी जमातके खूनी हाथोंसे बचनेके लिए, हथियार रखकर बेहत्या मान लेनेकी बात तो कहीं देखनेमें नहीं आती।

सन्तोखी—पोथी-पत्रा बहुत है भैया! क्या जाने कहीं रिसि-मुनिके मुँहसे ऐसी बात निकली हो।

भैया—बुद्ध और महावीरसे पहिले किसी रिसि-मुनिने बेहत्याकी बात कही हो, इसपर मुझे बिलकुल बिस्वास नहीं, उस समयके रिसियों-मुनियोंका रसोइ-खाना पूजा-घर नहीं; कसाई-घर होता था; बीचमें बछिया या बकरेको रिसि-मुनि अपने हाथसे मारते थे।

दुखराम—क्या कहा भैया! रिसि-मुनि बछिया मारते थे, राम राम! ऐसी बात कभी हो सकती है? हिन्दू गौ माताके इतने भगत हैं तो उनके रिसि-मुनि भला कैसे गाय मार सकते हैं?

भैया—बुद्धसे पहिले कुछ सौ बरस पीछे तक हिन्दू रिसि और सभी लोग गायका मांस खाते थे, उससे उनको कोई परहेज नहीं था। हिन्दुओंकी एक दो नहीं, पचासों पोथियोंमें लिखा है, रन्तिदेव राजाकी कथा महाभारत*में

---

*"राज्ञो महानसे पूर्वं रन्तिदेवस्य वै द्विज।
अहन्य हनि वध्येते द्वे सहस्रे गवां तथा।"
"समांसं ददतो ह्यन्नं रन्तिदेवस्य नित्यशः।
अतुला कीर्त्तिं रभवन्नृपस्य द्विज सत्तम!"—वनपर्व २०८। ८-१०

आती है। उसके घरमें रोज दो-दो हजार गायें मेहमानों, मुसाफिरोंके खानेके लिए मारी जाती थीं।

दुखराम—लेकिन भैया जो हिन्दुओंकी पोथीमें गाय मारनेकी बात लिखी है, और पहिले के मामूली नहीं,—रिसि-मुनी तक गाय खाते थे तो आज गोकसीके लिए काहे हिन्दू लोग मुसलमानोंका सिर फोड़ते फिरते हैं?

भैया—हिन्दुओंसे पोथीकी बात छिपा दी गई, इसीलिए नहीं तो क्या ६० पीढ़ी पहलेके उनके अपने गो-भच्छक पुरखा मिल जायँ, तो क्या यह उनका सिर फोड़ते फिरेंगे? मैं यह नहीं कहता दुक्खू भाई कि पहलेके पुरखा गाय खाते थे तो आज भी खायँ। इसकी कोई जरूरत नहीं। लेकिन लाठी लेकर दूसरोंको न खाने देना यह तो जबर्जस्ती है न?

दुखराम—जबर्जस्ती ही नहीं भैया यह तो भारी झगड़ेकी जड़ है। गोकसीके लिए न जाने कितने हिन्दू-मुसलमान मारे गए। आज जो सभी हिन्दुओंको यह बात मालूम हो जाय तो क्या वह गोरच्छाके पीछे पागल बनेंगे?

सोहनलाल—लेकिन भैया! हम लोगोंकी सारी खेती-बारी, दूध-घी गाय हीसे मिलता है, इसलिए गायकी रच्छा करनेको बुरा कैसे कहा जाय।

भैया—गायकी रच्छा करना अच्छा है सोहन भाई! हम लोगोंको अच्छी-अच्छी नसलके बैल-गाय पैदा करना चाहिए, उनको बढ़ाना चाहिए। ४० करोड़ आदमीमें से बहुत थोड़े हीको पीनेको दूध मिलता है। जब दूध-घी

"महानदी चर्मराशेरुत्क्लेदात् संसृजे यतः।
ततश्चर्मण्वतीत्येवं विख्यातो सामहानदी।"—शान्ति पर्व २६-२३।
सांकृतिं रन्तिदेवं च मृतं संजय! शुश्रुम।
आसन् द्विशत साहस्रा तस्य सूदां महात्मनः।
गृहानभ्यागतान विप्रान् अतिथीन् परिवेषकाः।—द्रोण पर्व ६७। १-२।
"तत्रस्य सूदाः क्रोशन्ति सुमृष्ट मणि कुंडलाः।
सूपं भूयिष्ठमश्नीध्वं नाद्यमासं यथापुरा।"—द्रोण पर्व ६७। १७-१८।
—शांति पर्व २७-२८।

खानेको मिलता था, तो आदमी खूब तगड़े होते थे। दूध-घीकी इफरात हो इसके लिए जरूर हमें कोसिस करनी चाहिए। यह हमारे फायदेकी बात है और मुसलमानोंके भी। मुसलमान भाइयोंको समझाइये—हमारे भी पुरखा गायका बलिदान करते थे, गायका मांस खाते थे, लेकिन पीछे समझा कि गायकी रच्छासे हमारा ज्यादा फायदा है, इसीलिए उन्होंने गायका मांस त्याग दिया। देस भरके लोगोंको खूब घी-दूध खानेको मिला, हल गाड़ीके लिए अच्छे-अच्छे बैल मिले, इसीलिए हमें गायोंकी रच्छा करनी चाहिए। बताओ दुक्खू भाई! इस तरह समझानेसे मुसलमान भाई मानेंगे कि लाठी दिखानेसे?

दुखराम—लाठी दिखानेसे तो गोरच्छा नहीं हुई भैया और न धरमकी दोहाई देने हीसे कुछ बना। नाहक भाई-भाईका झगड़ा बढ़ा। बल्कि मैं तो कहूँगा भैया कि जो गाय न दूध ही दे सकती हो, न बछिया उसे खानेवाले खा भी लें तो कोई बुरा नहीं।

सोहनलाल—गांधीजीकी अहिंसा और दूसरी बातोंके बारेमें तो आपने बतलाया, तो भी बहुत लोग कहते हैं कि रूस और हिन्दुस्तानमें इतना फरक है। वहाँकी बात यहाँ चलाना उलटी गंगा बहाना है। वह यहाँ चलेगी नहीं, नाहक झगड़ा-झंझट बढ़ेगा।

भैया—नहीं चलेगा, तो अपने ही बेकार हो जायगा उसके लिए चिन्ता करनेकी जरूरत क्या? और झगड़ा-झंझटकी बात जो कहते हो, वह तो जोंकें करती हैं। गांधीजी सेठों और जमींदारोंको समझा दें, कि वह हथियार रख दें और १० बरस किसानों-मजूरोंको मरकस बाबाके रस्तेपर चलने दें। जो साझेकी खेती, मोटरके हल, पानीकी पाइप और बिलायती खादसे हरा-भरा खेत ऊसर बन जाने लगे, तो किसानोंको भूखे मरना पड़ेगा। फिर तुरन्त ही जमींदार आकर काम सँभाल लें।

दुखराम—बस यही भैया गांधीजी जमींदारोंसे मनवा दें, तो हम महात्माजीको सबसे बड़ा अवतार मान लेंगे।

भैया—सेठ लोगोंको भी गांधीजी मना लें कि बेसी नहीं पाँच बरसके लिए अपने द्वारपर लिखे "लाभ-सुभ"को मिटा दें।

दुखराम—"लाभ-सुभ" क्या है भैया ?

भैया—बनिया लोगोंकी गद्दीके ऊपर दीवारमें "लाभ-सुभ" सिन्दूरसे लिखा देखा है कि नहीं। सेठ लोगोंकी जिनगीका सबसे बड़ा मन्तर यही लाभ-सुभ है। मजूर १०)की चीज रोज पैदा करें, उन्हें ॥)देकर टरका दें, और साढ़े तीन रुपया हुआ लाभ-सुभ, और रखें उसे गोलकमें। सेठ लोग ४) में ॥) ही नहीं, कुल रुपया मजूरोंके हाथमें दे दें और कह दें कि देखो तुम लोग बड़े जोखिममें हाथ डाल रहे हो। अब हम चीनीकी मिल, कपड़ेकी मिल, जूटकी मिल, लोहेका कारखाना किसीका इन्तजाम नहीं करेंगे, हम "लाभ-सुभ" भी छोड़ते हैं और इन्तजाम भी। जो मजूर कारखानेको ठीकसे नहीं चला सके तो उनको ही भूखा मरना पड़ेगा। फिर सेठजी आकर कारखानेको सँभाल लेंगे, झगड़ा-झंझट मिटानेका यह रस्ता है।

दुखराम—हाँ भैया! बेसी नहीं पाँच ही बरसके लिए जमींदार और कारखानेवाले सेठ राम नामा ओढ़कर माला फेरें, और हम लोगोंको मरकस बाबाके रस्तेपर चलने दें, इससे तो बिना झगड़ा-झंझटके फैसला हो जायगा। जब हम देखेंगे कि मरकस बाबाका रस्ता हिन्दुस्तानमें नहीं चल सकता, तो क्या पागल हुए हैं कि देसभरका संहार करेंगे।

सोहनलाल—लेकिन जमींदार और सेठ गांधीजीकी बात मानेंगे थोड़े ही ?

भैया—चार हजार बरससे जोंकोंने अपना रस्ता चलाया और उसके कारण पंचानबे सैकड़ा कमेरोंके लिए नंगे-भूखे मरनेके सिवा कोई चारा नहीं। हम तो सिरिफ पाँच बरस ही चाहते हैं। जो जोंकें उतना भी देनेके लिए तैयार नहीं हैं, उनके गुन्डे लाठी-छुरा लेकर घूमते-फिरते रहेंगे पुलिस-पलटनको उन्होंने अलग तैयार कर रखा है; अदालत-कचहरी सब उनके हाथमें है, इतना होनेपर भी जो महात्माजी कहते हैं किसानों-मजूरों! तुम हमारा रस्ता ले लो और फुफकार भी मत छोड़ो; तो इसकेलिए हम लोग तैयार नहीं हैं। यह तो सोलहों आना जोंकोंकी मदद करना है।

सोहनलाल—क्या समझते हो भैया! गांधीजी जोंकोंकी मदद करना

चाहते हैं ?

भैया—इस बातको गांधीजीसे पूछ लो। मैं समझता हूँ, वह इन्कार न करेंगे, हाँ, उसके साथ यह भी कहेंगे कि मैं सबकी भलाई चाहता हूँ। कोई क्या चाहता है, इसे वही जान सकता है, दूसरा आदमी दिलकी बातको क्या जाने लेकिन गांधीजी जो करते हैं, उससे सबसे ज्यादा नफा सेठोंको हुआ है। दूसरे नम्बरपर जिमींदारोंको, और तुरन्त नफा तो उतना नहीं, हाँ आगेके लिए किसान-मजूरोंको बहुत मदद मिली है। तुम समझते होगे सोहन भाई, कि मैं गांधीजीके कामको बहुत बुरा समझता हूँ, और मानता हूँ कि उन्होंने हिन्दुस्तानके लिए कुछ नहीं किया। गांधीजीके उपकारको बहुत मानता हूँ। उन्होंने ही चम्पारनके निलहे साहबोंके मदको चूर किया और सैकड़ों बरसोंसे भेड़ बने सिकारोंको सेर बनाया। उन्हीं हीने हिन्दुस्तानकी मुक्खड़ जनताको अपने पैरपर खड़ा होनेमें सबसे अधिक मदद की। जनताने अपने बलको समझा और अब वह सो नहीं सकती, जब तक कि वह अपने सतानेवालोंको हमेशाके लिए खतम नहीं कर देगी! आज भी उनकी उतनी जरूरत है, क्योंकि बिलायती जोंकोंके निकालनेमें वही हमारे सबसे बड़े नेता हो सकते हैं, और हिन्दू-मुसलमानको मिलाकर देसको आजाद करनेके लिए तैयार कर सकते हैं।

दुखराम—तो गांधीजीकी कौन बात है, जो हिन्दुस्तानके कमेरोंको नुकसान पहुँचानेवाली है ?

भैया—उनसे बड़ी बात तो यह है कि वह जमींदारों-कारखानेदारोंको कायम रखना चाहते हैं। बस उनसे इतना ही चाहते हैं कि वह किसानों और मजूरोंका अपनेको माँ-बाप समझें। सवाल यह है कि माँ-बाप महलोंमें रहेंगे या झोपड़ीमें, बीस लाखकी कारमें चलेंगे या पैदल। लड़के-लड़कियोंके ब्याह-में दस-बीस लाख खर्च करंगे या धरम-विवाह करेंगे। सिमला, नैनीताल, दार्जिलिंग, उटकमंड, बम्बई, कलकत्ता, दिल्ली, बनारसमें बिड़ला हाउस बनाकर रहेंगे कि १०) भाड़ेकी कोठरीमें रहेंगे।

दुखराम—मुटिया धोती पहिरने और जौकी रूखी रोटी खानेके लिए यह जोंकें कभी नहीं तैयार होंगी।

भैया—मैं भी समझता हूँ इसके लिए कोई तैयार न होगा। क्या जाने खयाल हो कि किसान-मजूर माँ-बाप बनानेकी आसरापर हाथ धरकर बैठे रहें। लेकिन यह भी नहीं हो सकता, क्योंकि वह अपने पेटकी भूखको कैसे भुला सकते हैं। दूसरी बात गांधीजी कहते हैं कि कल-कारखाना नहीं, हमें चरखा चाहिए लेकिन यह भी होनेवाला नहीं। लोहेके जमानेसे आदमी लौटकर पत्थरके जमानेमें नहीं जा सकता। खद्दरसे जो मिलोंके बन्द हो जानेका डर होता, तो बिड़ला बजाज साराभाई जैसे करोड़पति कपड़े मिलवाले लाखों रुपया खद्दर फण्डमें दान न देते। गांधीजी गुड़ खानेके लिए कहते हैं, लेकिन उनके चेला, बिड़ला और साराभाईकी चीनीकी मिलोंने चीनीको इतना सस्ता कर दिया है, कि कोई गुड़ खाना चाहेगा नहीं, किसान ऊख बेचकर जितना पैसा कमा लेते हैं, उसकी जगह वह गुड़ बनाने नहीं जायँगे। बिड़लाने लाखों रुपया लगाकर हिन्द साइकिलका कारखाना खोला। वह पाँच लाख नफेमेंसे पाँच हजार गांधीजीको दान दे सकता है, लेकिन कारखाना नहीं बन्द करता। बिड़लाने करोड़ों रुपये लगाकर मोटर-कारखाना खोलनेका निश्चय किया है, उसी नफेमेंसे धरमसाला बनवा सकता है, मालवीजीके विस्व विद्यालयको दान दे सकता है लेकिन कारखाना छोड़कर वह सतजुगकी ओर नहीं लौटेगा। चर्खेकी बात करना पत्थरके हथियारोंकी ओर आदमीको ले जानेकी कोसिस करना है।

दुखराम—वह तो नहीं हो सकता भैया! और लोहा बिना चरखेका तकुवा कहाँसे आएगा।

भैया—गुड़, हाथके कूटे चावल और चरखेको अपनानेकी बात कुछ कहकर छुट्टी नहीं मिल सकती। जो पीछे लौटना है तो सभी बातोंको साफ-साफ कहो, चरखेका तकुवा लोहेका रखोगे या लकड़ीका। चरखेको लोहेके बसूलेसे बनाओगे या और किसीसे। जो लोहा रखना ही पड़ेगा तो ताताके बिजली और पत्थरके कोयलेसे बने लोहेको लोगे या लोगोंको कहोगे कि बबूलका कोयला तैयार करो और पत्थरको गलाकर लोहा निकालो। लेकिन बबूलके कोयलेवाले लोहे को कौन खरीदेगा जब कि उससे भी बढ़िया फौलाद उससे भी सस्ते दाममें

मिल रहा है। पत्थरका कोयला भी चाहिए, बिजली भी चाहिए, लोहा भी चाहिए; तब तो रेल भी रखनी होगी, क्योंकि उसके बिना कोयला-लोहा और बड़ी-बड़ी मसीनें एक जगहसे दूसरी जगह भेजी नहीं जा सकती। और विद्याके लिए क्या कहेंगे गांधीजी ! छापाखानाके कारण आज किताब बहुत छपती हैं, बहुत सस्ती बिकती हैं। लेकिन उसको छुड़ाकर क्या हमें फिर ताड़के पत्तेपर हाथसे लिख-लिखकर किताबें पढ़नी चाहिए।

दुखराम—यह तो भैया जुम्मन दादी-सी बात है, जिसे हम लोग हँसीमें उड़ा देते हैं।

भैया—हँसीमें उड़ानेकी बात है नहीं दुक्खू भाई ! आजकल लड़ाईका जमाना है, कपड़ा कम मिल रहा और बहुत मँहगा भी, ऐसे समयमें जो हम चरखेसे कपड़ा तैयार करें तो यह अच्छी बात है। रेलकी लाइन उखड़ जाय, पिटरौल बिना मोटर-लारी बन्द हो जाय, तो इक्का-बैलगाड़ी या पैदल चलनेको कौन नहीं कहेगा। लेकिन करोड़पति कारखानेवाले जो चरखामें भगती दिखाते हैं, उसके भीतर दूसरी ही बात है। वह समझते हैं कि किसान चरखा उठायेंगे तो गांधीजीके रस्तेको भी अपनायेंगे और हमको माई-बाप समझेंगे फिर मरकस बाबाका नाम नहीं लेंगे, रूसकी बात नहीं सुनेंगे। लाल झंडा लेकर "किसान-मजदूर राज कायम हो" चिल्लाते नहीं फिरेंगे। रघुपति राघव राजारामका कीर्तन करेंगे और इस दुनियासे बेसी परलोकका आसरा करेंगे।

दुखराम—तो चरखावाली बातके भीतर भी भैया बहुत धोखा चल रहा है।

भैया—गांधीजी क्या जाने धोखा देना न चाहते हों; लेकिन सेठ लोग तो जरूर आँखमें धूल झोंकना चाहते हैं। जो उनका चरखेपर बिस्वास है, तो कपड़ेके कारखानोंको क्यों नहीं तोड़ देते ! जो उनका गुड़पर बिस्वास है तो अपनी चीनीकी मिलोंमें आग क्यों नहीं लगा देते, जो उनको सेवगाँवकी बैलगाड़ीपर बिस्वास है, तो क्यों मोटरका कारखाना खोल रहे हैं। जो उनको तालके पत्तेकी पोथीपर बिस्वास है, तो बिड़ला और डालमियाने क्यों कागजकी बड़ी-बड़ी कम्पनियाँ खोलीं।

दुखराम—ढोलके भीतर सारा पोल ही पोल मालूम होता है भैया !

भैया—सेठ लोग और कूद-कूदकर कह रहे हैं कि मरकसका रस्ता बिदेसी है, हिन्दुस्तान धर्मात्मा देस है, वह यहाँ नहीं चलनेका, इसको कहते हैं कि आँखकी लाज जो छोड़ दो, मुँहमें जो आये कहते फिरो। पंचरुखीकी चीनी मिल उसकी मसीनें और कारीगरी सब अहमदाबादकी बनी हैं और वहींके दिमागसे निकली है न, जब पंचरुखी मिलके लिये मसीनें मँगाने लगे तो उस बक्त ख्याल किया था कि यह स्वदेसी है या बिदेसी? हिन्दुस्तानमें सतजुगसे क्या अखबार निकलते आये थे जो बिड़लाने लाखों रुपया लगाकर "हिन्दुस्तान-टाइमस्य" (दिल्ली), "सर्च लाइट" (पटना), "लीडर" (इलाहाबाद), "हिन्दुस्तान" (दिल्ली), जैसे रोजाना अखबारोंको चला रहा है।

दुखराम—यह अखबार क्यों चलाते हैं भैया!

भैया—सेठोंके दरवाजेपर दो ही सबद लिखे रहते हैं दुक्खू भाई "लाभ-सुभ" लाखों रुपया लगाते और लाखों रुपया पैदा करते हैं। यह बात तो हुई है, लेकिन एक इससे भी बड़ा नफा है।

दुखराम—इससे बड़ा नफा क्या भैया?

भैया—अखबार, तोप, टंक और हवाई जहाजसे भी बढ़कर खतरनाक हथियार है। बिड़लाके अखबार तो अभी तीस-तीस चालिस-चालिस हजार तक छपते हैं, लेकिन बिलायती करोड़पतियोंके अखबार पन्द्रह-पन्द्रह सोलह-सोलह लाख रोजाना छपते हैं। उसमें जो कुछ लिखा जाता है, वह अपने मतलबका ख्याल करके। किसानोंके ऊपर जमींदार जुलुम कर रहा है, उनकी जमीन छीन लेना चाहता है। किसान जीविका छोड़ते नहीं हैं, जमींदार उन्हें गुंडोंसे पिटवाता है। किसानोंकी ओरसे इसकी खबर अखबारमें भेजी जाती है, जोंकोंका अखबार उसे क्यों छापने लगे? वह छापेगा जिमींदारोंकी ओरसे भेजी गई खबरको जिसमें किसानोंको गुंडा-बदमास कहा गया है। किसान पिटे हैं, घायल हो गये हैं, कोई मर भी गया है, अभी थानेमें खबर भी नहीं पहुँचने पाई कि राजधानीमें जोंकोंके अखबारने जमींदारोंकी बात छाप दी। सूबाके पुलिसके बड़े अफसरने उसे पढ़ लिया। कलट्टर-मजिस्टरने उसे पढ़ लिया। एक तो वह स्वयं जोंकोंकी जातिके हैं, दूसरे उन्हें खबर भी एक ओरकी मिल गई है। अब वह मनमें बैठा लेंगे

कि किसान जरूर बदमास हैं। इसी तरह कोई कारखानेवाला जुलुम कर रहा है, मजूर अपनी तकलीफ लिखकर भेजते हैं तो जोंकोंका अखबार उन्हें छापता नहीं। कारखानेवाला लारी दौड़ाकर कितनोंको घायल और एक मजूरको मार भी डालता है, लेकिन वह मजूरोंके खिलाफ जो कुछ लिखके भेजता है वह सब जोंकवाले अखबारमें छपता जाता है, हाकिम और दूसरे भोले-भाले पढ़नेवाले एक ही ओरकी बात सुन पाते हैं और उसे ही सच्ची मान लेते हैं।

दुखराम—तब तो भैया यह अखबार नहीं, हम लोगोंके गलेकी फाँसी है।

भैया—और जोंकोंके अखबार स्वदेसी धरमका खूब प्रचार करते हैं। किसी सेठने निहायी (अहरन)की चोरी की है, और सुईका दान दिया है। बस सुईके दानको सेठकी तसबीर देकर बड़े-बड़े अच्छरोंमें छापा जायगा, भोली-भाली जनता समझेगी कि सेठ बड़ा धरमात्मा, बड़ा दानी है, हे भगवान तुम इसकी रच्छा करो। जब लाखों आदमी अन्न बिना मर रहे हैं उस वक्त कोई पागल या मक्कार सैकड़ों मन अनाज और पचासों मन घी आगमें फूँक देता है; उसकी भी खबर खूब गोल-मटोल अच्छरोंमें छापी जाती है, भोली-भाली जनता समझती है कि अब भी बड़े-बड़े धरमात्मा दुनियामें हैं। अब भी जग्गका अलोप नहीं हुआ है।

दुखराम—कितना बड़ा फरेब।

भैया—किसीने झूठी-सच्ची खबर उड़ा दी कि दिल्लीमें ऐसी लड़की पैदा हुई है, जो अपने पहिले जनमकी बात बतलाती है। फिर महीनों तक जोंकोंके अखबार उसके बारेमें लिखते रहेंगे। कितने ही लोग कसम खाकर गवाही देंगे वह भी छपेगी। किसीने उसके खिलाफ लिखा तो नहीं छापा जायगा। जोंकोंको तो यह मनवाना है कि आदमी मरकर फिर दुनियामें जनम लेता है, और जैसा करम वैसा फल। सेठ लोगोंने पहिले जनममें अच्छा करम किया था, इसीलिये वह आज करोड़पती-अरबपती बने हैं। जोंकोंके अखबारोंमें जोतिसकी बातें भी छपती हैं, जोतिसी लोग बालकी खाल निकालते दुनियाका आगम (भविष्य) बतलाते हैं। उनके पत्रेमें जोंकोंके मारनेवाले गरह कभी नहीं मिलेंगे। जोंकें उसे इसीलिये छापती हैं कि भोली-भाली जनता समझे कि हमारे आगमका

बनना-बिगड़ना अपने हाथमें नहीं गरहोंके हाथमें है; इसलिये जोंकोंके साथ लड़ने-झगड़नेसे कुछ नहीं मिलेगा। जोंकोंके अखबारमें तसवीरके साथ किसी एक नंबरके बदमास, लम्पट, ठगका जीवन-चरित्र छपेगा, और उसमें उसे बड़ा सिद्ध महात्मा बतलाया जायगा। भोली-भाली जनता उसे पढ़कर समझेगी, कि अब भी भगवानके दरसन करनेवाले महात्मा दुनियामें मौजूद हैं। अब भी भगवान हैं। और वह दुनियाकी खोज खबर लेते हैं, इसलिये छोड़ो दुनियाका झंझट और भगवानकी ओर लौ लगाओ।

दुखराम—दिलमें तो आग ही लग जाती है लेकिन तुम कहते हो दिमाग ठंडा रखना चाहिये, इसलिये मनको समझाता हूँ। इससे तो मालूम होता है कि सचमुच ही अखबार बड़ा जबर्जस्त हथियार है।

भाई—और दुक्खू भाई! बिलायती जोंकें जो किसानोंके घरोंमें दस पैसा रखवाने और बीस पैसा खानेका इंतजाम सोच रही हैं, तो फिर गाँव-गाँवमें नहीं, घर-घरमें अखबार आने लगेंगे। फिर जोंकोंके अखबार हजारों नहीं लाखों रोज छपेंगे। अभीसे बिड़ला मनसूबा बाँध रहा है कि सारे हिन्दुस्तानमें जगह-जगहसे हिन्दी, अँगरेजी और दूसरी भाखाओंमें अपना अखबार निकालें। सिंहानियाँ, डालमियाँ, और दूसरे करोड़पति भी अब अखबारोंकी ताकतको समझने लगे हैं लेकिन दुक्खू भाई देखा न। अखबार विदेसी चीज है, लेकिन उससे पूँजीपतियोंको नफा है, उससे उनकी तागत बढ़ती है, इसलिये अब वह स्वदेसी हो गया। अमेरिका और बिलायतके दिमागसे वहाँके कारखानेमें बनी छापेकी मसीन भी स्वदेसी हो गई। बिलायतके लोगोंने भाप और बिजलीवाले कारखानेको दिमागसे निकाला और उन्हें कायम करके हजारों मजूरोंका खून चूसना शुरू किया। वह लखपतीसे करोड़पती और करोड़पतीसे अरबपती हो गये। हिन्दुस्तानी सेठ जब उन्हीं कारखानोंको हिन्दुस्तानमें खोलकर करोड़पती बन गये तब उनको स्वदेसी-विदेसीका कुछ ख्याल नहीं आया। लेकिन जब बिलायती मजूरोंने अपने मालिकोंके खिलाफ मरकस बाबाके जिस सिच्छाका सहारा लिया, उसीको जब हिन्दुस्तानके मजूर अपनाने लगे तो वह विदेसी बन गयी।

सोहनलाल—हिन्दुस्तानी जोंकें यह भी कहती हैं कि हिन्दुस्तान धरमा-

त्माओंका देस है यहाँ मरकसकी सिच्छा नहीं चलेगी।

मैया—यह धर्मात्माओंका देस है, इसमें क्या सक है। यहाँ १६०० बरस तक डेढ़ अरब औरतें सतीके नामपर आगमें जलाई जाती रहीं। यहाँ सरग जानेके लिये लोग हिमालयमें गलते और अछयवटके बरगदसे त्रिबेनीमें कूदकर धरम कमाते थे। यहाँ १० करोड़ आदमियोंको अछूत और जानवर बनाना धरमका सबूत है। यहाँ गायका पेसाब-पाखाना खाना धरम है। यहाँ औरतोंको कोई अधिकार न देना जरूरी समझते हैं, पत्थर, बन्दर, सुअर, कुत्ता, गदहा, उल्लू सबके लिये यहाँ आदमीका सिर झुकनेके लिये तैयार है। यहाँ एक ओर बरहम-चारीपनका ढोंग है, दूसरी ओर अप्सराओंके साथ क्रीड़ा करनेमें भी पुन्य माना जाता है। यहाँ एक ओर सराबको हराम कह करके भगवतीका जूठ मिलने-पर पवित्तर समझा जाता है। यहाँ गाड़ीके गाड़ी पोथे पढ़के भी आदमी गदहा बनता है, भूगोल पढ़के भी हिमालयके पास सरग ढूँढ़ता है। सायंस पढ़के भी राहुके कारण चंदर गरहन, सूरज गरहन मानता है, और गंगामें नहाकर उद्धार करता है, मुँहसे "एको ब्रह्म द्वितीयोनास्ति" बोलते हैं, आदमीसे छू जानेसे, या छुआ रोटी पानी खा लेनेसे पतित हो जाना मानते हैं। सोहन भाई, यह देस जरूर धरमात्माओंका है। लेकिन १० करोड़ अछूतोंको धर्मात्मा मानते हैं कि नहीं।

दुखराम—मानते तो उन्हें भी न धरम करनेके लिये मंदिरमें जाने देते ?

मैया—१० करोड़ औरतोंको धरमात्मा मानते हैं कि नहीं ?

दुखराम—मानते तो उन्हें भी जनेव देते न ?

मैया—कायथोंको धरमात्मा मानते हैं कि नहीं ?

दुखराम—उन्हें सराबी, कबाबी, सुद्दर कहकर हटा देते हैं।

मैया—राजपूतोंको धरमात्मा मानते हैं कि नहीं ?

दुखराम—मानते तो रजपुत भगत न मूसल धनुही कहके उन्हें भगत बनने-के अजोग न कहते ?

मैया—बंगाली बरहमनोंको धरमात्मा मानते हैं या नहीं ?

दुखराम—कंठी पहिनकर जो मछली-मांस खाय वह क्या धरमात्मा होगा मैया !

भैया—पंजाबी बरहमनको धरमात्मा मानते हैं कि नहीं ?

दुखराम—मैं नहीं कह सकता भैया ?

भैया—मैं कहता हूँ दुक्खू भाई, वह भी धरमात्मा नहीं, क्योंकि वह चौका-खूल्हा नहीं मानते और कहारके हाथकी रोटी-दाल खाते हैं। गौड़, कनौजिया, मुभौतिया, सनाढ्य बरहमन भी धरमात्मा नहीं है क्योंकि वह हल चलाते हैं। दक्खिनवाले बरहमन भी धरमात्मा नहीं हैं, काहेसे कि वे मामा, बुआ, बहिन तककी लड़कीसे ब्याह करते हैं।

दुखराम—तो भैया, हिन्दुस्तानमें धरमात्मा है कौन ? यह तो प्याजके छिलकेकी तरह सब अधरमी ही बन जाते हैं।

भैया—अच्छा जो मोटा-मोटी धरमात्मा मान लो तो मानना पड़ेगा कि यहाँके, हिन्दुस्तानके हिन्दू भी धरमात्मा हैं, मुसल्मान भी धरमात्मा हैं, ईसाई भी धरमात्मा हैं, बौद्ध भी धरमात्मा हैं। फिर तो रूसमें भी ईसाई धरमात्मा हैं, मुसल्मान धरमात्मा हैं, यहूदी धरमात्मा हैं। वहाँ भी उनके बड़े-बड़े मन्दिर, मठ, गिरजा और मसजिद बनी हैं। वहाँ मुसलमानोंके तो बल्कि कई बड़े-बड़े पीर समरकन्द-बुखारामें पैदा हुये।

दुखराम—तब उनका यह कहना निलज्जताई ही है न कि मरकस बाबाकी सिच्छा रूसमें इसलिये चली कि वहाँके लोग धरमात्मा नहीं थे।

अध्याय १७

ग्यान और भाखा

सोहनलाल—दुक्खू मामा ! अभी तक हमने भैयासे बहुत सभल-सभलके सवाल पूछा है, अब एकाध अपने मनका भी सवाल पूछ लेने दो।

दुखराम—पूछो भैने ! हम भी सुनेंगे, लेकिन दो-चार आना हम भो समझें, ऐसा पूछना।

सोहनलाल—नहीं समझ पाओगे दुक्खू मामा ! तो दो ही चार आना

भर, नहीं तो सभी समझोगे। अच्छा तो भैया ! जोंकें जो कहती हैं, कि जितना ग्यान-बिग्यान दुनियामें है, वह सब हमने ही पैदा किया है, हम न रहेंगे तो दिया बुझ जायगा।

भैया—हम कब कहते हैं कि जोंकोंने कभी अच्छा काम किया ही नहीं। लेकिन जो दिया बुझ जानेकी बात कहते हैं, वह गलत है। हम दिया बुझने नहीं देंगे। हमारे कमेरोंके राजमें ग्यान-बिग्यान बहुत चमकेगा। वहाँ ग्यानके बिना कुछ हो भी नहीं सकता। जोंकोंके राजमें आज अपढ़-अबूझ हलवाहेसे भी काम चल सकता है, लेकिन हमारे लिए तो मोटर-हल चलानेवाले हलवाहे चाहिए। राज सँभालते ही पहला काम हमें यह करना पड़ेगा कि देस भरमें कोई बेपढ़ नहीं रहे।

दुखराम—लेकिन भैया ! कितने लोगोंमें तो जेहन ही नहीं होती, वह कैसे पढ़ेंगे ?

भैया—जोंकोंकी जैसी पढ़ाई होगी, तब तो सबको पढ़ नहीं बना सकते। जोंकें बिद्दा पढ़ानेके लिए भाखा पढ़ाती हैं, अपनी भाखा पढ़ावें तो कोई उतनी मेहनत नहीं लेकिन वह पढ़ाती हैं अंगरेजी, फारसी, अरबी, संसकीरत। जो हम देस भरको अंगरेजी पढ़ा देनेकी परतिग्या करेंगे, तो वह सात जनमका काम है दुक्खू भाई ! हम तो बल्कि भाखा पढ़ायेंगे ही नहीं। क्या कोई आदमी गूँगा है, कि भाखा पढ़ायें। लोग कथा-कहानी कहते हैं, हँसी-मजाक करते हैं, देस-बिदेसकी बात बतलाते हैं, सब अपनी ही भाखामें कहते हैं न ? बस हम पहले तो यही कहेंगे कि दो-तीन दिनमें अच्छर सिखला देंगे। अड़तालिस अच्छर तो कुल हई हैं। दो-तीन नहीं तो पाँच-छः दिन लग जायेंगे, फिर आदमी जो भाखा बोलता है, उसीमें छपी किताब हाथमें थमा देंगे।

दुखराम—ऐसा हो भैया ! तब पढ़ना काहेका मुस्किल हो।

भैया—ढोला-मारू, सारंगा-सदाब्रिच्छ, लोरिकी, सोरठी, नैका, कुँअरि बिजयमल, बेहुलाके कितने सुन्दर-सुन्दर किस्से और गाने हैं। इन्हींको छापके दे दिया जाय, तब कहो दुक्खू भाई !

दुखराम—तो बूढ़े सुग्गे भी राम-राम करने लगेंगे क्या किसीको पढ़नेमें परिस्रम मालूम होगा।

भैया—बिद्दा अलग चीज है दुक्खू भाई! भाखा अलग चीज है। लेकिन जोंके हमको सिखलाती हैं कि भाखा पढ़ लेना ही ग्यान है। यह ठीक है कि ग्यान सिखाते बखत उसे किसी भाखामें बोला जाता है। लेकिन अंगरेजीमें काहे बोला जाय, अरबी-संसकीरतमें काहे बोला जाय, उसे अपनी बोलीमें काहे न बोला जाय।

सोहनलाल—लेकिन बोली तो पाँच कोसपर बदल जाती है, ऐसा करनेसे तो हजारों भाखा बन जायेगी, और कौन-कौनमें किताब छापते फिरेंगे?

भैया—पाँच कोस नहीं जो ५ अंगुलपर ही भाखा बदल जाय, तो भी हमको उसीमें किताब छापनी पड़ेगी। तभी हम दस बरिसके भीतर अपने यहाँ किसीको बेपढ़ नहीं रहने देंगे।

सोहनलाल—लेकिन हिन्दी भी तो अपनी भाखा है।

भैया—जिसकी अपनी भाखा हो, उसे हिन्दी हीमें पढ़ाना चाहिए, तुम्हारे बनारसमें सब लोग घरमें हिन्दी ही बोलते हैं?

सोहनलाल—किताबवाली भाखा तो नहीं बोलते भैया! बोलते तो हैं वही बोली जो बनारस जिलाके गाँवमें बोली जाती है।

भैया—जो क-ख अच्छी तरह सिखा दिया जाय तो अपनी बोलीमें आदमी कितने दिनोंमें सुद्ध-सुद्ध लिखने लगेगा?

सोहनलाल—अपनी बोलीको तो भैया! असुद्ध कोई बोल ही नहीं सकता। अच्छरमें चाहे भले ही एकाध गलती हो जाय, लेकिन ब्याकरनकी गलती कभी नहीं होगी।

भैया—और हिन्दी कितना दिन पढ़नेपर ब्याकरनकी गलती नहीं करेगा।

सोहनलाल—कोई-कोई आदमी तो भैया जिन्दगी भर पढ़नेपर भी न सुद्ध बोल सकते हैं न लिख सकते हैं।

भैया—लेकिन अपनी बोलीको तो आदमी चाहे भी तो असुद्ध नहीं बोल सकता, यह तो मानते ही हो। अच्छा जिनगी भर हिन्दी न बोलनेवालोंकी

बात छोड़ो। मामूली तौरसे सुद्ध हिन्दी लिखने-बोलनेमें कितना समय लगेगा। हमारे गाँवके एक लड़केको ले लो, जिसकी भाखा हिन्दी नहीं बल्कि भोजपुरी या बनारसी है?

सन्तोखी—मैं कहूँ भैया! हमारे यहाँ लड़के आठ बरस पढ़के हिन्दी मिडिल पास करते हैं, लेकिन तो भी न सुद्ध हिन्दी बोल सकते हैं, न लिख सकते हैं।

भैया—सोहन भाई! तुम इन्ट्रेन्स पासवालोंकी बात कहो।

सोहनलाल—जब पूछते ही हो, तो मैं बतलाता हूँ कि कितने तो बी० ए० पासकरके भी सुद्ध हिन्दी लिख-बोल नहीं सकते।

भैया—न मैं आठ साल पढ़े मिडिलवालेको लेता हूँ न बी० ए०की चौदह सालकी पढ़ाई। मैं इतना समझता हूँ कि आदमीकी जेहन बहुत खराब न हो और भाखा ही भाखा पढ़ता रहे तो पाँच बरस तो जरूर ही लगेंगे। लेकिन हिसाब और दूसरी चीज साथ ही साथ पढ़नी हो, तब काम नहीं बनेगा। हमारे मदरसोंमें जो हिसाब, जुगराफिया सब कुछ अपनी ही भाखामें पढ़ना हो, तो पाँच बरस क्या भाखा सीखनेमें एक दिन भी नहीं देना होगा। ग्यान है हिसाब, जुगराफिया, इतिहास, खेतीकी बिद्दा, इंजनकी बिद्दा, सड़क, पुल, मकान बनानेकी बिद्दा और पचीसों तरहकी बिद्दा। ग्यान पढ़ानेके लिए जब हम यह सरत रख देते हैं कि जब तक तुम पराई भाखा न पढ़ोगे, तब तक ग्यानमें हाथ नहीं लगा सकते, तब वह बहुत मुस्किल हो जाता है।

सन्तोखी—हम लोगोंकी भाखाको तो भैया! लोग गँवारू कहते हैं।

भैया—"आइल-गइल", "आयन-गयन", "आयो-गयो", "एल-गेल" बोलनेसे तो गँवारु भाखा हो गई, और "आये-गये" कहनेसे वह अच्छी भाखा होगी। और "कम्-वेन्ट" कहनेसे वह बहुत अच्छी भाखा हो गई। काहेसे वह साहेब लोगोंकी भाखा है। साहेब लोगोंका डंडा सिरपर है, उनका राज है, इसलिए अंगरेजी बोली बहुत अच्छी भाखा है, वह देवताओंकी भाखासे भी बढ़कर है, लेकिन जब साहब लोगोंका राज न रहे, और गँवार यही किसान-मजूर अपना पंचायती-राज कायम कर लें, तो क्या तब भी उनकी

भाखा गँवारू रहेगी ! यह तो "जिसकी लाठी उसकी भैंस" वाली बात हुई। गँवारू कह देनेसे काम नहीं चलेगा। जिस बखत इसी गँवारु भाखामें इसकूल, कालेज सब जगह चौदह बरस तक पढ़ी जानेवाली बिद्दा पढ़ाई जायगी उसीमें हजारों किताबें छपेंगी। उपन्यास, कविता, कहानी सब कुछ गँवारू भाखामें मिलने लगेगा। रोजाना, हफ्तावार, माहवारी, अखबार निकलने लगेंगे, तब इस भाखाको कोई गँवारू नहीं कहेगा।

दुखराम—क्या ऐसा होगा भैया ?

भैया—जो तुम लोग हमेसा गँवार बने रहना चाहोगे, तो नहीं होगा; जो तुम हमेसा गुलाम बने रहोगे, तो भी नहीं होगा; जो हिन्दुस्तानके आधे आदमियोंको बेपढ़ बनाये रखना है, तो नहीं होगा; नहीं तो इसमें अनहोनी कौन-सी बात है ? बल्कि अपनी बोली पकड़नेसे तो छः बरसका रस्ता एक दिनमें पूरा हो जाता है।

सोहनलाल—लेकिन अपनी-अपनी बोली पढ़ाई जाने लगी, तो दरभंगा, बनारस, मेरठ, और उज्जैनके आदमी एक जगह होनेपर कौन-सी भाखा बोलेंगे ?

भैया—आज भी गौहाटी, ढाका, कटक, पूना, सूरत, पेशावरके आदमी एकट्ठा होनेपर क्या बोलते हैं।

सोहनलाल—हिन्दी बोलते हैं, टूटी-फूटी हिन्दीसे काम चला लेते हैं।

भैया—लेकिन इकट्ठा होनेका ख्याल करके उनसे यह नहीं न कहा जाता कि तुम असामी, बँगला, उड़िया, मराठी, गुजराती, पस्तो छोड़के हिन्दी-खिरिफ हिन्दी पढ़ो, नहीं तो कभी जो इकट्ठे होओगे तो बात करनेमें मुसकिल पड़ेगा। जैसे उन लोगोंको अपनी भाखामें सब कुछ पढ़ाया जाता है, उसी तरह दरभङ्गावालोंको मैथिली, भागलपुरवालोंको भगलपुरिया (अंगिका), गयावालोंको मगही, छपरावालोंको छपरही (मल्ली), लखनऊवालोंको अवधी, बरेलीवालोंको बरेलवी (पंचाली), गढ़वालवालोंको गढ़वाली, मेरठवालोंको मेरठी (खड़ी बोली या कौरवी), रोहतकवालोंको हरियानवी (यौधेयी), जोधपुरवालोंको मारवाड़ी, मथुरावालोंको ब्रजभाखा, झाँसीवालोंको बुन्देलखंडी,

उज्जैनवालोंको मालवी, उदयपुरवालोंको मेवाड़ी, झालावाड़वालोंको बागड़ी, खँडुआवालोंको नीमाड़ी, छतीसगढ़वालोंको छतीसगढ़ी—सबको अपनी-अपनी भाखामें पढ़ाया जाय।

सोहनलाल—पढ़ानेमें तो सुभीता होगा भैया! हर आदमीका पाँच-पाँच साल बच जायेगा और डरके मारे जो बीच हीमें पढ़ाई छोड़ बैठते हैं, वह भी बात नहीं होगी, लेकिन हिन्दी भाखावालोंका एका टूट जायगा।

भैया—एका टूटनेकी बात तो इस बखत नहीं कह सकते हो सोहन भाई! इस बखत तो एका सिर्फ दिमागमें है। मध्य-प्रान्त अलग है, युक्त-प्रान्त और बिहार भी अलग है, हरियाना भी पंजाबमें है और रियासतोंने छप्पन टुकड़ेकर डाले हैं, इसे आप देखते ही हैं।

सोहनलाल—लेकिन हम तो चाहते हैं कि सबको मिलाकर हिन्दका एक बड़ा सूबा बना दिया जाय।

भैया—सूबा नहीं, पंचायती-राज, प्रजातंत्र। सूबा क्या हम हमेशा बिदेसी जोंकोंके गुलाम बने रहेंगे? और अपना राज होनेपर किसी सुरुजबंसीको दिल्लीके तखतपर बैठायेंगे? हमारा पंचायती-राज रहेगा, जो एक नहीं बहुत-से पंचायती राजोंका संघ होगा। जो लोग चाहेंगे तो दरभंगासे बीकानेर, और गंगोत्तरीसे खँडवा तकका एक बड़ा प्रजातंत्र-संघ कायम कर लेंगे जिसके भीतर पचीसों प्रजातंत्र रहेंगे।

सोहनलाल—तो भैया! मल्ल प्रजातंत्रकी बोली मल्लिका रहेगी और मालव प्रजातंत्रकी मालवी, यौधेय (अंबाला कमिश्नरी) प्रजातंत्रकी हरियानवी; फिर जब वह हिन्द प्रजातंत्र संघकी बड़ी पंचायत (पार्लामेण्ट)में बैठेंगे, तो किस भाखामें बोलेंगे?

भैया—हिन्दीमें बोलेंगे और किसमें बोलेंगे? इन्हींकी बात क्यों पूछ रहे हो, मदरास, कालीकट, बेजवाड़ा, पूना, सूरत, कटक, कलकत्ता और गोहाटीके मेम्बर भी जब सारे हिन्दुस्तानके प्रजातंत्र-संघकी बड़ी पंचायतमें इकट्ठा होंगे, तो क्या वह अंगरेजीमें लेक्चर देंगे। अंगरेज जोंकोंके जुआके उतार फेंकनेके साथ ही अंगरेजी भाखाका जोर हिन्दुस्तानमें खतम हो

जायगा तब हिन्दुस्तानमें एक दूसरेके साथ बोलने-चालने, और सारे देस-की सरकारके काम-काजके लिये एक भाखाकी जरूरत होगी, तो वह भाखा हिन्दी ही होगी।

सोहनलाल—तो भैया! हिन्दी भाखाको तो तुम उजाड़ना नहीं चाहते हो न?

भैया—हम उजाड़ेंगे कि उसे और मजबूतीसे बसावेंगे। सारे हिन्द प्रजातंत्र-संघकी वह संघ-भाखा होगी। मदरासोंमें जैसे अंगरेजीके साथ दूसरी भाखा पढ़ाई जाती है, वैसे ही बारह बरसकी उमरसे ३-४ साल तक लड़कोंको हर रोज एक घंटा हिन्दी पढ़नेका कायदा बना देंगे। उस बखत हिन्दीका जोर और बढ़ेगा कि घटेगा?

सोहनलाल—आज तो हिन्दी ही हिन्दी सब कुछ है, फिर तो ब्रिज, मालवी, मैथिली, न अपने घरकी मालकिन बन जाऐगी? फिर बेचारी हिन्दी-को जब कोई बुलायेगा तभी न चौखटके भीतर आयेगी।

भैया—आज-कल यह कहना तो गलत है कि हिन्दी सब कुछ है, काहेसे कि सब कुछ तो अंगरेजी है। दूसरे हिन्दीके चौखटके भीतर बैठानेकी बात भी ठीक नहीं है। मेरठ कमिश्नरीके साढ़े-तीन जिले (मेरठ, मुजफ्फरनगर, सहारनपुर, देहरादून $\frac{1}{2}$, बुलंद सहर $\frac{1}{2}$)की भी तो जनम भाखा वही है। उसके बाद सारे हिन्दुस्तानमें घर-घरमें उसकी आव भगत रहेगी।

सोहनलाल—तो लोग अपनी-अपनी भाखाका प्रजातंत्र बना लेंगे, फिर तो हिन्दुस्तान सौ टुकड़ोंमें बँट जायेगा।

भैया—सोवियतकी आबादी हम लोगोंसे आधी है, २० करोड़ ही है, लेकिन वहाँ तो १८२ भाखा बोली जाती है और सबका अपना छोटा-बड़ा पंचायती-राज है। तुम चाहते हो कि पाँचों उगुंलियोंको खुला नहीं रखा जाय, बल्कि मिलाके सी दिया जाय, लेकिन इससे हाथ मजबूत नहीं होगा सोहन भाई! सोवियत १८२ प्रजातंत्रवाला होनेपर भी एक बड़ा प्रजातंत्र है। हिन्दुस्तान भी १०० प्रजातंत्रोंवाला, एक बड़ा प्रजातंत्र हो तो कौन-सी बुरी बात है।

सोहनलाल—अच्छा तो यही होता कि सारे हिन्दुस्तानका एक ही प्रजातंत्र होता ?

भैया—अच्छा तो होता जो हिन्दुस्तानके लोग एक ही बोली बोलते होते, लेकिन वह तो अब हमारे हाथमें नहीं है। क्या सारे हिन्दुस्तानका तुम एक सूबा बनाना चाहते हो ?

सोहनलाल—नहीं सूबा तो हम अलग-अलग चाहते हैं। बंगाल, उड़ीसा सिन्ध सबको मिटाकर एक सूबा तो बनाया नहीं जा सकता।

भैया—अंगरेजी राजमें जो आज सूबा है और १२ लाख सालाना खरचपर यहाँ लाट साहब लाके बैठाये जाते हैं, वही सब प्रजातंत्र कहा जायगा, जिसका राजकाज पंचायतके हाथमें होगा, अनेक सूबाको तो तुम मानते ही हो, उसका मतलब ही है कि अनेक प्रजातंत्र हिन्दुस्तानमें रहेंगे और हिन्दुस्तान प्रजातंत्रोंका संघ रहेगा। अब झगड़ा यही है न कि १४ प्रजातंत्र रहे या सौ ? मैं कहता हूँ कि उतने ही प्रजातंत्र हो जितनी भाखा लोग बोलते हों और अपने-अपने प्रजातंत्रमें पढ़ाई-लिखाई, कचहरी-पंचायतका सब कारबार अपनी भाखामें हो लेकिन सौ प्रजातंत्र होनेका मतलब यह तो नहीं है कि अब यह एक-दूसरेसे कोई वास्ता नहीं रखेंगे, और कछुएकी तरह मूँड़ी समेट कर अपनी खोपड़ीमें घुस जाएँगे। हमारे महा-प्रजातंत्रके ये सभी प्रजातंत्र हाथ-पैर, नाक-कानकी तरह अंग होंगे। सबमें एक खून बहेगा। सब एक-दूसरेकी मदद करेंगे। उस बखत रेलकी लाइनें आजसे भी ज्यादा बढ़ जायेंगी, पक्की सड़कें गाँव-गाँवमें पहुँच जायँगी। हर प्रजातंत्रमें हवाई जहाजके अड्डे होंगे। लोगोंकी जेबमें पैसा रहेगा, सालमें महीने डेढ़ महीनेकी सबको छुट्टी मिलेगी। तो बताओ लोग कुएँके मेढक बनकर बैठे रहेंगे या अपने महादेसमें घूमने-फिरने जायेंगे।

दुखराम—घूमने-फिरने जायँगे भैया ! देस-परदेस देखनेका किसका मन नहीं कहता, नातेदारों-रिस्तेदारोंसे मिलनेकी किसकी तबियत नहीं होती।

भैया—जनम-भाखाको कबूल करनेसे हिन्दीको नुकसान होगा यह खयाल गलत है सोहन भाई ! उस बखत बनारसवाले कानपुरवालोंसे बहुत नीच

रहेंगे, टेलीफून भी नगीच कर देगा, हवाई जहाज भी और जेबका पैसा भी। हिन्दी सीखना लोग बहुत पसन्द करेंगे, क्योंकि सारे देसकी साझेकी भाखा वही है, फिर हिन्दीमें पोथियाँ सबसे अधिक निकलेगी। आज-कल देखते हैं न हिन्दीके सिनेमा-फिल्म जितने निकलते हैं, उतने बँगला, मराठी, तामिल, तेलगू सारी भाखाओंके मिलके भी नहीं निकलते। हिन्दी भाखाकी किताबोंकी भी वही हालत होगी; उसके पढ़नेवाले देस भरमें मिलेंगे। मुझे उमेद है, कि जैसे चौपटाध्याय फिल्म हिन्दीमें निकल रहे हैं, वह किताबें वैसी नहीं होंगी।

सोहनलाल—चौपटाध्याय फिल्म क्यों कह रहे हो भैया ? जो चौपटाध्याय होते तो इतने लोग देखने क्यों जाते और फिलमवालोंको लाखों रुपयेका नफा कैसे मिलता ?

भैया—देखनेवाले तो इसलिए जाते हैं कि दूसरा अच्छा फिल्म है कहाँ ? दूसरे नाच-गाना और सुन्दर मुँहके देखनेकी आदत लोगोंको पहिले हीसे है, बस वह समझते हैं कि चलो दो आनामें तवायफका नाच ही देख आएँ, लेकिन सिरिफ सुन्दर मुँह और सुरीले कंठ तकमें ही फिलमको खतम कर देना अच्छी बात नहीं है, सोहन भाई ! उसमें बात-चीत, हाव-भाव और तसवीरोंसे दुनिया-का असली रूप दिखलाना होता है, साथ ही साथ लोगोंको रस्ता भी दिखलाना होता है। लेकिन रस्ता दिखलानेकी बात छोड़ दो, काहेसे कि जोंकोंके राजमें वह अनहोनी बात है ! लेकिन हिन्दी फिल्मोंमें सब चीजोंमें बेपरवाही देखी जाती है। फिल्म बनानेवाले तो जानते हैं कि उनके पास रुपया चला ही आयेगा, फिर क्यों परवाह करें ?

सोहनलाल—हिन्दी फिल्मोंमें आपको क्या दोस मालूम होता है भैया ?

भैया—पहिले गुन बताता हूँ तब दोस बताऊँगा। गुन तो यह है कि हमारे फिल्मके खिलाड़ी (अभिनेता) और खिलाड़िनें (अभिनेत्रियाँ) अपना करतब दिखलानेमें दुनियाके किसी भी खेलाड़ी-खेलाड़िनीसे कम नहीं हैं। और अच्छे फिल्मके लिए यह बहुत अच्छी चीज है। वह अपनी बात-चीत, हाव-भाव, गीत-नाच सबसे अच्छे हैं—मैं सभी खेलाड़ी-खेलाड़िनोंके बारेमें नहीं कहता, लेकिन अच्छे खेलाड़ी-खेलाड़िनोंमें यह सब गुन हैं। और इन्हीं

गुनोंका परताप है कि मदरास, कालीकट और बेजवाड़ामें भी लोग अपनी भाखा-के फिल्मोंको छोड़कर हिन्दी फिल्मोंको देखने आते हैं, चाहे बेचारे फिल्मकी भाखाको नहीं समझ पायें। मैं समझता हूँ कि ये हमारे खेलाड़ी-खेलाड़िनोंके गुनका ही परताप है। पैसा बनानेवाले फिल्म मालिकोंकी चले तो सायद उस-में भी कुछ खराबी कर दें।

सोहनलाल—और दोस क्या है भैया!

भैया—भाखा तीन कौड़ीकी होती है, न उसमें लचक, न कहावत और न गहराई होती है। यह क्यों होता है? बहुतसे फिल्म मालिक भाखा जानते ही नहीं, लेकिन तो भी अपनेको महाविद्वान समझते हैं। एक तो उनके भाखा लिखनेवाले भी बहुतसे उन्हींकी तरह हैं, और जो कोई अच्छा भी लिखता हो, तो अच्छेको बुरा और बुरेको अच्छा कहनेका अख्तियार फिल्म तैयार करनेवाले अपने हाथमें रखते हैं। समझ लो पूरी दमद-सोधन हो जाती है।

सोहनलाल—दमन-सोधन क्या है भैया?

भैया—किसी पंडितने एक मुरुखसे अपनी लड़की व्याह दी। दामाद एक दिन ससुरार आया। छापाखानेसे पहिलेकी बात है, उस वक्त किताबोंको उतारने-वाले मामूली पढ़े-लिखे लेखक हुआ करते थे। वह मजूरी लेकर किताब उतार दिया करते थे। पंडित लोग किताब लेके फिर पढ़ते और जो असुद्ध होता उस-पर पीला हड़ताल फेरते और जिसको ज्यादा ध्यानमें रखना होता, उसे गेरूसे लाल कर देते। पंडितके दामादने पोथी, हड़ताल और गेरूको देखा। उन्होंने पोथीको हाथमें ले लिया। पंडिताइनको अपने दामादपर बहुत गरब था, उन्होंने समझा कि दामाद भी बड़ा पंडित है और उससे कहा—"पंडित गेरू और हड़तालसे किताबको सोध रहे हैं, तुम भी तो सोधते होगे बाबू!" दामाद कब पीछे रहनेवाले थे। उन्होंने कहा—"हाँ, अइया! मैं अच्छी तरह जानता हूँ।" फिर जहाँ मन आया हड़ताल लगाया, जहाँ मन आया गेरू, पोथीकी दमद-सोधन हो गई।

सोहनलाल—तो इसमें फिल्म पैदा करनेवालोंका ज्यादा दोस है या भाखा लिखनेवालोंका।

भैया—फिल्म पैदा करनेवालोंका बहुत बड़ा दोस है, उनमें खुद लियाकत नहीं है और न लायक आदमियोंको चुन सकते हैं। भाखा लिखनेवालोंमें जो थोड़ेसे अच्छे भी हैं, उनमें भी एक बड़ा दोस है। वह हिन्दी या उर्दूकी किताबी भाखा लिखते हैं। किताबसे पढ़के सीखनेवालेकी भाखामें जीवट नहीं होता और सहरोंमें जो थोड़े-बहुत बाबू लोग अपने घरोंमें हिन्दी भाखा बोलते हैं, वह भी किताबी भाखा जैसी ही होती है।

सोहनलाल—तो जीवटवाली भाखा कौन बोलते हैं भैया?

भैया—मेरठ, मुजफ्फरनगर, सहारनपुरके जिलोंके गँवार।

सोहनलाल—तब तो फिल्मकी भाखा लिखनेवालोंको भाखा सीखनेके लिए इन गँवारोंके पास जाना पड़ेगा?

भैया—उनके चरनमें जाकर बैठना पड़ेगा। हिन्दी भाखाको किताबवालोंने नहीं पैदा किया, बल्कि इन्हीं गँवारोंने पैदा किया। हिन्दी पढ़नेवालोंने सैकड़ों बरस पहले उन गँवारोंसे भाखा तो ले ली, लेकिन भाखामें जीवट लानेके मुहाविरे, कहावतें, सबदोंका तोड़ना-मरोड़ना और उन्हें मनमाने तौरसे रखना, इत्यादि बातें नहीं सीखीं; इसलिए हिन्दी भाखामें वह चमतकार नहीं आ सका। किताब पढ़नेमें तो किसी तरह आदमी बरदास भी कर लेगा लेकिन नाटककी बातचीतमें इससे काम नहीं चल सकता।

सोहनलाल—तो भैया! तुमने कोई फिल्म ऐसा नहीं पाया, जिसमें कुछ जीवटवाली भाखा दिखाई दे।

भैया—मैंने सिर्फ एक फिल्म ऐसा देखा है जिसकी भाखा मुझे पसंद आई, वह था—"जमीन।" मैं समझता हूँ जब तक फिल्म पैदा करनेवाले अपनेको सब कुछ जाननेवाला मानना नहीं छोड़ेंगे और जब तक भाखा लिखनेवाले मेरठके उन गँवारोंके चरनोंमें नहीं बैठेंगे, तब तक यह दोस नहीं जायेगा।

सोहनलाल—और दूसरे दोस क्या हैं भैया?

भैया—दूसरे दोस फिल्म पैदा करनेवालोंको है चाहे उन्हें उनका अंधापन कह लो, चाहे "कम दाम ज्यादा नफ़ा"का ख्याल समझ लो, चाहे

फिल्म मालिकोंका अपने घरके पास ही फिल्म बनानेका हठ समझ लो। हिन्दीके फिल्म बम्बई या कलकत्तामें ही तैयार किये जाते हैं। वहाँके आस-पासके गाँवों, पहाड़ों, नदियोंका फोटो खींचा जाता है। वहाँ न हिन्दी बोलने-वाले गाँव हैं न हिन्दीवालोंके रीति-रवाज कपड़े-लत्ते। इसका फल यह होता है कि सब चीजें बनावटी दीख पड़ती हैं। बहुत-सी चीजोंको तो वह आने नहीं देते। "जमीन" की तसवीरोंमें भी यह दोस मौजूद है। यह दोस बँगला, मरहठी या तमिल फिल्मोंमें नहीं पाया जाता, काहेसे कि उनमें उन्हीं गाँवों, नदियों, पहाड़ों और लोगोंकी तसवीरें ली जाती हैं, जो उस भाखाको बोलते हैं। हिन्दी-फिल्मोंका यह दोस तब तक दूर नहीं होगा, जब तक देहरादून, कालसी जैसी जगहोंमें फिल्मवाले अपने डन्डा-कुंडा उठाके नहीं आ जाते।

सोहनलाल—और कौन दोस है भैया ?

भैया—हिन्दी-फिल्मोंकी सारी तसवीरें दो-एक मीलके छोटेसे घेरेमें घूमती रहती हैं, वह बिसाल नहीं होतीं। नदियों, पहाड़ों, खेतों, गाँवोंका जो बिसाल रूप हमें मिलना चाहिए, उसे हम नहीं पाते। क्या जाने यह पैसा बचानेके खयालसे होता होगा।

सोहनलाल—और कोई दोस है भैया !

भैया—हस्तिनापुरके पास गङ्गाका बिसाल कछार है, वहाँ सैकड़ों गाएँ-भैंसें चरती हैं, चरवाहे मस्त होकर गाना गाते हैं, गङ्गामें मलाह नाव खेता है, और अपनी तानमें सारी मेहनत भूल जाता है। धोबी, कुम्हार सबके अपने-अपने गीत, अपने-अपने बाजे, चित्र-विचित्र नाच हैं। सहरोंमें भी औरतोंके ब्याह और दूसरे वक्तके अपनी खास-खास नाच और नाटक हैं। इस तरहकी सैकड़ों चीजें हैं, जिनका बम्बई और कलकत्ताके फिल्मोंमें कहीं पता नहीं है।

सोहनलाल—और कोई दोस है भैया ?

भैया—मैं अब एक ही दोस और कहूँगा। हिन्दी भाखा हिमालयकी गोदमें बोली जाती है। दुनियाके फिल्मवाले हिमालयके सुन्दर पहाड़ों, नदियों, झरनों, देवदार-बनों, और बरफीली चोटियोंको पाके निहाल हो जाते; लेकिन हिन्दी फिल्मवालोंके लिए वह कोई चीज नहीं। जापानके राजाकी राजधानी

लोकियो है लेकिन फिल्मोंकी राजधानी क्योतो है, काहेसे कि क्योतोको थोड़ा-सा हिमालयका रूप मिला है। लेकिन हमारे आजके फिल्मवालोंको इसका कभी खयाल आयेगा. इसमें सक है।

सोहनलाल—तो भैया! जो फिल्म बनानेवाले मेरठ कमिसनरीके हिमालय-वाले टुकड़ेमें आ जायँ, तो उनके बहुतसे दोस हट जायँगे?

भैया—यह मैं मानता हूँ, लेकिन यह भी समझा हूँ कि सेठ अपना घर छोड़ तपोबनमें थोड़े जाना चाहेंगे, वह पचास तरहका बहाना कर सकते हैं। और सबसे बड़ी बात यह है कि नफा तो उन्हें खूब हो ही रहा है और थोड़े ही खर्चमें। लेकिन हम फिल्मकी बात करते-करते बहुत दूर चले गये सोहन भाई! मैं कह रहा था हिन्दी भाखाके बारेमें।

सोहनलाल—हाँ, तो तुम समझते हो कि अपनी-अपनी भाखाको पढ़ाई-की भाखा मान लेनेपर हिन्दीको नुकसान नहीं होगा? लेकिन भैया! दुनिया-को हमें और एक दूसरेके नगीच लाना है। मरकस बाबा तो सारी मानुख जातिको एक बिरादरी देखना चाहते थे, फिर किसी संजोगसे जो हिन्दीके नाते हिन्दुस्तानके आधे लोग एक भाखासे बँध गये हैं, उनको फिर तोड़ फोड़के अलग करना, यह तो पैर पकड़के पीछे खींचना है।

भैया—पैर पकड़कर पीछे खींचना नहीं है सोहन भाई! यह हाथ पकड़-कर आगे बढ़ाना है। जनम-भाखासे पढ़ाई करनेपर दस बरसके भीतर ही हमारे यहाँ कोई अपढ़ नहीं रह जायगा। और एक दूसरी जगह जाने, आपस-में मिलनेसे, हिन्दी भाखा सभी लोग थोड़ी-बहुत बोल लेंगे। और समझनेमें तो किसीको मुसकिल नहीं होगा, काहेसे कि इन सब भाखाओंमें बहुतसे सबद एक हीसे हैं। कबिता, कहानी, उपन्यासका ढंग भी एक-सा ही रहेगा। हिन्दी पोथियोंकी उतनी ही ज्यादा माँग होगी, जितनी ही अधिक इन भाखाओंके पढ़ने-लिखनेवाले बढ़ेंगे। कमी इतनी होगी कि आज जो हमारे कितने ही भाई यह समझते हैं, कि अवधी, ब्रज, मालवी, बनारसी, मैथिली इत्यादि भाखायें कुछ दिनोंमें मर जातीं, उनको जरूर निरास होना पड़ेगा। निरास वैसे भी होना पड़ेगा, क्योंकि जो जनम-भाखाओंको किताबकी भाखा न भी

बनाया जाय, तो भी सौ-पचास सालोंमें उन भाखाओंके मरते देखनेकी खुसी हमारे भाइयोंको नहीं मिलेगी। अभी उन्हें मरना भी नहीं चाहिए, क्योंकि उन्होंने अपने भीतर अपनी जातिकी भाखा, समाज, विचार-बिकास वगैरहके इतिहासकी बहुत-सी अनमोल सामग्री रखी है। मैं जानता हूँ जो दुनियासे जोंकें उठ जायँगी, तो मानुख जाति जरूर एक होगी और फिर सबकी एक साझी भाखा भी होगी। हो सकता है, कि एक साझी और एक अपनी जनम-भाखा दो भाखाओंका रहना मुसकिल हो जाय। लेकिन वह अभी सैकड़ों बरसोंकी बात है। उस बखत तक हरेक भाखाके भीतर जितने रतन छिपे हुए हैं, सब जमा करके अच्छी तरह रख लिए गये रहेंगे। इसलिए किसी भाखाके नास होनेसे उतना नुकसान नहीं होगा।

सोहनलाल—लेकिन भैया! यह बोलियाँ अभी ऐसी नहीं हैं कि इनमें साइन्स बिग्यानपर किताबें लिखी जायँ। हिन्दीने बड़ी मुसकिलसे यह कर पाया है।

भैया—जो मान लें कि बनारसी बोलीमें साइन्सकी किताब नहीं लिखी जा सकती, तो कितने ही दिनों तक हिन्दीमें किताबें पढ़ेंगे जब तक कि हिन्दी बोली नाबालिगसे बालिग न हो जायगी। हिन्दी जैसी किसी भाखाकी किताब पढ़ना और उसमें लिखना-बोलना दोनोंमें बहुत फरक है, समझ लेना बहुत सहज है। अपनी बोलीके पढ़ानेका मतलब यह नहीं है कि हिन्दीको लोग छुयेंगे नहीं। दूसरी बात यह है कि बनारसी, मालवी किसी भी भाखामें साइन्स, इन्जीरिङ्की किताबोंके लिखनेमें उतनी ही दिक्कत होगी, जितनी हिन्दीमें। आखिर हिन्दीने भी साइन्सके सबदोंको संसकीरतसे लिया है, बँगला, गुजराती, मराठी भी संसकीरतसे ही सबदोंको लेती हैं फिर बनारसी, मैथिली, ब्रिज, मालवीने क्या कसूर किया है?

सोहनलाल—हिन्दी-उर्दूके बारेमें तुम्हारी क्या राय है भैया?

भैया—मेरी राय क्या पूछ रहे हो मैंने तो पहिले ही कह दिया है कि जिसकी जो जनम-भाखा हो उसको उसी भाखामें पढ़ाना चाहिए। बनारसमें बहुतसे बंगाली भी रहते हैं, उन्हें बँगलामें पढ़ाना होगा। मराठे भी हैं,

उनको मराठीमें पढ़ाना होगा। हाँ, कोई दो भाखा बोलनेवाला हो तो वह चाहे जिस मदरसामें जाय। इसी तरह बनारसमें जिस लड़केकी जनम-भाखा हिन्दी है, उसके लिए हिन्दीका मदरसा कायम करना होगा, जिसकी जनम-भाखा उर्दू है उसके लिए उर्दूका मदरसा कायम करना होगा।

सोहनलाल—तो भैया, तुम हिन्दी-उर्दूको मिलाके एक भाखा नहीं करना चाहते।

भैया—मिलाना हमारे बसकी बात नहीं है, दस-पाँच आदमी बैठकर भाखा नहीं गढ़ा करते। हिन्दी-उर्दूके बननेमें सैकड़ों बरस न जाने कितनी पीढ़ियोंने काम किया है। मैं मानता हूँ कि हिन्दी और उर्दू भाखा मूलमें एक ही भाखा है। "का, में, पर, से, इस, उस, जिस, तिस, न, त, आ, गा" दोनों हीमें एकसे हैं, खाली झगड़ा है उधार लिए सबदोंका। हिन्दीने संसकीरतसे सबदोंको उधार लिया है, और उर्दूने, अरबी और कुछ-कुछ पारसीसे भी, लेकिन दोनोंने इतना अधिक उधार लिया है कि अकबालकी कविताको समझनेवाला सुमित्रानन्दन पन्तकी कविताको बिलकुल नहीं समझ सकता और सुमित्रानन्दन पन्तकी कविता जाननेवाला अकबालको बिलकुल नहीं समझ सकता। इसलिए मूलमें दोनों एक हैं, कहनेसे काम नहीं चलेगा। अकबाल और पन्त दोनोंके समझनेके लिए दोनों भाखाओंको अच्छी तरह पढ़ना होगा।

सोहनलाल—तो हिन्दू-मुसल्मानोंकी भाखाओंके मिलनेका कोई रस्ता है?

भैया—चोटियोंपर तो नहीं मालूम होता, लेकिन जड़में उसका झगड़ा ही नहीं।

सोहनलाल—जड़ क्या है भैया?

भैया—जड़ यही है कि, जिसे जनम-भाखा कहते हैं, अवधी बोलनेवाले गाँवमें चले जाइये, वहाँ चाहे बाभन देवता हो, चाहे मोमिन जोलाहा, दोनों एक ही बोली बोलते हैं। बनारस, चपरा, गुड़गाँव, थानाभवनके पास किसी गाँवमें चले जाइये, किसानों-मजूरोंकी भाखा एक है, चाहे वह हिन्दू हो या मुसलमान। भाखामें फरक है सफेद धोती, पैजामा पहिननेवालोंकी।

दुखराम—वही लोंकोंसे जिनका बेसी रिसता-नाता है।

भैया—देखा न सोहन भाई! जड़में अपनी एक भाखा तैयार है, हिन्दू-मुसल्मान दोनों कमेरे उसी भाखाको बोलते हैं और फिर उनका न संसकीरतके साथ पच्छपात है न अरबी-फारसीके साथ। यही दुक्खू भाईने जो अभी कहा, "बेसी रिसता-नाता" इसमें बेसी और रिसता पारसी भाखासे आया है और नाता अरबी भाखासे। रिसता-नाता कहनेसे बिलकुल निपढ़, गँवार बुढ़िया भी समझ लेगी, लेकिन "सम्बन्ध" कहनेसे उतना नहीं समझ पायेगी। हमने भी अपने इतने दिनोंके सत्संगमें पाँच-छः सौ अरबी-फारसी सबदोंको लिया है, और हिन्दीमें उनकी जगह अब सिरिफ संसकीरतके सबद ही लिखे जाते हैं। मैं समझता हूँ कि समरकन्द-बुखारासे सात पीढ़ी पहिले आया हो, लेकिन अब उसका मेख-भाखा सब हिन्दुस्तानका है, तो वह हिन्दुस्तानी है, वह अपने पूरखाके सहर समरकन्द-बुखारामें जायगा, तो वहाँ भी उसे लोग हिन्दुस्तानी कहेंगे—आजकल समरकन्द, बुखारा, उजबकिस्तान सोवियत प्रजातंत्रके अच्छे सहर हैं। उसी तरह जिन अरबी, पारसी सबदोंको निपढ़ गँवारोंने अपना लिया है और उसको वह अपने ढंगसे तोड़-मरोड़के बोलते हैं, वे सबद अब बिदेसी नहीं, स्वदेसी हैं। जिन संसकीरत सबदोंको हमारे "गँवार" छोड़ चुके हैं उनको फिरसे लादना भी ठीक नहीं।

सोहनलाल—लेकिन भैया, इन गँवारोंने तो हजार-बारह सौ संसकीरतके सबदोंको निकालकर अरबीके सबद तो लिए हैं। 'हमेसा', 'दिक्कत', 'मुसकिल', 'मवस्सर', 'अरज', 'गरज', 'लेकिन', 'बेसी', 'अमहक' (अहमक), 'इफरात', 'जमीन', 'हवा', 'तूफान', 'सहर', 'नौबत', 'जुलुम', 'परेसानी', 'मेहरबानगी', 'वगैरह' सबदोंको उन्होंने लेकर संसकीरतके सबदोंको छोड़ दिया है जो संसकीरतके सबद रखे हैं, उनके बोलनेमें भी लाठीसे पीटके ठीक-ठाक कर डालते हैं। और आप इसी भाखाको अपनानेको कहते हैं!

भैया—दोनों बातोंको एकमें न मिलाओ सोहन भाई! जहाँ तक जनम-भाखाकी बात है। उसके लिए न रामसरूप पंडितकी बात मानी जायगी न कुतुबुद्दीन मोलवीकी, उसके लिए बनिया मौजी—गाँवकी बेपढ़ अहिरिनको

ही परमान माना जायगा। दोनों सबदोंको उसके सामने रखा जायगा, जो अरबीवाले सबदको वह समझेगी तो उसे ले लिया जायगा, संसकीरतवालेको समझेगी तो उसको। बोलनेमें कठिन सबदोंकी धनिया भौजी कपाल-किरिया करे होंगी, और उसकी कपाल-किरियाको भी मानना पड़ेगा। हिन्दी-उर्दूको मिलानेका काम भी यही जनम-भाखायें करेंगी क्योंकि जनम भाखाओंमें हिन्दू-मुसल्मानका झगड़ा नहीं है। जड़वालोका रस्ता साफ है, चोटीवालोंका झगड़ा है। उनमें जो अपनी जनम-भाखा उरदू मानता है वह उरदूमें लिखे-पढ़ेगा जो हिन्दी मानता है वह हिन्दीमें। मेरठ कमिसनरीके साढ़े-तीन जिलेमें भी कौन भाखा मानना चाहिए। इसका फैसला वहाँ कोई जाटकी धनिया भाभीके हाथमें होगा।

सोहनलाल—और जो हिन्दुस्तानके संघकी भाखा हिन्दी होगी, उसमें हिन्दी-उरदूका झगड़ा कैसे मिटेगा?

भैया—पहिले तो हिन्दीके अपने साढ़े-तीन जनम जिलोंकी भाखाके मुताबिक उसको मानना पड़ेगा। जिसके कारन बहुतसे संसकीरतके सबद छूट जायेंगे, बहुतसे अरबी-फारसीके। फिर यह प्रजातंत्रोंके ऊपर छोड़ दिया जायगा कि वह कौन भाखा पसन्द करेंगे। जो पाकिस्तान और हिन्दुस्तान दो तरहके प्रजातंत्र संघोंका हमारे देसमें बड़ा संघ बनेगा, तो हिन्दुस्तान प्रजातंत्र-संघमें हिन्दी-संघ भाखा होगी और पाकिस्तानमें उरदू। मैं यह भी जानता हूँ कि आजकी उरदूको जो बंगालवाले पाकिस्तानपर लादा जायगा, तो बहुत मुसकिल होगी। और सारे हिन्दुस्तानके बड़े संघके लिए चाहे उरदू हिन्दी दोनोंको मान लेंगे, या मिला-जुलाके। लेकिन उसके लिए फिकिर करनेकी जरूरत नहीं, प्रजातंत्री हिन्दुस्तानमें हिन्दू-मुसल्मानके आपसी ब्याह बहुत ज्यादा होंगे। आजसे सौ बरस बाद रोटीकी तरह बेटी भी हिन्दू-मुसल्मानोंमें एक हो जायगी फिर जब खून मिलके एक होने लगा तो भाखाका झगड़ा हमारे परपौतोंके लिए ऐसा होगा जनुक वह कभी था ही नहीं।

अध्याय १८

दुनिया बदलनेका हथियार

दुखराम—बात तो भैया ! बहुत कुछ साफ हो गई, दुनिया नरक है, यह तो बहुत दिनोंसे लोग कहते आये थे, लेकिन क्यों नरक है, यह बात समझमें अब आई। जोंकोंने इस हरी-भरी दुनियाको नरक बनाया, जब तक उनका पौरा (कदम) रहेगा, तब तक वह नरकसे भी बदतर बनती जायगी। जोंकें वैसे हैं तो बहुत थोड़ी लेकिन मालूम होता है, कि उनसे भिड़ना चट्टानसे मत्था टकराना है।

भैया—ठीक कह रहे हो दुक्खू भाई ! आज जोंकोंकी तागत है भी बहुत मजबूत, जैसे ही आदमीको ताँबेका पता लगा, वैसे ही जोंकोंने उसपर झपट्टा मारा। ताँबेकी तरवारसे हवाईजहाज और तोप, मशीनगन तक सबको जोंकोंने अपने हाथमें किया। इसीलिए उनकी तागत बहुत जबर्दस्त बन गई। लेकिन सारे हथियार कमेरे ही बनाते हैं, और कमेरोंके पूत ही उन्हें चलाते हैं। यह जोंकोंकी बड़ी कमजोरी है। कमेरे जब अपने खेत और मजूरीके लिए लड़ने लगते हैं, तो जोंकोंमें हड़कम्प मच जाती है। खेतपर किसानोंका कब्जा हो जायगा, मजूरीमें बहुत रुपया देना पड़ेगा, सिर्फ इतना ही खयाल उनके मनमें नहीं आता, बल्कि वह यह भी समझने लगते हैं कि कमेरोंके पूत कहीं हमारे खिलाफ न हो जायँ। लेकिन जैसे जोंकोंने कमेरोंको दबानेके लिए, अपनी मजबूत सेना तैयार की है, जैसे उन्होंने अपने जरनैल-करनैल बनाये हैं, वैसे ही कमेरोंकी भी मजबूत सेना होनी चाहिए, उनके पास भी जरनैल-करनैल होने चाहिए।

दुखराम—हाँ भैया ! बिना पलटन और जरनैल-करनैलके लड़ाई कैसे लड़ी जायगी। जरनैल-करनैल होंगे, तभी न हमें वह रस्ता बतलायेंगे। लेकिन जरनैल-करनैल हमारे देसमें ऐसे कौन हैं ?

भैया—हमारे जरनैल-करनैल हैं, कमनिस्ट पार्टी, और उसके मेम्बर,

जिनको कमनिस्ट कहा जाता है ।

दुखराम—रूसमें भी तो कमनिस्ट ही न कमेरोंके अगुआ हैं ? नाम बड़ा अच्छा है भैया ! मैंने भी कमनिस्टोंको देखा है, काममें उनकी बड़ी निसठा होती है ।

भैया—काम न करें, तो वह कमनिस्ट ही किस कामके ?

सन्तोखी—हमारा मानजा सोहनलाल अब तो भैया ! तुम्हारी बात सुनकर, बहुत नरम पड़ गया है । लेकिन पहिले भी वह कमनिस्टोंका लोहा मानता था । वह कहता था, कि चाहे कुछ भी हो, सब कमनिस्ट एक ही बोली बोलते हैं ।

दुखराम—जिस पलटनमें बहुवाचक हो, सब लोग अपनी-अपनी डफली अपना-अपना राग गायें; वह पलटन होगी, कि महादेव बाबाकी बरात ? एक बोली बोलने और एक साथ पैर मिलाकर चलनेसे ही तो उसे पलटन कहते हैं । यह तो बहुत अच्छी बात है ।

भैया—कमनिस्ट पाटी—अच्छा दुक्खू भाई ! हम भी कमनिस्ट पाटी ही कहेंगे, यह पाटी महादेव बाबाकी बरात नहीं, उसका हुकुम बड़ा कड़ा है । कितने ही पढ़े-लिखे लोग इसीसे घबराते हैं, सोहनलाल भी घबराते हैं, लेकिन पलटनका हुकुम कड़ा न हो, तो वह दुसमनके छक्के नहीं छुड़ा सकता ।

सन्तोखी—सोहनलाल तो कहता था कि हिन्दुस्तानमें कमेरोंका राज कायम करनेके लिए और भी कई पाटियाँ हैं । सब मिलकर काम क्यों नहीं करतीं ?

भैया—मिलकर काम कैसे करें सन्तोखी भाई ! कोई जो जपान और जरमनीकी जै मनायेगा, वह कमेरोंका राज क्या कायम करेगा ।

दुखराम—हाँ, यह बात तो ठीक कह रहे हो भैया ! जरमनी और जापानके फसिहा तो कमेरोंके सबसे बड़े दुसमन हैं ।

भैया—और जो अंगरेजोंके हाथमें अपनेको बेच चुका है, उनके पैसेपर जीता है, वह भी क्या कमेरोंका राज कायम कर सकते हैं ।

दुखराम—भैया ! जिसने अपना सरबस कमेरोंके ऊपर निछावर किया

है, वही कमेरोंकी लड़ाई लड़ सकता है, और जो कमेरोंकी लड़ाई लड़ेगा, उसके रस्तेमें बहुत काँटा पड़ेगा। मैं देखता हूँ न कि तुम जपान और जरमनी-के फसिहोंके कितने जबर्दस्त दुसमन हो। सोते-जागते, उठते-बैठते, चारों पहर बतीसों घड़ी तुम फसिहोंके नामकी ही बात सोचते रहते हो। लेकिन देखता हूँ कि खुफियाका कोई न कोई आदमी दरवाजेपर पड़ा ही रहता है। कोई साधू बनके आता है, कोई बाबू बनके और कोई पागल बनके। अबदुलवा तो छः महीना तक बीस-बीस रुपया महिना फसके खाता रहा। मामा समझते थे, कि अब्दुल्ला रजबलीकी सब बात साँच ही साँच बतला रहा है, लेकिन वह काहेको बतलाये।

सन्तोखी—और दुक्खू भाई! कांग्रेसनेता उमरपुरके बाबू साहब हैं न, वह भी रजबली भैयाको कच्चा ही खा जानेको तैयार हैं। कहते हैं, राजा-परजामें बहुत परेम रहा है, सो रजबली परजाको बिगाड़ रहा है।

दुखराम—जोंक और जोंकोंके पालक फूटी आँखसे भी रजबली भैयाको देखना नहीं चाहते। बड़का गाँवके मोलवी एक दिन आये थे, और बूढ़े-बूढ़े लोगोंको समझा रहे थे, कि रजबलीका हुक्का-पानी बन्द करो, यह काफिर हो गया। अल्लामियाँको नहीं मानता।

सन्तोखी—लेकिन दुक्खू भाई! रजबली भैया तो हम लोगोंको भी मना करते हैं, कि मजहबवालोंसे लड़नेके लिए फाँड़ मत बाँधो, खाली रोटीकी बात करो, रोटीकी लड़ाई लड़ो, जिसका मन हो जो मजहब माने। यह तो ठीक ही है न दुक्खू भाई?

दुखराम—ठीक ही है, सन्तोखी भाई! लेकिन वह सब तो कहते हैं कि आज यह मजहबके खिलाफ कुछ नहीं बोलते हैं, लेकिन जब इनका दल मजबूत हो जायगा, तो मजहबको निकाल बाहर करेंगे।

भैया—और तुम क्या समझते हो दुक्खू भाई!

दुखराम—पीछे भी हम लोगोंको इतना काम रहेगा भैया कि मजहबके पीछे लाठी लेकर फिरनेका बखत ही नहीं मिलेगा। हमें जोंकोंको हटाना है। जोंकोंको हटाकर इस नरकको सरग बनाना है, इसीमें दो-तीन पीढ़ी लग

जायगी। तब तक न हम रहेंगे न मोलवी, न राम रेखा पंडित। नाती-पोतोंका जो मन होगा, करेंगे, उनका रस्ता कौन छेंकेगा?

भैया—हमको बहुत सँभाल-सँभालके पैर रखना है, दुक्खू भाई! सँभाल-के पैर रखनेपर भी जोंकें वार करनेसे बाज नहीं आयेंगी, काहेसे कि हम उनके मुँहसे लगा खून छुड़ाना चाहते हैं।

सन्तोखी—बनारसमें भी कमनिस्ट बहुत हैं, जिनमें हमारी बिरादरीके भी बहुत हैं। बनिया, कायथ, बामन, रजपूत, मुसुरमान, किरिस्तान सब जाति मजहबके कमनिस्ट हैं। लोग कहते हैं, कि सब एक ही थरियामें खाते हैं। ये सबको भरस्ट कर देंगे।

भैया—सबको भरस्ट करनेकी तो बात नहीं है सन्तोखी भाई! बाकी कमनिस्ट चाहे कोई जाति धरमका हो, चाहे किसी देसके हों, सब एक-दूसरे-को सगा भाई समझते हैं, सब मरकस बाबाके रस्तेपर चलते हैं। चीनका कमनिस्ट चाहे अंगरेज कमनिस्ट हमारे गाँवमें चला आये, तो रजबलीको वह अपना भाई समझेगा। हम लोग एक ही कामके लिए जी-मर रहे हैं। मर भी बहुत रहे हैं सन्तोखी भाई! फ्रांसमें अब तो हिटलरका राज खतम हो गया है, लेकिन चार बरस तक अतताई फसिहा वहाँ राज करते रहे, और रोज ही दस पाँच कमनिस्टोंको गोली मारते थे। दुनियामें कौन मुलुक है, जहाँ जोंकें कमनिस्टोंके खूनकी होली न खेलती रही हों। फ्रांसमें जब किसी कमनिस्टको फाँसीपर चढ़ाया जाता तो यहाँ रजबलीको वैसे ही दुख होता है, जैसे किसी अपने भाईके मारे जानेपर। रजबलीको गोली मारी जायगी, तो चीनके कमनिस्टको भी उसी तरह दुख होगा।

दुखराम—नाहीं भैया! तुमको काहे गोली मारी जायगी?

भैया—मैं भी अपनेको गोली नहीं मरवाना चाहता दुक्खू भाई! लेकिन हमने जो रस्ता पकड़ा है, उसमें मौत बार-बार आके झाँक जाती है। जमींदार अपने लठइतको तैयार करते हैं, सेठ कारखानेदार अपने गुंडोंको। सरकार और उसका कानून भी हम लोगोंको फूटी आँख नहीं देखना चाहता। इसलिए जब हम कमनिस्ट पार्टीमें आते हैं, तो दृढ़ संकलप करके ही आते हैं। मौतकी

हमें परवाह नहीं है। जिनगीकी परवाह करनी चाहिए दुक्खू भाई! मौतकी परवाह बेकूफ करते हैं।

सन्तोखी—बेकूफ करते हैं!

भैया—हाँ संतोखी भाई! जब मर गये तब हमें होना-हवाना क्या है। राख या लासको पीटनेसे उसको दुःख होगा? जिनगी है, तब तक आदमीको दुख-सुख मालूम होता है। जिनगीकी हमें परवाह करनी चाहिए, लेकिन परवाह करनेका यह माने नहीं कि हम अपने सुखमें सुख मानें।

दुखराम—हाँ भैया! दूसरेके घरमें आग लगी हो और हम बुझाने न जायँ, खाली अपनी छान्ह अगोरें, तो सब गाँव जर जायगा।

भैया—हाँ दुक्खू भाई! जिनगीका मतलब सिरिफ अपनी जिनगी भर नहीं है, अपने गाँव-पुर सबकी जिनगी अपनी जिनगी है। नाती-पोता सबकी जिनगी अपनी जिनगी है। जिनकी बहुत प्यारी चीज है, लेकिन जब बखत आता है, तो आदमी उसको तिरिन बराबर समझता है—आदमी उसीका नाम है दुक्खू भाई!

दुखराम—हाँ भैया! आन पर जान न दे, तो क्या वह भी कोई आदमी है।

भैया—इसी वास्ते दुक्खू भाई! कमनिस्ट जिनगीसे प्यार करते हैं, लेकिन जब जरूरत पड़ती है, तब तिरिन समान जानते हैं।

सन्तोखी—पहिले तो भैया हमहूँ नहीं सुनते रहे, लेकिन अब तो जहाँ-तहाँ सब जगह कमनिस्ट दिखाई देते हैं। कुल कितने कमनिस्ट होंगे हिन्दुस्तानमें।

भैया—पलटनमें जरनैल-करनैल होते हैं, सिपाही होते हैं, लेकिन खाली सिपाही-जरनैलसे लड़ाई नहीं जीती जाती। गोला-बारूद पहुँचानेवाले भी चाहिए। लेकिन सिरिफ इतनेसे भी काम नहीं चल सकता। गोहार पड़ने पर देसका देस जब टूट पड़ता है, एक बीर धरतीपर पड़ता है, तो दस बीर उसकी जगह आकर खड़े हो जाते हैं। जिस पलटनके पास ऐसे जान देनेवाले गोहरिहा हैं, उसकी जीत निहचय होती है।

दुखराम—हाँ भैया ! बल्कि मैं तो समझता हूँ कि ऐसे गोहरिया भी पलटन हीके अंग हैं।

भैया—हाँ दुक्खू भाई ! पलटन हीके अंग हैं, इसमें कोई सक नहीं है; फरक इतना ही है, कि अभी उनको कवायद-परेड नहीं सिखाई गई।

दुखराम—कवायद परेड सीखना चाहिए भैया ! कवायद-परेड सीखनेसे ही न आदमी पक्का सिपाही बनता है ?

भैया—तो दुक्खू भाई ! हिन्दुस्तानमें कवायद-परेड सीखे हुए सिपाही—कमनिस्ट पार्टीके मेम्बर—आज-कल तीस हजार हैं, चार साल पहिले तीन ही हजार थे।

दुखराम—तो चार ही बरसमें भैया एकके दस हो गये न ?

भैया—हाँ, एकके दस तो हो गये, लेकिन हमारे देसमें चालीस करोड़ आदमी बसते हैं। इसके लिए तीस हजार बहुत कम है। बिलाइतमें साढ़े चार ही करोड़ आदमी बसते हैं, लेकिन वहाँ कमनिस्ट पार्टीके मेम्बर एक लाख हैं, माने हर साढ़े-चार सौ आदमीपर एक पार्टी मेम्बर और हमारे यहाँ बारह हजारमें अभी एक आदमी पहुँच रहा है।

दुखराम—हाँ भैया ! जब हमारे यहाँ चार सौमेंसे एक आदमी पार्टी मेम्बर बन जाय, तभी सन्तोख करना चाहिए। लेकिन पार्टीके सिपाही लोग जल्दी-जल्दी बन रहे हैं, यह खुसीकी बात है।

भैया—गुहारवाले भी आदमी हमारे कई लाख हैं। किसान सभाका जो मेम्बर होता है, वह भी पार्टीका गोहरिया सिपाही है, मजूर सभाका जो मेम्बर बनता है, वह भी गोहरिया सिपाही है।

दुखराम—तो गोहरिया सिपाही भी बहुत हैं भैया ?

भैया—हाँ, बिद्दारथी सभामें भी गुहरिया सिपाही हैं। महटर, मुदर्रिस सभामें भी गुहरिया सिपाही हैं। गोहरिया सिपाही भी बहादुर होते हैं दुक्खू भाई ! काहेसे कि कमनिस्ट सबकी लड़ाईमें सामिल होते हैं। जमींदारके जुलुमसे बचानेके लिए वह किसानोंकी लड़ाई लड़ते हैं, कारखानेदारोंके जुलुम-से छुड़ानेके लिए मजूरोंकी लड़ाई लड़ते हैं। बिद्दारथी, महटर लोगोंको भी

उनके हद-पदके लिए लड़नेमें मदद करते हैं। इसीलिए गोहरिया पलटन भी कमनिस्टकी अपनी पलटन है।

दुखराम— हाँ भैया! और कमनिस्ट जो लड़ाई लड़ते हैं, वह सब तो हमारी ही लड़ाई—कमेरोंकी ही लड़ाई है।

भैया—हाँ दुक्खू भाई! कमेरोंकी लड़ाई छोड़ और कोई दूसरी लड़ाई वह नहीं लड़ते। वह कमेरोंकी रोज-रोजकी तकलीफके लिए लड़ते हैं। इसलिए कमेरे समझते हैं कि यह हमारे अपने लड़वैया हैं। वह कमेरोंको बतलाते हैं कि रोगकी पीड़ाके लिए दवाई देनी चाहिए। लेकिन ऐसा उपाय करना चाहिए, जिसमें कि रोग जड़मूलसे चला जाय। इसीलिए कमनिस्ट कमेरोंको कहते हैं, कि छोटी-मोटी लड़ाईसे काम नहीं चलेगा। जब तक जोंकों-को उखाड़ फेंक न दिया जायगा, तब तक कल्यान नहीं।

सन्तोखी—हाँ भैया! जब तक फोड़ेकी खील नहीं निकल जाती, तब तक पीड़ा बनी ही रहती है।

दुखराम—यह तो समझा कि गोहरिया पलटन भी है, और मैं समझता हूँ कि जरमन-जापानी फसिहोंका बन्टाधार हो जायगा तब कमेरे फिर आज-की तरह चुप नहीं रहेंगे। उस बखत किसान-मजूरकी लड़ाई बहुत बढ़ जायगी। फिर तो गोहरिया पलटन करोड़ों तक पहुँच जायगी अच्छा तो भैया पलटनमें भरती कैसे की जाती है, और कवाइद-परेड कैसे की जाती है?

सन्तोखी—क्या मनमें है दुक्खू भाई! कमनिस्ट तो नहीं बनना चाहते?

दुखराम—तुमने ठीक समझा सन्तोखी भाई! गोहरिया पलटनमें तो मैं अब भी हूँ, लेकिन अब कवाइद-परेड सीखकर पूरा सिपाही बनना चाहिए। चार सौ आदमीपर एक पाटी मेम्बर चाहिए न भैया!

भैया—हाँ दुक्खू भाई! दस लाख पाटी-मेम्बर हो जायँगे तब हिन्दुस्तान-की बिलकुल कायापलट हो जायगी—मेम्बर—पाटी-मेम्बर पक्के सिपाही।

दुखराम—हाँ भैया! और क्या चार आना चन्दा देने वाले मेम्बरसे थोड़े हीमें काम चलेगा। सिपाही वही है, जिसको आगमें, पानीमें, जहाँ-कहीं खड़ा होनेके लिए कह दिया गया है, वहीं खड़ा रहता है। ठीक कहा न भैया!

भैया—हाँ दुक्खू भाई। कमनिस्टके लिए पाटीका हुकुम सबसे बड़ा हुकुम है लेकिन उसमें डरका उतना ख्याल नहीं होता, जितना कि किसी प्यारेके हुकुमकी तामील करनेकी खुसी। बल्कि इस हुकुमको वह अपना हुकुम समझता है। काहेसे कि पाटी और अपने भीतर कोई भेद भाव नहीं रखता। पाटी उसकी है, और वह पाटीका है।

सन्तोखी—हाँ भैया! यह मैं अच्छी तरह समझता हूँ। पहले-पहल जब बिरादरीके एक आदमीसे कमनिस्टोंके एकामयी होनेकी बात सुनी, तो झूठ क्यों बोलूँ, मुझे बुरा लगा। लेकिन अब न बातका पता लगा, कि वह क्यों एकामयी हो जाते हैं।

भैया—भाई भी भाईके लिए प्रान देनेमें भय खाता है, फिर जो हमारे लिए प्रान दे, वह सगे भाईसे भी बढ़कर है कि नहीं?

सन्तोखी—हाँ भैया! क्यों नहीं।

भैया—इसीलिए कमनिस्टका भाई-चारा बहुत मजबूत होता है। मेरा जनम मुसुरमानके घरमें हुआ है, तुम्हारा अगरवालाके घरमें, दुखराम भाईका अहीरके घरमें, लेकिन पाटीके सिपाही जिस दिन हम बने, उसी दिन अब हम सगे भाई हैं। हम एक-दूसरेसे हर बात उसी तरह खुलके बतिआयेंगे, जैसे अपने मनसे।

सन्तोखी—सब बराबर हो जाते हैं, भैया!

भैया—हाँ बराबर हो जाते हैं सन्तोखी भाई। जैसी लियाकत है, काम वैसा करना पड़ता है। लेकिन बाकी बखतमें सब बराबर हैं। पूरनचन्द जोसी भी यहाँ आवे, तो इसी तरह आमकी जड़पर बैठकर बात करेगा, हँसेगा, हँसावेगा।

सन्तोखी—पूरनचन्द कौन है भैया!

भैया—समूचे हिन्दुस्तानकी पाटीका मंतिरी है सन्तोखी भाई! बड़ा दिमाग है, बड़ी बुद्धि है, खूब पढ़ा है, खूब सोचता है।

दुखराम—दूसरी पाटीका नेता होता, तो आमकी जड़पर नहीं न बैठता, तब तो सिंहासन बिछाना पड़ता। तो हमारी पाटीके और भी नेता ऐसे ही

होते न भैया ?

भैया—हाँ दुक्खू भाई! पार्टीके कुछ नेताओंकी जिनगीका हाल-चाल, "नये भारतके नये नेता"में तुम्हें सुननेको मिलेगा। हमारे सूबामें डाक्टर अहमद, डाक्टर अशरफ यूसुफ, भारद्वाज, महमूद, हरखदेव मालवी, नकवी, सज्जाद जहीर इत्यादि कितने हैं। बिहारमें भी कारजानन्द, सुनील, मंजर, सन्तलाल, अशरफ इत्यादि हैं। हर सूबेमें ऐसे ही अपने नेता हैं—नेता भी हैं, और सगे भाई भी हैं।

सन्तोखी—नेतागिरीका झगड़ा नहीं होता, यह बात सोहनलाल भी कहता था।

भैया—जहाँ अपना-अपना स्वारथ होता है, वहाँ झगड़ा होता है। कमनिस्ट पार्टीका जो नेता है, वह सिपाही भी है। सीखने गुननेसे ही यह होता है, और आदमीका मन अंकुसमें आ जाता है। पार्टीने जहाँ किसी आदमीको मेम्बर बननेका उम्मेदवार मान लिया, तहाँ उसके सिखाने-समझाने-की पूरी जिम्मेवारी अपने ऊपर लेती है। और बहुत सीखना पड़ता है, सन्तोखी भाई! जोंकोंके साथ कमेरोंकी लड़ाई चकराबूहकी लड़ाईसे मुसकिल है। बहुत दाँव-पेंच सीखना पड़ता है। जो जिस जगह लड़नेके लायक है, उसको वहाँकी लड़ाईका दाँव-पेंच सिखाया जाता है। जब दाँव-पेंच समझने लगता है, पार्टीके साथ रहकर उसका मन दूध-पानी बन जाता है, और देखा जाता है, कि वह निरभय सिपाही है, तभी पार्टी उसे काम देगी, वह बड़ी खुसीसे उसे पूरा करेगा।

दुखराम—रूसमें भी भैया ऐसी ही पार्टी न है?

भैया—रूसमें भी है, फ्रांसमें भी है, अमेरिका, इटली, चीन—सब जगह है—जहाँ-जहाँ कमेरे जोंकोंको हटानेके लिए लड़ रहे हैं, सभी जगह पार्टी है।

सन्तोखी—अब तो नहीं, लेकिन पहले सोहनलाल कहता था, कि कमनिस्ट तो जो ऊपरसे हुकुम आता है, वही करते हैं।

भैया—पहिले तो सन्तोखी भाई यह भी कहते थे कि हमको रूससे जो हुकुम आता है, वही करते हैं, अब जो नहीं कहते, यही गनीमत है। ऊपरके

हुकुमको कमनिस्ट इनकार नहीं करते। सिपाही जरनैलका हुकुम माननेसे इनकार कर दे, तो वह पलटन लड़ सकती है लेकिन जो हुकुम आता है, वह इसी सम्बन्धमें कि किन बातोंमें देस भरको एक साथ कदम उठाना चाहिए। हमारे गाँवमें कोई झगड़ा हो जाता है, या किसी बातमें किसान हमारी सलाह लेते हैं तो क्या समझते हो, कि मैं ऊपरसे पूछ-पूछकर कदम रखता हूँ। पाटी हमको आँख देती है, हमको ग्यान देती है, आज सौ बरससे दुनियामें कमेरे लड़ रहे हैं, हमारे देसमें भी कमेरे जगह-जगहपर लड़ते रहे हैं। दूसरी लड़ाइयोंके बारेमें जानकर हम कितनी ही बातें सीख सकते हैं, पाटी हमें यह सिच्छा देती है, इसीलिए दो-दो तीन-तीन महीने तक, ऐसी जानकार सात-सात आठ-आठ दिन तक बैठकर हमें सिखाते हैं। फिर पाटीमें एक आदमी किसी बातका फैसला नहीं करता। कई आदमी मिलकर खूब उस बातपर बातचीत करके, एक-एक बात जानकर कोई फैसला करते हैं। एक बार फैसला हो गया, तो सिपाहीको नहीं करना नहीं होगा। देखा न, जब अगस्त (१६४२)में लोग रेल-तार काट रहे थे, तो हम लोग मना करते थे?

दुखराम—हाँ भैया! तुम न समझाये होते तो हमारे गाँवको भी बहुत तकलीफ उठानी पड़ती और पीछे तो गांधीजी ने भी कह दिया कि इस तोड़-फोड़के लिए हमने कभी नहीं कहा था।

भैया—उस वक्त हिन्दुस्तानमें जहाँ-जहाँ कमनिस्ट थे, उन्होंने एक ही रस्ता लिया। ऊपरसे हुकुम आनेका वहाँ कोई मौका नहीं था।

दुखराम—हाँ भैया! लेकिन कैसे हिन्दुस्तान भरमें सब कमनिस्ट एक ही तरह सोचने लगे?

भैया—पाटी हुकुम कम देती है, आँख ज्यादा देती है। आँख दे देनेसे जब जैसा मौका होता है, वैसा आदमी मिलके आपसमें तय कर लेते हैं।

संतोखी—अकेले किसी बातका फैसला नहीं करते भैया!

भैया—मान लो हमारे गाँवमें ५ पाटी-मेम्बर हैं। यहाँ जो कुछ फैसला करना होगा, पाँचों मिलकर फैसला करेंगे, अकेले नहीं कर सकते। लेकिन जब आदमी अकेला ही है, और आस-पासमें कोई मेम्बर या उम्मेदवार भी नहीं

है, तो फिर अकेले भी फैसला कर सकते हैं जो जल्दी न करनेसे काम बिगड़ता है।

दुखराम—तब तो भैया! एक आदमी मनमानी नहीं कर सकता। सब फैसला पंचायती कर लिया जाता है।

भैया—५ आदमी मिलकर जब किसी बातके ऊपर सोचते हैं, तो पाँचोंकी अकल लगती है, पाँचों अपना तजवीज बतलाते हैं। एक-दूसरेकी रायमें जो दोख होता है, उसको भी बतलाते हैं, इसलिए पंचका सोचा हुआ फैसला एक आदमीके फैसलेसे किया अच्छा होता है।

दुखराम—और पार्टीके मेम्बरोंका तो अपना कोई स्वारथ भी नहीं कि झूठ-साँचकी बात करेंगे, इसलिए उनका फैसला तो और ठीक होगा।

भैया—दुक्खू भाई! पार्टीकी सब बात यहाँ कहनेसे कोई फायदा नहीं। मैंने अपने साथियोंसे कहा है, तुम्हारे लिए पार्टी-मेम्बर बनानेके लिए। हम सिफारिस करेंगे, तुम वहाँ सब बात सीखोगे। यहाँ तो इतना ही बतलाना था कि दुनियाको नरकसे सरगमें बदलनेको कमेरोंके पौरुसकी जरूरत है, और उस पौरुसको मिलाकर एक लड़ाका पलटन बनानेका काम कमूनिस्ट पार्टी करती है। हमें दुनियाको बदलना है। बदलनेके लिए हथियार तुम्हारे सामने है। जितना ही इसको मजबूत करके काममें लाओगे, उतना ही काम बनेगा।